वर्ग - ३

माहे रमज़ान

रसूले अकरम (स.अ.व.व.) का खुतबा

शेख सदूक ने मोअतबर सनद के साथ इमाम रज़ा (अ.स.) से रिवायत की है और आपने अपने बुज़ुर्गो के हवाले से अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) से नक्ल किया है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) ने एक दिन यह खुतबा इरशाद फरमाया के अय्योहन नास (अय लोगो)! माहे रमज़ान बरकतो रहमतो मगफेरत के साथ आ रहा है। यह वह महीना है जो खुदा की नज़र में बेहतरीन महीना है। उसके दिन बेहतरीन दिन, उसकी रातें बेहतरीन रातें और उसका वक्त बेहतरीन वक्त हैं। यह वह महीना है जिसमें तुम्हें खुदा की मेहमानी में बुलाया गया है और तुम्हें अहले करामत में शुमार किया गया है। तुम्हारी सांसें तसबीह का सवाब रखती है। तुम्हारी नींद इबादत और तुम्हारे आमाल मकबूल हैं। तुम्हारी दुआएं इस महीने में मुसतजाब हैं लेहाज़ा परवरदिगार से अच्छी नीय्यत और पाकीज़ा दिल से दुआ करो ताके तुम्हें इस महीने में रोज़ा रखने और तिलावते कुरान करने की तौफीक इनायत फरमाए। शकी और बदबख्त वह व्यक्ति है जो इस महीने में बखशिश से महरून रह जाए। यहाँ की भूख और प्यास से कयामत की भूख और प्यास का अहसास करो। फकीरों और मिसकीनों को सदका दो। बुज़ुर्गों का एहतेराम करो। बच्चों पर रहम करो। रिश्तेदारों पर नवाज़श करो। अपनी ज़ुबानों को बुराईयों से अलग रखो। अपनी निगाहों को नीचा रखो। उन चीज़ों से जो तुम्हारे लिए हलाल नहीं हैं। कानों से वह चीज़ें न सुनो जिनका सुनना हराम है। यतीमों पर महेरबानी करो ताके लोग तुम्हारे बाद तुम्हारे यतीमों पर महेरबानी करें। गुनाहों को छोड कर खुदा की तरफ मोतवज्जेह हो जाओ। अपने हाथों को दुआओं के लिए औकाते नमाज़ में बुलंद रखो जो दुआ का बेहतरीन समय है। और परवरदिगार इस समय बंदों पर निगाहे मरहमत करता है और दुआओं को कबूल करता है। अगर वह मुनाजात करते हैं तो सुन लेता है।

ऐ वह लोगों जिनकी ज़िन्दगीयाँ उनके आमाल पर निर्भर हैं खुदा की बख्शिश तलब करो और अगर तुम्हारी पीठ गुनाहों के लोझ से संगीन हो गई हैं तो तूले सजदा से उसे हलका बनाओ और यह याद रखो के परवरदिगार ने अपनी इज़्ज़तो जलाल की कसम खाई है के नमाज़ गुज़ार और सजदा गुज़ार बंदों पर इस महीने में अज़ाब नहीं करेगा और उन्हें आतिशे जहन्नम से नहीं जलाएगा। अय्योहन नास जो शख्स इस महीने में किसी मोमिन को इफतार कराएगा परवरदिगार उसे गुलाम आज़ाद करने और गुज़श्ता गुनाहों की बख्शिश का सवाब इनायत करेगा। बाज़ असहाब ने अर्ज की के या रसुलल्लाह (स.अ.व.व.) हर व्यक्ति के पास तो इतनी ताकत नहीं है। फरमाया के अपने को इफतार के ज़रिए आतिशे जहन्नम से बचाओ चाहे आधा दाना खुरमा और एक घूँट पानी ही क्यों न हो परवरदिगार उसपर भी यही सवाब देगा। अगर इंसान इससे ज़्यादा पर कादिर न हो।

अय्योहन नास, इस महीने में अपने अखलाक को दुरूस्त रखो ताके उस दिन सेरात से बआसानी गुज़र जाओ जिस दिन सारे कदम फिसल रहे होंगे। जो व्यक्ति भी इस महीने में अपने गुलामों और कनीज़ों से कम काम लेगा कयामत के दिन उसके हिसाब को आसान कर देगा। और जो व्यक्ति भी इस महीने में अपने शर से लोगों को बचाए रखेगा परवरदिगार उसे अपने गज़ब में मुब्तेला न करेगा और जो व्यक्ति भी इस माह में किसी यतीम का एहतेराम करेगा खुदा कयामत के दिन उसे बाइज़्ज़त बना देगा। जो व्यक्ति भी इस महीने में अपने अकरबा के साथ अच्छा बरताव करेगा खुदा कयामत के दिन उसके साथ रहमत का सुलूक करेगा। और जो व्यक्ति भी अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव न करेगा खुदा रोज़े कयामत अपनी रहमत के रिश्ते तोड़ देगा। जो व्यक्ति भी इस महीने में सुन्नती नमाज़ अदा करेगा उसे जहन्नम से बरात का परवाना मिलेगा और जो व्यक्ति भी इस महीने में वाजिब नमाज़ अदा करेगा परवरदिगार उसे दूसरे महीनों की सत्तर नमाज़ों का सवाब इनायत फरमाएगा। जो व्यक्ति भी इस महीने में मुझपर सलवात पढेगा खुदा उसके अमल के पल्ले को भारी कर देगा जिस दिन लोगों के पल्ले हलके होंगे। जो व्यक्ति इस महीने में एक आयते कुरान पढेगा परवरदिगार उसे दूसरे ज़माने

में एक खत्मे कुरान का सवाब देगा।
अय्योहन नास याद रखो के इस महीने में बेहिश्त के दरवाज़े खुल जाते हैं लेहाज़ा परवरदिगार से दुआ करो के तुम्हारे लिए बंद न हों। और जहन्नम के दरवाज़े बंद हो जाते हैं लेहाज़ा दुआ करो के वह तुम पर खुल न जाएं। शयातीन को इस महीने में कैद कर दिया जाता है। दुआ करो के वह तुम पर मुसल्लत न हो जाएं।
शेख सदूक की रिवायत है के जब रमज़ान का महीना दाखिल होता था तो पैगंबरे अकरम (स.अ.व.व.) तमाम असीरों को आज़ाद कर देते थे। और हर साएल को अता फरमा दिया करते थे। लेखक के अनुसार रमज़ान का महीना खउदा का महीना है और शरीफ और अज़ीम तरीन महीना है। इस महीने में आसमान और बेहिश्त के तमाम दरवाज़े खुल जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं। और इसी महीने में वह रात भी है जिसकी इबादत हज़ार महीने से बेहतर है लेहाज़ा ध्यान रखो के तुम्हारे रात दिन किस प्रकार गुजरे हैं। और अपने आज़ाओ जवारेह को मासियते परवरदिगार से महफूज़ रखो। ऐसा न हो वे रात में सोते रह जाओ और दिन में यादे खुदा से गाफिल रह जाओ। एक रिवायत में वारिद हुआ है के माहे रमज़ान के हर दिन के अंत में इफतार के समय परवरदिगार दस लाख व्यक्तियों को आतिशे जहन्नम से आज़ाद करता है और शबे जुमा और रोज़े जुमा में इतने ही व्यक्तियों को हर घंटे आतिशे जहन्नम से आज़ाद करता है। चाहे वह किसी अज़ाब के मुस्तहक क्यों न रहे हों। और उसके बाद जब माहे रमज़ान की आखरी शब या आखरी दिन आता है तो जितने पूरे रमज़ान में आज़ाद किए गए हैं उतने ही व्यक्तियों को और आज़ाद कर देता है। लेहाज़ा अज़ीज़ों ऐसा न हो के माहे रमज़ान गुज़र जाए और तुम्हारे गुनाह बाकी रह जाए। और जब रोज़ा रखने वाले कयामत के दिन अपना अज्र हासिल करे तो तुम्हारा शुमार महरूमीन में हो जाए। मालिक की बारगाह में तिलावते कुरान के द्वारा तकर्रूब हासिल कोर और मुखतलिफ अवकाते फज़ीलत में नमाज़ और कसरते इस्तेगफार की ताकीद की गई है। इमाम सादिक (अ.स.) ने फरमाया के जो व्यक्ति रमज़ान के महीने में बख्शा न जाएगा उसकी बख्शिश आईंदा साल तक नहीं हो सकती

मगर यह के मैदाने अरफात में जाकर इस्तेगफार करे लेहाज़ा अपने को हराम से महफूज़ रखो और हराम चीज़ों से इफतार न करो। और वह तरीका इख्तेयार करो जिसकी सिफारिश इमाम सादिक (अ.स.) ने की है। के तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे कान, हाथ, बाल, खाल और तमाम आज़ा सब मोहर्रमात बल्के मकरूहात से भी परहेज़ करे। और खबरदार तुम्हारा रोज़ा तुम्हारे आम दिनो की तरह जिनमें रोज़ादार नहीं हो और याद रखो के रोज़ा सिर्फ खाने पीने से परहेज़ करना नहीं है बल्के रोज़े में इंसान को अपनी ज़बान को झूठ और अपनी निगाहों को नामहरम से महफूज़ रखना चाहिए और किसी व्यक्ति से गडा नहीं करना चाहिए। अपने को हसद से गीबत से बचाओ न किसी से हसद करो न झगडा करो और न झूठी कसम खाओ। बल्के सच्ची कसम भी न खाओ। किसी को गाली न दो जुल्म न करो बेअकली का काम न करो। हर एक से रंजीदा न हो और यादे खुदा से गाफिल न हो और जो बात मुनासिब नहीं है उसके बारे में खामोश रहो। सब्रो सच्चाई से काम लो। अपने को अहले शर से दूर रखो। बुरी बातों, गलत बयानी, इफ्तेरा और झगडे से और बद गुमानी से और गीबतो तनकीद से महफूज़ रहो और सोच लो के आखेरत करीब है और ज़हूरे इमाम के मुंतिज़र रहो। आखेरत के सवाब के उम्मीदवार रहो और आखेरत के लिए ज़ादे राह तय्यार करो। यह तुम्हारे लिए ज़रूरी है के दिल और जिस्म को मुतमईन रखो। खुज़ूओ खुशू, इन्केसारी ओ खाकसारी से काम लो जैसे कोई बंदा अपने परवरदिगार से डरता है। अज़ाबे खुदा से डरो। रहमते खुदा के उम्मीदवार रहो। ऐ रोज़ेदारो अपने दिल को तमाम ओयूब से पाक रखो। अपने बातिन को हर हिलाओ मक्र से अलग रखो। अपने शरीर को हर प्रकार की गंदगी से पाक रखो और हर गैरे खुदा से बेज़ार रहो और अपनी मोहब्बत को खुदा के लिए खालिस बना दो। जिन चिज़ों से उसने मना किया है एलानिया और मखफी हर तरह उस से परहेज़ करो। खुदाए कहहार से डरो के वह ज़ाहिरओ बातिन हर हालमें डरने के काबिल है। अपने रूह और जिस्म को उसके हवाले कर दो। अपने दिल को उसकी मोहब्बत के लिए खाली कर लो। और अपने शरीर को उसकी आज़ा के लिए वक्फ कर दो। अगर तुमने यह सारे काम कर लिए तो गोया वह काम किया जो एक रोज़ेदार को करना

चाहिए। और अपने मालिक की इताअत की। लेकिन अगर इसमें कुछ भी कमी की है तो उसी मिकदार में रोज़ा की फज़ीलत और उसका सवाब कम हो जाएगा। मेरे पिता ने फरमाया है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) ने रोज़े की हालत में अपनी एक बीवी की कनीज़ को बुरा भला कहते हुए देख लिया। तो उस खातून के लिए खाना मंगवाया। उन्होंने कहा के मैं रोज़े से हूँ। फरमाया के कनीज़ को बुरा भगा कहने के बाद फिर कोई रोज़ा रोज़ा नहीं रह जाता है। रोज़ा केवल खाने पीने से परहेज़ का नाम नहीं है। परवरदिगारे आलम ने रोज़े को तमाम बुरे ओमूर और हर गलत किरदारओ गुफ्तार से बचाने का ज़रीया करार दिया है। और कितने ही लोग हैं जिनको रोज़े से भू और प्यास के अलावा कुछ और हासिल नहीं होता है। अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) ने फरमाया है के कितने ही रोज़ेदार ऐसे हैं जिनके रोज़े में भूख और प्यास के अलावा कुछ नहीं होता और कितने ही इबादत गुज़ार हैं जिनकी इबादत का माहसन रंजो ताब के अलावा कुछ नहीं होता। होशमंदो का सोना अहमकों की बेदारी से बेहतर होता है। और अक्लमंदों का इफ्तार अक्सर रोज़ादारों से बेहतर होता है। जाबिर बिन यज़ीद ने इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) से नक्ल किया है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी से फरमाया: जाबिर यह रमज़ान का महीना है। जो श्खस इसके दिनमें रोज़ा रखे और रात को किसी हिस्से में इबादत करे और अपने हर प्रकार के हराम से महफूज़ रखे। और अपनी ज़बान को बेहूदा बातों से बचा लें वह गुनाहों से इस प्रकार निकल आएगा जैसे रमज़ान के महीने से बाहर आएगा। जाबिर ने कहा या रसूलल्लाह यह तो बेहतरीन हदीस है। आपने फरमाया: मगर जाबिर इस पर अमल करना बहुत सख्त है। बहर हाल इस मुबारक महीने के आमाल का तज़केरा दो मतालिब और एक खातमें के ज़ैल में किया जाएगा।

पहला मतलब

माहे रमज़ान के मुश्तरक आमाल जिनकी चार किस्में हैं

पहली किस्म

वह आमाल जो हर रोज़ और हर शब अंजाम दिये जाते हैं।

सय्यद बिन ताऊस ने इमाम जाफरे सादिक (अ.स.) और इमाम मूसा काज़म (अ.स.) से रिवायत की है के रमज़ान के महीने में अव्वल से आखिर तक हर नमाज़े फरीज़ा के बाद यह दुआ पढे:

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ حَجَّ بَيْتِكَ الْحَرامِ فِیْ عَامِیْ هٰذَا وَفِیْ كُلِّ عَامٍ مَا

खुदाया मुझे हज बैतुललाह कि तौफिक अता फरमा इस साल और हर साल जब तक

اَبْقَيْتَنِیْ فِیْ يُسْرٍ مِنْكَ وَعَافِيَةٍ وَسَعَةِ رِزْقٍ وَلَا تُخْلِنِیْ مِنْ تِلْكَ

मैं जिंदा हुँ सहुलत, आफियत और वुसअत रिजक के साथ मुझे उन अजीम मवाकिफ

الْمَوَاقِفِ الْكَرِيْمَةِ وَالْمَشاهِدِ الشَّرِيْفَةِ وَزِيَارَةِ قَبْرِ نَبِيِّكَ

और मोहतरम मुशाहिद और जियारते कबरे पैगम्बर से महरूम न रखना और मेरी तमाम

صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَآلِهٖ، وَفِیْ جَمِيْعِ حَوَائِجِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَكُنْ لِیْ

दुनियावी और उखरवी हाजतों में तु मेरा हो जा परवरदिगार मेरा सवाल यह है कि शबे कदर

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ فِيْمَا تَقْضِیْ وَتُقَدِّرُ مِنَ الْاَمْرِ الْمَحْتُوْمِ فِیْ لَيْلَةِ

मे जो तु इंसानो के मुकददर का फैसला करता है जिस फैसले को कोई बदल नही सकता है

الْقَدْرِ مِنَ الْقَضَاءِ الَّذِیْ لَا يُرَدُّ وَلَا يُبَدَّلُ اَنْ تَكْتُبَنِیْ مِنْ حُجَّاجِ

इस में मेरे बारे मे लिख दे कि मेरा शुमार उन हुज्जाज बैतुल्लाह में हो जिन का हज बेहतरीन

بَيْتِكَ الْحَرَامِ الْمَبْرُوْرِ حَجُّهُمُ الْمَشْكُوْرِ سَعْيُهُمُ الْمَغْفُوْرِ

और जिन की सई मशकूर हो जिन के गुनाह बखशे हुये हों और जिन की खताओं की परदा

ذُنُوبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنْهُمْ سَيِّئَاتُهُمْ، وَاجْعَلْ فِيمَا تَقْضِي وَتُقَدِّرُ اَنْ

पोशी की गई हो और अपने कजा व कदर में ये भी करार दे दे के मेरी उमर तुलानी हो मेरे

تُطِيلَ عُمْرِي وَتُوَسِّعَ عَلَيَّ رِزْقِي، وَ تُؤَدِّيَ عَنِّي اَمَانَتِي وَدَيْنِي، آمِينَ

रिजक में वुसअत हो और मेरी अमानत और मेरे करज को तु ही अदा कर दे आमीन या

رَبَّ الْعَالَمِينَ.

रब्बल आलामीन।

उसके अलावा हर वाजिब नमाज़ के बाद पढे:

يَا عَلِيُّ يَا عَظِيمُ يَا غَفُورُ يَا رَحِيمُ اَنْتَ الرَّبُّ الْعَظِيمُ الَّذِي لَيْسَ

अए खुदाए अली व अजीम अए मालिक गफुर व रहीम तो एह रब्बे अजीम है जिस का कोई मिसल

كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ وَ هٰذَا شَهْرٌ عَظَّمْتَهُ وَ كَرَّمْتَهُ وَ

नही है और वह सब का सुनने वाला और देखने वाला है, ये वह महीना है जिस को तु ने मोअज़्ज़म,

شَرَّفْتَهُ وَفَضَّلْتَهُ عَلَى الشُّهُورِ وَهُوَ الشَّهْرُ الَّذِي فَرَضْتَ صِيَامَهُ

मोकररम,अशरफ और तमाम महीनो से अफजल करार दिया है और इस मे रोजा को वाजिब करार

عَلَيَّ وَهُوَ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي اَنْزَلْتَ فِيهِ الْقُرْآنَ هُدًى لِلنَّاسِ وَ

दिया है ये माहे रमजान जिस मे तु ने कुरआन नाजिल किया है जो लोगों के लिये हिदायत है और हक

بَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ وَ جَعَلْتَ فِيهِ لَيْلَةَ الْقَدْرِ وَ جَعَلْتَهَا

व बातिल के तफरेका और हिदायत के लिये बेहतरीन निशानी है और जिस महीने में शबे कदर दि है

خَيْرًا مِنْ اَلْفِ شَهْرٍ فَيَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْكَ مُنَّ عَلَيَّ بِفَكَاكِ

और उसे हजार महीनो से बेतर करार दिया अए मेरे मोहसिन जिस पर किसी का एहसान नही है मुझ

رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ فِيْ مَنْ تَمُنُّ عَلَيْهِ وَ اَدْخِلْنِيْ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

पर ये एहसान फरमा के मेरी गरदन को आतिश जहन्नुम से आजाद कर दे जैसा के तु ने और लोगों पर

الرَّاحِمِيْنَ.

एहसान किया है और मुझे अपनी रहमत से दाखिल जन्नत कर दे अए बेहतरीन मेहरबानी करने वाले।

शेखे कफअमी ने मिस्बाह और बलदुल अमीन में और शेखे शहीद ने अपने मजमुआ में रसूले अकरम (स.अ.व.व.) से नक्ल किया है के आपने फरमाया है के जो इस दुआ को माहे रमज़ान में हर नमाज़े वाजिब के बाद पढेगा परवरदिगार रोज़े कयामत उसके गुनाहों को माफ कर देगा

اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْ عَلٰى اَهْلِ الْقُبُوْرِ السُّرُوْرَ اَللّٰهُمَّ اَغْنِ كُلَّ فَقِيْرٍ

खुदाया तमाम अहले कुबुर को खुशी इनायत फरमा खुदाया हर फकीर को गनी बना दे खुदाया हर

اَللّٰهُمَّ اَشْبِعْ كُلَّ جَائِعٍ اَللّٰهُمَّ اكْسُ كُلَّ عُرْيَانٍ اَللّٰهُمَّ اقْضِ

भुके को सैर कर दे खुदाया हर बरहैना को लिबास दे दे खुदाया हर मकरज के कर्ज को अदा कर

دَيْنَ كُلِّ مَدِيْنٍ اَللّٰهُمَّ فَرِّجْ عَنْ كُلِّ مَكْرُوْبٍ اَللّٰهُمَّ رُدَّ كُلَّ

दे। खुदाया हर दनजिदा के रंज को दूर फरमा दे। खुदाया हर मुसाफिर को उस के वतन की तरफ

غَرِيْبٍ اَللّٰهُمَّ فُكَّ كُلَّ اَسِيْرٍ اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ كُلَّ فَاسِدٍ مِنْ اُمُوْرِ

पलटा दे। खुदाया हर कैदी को आजाद कर दे। खुदाया मुसलमानो के तमाम ओमूर की इसलाह

الْمُسْلِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اشْفِ كُلَّ مَرِيْضٍ اَللّٰهُمَّ سُدَّ فَقْرَنَا بِغِنَاكَ

फरमा दे। खुदाया हर बिमार को शेफा दे दे। खुदाया हमारी फकीरी को अपनी बेनेयाजी से रफा

اَللّٰهُمَّ غَيِّرْ سُوْءَ حَالِنَا بِحُسْنِ حَالِكَ اَللّٰهُمَّ اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَ

कर दे। खुदाया हमारी बदतरीन हालत को अपने बेहतरीन करम से बदल दे। खुदाया हमारी कर्ज

اَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

को अदा फरमा दे और हमें फकीरी से गनी बना दे के तु हर शै पर कादिर है।

शेख कुलैनी (र.अ.) ने काफी में अबू बसीर से रिवायत कि है कि हज़रत इमाम जाफर सादिक (अ.स.) माहे रमज़ान में यह दुआ पढ़ा करते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ بِكَ وَمِنْكَ اَطْلُبُ حَاجَتِيْ وَمَنْ طَلَبَ حَاجَةً اِلَى

खुदाया मैं तेरे वसीले से और तुझी से अपनी हाजते तलब कर रहा हुँ। और कोई शख्स अपनी

النَّاسِ فَاِنِّيْ لَا اَطْلُبُ حَاجَتِيْ اِلَّا مِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ

हाजत को लोगों से तलब करता है तो मैं तेरे अलावा किसी त्से तलब नही कर रहा हुँ के तु

لَكَ وَاَسْئَلُكَ بِفَضْلِكَ وَرِضْوَانِكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَهْلِ

अकेला है और तेरा कोई शरीक नही है और मैं तेरे फजल व खुशनुदी से ये सवाल करता हुँ के

بَيْتِهٖ وَ اَنْ تَجْعَلَ لِيْ فِيْ عَامِيْ هٰذَا اِلٰى بَيْتِكَ الْحَرَامِ سَبِيْلًا

हजरत मोहम्मद और उन के अहलेबैत पर रहमत नाजिल फरमा और हमारे लिये इस साल अपने

حَجَّةً مَبْرُوْرَةً مُتَقَبَّلَةً زَاكِيَةً خَالِصَةً لَكَ تَقَرُّ بِهَا عَيْنِيْ وَ

मोहतरम घर का रास्ता बना दे। जिस का हज बेहतरीन, मकबूल, पाकिजा और खालिस हो।

تَرْفَعُ بِهَا دَرَجَتِيْ وَ تَرْزُقَنِيْ اَنْ اَغُضَّ بَصَرِيْ وَ اَنْ اَحْفَظَ

जिस से मेरी आँखे ठंडी हो और मेरा दरजा बुलंद हो और तु मुझे तौफीक दे कि मै अपनी निगाहों

فَرْجِيْ وَ اَنْ اَكُفَّ بِهَا عَنْ جَمِيْعِ مَحَارِمِكَ حَتّٰى لَا يَكُوْنَ شَيْءٌ

को निचा रखुँ। अपनी गफलत की हिफाजत करूँ और तमाम मोहररमात से अपने को बचाए

اٰثَرَ عِنْدِيْ مِنْ طَاعَتِكَ وَ خَشْيَتِكَ وَ الْعَمَلِ بِمَا اَحْبَبْتَ

रखुँ ताकि कोई शए मे निगाह मे तेरी इताअत तेरे खौफ और तेरे पसंदीदा आमाल को अंजाम

وَ التَّرْكِ لِمَا كَرِهْتَ وَ نَهَيْتَ عَنْهُ وَ اجْعَلْ ذٰلِكَ فِيْ يُسْرٍ وَ

देने से और तेरे नापसंदीदा आमाल को तरक करने से जियादा महबूब न हो और इस अमर मे

يَسَارٍ وَ عَافِيَةٍ وَ مَا اَنْعَمْتَ بِهٖ عَلَيَّ وَ اَسْئَلُكَ اَنْ تَجْعَلَ وَفَاتِيْ

भी मरेर लिये सहुलत व आसानी और आफियत करार दे आर मैं ये भी सम्वाल करता हुँ कि तु

قَتْلًا فِيْ سَبِيْلِكَ تَحْتَ رَايَةِ نَبِيِّكَ مَعَ اَوْلِيَآئِكَ وَ اَسْئَلُكَ

मेरी वफात को अपनी राह में शहादत बना दे अपने पैगंबर के परचम के नीचे अपने अवलिया के

اَنْ تَقْتُلَ بِیْ اَعْدَآئَكَ وَاَعْدَآءَ رَسُوْلِكَ وَاَسْئَلُكَ اَنْ تُكْرِمَنِیْ

साथ और मेरा सवाल ये भी है कि मेरे जरीये अपने और अपने रसूल के दुशमनो को कतल करा

بِهَوَانِ مَنْ شِئْتَ مِنْ خَلْقِكَ وَلَا تُهِنِّیْ بِكَرَامَةِ اَحَدٍ مِنْ

दे और मुझे जिस मखलूक की जिल्लत के एवज तु चाहे करामत इनायत फरमा दे लैकिन अपने

اَوْلِیَآئِكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِیْ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِیْلًا حَسْبِیَ اللّٰهُ مَا

अवलिया की करामत के एवज मुझे जलील न करना खुदाया मेरे लिये रसूल के साथ रास्ता बना

شَآءَ اللّٰهُ.

दे अल्लाह ही मेरे लिये काफी है और वह जो चाहता है वह कर लेता है।

लेखक का बयान है के इस दुआ को दुआ-ए-हज्ज भी कहा जाता है। जुनांचे सय्यद ने इकबाल में इमाम सादिक (अ.स.) से रवायत की है के उसे रमज़ान में हर रात मगरिब के बाद पढना मुस्तहब है। और कफअमी का कहना है के हर रोज़ और शबे अव्वल पढना मुस्तहब है। शेख मुफीद ने मुकन्ना में पहली रात को नमाज़े मगरिब के बाद उसका ज़िक्र किया है।

बहर हाल शबो रोज़ रमज़ान महीने में बहतरीन आमाल में कुराने हकीम की तिलावत भी है। लेहाज़ा ज़्यादा से ज़्यादा उसकी तिलावत करे क्योंकि वह उसी महीने में नाज़ल हुआ है। और रिवायत में है के हर चीज़ की एक बहार होती है और कुरान की बहार रमज़ान का महीना है। दूसरे महीनों में पूरे महीने में या कम से कम छे रोज़ में एक खत्मे कुरान सुन्नत है। मगर माहे रमज़ान में हर तीन दिन में एक खत्मे कुरान सुन्नत है। बल्के अगर रोज़ाना खत्म कर ले तो और ज़्यादा बहतर है। अल्लामा मजलिसी ने फरमाया है के बाज़ हदीसो में है के बाज़ अइम्मा रमज़ान में चालिस कुरान बल्के उस से ज़्यादा पढा करते थे। और अगर हर खत्मे कुरान का सवाब चहारदा मासूमीन (अ.स.)

में से किसी की रूह को हदिया करदे तो सवाब और भी दो चंद हो जाएगा। रिवायत से यह भी मालूम होता है के उसके सवाब में वह रोज़े कयामत उन्हीं हज़रात के साथ रहेगा। इस महीने में दुआ सलवात और इस्तेगफार भी ज़्यादा करना चाहिए। और ला एलाह इल्लल्लाह बहुत ज़्यादा कहना चाहिए। रिवायत में हैं के इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) रमज़ान शुरू होने के बाद सिवाए दुआ तसबीह, इस्तेगफार और तकबीर के कोई कलाम नहीं करते थे। और इस माह में इबादत और नाफेला शबो रोज़ का बेहतरीन एहतेमाम होना चाहिए।

दूसरी किस्म

वह आमाल जो सिर्फ रमज़ान के महीने की रातों में अंजाम दिए जाते है। और इन्में चंद चीज़ें है:

(१) इफ्तार। मु,कहब है के मगरिब की नमाज़ के बाद इफतार करे। लेकिन अगर कमज़ोरी ज्यादा है या दूसरे लोग इंतेज़ार कर रहे हैं तो उस से पहले भी कर सकता है।

२) पाकीज़ा चीज़ से इफतार करे। और बेहतर यह है के हलाल खुरमें से इफतार करे। ताके नमाज़ का सवाब भी चार सौ गुना हो जाए। खुरमा, पानी, रूतब, दूध, हलवा, मिस्र या आबे गरम से इफतार करना बेहतरीन बात है।

३) इफतार के समय इस प्रकार की दुआएं पढे जिनमें से एक यह भी है:

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ.

खुदाया तेरे लिये रोजा रखा और तेरी रोजी से इफतार किया और तुझ पर मैं ने तव्कुल किया।।

ताके हर उस व्यक्ति के बराबर सवाब दे जिसने उस दिन रोज़ा रखा है। अगर दुआ अल्लाहुम्म रब्बन नूरिल अज़ीम पढ ले जिसको सय्यद और कफअमी ने नक्ल किया है तो फिज़लत और ज़्यादा हो जाएगी। रिवायत में है के हज़रत अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) जब इफ्तार करना चाहते थे तो फरमाते थे:

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْنَا وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْنَا فَتَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ

खुदा के नाम से खुदाया हम ने तेरे लिये रोजा रखा और तेरे रिजक से हम ने इफतार किया। इस

४) पहले निवाले के साथ कहे:

اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

को तु कबुल कर ले बेशक तु सुन्ने वाला और अलीम है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ اِغْفِرْ لِيْ

बनाम खुदाये रहमान व रहीम अए वसी बखश्ने वाले मुझ को बखश दे।

ताके परवरदिगार उसको माफ कर दे। रिवायत में है के परवरदिगार माहे रमज़ान के हर दिन के आखिर में दस लाख व्यक्तियों को जहन्नम की आग से आज़ाद करता है। लेहाज़ा दुआ करे के उसे भी उन्हीं लोगों में से करार दे दें।
५) इफतार के समय सूरह कद्र की तिलावत करे।
६) इफतार के समय सदका दे और लोगों को इफतार कराए चाहे एक खुरमे और एक घूँट पानी से हो के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) से रिवायत है के जो व्यक्ति किसी रोज़ेदार को इफ्तार कराए उसको भी रोज़ेदार जैसा ही सवाब मिलेगा। और रोज़ेदार के सवाब में भी कमी न होगी। इसके अलावा इफ्तार से जो कुव्वत पैदा होगी और इस से जो आमाल अंजाम पाएंगे उसगा सवाब भी मिलेगा।
अल्लामा हिल्ली ने रिसाला - सादिया में इमाम जाफर सादिक (अ.स.) से नक्ल किया है के अगर कोई मोमिन किसी मोमिन को माहे रमज़ान में एक निवाला भी खिला देगा तो परवरदिगार उसे तीस गुलाम आज़ात करनेका सवाब अता फरमाएगा और बारगाहे इलाही में उसकी दुआ मुस्तजाब होगी।
सात: हर रात में हज़ार बार सूरह कद्र की तिलावत करे।
आठ: हर रात सौ बार सूरह दोखान की तिलावत करे।
नौ: सय्यद ने रिवायत की है के हर रात रमज़ान के महीने में अगर यह दुआ पढे तो चालीस साल के गुनाह माफ हो जाएंगे।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ شَهْرِ رَمَضَانَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ فِیْهِ الْقُرْاٰنَ وَافْتَرَضْتَ

खुदाया अए माहे रमजान के मालिक जिसने कुरआन को उतारा है और अपने बंदो पर रोजा

عَلٰی عِبَادِكَ فِیْهِ الصِّیَامَ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ ارْزُقْنِیْ حَجَّ

वाजिब किया है। मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाजिल फरमा और हमें हज ए बैतुल्लाह

بَیْتِكَ الْحَرَامِ فِیْ عَامِیْ هٰذَا وَفِیْ كُلِّ عَامٍ وَاغْفِرْ لِیْ تِلْكَ الذُّنُوْبَ

की तौफीक अता फरमा इस साल और हर साल हमारे अजीम गुनाहों को माफ कर दे कि ऐसे

الْعِظَامَ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُهَا غَیْرُكَ یَا رَحْمٰنُ یَا عَلَّامُ.

गुनाहों को तेरे अलावा कोई माफ नही कर सकता है अए खुदाये रहमान अए खुदाये अल्लाम।

दस: इस दुआ के बाद हर रात दुआ हज पढे, जो पहली किस्म के आमाल में गुज़र चुकी है।

ग्यारह: रमज़ान के महीने की हर रात में यह दुआ पढे जो इमामे ज़माना (अ.त.फ.श.) से नक्ल की गई है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَفْتَتِحُ الثَّنَآءَ بِحَمْدِكَ وَ اَنْتَ مُسَدِّدٌ لِلصَّوَابِ

खुदाया मै तेरी सना का आगाज. तेरे हमद से करता हुँ और तेरे एहसान से हक व सवाब की राह तलास कर

بِمَنِّكَ وَ اَیْقَنْتُ اَنَّكَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِیْنَ فِیْ مَوْضِعِ الْعَفْوِ وَ

रहा हाँ और मै ने यकीन कर लिया है के तू सब से ज्यादा रहेम करने वाला है। मोकाम अफु और रहमत मे

الرَّحْمَةِ وَ اَشَدُّ الْمُعَاقِبِیْنَ فِیْ مَوْضِعِ النَّكَالِ وَالنَّقِمَةِ وَ

और सब से ज्यादा ईनतेकाम लेने वाला है। अकाब और इंतेकाम के मुकाम में और बुजु.र्ग तरीन जब्बार है।

اَعْظَمُ الْمُتَجَبِّرِيْنَ فِيْ مَوْضِعِ الْكِبْرِيَآءِ وَ الْعَظَمَةِ اَللّٰهُمَّ

किबरेयाई और अजमत के मोकाम में खुदाया तु ने मुझको इजाजत दी है। दुआ और सवाल की तो ऐ सून्नेवाले

اَذِنْتَ لِيْ فِيْ دُعَائِكَ وَ مَسْئَلَتِكَ فَاسْمَعْ يَا سَمِيْعُ مِدْحَتِيْ وَ

मेरी मदहा को सून ले और मेरी दावत को कुबुल कर ले। ऐ रहीम और मेरी लगजीश को संभाल, ऐ गफुर ऐ

اَجِبْ يَارَحِيْمُ دَعْوَتِيْ وَاَقِلْ يَا غَفُوْرُ عَثْرَتِيْ فَكَمْ يَا اِلٰهِيْ مِنْ

मेरे माबुद कितने ही गमो को तू ने दूर किया है। कितने ही मसाएल को ज.एल किया है। और कितनी

كُرْبَةٍ قَدْ فَرَّجْتَهَا وَ هُمُوْمٍ قَدْ كَشَفْتَهَا وَ عَثْرَةٍ قَدْ اَقَلْتَهَا وَ

लगल्जीशो को बखश दिया है। और रहमत को फैयलाया है। और बलाओ कि जनजीरों को खोला है। तमाम

رَحْمَةٍ قَدْ نَشَرْتَهَا وَ حَلْقَةِ بَلَاءٍ قَدْ فَكَكْتَهَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

हमद उस खुदा के लिए है जिसका कोई साथी और फरज.न नाही। ना उसकी बादसाहत में कोई शरीक है। और

لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَ

उसकी कूदरते कामला यादो मददगार से बेनेयाज है। वो तकबीर का सजावार है। सारी हमद खुदा के लिए है।

لَمْ يَكُنْ لَهٗ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بِجَمِيْعِ

उसकी तमाम हमद के साथ उसकी नेमतों पर हमद खुदा के लिए है। जिसकी बादशाहत में कोई मोखालेफत

مَحَامِدِهٖ كُلِّهَا عَلٰى جَمِيْعِ نِعَمِهٖ كُلِّهَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَا مُضَآدَّ

नही है। और जिसकी अमर में कोई खसम नही। हमद उस खुदा के लिए है। जिसका उसकी मखलूक में कोई

لَهٗ فِیْ مُلْکِهٖ وَلَا مُنَازِعَ لَهٗ فِیْ اَمْرِهٖ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَا شَرِیْكَ

शरीक नही है। और जिसकी अज.मत में उसका कोई मोशाबाह नही है। हमद उस खुदा के लिए है जिसका

لَهٗ فِیْ خَلْقِهٖ وَ لَا شَبِیْهَ لَهٗ فِیْ عَظَمَتِهٖ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْفَاشِیْ فِی

हमद और अमर और हमद मखलूक में नाफीज.है जिसकी बुजूगी करम से जा.हीर है। और जिस का हाथ

الْخَلْقِ اَمْرُهٗ وَ حَمْدُهٗ الظَّاهِرِ بِالْكَرَمِ مَجْدُهٗ الْبَاسِطِ بِالْجُوْدِ

बखशीश के लिए कूशादा है। जिसके खज.ाने मे कोई कमी नही होती। और अता कि कसरत उसमे सेवाए

يَدَهُ الَّذِیْ لَا تَنْقُصُ خَزَآئِنُهٗ وَ لَا تَزِیْدُهٗ كَثْرَةُ الْعَطَآءِ اِلَّا

जूदो करम के और कुछ ज्यादा नही करती। बेशक वो गालीब और अता करने वाला है। खूदाया मै तूझ से

جُوْدًا وَ كَرَمًا اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِیْزُ الْوَهَّابُ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ

सवाल करता हू अपनी बहोत सी हाजतों में से कम का जब के मै उसकी जानिब ज्यादा हाजतमंद हू। और तू

قَلِیْلًا مِنْ كَثِیْرٍ مَعَ حَاجَةٍ بِیْ اِلَیْهِ عَظِیْمَةٍ وَ غِنَاكَ عَنْهُ

उस से अज.ल से बेनेयाज. है। और वो मेरे नज.दीक बहोत ज्यादा है। और तेरे लिए उसका पूरा करना बहोत

قَدِیْمٌ وَ هُوَ عِنْدِیْ كَثِیْرٌ وَ هُوَ عَلَیْكَ سَهْلٌ یَسِیْرٌ اَللّٰهُمَّ اِنَّ

आसान है। खूदाया तेरी मेरे गूनाहों की बखशीश और गलती से दर गूज.र और मेरे जूलम से माफी तेरी मेरे

عَفْوَكَ عَنْ ذَنْبِیْ وَ تَجَاوُزَكَ عَنْ خَطِیْئَتِیْ وَ صَفْحَكَ عَنْ

आमाल की परदापोशी और मेरे कसीर जूरम के बावजूद तेरी बूरद दारी ने जो मै ने जानबूज कर या गलती से

ظُلْمِیْ وَ سِتْرَكَ عَلٰی قَبِیْحِ عَمَلِیْ وَ حِلْمَكَ عَنْ كَثِیْرِ جُرْمِیْ

किया मुझ को लालच्। मे डाल दिया के मै तुझ से सवाल करू उस चीज. का जिसका मै मुस्सहक नही हू। तू

عِنْدَ مَا كَانَ مِنْ خَطَائِیْ وَ عَمْدِیْ اَطْمَعَنِیْ فِیْ اَنْ اَسْئَلَكَ مَا لَا

ने अपनी रहमत से मुझ को रज.क दिया। और मुझ को अपनी कुदरत दिखाई और मुझको पहचनवाया। अपनी

اَسْتَوْجِبُهٗ مِنْكَ الَّذِیْ رَزَقْتَنِیْ مِنْ رَحْمَتِكَ وَ اَرَیْتَنِیْ مِنْ

कुबुलियत को तो मै ने मुतमइन होकर तुझ को पूकारा और इंसो रगबत के साथ बिला खौफ व खतर और

قُدْرَتِكَ وَ عَرَّفْتَنِیْ مِنْ اِجَابَتِكَ فَصِرْتُ اَدْعُوْكَ اٰمِنًا وَ

हय्यत के तुझ से सवाल करता हू जिसका भी मै ने तेरी जानीब ईरादा किया है और अगर तू ने मेरी हाजत के

اَسْئَلُكَ مُسْتَانِسًا لَا خَائِفًا وَ لَا وَجِلًا مُدِلًّا عَلَیْكَ فِیْمَا

पूरा करने मे देर की तो जहालत से मै ने ओताब किया। और शायद के जिसकी ताखीर की है वो मेरे लिए

قَصَدْتُ فِیْهِ اِلَیْكَ فَاِنْ اَبْطَاَ عَنِّیْ عَتَبْتُ بِجَهْلِیْ عَلَیْكَ وَلَعَلَّ

बहतर हो। क्योंके तू उमूर का अनजाम देने वाला है। मै ने नही देखा किसी करीम मालीक को जो तुझ से ज्यादा

الَّذِیْ اَبْطَا عَنِّیْ هُوَ خَیْرٌ لِیْ لِعِلْمِكَ بِعَاقِبَةِ الْاُمُوْرِ فَلَمْ اَرَ

सबर करने वाला हो लईम बनदे पर। ऐ परवरदीगार बेशक तू ने मूझको बुलाया और मै ने तुझ से रू गरदानी

مَوْلًی كَرِیْمًا اَصْبَرَ عَلٰی عَبْدٍ لَئِیْمٍ مِنْكَ عَلَیَّ یَا رَبِّ اِنَّكَ

की और तू ने मोहब्बत की। और मै ने तुझ से बुगज. अना रखा। और तू मेरे साथ दोस्ती रखता है तो मै उसको

تَدْعُوْنِيْ فَاُوَلِّيْ عَنْكَ وَ تَتَحَبَّبُ اِلَيَّ فَاَتَبَغَّضُ اِلَيْكَ وَ تَتَوَدَّدُ

कुबुल नही करता हु। गोया के मेरा तेरे उपर हक है और उसके बावजुद उसने नही रोका तुझ को मेरे उपर रहम

اِلَيَّ فَلَا اَقْبَلُ مِنْكَ كَاَنَّ لِيَ التَّطَوُّلَ عَلَيْكَ فَلَمْ يَمْنَعْكَ

करने , एहसान करने , और फजल करने से अपने वजुद व करम से , तू रहम कर अपने जाहील बंदे पर, और

ذٰلِكَ مِنَ الرَّحْمَةِ لِيْ وَ الْاِحْسَانِ اِلَيَّ وَ التَّفَضُّلِ عَلَيَّ بِجُوْدِكَ وَ

उस पर अपने फजल व एहसान से, बेशक तू सखी और करीम है। सारी तारीफ उस खुदा के लिए है जो मुलक

كَرَمِكَ فَارْحَمْ عَبْدَكَ الْجَاهِلَ وَ جُدْ عَلَيْهِ بِفَضْلِ اِحْسَانِكَ

का बादशा है। कशतीयों को चलाने वाला, हवाओं का मसखर करने वाला है। सुबहों को जाहीर करने वाला

اِنَّكَ جَوَادٌ كَرِيْمٌ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مَالِكِ الْمُلْكِ مُجْرِي الْفُلْكِ

है। और रोज. जजा. का हाकीम है। आलमीन का परवरदीगार है। हमद है खूदा के लिए उस के हिलम पर

مُسَخِّرِ الرِّيَاحِ فَالِقِ الْاِصْبَاحِ دَيَّانِ الدِّيْنِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

ईलम के बावजूद हमद है खुदा के लिए उसकी माफी पर कुदरत के बावजूद, सारी तारीफ खुदा के लिए है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى حِلْمِهٖ بَعْدَ عِلْمِهٖ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى عَفْوِهٖ بَعْدَ

तुलानी बुर्दबारी पर उसके गज.ब के मोकाम मे और वो कादीर है जिस पर चाहे , हम्द खुदा के लिए है जो

قُدْرَتِهٖ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى طُوْلِ اَنَاتِهٖ فِيْ غَضَبِهٖ وَ هُوَ قَادِرٌ عَلٰى

मखलुक का खालीक है। रिज. का फैलाने वाला है। सुबहा का जा.हीर करने वाला है। जलालत व बुजूर्गी

مَا يُرِيْدُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ خَالِقِ الْخَلْقِ بَاسِطِ الرِّزْقِ فَالِقِ الْاِصْبَاحِ

वाला है। फजो. एहसान करने वाला है। वो खुदा जो दूर हो इतना के देखा नही जाता और करीब है इतना के

ذِى الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ وَ الْفَضْلِ وَ الْاِنْعَامِ الَّذِىْ بَعُدَ فَلَا

पोशीदा राजो. पर नाजी.र है। वो बरकत और बुलंदी वाला है। हम्द खुदा के लिए है जिसका कोई नज. करने

يُرٰى وَ قَرُبَ فَشَهِدَ النَّجْوٰى تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ

वाला नही। जो खुसामत करे और कोई मिसल नही है के इस के जैसा हो और न कोई मददगार है कि उसकी

لَيْسَ لَهٗ مُنَازِعٌ يُعَادِلُهٗ وَ لَا شَبِيْهٌ يُشَاكِلُهٗ وَ لَا ظَهِيْرٌ

मदद करे। उसकी इज.जत के मोकाबले में तमाम इज़्ज़तदार मगलुब है और उसकी अज.मत के मोकाबले मे

يُعَاضِدُهٗ قَهَرَ بِعِزَّتِهِ الْاَعِزَّآءَ وَ تَوَاضَعَ لِعَظَمَتِهِ الْعُظَمَآءُ

तमाम अजमत वाले तवाजे किए है वो पहूँचा हूआ है अपनी कुदरत से जहॉ भी चाहे हम्द है खुदा के लिए के

فَبَلَغَ بِقُدْرَتِهٖ مَا يَشَآءُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ يُجِيْبُنِىْ حِيْنَ اُنَادِيْهِ وَ

जब मै उसको बुलाता हू तो जवाब देता है और मेरे हर ऐब को छूपा लेतो है जब के मै उस की नाफरमानी करता

يَسْتُرُ عَلَىَّ كُلَّ عَوْرَةٍ وَ اَنَا اَعْصِيْهِ وَ يُعَظِّمُ النِّعْمَةَ عَلَىَّ فَلَا

रहा और उसने अज.ीम नेमत अता की तो मै ने उसका शुकर नही अदा किया। पस कितनी ही अता और

اُجَازِيْهِ فَكَمْ مِنْ مَوْهِبَةٍ هَنِيْئَةٍ قَدْ اَعْطَانِىْ وَ عَظِيْمَةٍ مَخُوْفَةٍ

बखशीश उस ने मुझ को अता कि और कितने अज़ीम खतरनाक उमूर के लिए मेरे वासते काफी हो और

قَدْ كَفَانِيْ وَ بَهْجَةٍ مُوْنِقَةٍ قَدْ اَرَانِيْ فَاُثْنِيْ عَلَيْهِ حَامِدًا وَ

तअज्ज़ूब खेज. खुशीयों को मुझको दिखया तो मै उस पर उसकी हम्द करता हू। और उसका जि.कर करता हू

اَذْكُرُهٗ مُسَبِّحًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَا يُهْتَكُ حِجَابُهٗ وَ لَا يُغْلَقُ

तसबीह करते हूए। हम्द है उस खुदा के लिए के उसका हेजाब उठाया नही जाता है और उसका दरवाजा. बन्द

بَابُهٗ وَ لَا يُرَدُّ سَآئِلُهٗ وَ لَا يُخَيَّبُ اٰمِلُهٗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ يُؤْمِنُ

नही किया जाता है। और उसका साएल पलटाया नही जाता है। और उससे उम्मीद लगाने वाला महरूम नही

الْخَآئِفِيْنَ وَ يُنَجِّي الصَّالِحِيْنَ وَ يَرْفَعُ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَ يَضَعُ

होता। हम्द है खुदा के लिए जो खौफज.दा को अमन देता है। नेक लोगो को निजात देता है। और कमजोरो को

الْمُسْتَكْبِرِيْنَ وَ يُهْلِكُ مُلُوْكًا وَ يَسْتَخْلِفُ اٰخَرِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

बुलंद करता है। और मुसतकबेरीन को पसत करता है। और बादशाहों को हलाक करता है। और दूसरों को

قَاصِمِ الْجَبَّارِيْنَ مُبِيْرِ الظَّالِمِيْنَ مُدْرِكِ الْهَارِبِيْنَ نَكَالِ

उनकी जगह बैठाता है। हम्द है खुदा के लिए जो सरकशो को तोडने वाला जा.लीमों को हलाक करने वाला

الظَّالِمِيْنَ صَرِيْخِ الْمُسْتَصْرِخِيْنَ مَوْضِعِ حَاجَاتِ الطَّالِبِيْنَ

भागने वालों को पालने वाला , जालीमों का सजा. देने वाला, फरयाद करने वालों का फरयादे रस और हाजत

مُعْتَمَدِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ مِنْ خَشْيَتِهٖ تَرْعَدُ

करने वालों की हालत का मरजा और मोमेनीन का मोतमीद है। हम्द है खुदा के लिए जिस के खौफ से

السَّمَآءُ وَ سُكَّانُهَا وَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَ عُمَّارُهَا وَ تَمُوْجُ الْبِحَارُ

आसमान और उस के रहने वाले नाला करते है। और जमीन और उसके रहने वाले लरजा. में है। और दरया

وَ مَنْ يَسْبَحُ فِيْ غَمَرَاتِهَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ هَدَانَا لِهٰذَا وَ مَا كُنَّا

और उसके शनावर जोश मे है। हम्द है खुदा के लिए जिस न हमें हेदायत कि उस दीन कि और अगर खुदा ने

لِنَهْتَدِىَ لَوْلَا اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ يَخْلُقُ وَ لَمْ يُخْلَقْ

हमारी हेदायत न की होती तो हम हेदायत न कर पाते। हम्द है खुदा के लिए जो पैदा करता है। किसी ने उसको

وَ يَرْزُقُ وَ لَا يُرْزَقُ وَ يُطْعِمُ وَ لَا يُطْعَمُ وَ يُمِيْتُ الْاَحْيَآءَ وَ

नही पैदा किया। वो रीज.क देता है। किसी ने उसको रीज.क नही दिया। वो खिलाता है किसी ने उसको नही

يُحْيِى الْمَوْتٰى وَ هُوَ حَىٌّ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

खिलाया। वो जिन्दा को मौत देता है। और मुरदो को जिन्दागी अता करता है। वो जिन्दा है। उस के लिए मौत

قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ وَ اَمِيْنِكَ وَ

नही है। तमाम नेकीयॉ उसके कबजे. मे है। और वो हर चीज. पर कादीर है। खुदाया दूरूद नाजी.ल कर

صَفِيِّكَ وَ حَبِيْبِكَ وَ خِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ وَ حَافِظِ سِرِّكَ وَ

मोहम्मद पर, अपने बन्दे और रसूल और अमीन और मुनतखीब और हबीब और अपनी मखलुक में बेहतरीन

مُبَلِّغِ رِسَالَاتِكَ اَفْضَلَ وَ اَحْسَنَ وَ اَجْمَلَ وَ اَكْمَلَ وَ اَزْكٰى وَ

और अपने राज. के माहाफीज. और अपनी रेसालत के पहूचाने वाले पर, सब से बहतर ,अच्छा,

اَنْمٰی وَ اَطْیَبَ وَ اَطْهَرَ وَاَسْنٰی وَ اَكْثَرَ مَا صَلَّیْتَ وَ بَارَكْتَ وَ

खुबसुरत,कामील,पाकीज., ज्यादा, तैय्यब व ताहीर, बूलंद मरतबा, दुरूद जो तू ने दुरूद भेजा है। और बरकत

تَرَحَّمْتَ وَ تَحَنَّنْتَ وَ سَلَّمْتَ عَلٰی اَحَدٍ مِنْ عِبَادِكَ وَ اَنْبِيَآئِكَ

दी है। और रहमत कि है। और तहनियतो सलाम भेजा है। अपने बंदो मे से किसी एक पर और अपने अम्मीया

وَ رُسُلِكَ وَ صِفْوَتِكَ وَ اَهْلِ الْكَرَامَةِ عَلَيْكَ مِنْ خَلْقِكَ

पर और अपने रसुलों पर और अपने मुतखिब बन्दों पर और अपनी मखलुक में से करामत वालो पर खुदाया

اَللّٰهُمَّ وَ صَلِّ عَلٰی عَلِيٍّ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَصِيِّ رَسُوْلِ رَبِّ

दुरूस नाजील फरमा। अमीररूल मोमेनीन पर और काएनात के रब के रसुल के वसी पर जो तेरे बन्दे और

الْعَالَمِيْنَ عَبْدِكَ وَ وَلِيِّكَ وَ اَخِيْ رَسُوْلِكَ وَ حُجَّتِكَ عَلٰی خَلْقِكَ

वली और तेरे रसुल के भाई और तेरी मखलुक पर तेरी हुज्नत और तेरे अजीम निशानी और अजीम खबर है।

وَ اٰيَتِكَ الْكُبْرٰی وَ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ وَ صَلِّ عَلَی الصِّدِّيْقَةِ

और दूरूद नाजील फरमा सिददीका, ताहेरा पर जो औरतो कि सरदार है। और दुरूद नाजील फरमा सिबतैन

الطَّاهِرَةِ فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ وَ صَلِّ عَلٰی سِبْطَيِ

पर और हेदायात के दो ईमामो हसन व हुसैन अ.स. पर जो जन्नत वालो के जवानों र्वी सरदार है। और दुरूद

الرَّحْمَةِ وَ اِمَامَيِ الْهُدٰی اَلْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ سَيِّدَيْ شَبَابِ

नाजील कर मुसलमानों के ईमाम अली इब्नुल हुसैन और मोहम्मद बिन अली और जाफर बिन मोहम्मद पर

اَهْلِ الْجَنَّةِ وَ صَلِّ عَلٰى اَئِمَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ وَ مُحَمَّدِ

और मुसा इब्ने जाफर और अली इब्ने मुसा और मोहम्मद इब्ने अली और अली इब्ने मोहम्मद और हसन बिन

بْنِ عَلِيٍّ وَ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ وَ مُوْسٰى بْنِ جَعْفَرٍ وَ عَلِيِّ بْنِ مُوْسٰى وَ

अली और उन के जानशिन हादी और मेहदी पर जो तेरे बन्दो पर तेरी हुज्जत है और तेरे अमीन है। तेरे शहर मे

مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ وَ عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ وَ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ وَ الْخَلَفِ الْهَادِى

ज्यादा से ज्यादा दुरूद दाएमी, खुदाया तु दूरूद नाजील फरमा। अपने वली अमर इमाम कायम मुन्तजीर और

الْمَهْدِيِّ حُجَجِكَ عَلٰى عِبَادِكَ وَ اُمَنَآئِكَ فِىْ بِلَادِكَ صَلٰوةً

अदालत का जिन से इनतेजार किया जा रहा है। उन पर और उन को अपने मलायका मुकरराबीन से घेर दे।

كَثِيْرَةً دَآئِمَةً اَللّٰهُمَّ وَ صَلِّ عَلٰى وَلِيِّ اَمْرِكَ الْقَآئِمِ الْمُؤَمَّلِ وَ

और उनकी ताईद कर रूहुल कुदस के जरये। ऐ आलमीन के परवरदीगार खुदाया उनको अपने किताब कि

الْعَدْلِ الْمُنْتَظَرِ وَ حُفَّهُ بِمَلَآئِكَتِكَ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ اَيِّدْهُ بِرُوْحِ

जानीब बुलाने वाला करार दे। और अपने दीन का कायम करने वाला करार दे। और उनको जमीन में अपना

الْقُدُسِ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ الدَّاعِىَ اِلٰى كِتَابِكَ

खलीफा करार दे जैसा के तु ने इस के पहले लोगों को खलीफा बनाया। और उनको दीन की गालीब बना दे

وَ الْقَآئِمَ بِدِيْنِكَ اسْتَخْلِفْهُ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفْتَ

जिस से तु राजी हो गया है। और खौफ को अमन से बदल दे ताके तेरे इबादत बिला शरीक खैरे हो खुदाया

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهٖ مَكِّنْ لَهٗ دِيْنَهُ الَّذِى ارْتَضَيْتَهٗ لَهٗ اَبْدِلْهُ مِنْ

उनको इज़्ज़त अता कर और हमको जहुर से जरये इज़्ज़तदार बना और उनकी मदम कर और उनके जरिय् । से

بَعْدِ خَوْفِهٖ اَمْنًا يَعْبُدُكَ لَا يُشْرِكُ بِكَ شَيْئًا اَللّٰهُمَّ اَعِزَّهٗ وَ

मदद कर और उनकी मोकम्मल गालीब मदद फरमा और आसानी से उनको फतहे दे और अपने पास से

اَعْزِزْ بِهٖ وَانْصُرْهُ وَانْتَصِرْ بِهٖ وَانْصُرْهُ نَصْرًا عَزِيْزًا وَافْتَحْ لَهٗ

सलतनत और कुदरत अता फरमा खुदाया उनके जरिये अपने दीन और अपने नबी की सुन्नत को गालीब बना

فَتْحًا يَسِيْرًا وَاجْعَلْ لَهٗ مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيْرًا اَللّٰهُمَّ

ताके हक की कोई चीज किसी मखलुक से पासिदा और पिनहा न रह जाए। खुदाया मै तेरी तरफ रगबत रखता

اَظْهِرْ بِهٖ دِيْنَكَ وَسُنَّتَ نَبِيِّكَ حَتّٰى لَا يَسْتَخْفِيَ بِشَيْءٍ مِّنَ

हु। ऐसी मोहत्तरम हुकुमत की जिसके जरिये इसलाम और इसलाम वाले इज़्ज़त पाए। और नेफाक और अहले

الْحَقِّ مَخَافَةَ اَحَدٍ مِنَ الْخَلْقِ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَرْغَبُ اِلَيْكَ فِيْ دَوْلَةٍ

नेफाक जलील हो जाएँ। और हम को उसकी हुकूमत हक मे अपनी एताअत मे बुलाने देने वाला करार दे।

كَرِيْمَةٍ تُعِزُّ بِهَا الْاِسْلَامَ وَاَهْلَهٗ وَتُذِلُّ بِهَا النِّفَاقَ وَاَهْلَهٗ وَ

और अपने रास्ते की तरफ कयादत करने वाला करार दे। और हमको दुनिया व आखेरत की बुजूरगी का

تَجْعَلُنَا فِيْهَا مِنَ الدُّعَاةِ اِلٰى طَاعَتِكَ وَالْقَادَةِ اِلٰى سَبِيْلِكَ وَ

अतिया दे। खुदाया जिस हक को तु ने हम को पहूचवा दिया है तु उसपर अमल के लिए भी तैयार कर और

تَرْزُقُنَا بِهَا كَرَامَةَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اَللّٰهُمَّ مَا عَرَّفْتَنَا مِنَ

जिसको हम ने नही पहूचाना है उस तक हम को पहूचा दे। खुदाया उनके जरिये हमारे इनतेशार को इजमा मे

الْحَقِّ فَحَمِّلْنَاهُ وَ مَا قَصُرْنَا عَنْهُ فَبَلِّغْنَاهُ اَللّٰهُمَّ الْمُمْ بِهٖ

बदल दे। और हमारी परागन्दागी की इसला फरमा। और हमारे तफररूका को जोड दे। और हमारी किल्लत

شَعْثَنَا وَ اشْعَبْ بِهٖ صَدْعَنَا وَ ارْتُقْ بِهٖ فَتْقَنَا وَ كَثِّرْ بِهٖ

को कसरत मे बदल दे। और हमारी जील्लत को इज़्ज़त मे तबदील कर, और हमारी नेयाज बन्दी को बे नेयाजी

قِلَّتَنَا وَ اَعْزِزْ بِهٖ ذِلَّتَنَا وَ اَغْنِ بِهٖ عَائِلَنَا وَ اقْضِ بِهٖ عَنْ

मे बदल दे। और हमारे करजा को अदा कर। और हमारे फखर का जबर कर दे। और हमारे नुकस को मसदुद

مَغْرَمِنَا وَ اجْبُرْ بِهٖ فَقْرَنَا وَ سُدَّ بِهٖ خَلَّتَنَا وَ يَسِّرْ بِهٖ عُسْرَنَا وَ

कर दे। और हमारी मुशकिल को आसानी मे बदल दे। और हमारे चेहरे को नुरानी कर दे। और हमारे असिरों

بَيِّضْ بِهٖ وُجُوهَنَا وَ فُكَّ بِهٖ اَسْرَنَا وَ اَنْجِحْ بِهٖ طَلِبَتَنَا وَ انْجِزْ بِهٖ

को आजाद कर दे। और हमारी हाजतों को पुरा कर, हमारे वादों को वफा कर दे। और हमारी दावत को कुबुल

مَوَاعِيدَنَا وَ اسْتَجِبْ بِهٖ دَعْوَتَنَا وَ اَعْطِنَا بِهٖ سُؤْلَنَا وَ بَلِّغْنَا

कर ले। और हमारी तलब को अता फरमा। और हमारी दुनिया व आखेरत की आरजुओं को पुरा कर दे। और

بِهٖ مِنَ الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ آمَالَنَا وَ اَعْطِنَا بِهٖ فَوْقَ رَغْبَتِنَا يَا

हम को हमारी तव्वजो व तलब से ज्यादा अता फरमा। ऐ वो बेहतरीन जात जिस से सवाल किया जाए और

خَيْرَ الْمَسْئُوْلِيْنَ وَ اَوْسَعَ الْمُعْطِيْنَ اشْفِ بِهٖ صُدُوْرَنَا وَ

तमाम अला करने वालो से ज्यादा अता करने वाले उनके जिरये हमारे सिनो को सेफा दे। और हमारे दिलो के

اَذْهِبْ بِهٖ غَيْظَ قُلُوْبِنَا وَاهْدِنَا بِهٖ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ

गुस्से को खत्म कर और हमारी हेदायत फरमा अपनी तव्वजो से हक की तरफ जिस मे एखतेलाफ हो तु

بِاِذْنِكَ اِنَّكَ تَهْدِىْ مَنْ تَشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ وَ انْصُرْنَا

जिसकी चाहता है सेराते मुस्ताकीम की तरफ हेदायत करता हौ और हमारी नुसरत कर अपने दुशमनो और

بِهٖ عَلٰى عَدُوِّكَ وَعَدُوِّنَا اِلٰهَ الْحَقِّ اٰمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَشْكُوْ اِلَيْكَ

हमारे दुशमनो के मुकाबले मे ऐ खुदाए हक दुआ कुबुल कर ले खुदाया मै तेरी बारगाह में शिकायत करता हू

فَقْدَ نَبِيِّنَا صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَ غَيْبَةَ وَلِيِّنَا وَ كَثْرَةَ عَدُوِّنَا

अपने नबी के मौजूद न होने की तेरा दुरूद हो उनपर और उनकी आल पर और अपने वली के गाएब होने की

وَقِلَّةَ عَدَدِنَا وَشِدَّةَ الْفِتَنِ بِنَا وَ تَظَاهُرَ الزَّمَانِ عَلَيْنَا فَصَلِّ

और अपने दुशमनो के ज्यादा होने की और अपनी तादाद के कम होने की और आजमाईश के सखत होने की

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ وَ اَعِنَّا عَلٰى ذٰلِكَ بِفَتْحٍ مِّنْكَ تُعَجِّلُهٗ وَ بِضُرٍّ

और जमाने के अपने उपर गलबे की पस तु दुरूद नाजील फरमा मोहम्मद और आले मोहम्मद परऔर हमारी

تَكْشِفُهٗ وَ نَصْرٍ تُعِزُّهٗ وَ سُلْطَانِ حَقٍّ تُظْهِرُهٗ وَ رَحْمَةٍ مِنْكَ

तमाम उमूर मे मदद कर अपनी हाजत से जल्दी कामयाबी के जरिए और रनज को बर्तफ करने के जरिए और

تُجَلِّلُنَاهَا وَ عَافِيَةٍ مِنْكَ تُلْبِسُنَاهَا بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

नुसरत के गाएब करने के जरिए और हक की बादशाहत वीं जाहीर करने के जरिए और अपने रहमत से जो

बारह: रमज़ान के महीने की हर रात में यह दुआ पढे: الرَّاحِمِيْنَ.

हम सब को शामिल हो और आफीयत के जरिए हम को पीनहा दे अपनी रहमत से ज्यादा रहम करने वाले।

اَللّٰهُمَّ بِرَحْمَتِكَ فِي الصَّالِحِيْنَ فَاَدْخِلْنَا وَ فِيْ عِلِّيِّيْنَ فَارْفَعْنَا وَ

खुदाया मुझको अपनी रहमत से नेक लोगो मे करार दे और मोकामे ईललीम मे हम को बुलंद कर

بِكَأْسٍ مِنْ مَّعِيْنٍ مِنْ عَيْنٍ سَلْسَبِيْلٍ فَاسْقِنَا وَمِنَ الْحُوْرِ الْعِيْنِ

और बहतरीन पानी चश्माह सलसबील से हम को पिला और अपनी रहमत से हूरू अैन से हमारी

بِرَحْمَتِكَ فَزَوِّجْنَا وَمِنَ الْوِالْدَانِ الْمُخَلَّدِيْنَ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٍ

तजवीज कर और बहीशत के अबादी लडको को जो छूपे हूए मोती की तरह है हमार खादिम बना

فَاَخْدِمْنَا وَمِنْ ثِمَارِ الْجَنَّةِ وَلُحُوْمِ الطَّيْرِ فَاَطْعِمْنَا وَمِنْ ثِيَابِ

और जन्नहत के फल और परिन्दों के गोसत से हम को खिला और सनदस, रेशम, इसतबरक के

السُّنْدُسِ وَ الْحَرِيْرِ وَ الْاِسْتَبْرَقِ فَاَلْبِسْنَا وَلَيْلَةَ الْقَدْرِ وَ حَجَّ

लेबास हम को पिन्हा और हम को तोफीक दे शबे कदर और हज बैतुल हराम और अपी राह मे

بَيْتِكَ الْحَرَامِ وَ قَتْلًا فِيْ سَبِيْلِكَ فَوَفِّقْ لَنَا وَ صَالِحَ الدُّعَآءِ

शहादत की और मेरी नेक दूआ और बेहतरीन सवाल को कूबूल फरमा और जब तो औवलीन

وَالْمَسْئَلَةِ فَاسْتَجِبْ لَنَا وَاِذَا جَمَعْتَ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ يَوْمَ

व आखरीन के लागो को जमा करे रोज कयामत तु हम पर रहम फरमा और जहन्न से नेजाद का

الْقِيٰمَةِ فَارْحَمْنَا وَبَرَآئَةً مِّنَ النَّارِ فَاكْتُبْ لَنَا وَفِيْ جَهَنَّمَ فَلَا

परवाना हमारे जिए लिख और जहन्नम मे जनजीर मे कैदी न कर और अपने अजाब औ जिल्लत मे

تَغُلَّنَا وَفِيْ عَذَابِكَ وَهَوَانِكَ فَلَا تَبْتَلِنَا وَمِنَ الزَّقُّوْمِ وَالضَّرِيْعِ

न मुबतेला कर और जहन्नम की जकूम और तलख घास न खिला और शैतानो के साथ हम को

فَلَا تُطْعِمْنَا وَمَعَ الشَّيَاطِيْنَ فَلَا تَجْعَلْنَا وَفِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِنَا

न करार दे और जहन्न की आग मे मुह के बल न डाल और जहन्नम के लेबास और तारकोल को

فَلَا تَكْبُبْنَا وَمِنْ ثِيَابِ النَّارِ وَسَرَابِيْلِ الْقَطِرَانِ فَلَا تُلْبِسْنَا

लेबास हम को न पिन्हा और ऐ वो खुदा के तेरे एलावा कोई माबूद नही है इस हम का वासता के

وَمِنْ كُلِّ سُوْءٍ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ بِحَقِّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ فَنَجِّنَا.

तेरे एलावा कोई माबूद नही है हर बुराई से हम को नेजात अता फरमा।

तेरह: इमाम जाफरे सादिक (अ.स.) से रिवायत है के माहे रमज़ान की हर रात में यह दुआ पढे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَجْعَلَ فِيْمَا تَقْضِيْ وَ تُقَدِّرُ مِنَ الْاَمْرِ

खुदाया मै तुझ से् सवाल करता हू के तु करार दे अपने हकीमाना और हतमी कजा व कदर मे वो

الْمَحْتُوْمِ فِيْ الْاَمْرِ الْحَكِيْمِ مِنَ الْقَضَآءِ الَّذِيْ لَا يُرَدُّ وَ لَا

फैसला जो न रोका जाता है और न बदला जाता है के तु मूझको लिख अपने बैतुल हराम क हज

يُبَدَّلُ اَنْ تَكْتُبَنِيْ مِنْ حُجَّاجِ بَيْتِكَ الْحَرَامِ الْمَبْرُوْرِ حَجُّهُمْ

करने वाला मे जिसका मकबूल है जिनकी कोशिश मशकूर है जिन के गुन्हा बखशे हूए अै और

الْمَشْكُوْرِ سَعْيُهُمُ الْمَغْفُوْرِ ذُنُوْبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ

जिन की बुराईयो से दर गुजर किया गया है और अपने कजा व कदर मे तु करार दे मेरे लिए उमर

وَاَنْ تَجْعَلَ فِيْمَا تَقْضِيْ وَ تُقَدِّرُ اَنْ تُطِيْلَ عُمْرِيْ فِيْ خَيْرٍ وَ عَافِيَةٍ وَ

का तवील होना नेकी और तनरूसती मे और मेरे रिजक मे उसअत कर और मूझको उन मे से

تُوَسِّعَ فِيْ رِزْقِيْ وَ تَجْعَلَنِيْ مِمَّنْ تَنْتَصِرُ بِهٖ لِدِيْنِكَ وَلَا تَسْتَبْدِلْ بِيْ

करार दे जिन के जारिए तु अपने दीन की मदद करता है और मेर एलावा किसी और को बदल

غَيْرِيْ.

न करार देना

चौदह: अनीसुस सालेहीन में लिखा है के रमज़ान महीने की हर शब में यह दुआ पढे:

اَعُوْذُ بِجَلَالِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَنْ يَنْقَضِيَ عَنِّيْ شَهْرُ رَمَضَانَ اَوْ

मै तेरी पनाह चाहता हू तेरी करीम जात की जलालत के जरिए के माहे रमजान मुझ से न गूजरे

يَطْلُعَ الْفَجْرُ مِنْ لَيْلَتِيْ هٰذِهٖ وَ لَكَ قِبَلِيْ تَبِعَةٌ اَوْ ذَنْبٌ تُعَذِّبُنِيْ

या मेरी इस रात की फजर तालए हो और मेरे जिम्मा तेरा कोई फरिजा या गुन्हा हो के तु इस की

عَلَيْهِ.

वजह से मेरे उपर अजाब कर सके।

पंद्रह: कफअमी ने बलदुल अमीन के हाशिए पर सय्यद इब्ने बाकी से नक्ल किया है के मुस्तहब है के रमज़ान महीने की हर शब में दो रकअत नमाज़ अदा करे जिसकी हर रकअत में सूरह हम्द और तीन बार सूरह तौहीद पढे। और सलाम के बाद यह दुआ पढे:

سُبْحَانَ مَنْ هُوَ حَفِيْظٌ لَا يَغْفُلُ سُبْحَانَ مَنْ هُوَ رَحِيْمٌ لَا

पाक व मूनजजा है वो खुदा जो मोहाफिज है गाफील नही होता है पाक व मूनज़्ज़ा है वो खुदा जो

يَعْجَلُ سُبْحَانَ مَنْ هُوَ قَائِمٌ لَا يَسْهُوْ سُبْحَانَ مَنْ هُوَ دَائِمٌ لَا

रहीम है जल्दी नही करता पाक व मूनज़्ज़ा है वो जा कायम है भूलता नही है पाक व मूनज़्ज़ा है वो

يَلْهُوْ.

खुदा जो दायम है गाफिल नही होता।

उसके बाद सात बार तसबीहाते अरबा पढे और आखिर में कहे:

سُبْحَانَكَ سُبْحَانَكَ سُبْحَانَكَ يَا عَظِيْمُ اِغْفِرْ لِيَ الذَّنْبَ الْعَظِيْمَ

पाक है तु पाक है त पाक है तु ऐ अजीम मेरे अजीम गुन्हाओं को बखश दे।

उसके बाद दस बार सलवात पढे। जो व्यक्ति भी यह दो रकअत नमाज़ बजा लाएगा परवरदिगारे आलम उसके सत्तर हज़ार गुनाहों को माफ कर देगा। सोलह: रिवायत में है के जो व्यक्ति भी रमज़ान महीने की हर रात में सुन्नती

नमाज़ में सूरह फत्ह पढेगा वह उस साल महफ़ूज़ रहेगा।
वाज़ेह रहे के जो आमाल रमज़ान महीने की रातों में मुस्तहब है उनमें से हज़ार रकअत नमाज़ भी है पूरे महीने में। जिसको अज़ीम ओलमा और मशाएख ने अपनी फिकह या इबादात की किताबों में दर्ज किया है। उसे पढने की तरकीब के बारे में रिवायात में इख्तेलाफ है। लेकिन इमाम मोहम्मद तकी (अ.स.) से इब्ने अबी करा की रिवायत और किताब गररीया में शेख मुफीद की राय है बल्के मशहूर ओलमा की राय यही है के:
शुरू की दस रातों में और उसके बाद की दस रातों में हर रात बीस रकअत नमाज़ पढे। हर दो रकअत पर एक सलाम इस प्रकार के आठ रकअत नमाज़ मगरिब के बाद और बारह रकअत नमाज़ इशा के बाद।
फिर अंतिम दस रातों में रह शब में तीस रकअत नमाज़ पढे। आठ रकअत नमाज़ मगरिब के बाद और बाईस रकअत नमाज़ इशा के बाद यह सब मिलाकर सात सौ रकअत हो जाएंगी और तीन सौ रकअत तीनों शबहाये कद्र यानी उन्नीसवीं, एक्कीस्वीं और तेइस्वीं रात में पढे के सब मिलाकर हज़ार रकअत हो जाएंगे।
यह नमाज़े दूसरी तरकीब के साथ भी वारिद हुई है। लेकिन इस मकाम पर तफसील और बहस की गुंजाईश नहीं है।
उम्मीद है के अहले खैर इस प्रकार की इबादतों में गफलत से काम न लेंगे और अपने को उसके फज़ाएल से महरूम न रखेंगे।
रिवायत में है के जो व्यक्ति रमज़ान महीने के नवाफिल में हर दो रकअत के बाद यह दुआ पढे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْمَا تَقْضِيْ وَتُقَدِّرُ مِنَ الْاَمْرِ الْمَحْتُوْمِ وَفِيْمَا تَفْرُقُ

खुदाया अपने कजा व कदर और हतमी अमर में मोकर्रर और जो तु जुदा करता है हकीमाना

مِنَ الْاَمْرِ الْحَكِيْمِ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ اَنْ تَجْعَلَنِيْ مِنْ حُجَّاجِ بَيْتِكَ

अमर से शबे कदर मे के मुझको अपने घर बैतुल हराम के हुज्जाज मे करार दे जिन का हज

الْحَرَامِ الْمَبْرُوْرِ حَجُّهُمْ، الْمَشْكُوْرِ سَعْيُهُمْ، الْمَغْفُوْرِ ذُنُوْبُهُمْ

मकबूल और कोशिश मशकूर और जिन का गुन्हा बखशा हूआ है और मै तुझ से सवाल करता

وَ اَسْئَلُكَ اَنْ تُطِيْلَ عُمْرِىْ فِىْ طَاعَتِكَ وَ تُوَسِّعَ فِىْ رِزْقِىْ يَا اَرْحَمَ

हू के मेरी उमर को तुलानी बना दे अपनी एताअत मे और मेरे रिजक को वसी कर दे ऐ सब से

الرَّاحِمِيْنَ.

ज्यादा रहम करने वाले।

तीसरी किस्म

आमाले सहेर माहे मुबारक रमज़ान
यह चंद आमाल हैं:

एक: सहरी खाना। सहरी खाने को तर्क नहीं करना चाहिए। वह एक दाने खुरमा या एक घुंट पानी पीना क्यों न हो। बेहतरीन सहरी खुरमा और सत्तू है। रिवायत में हैं के परवरदिगार और मलाएका सलवात भेजते हैं उन लोगों पर जो सेहर के समय इस्तेगफार करते हैं और सहरी खाते हैं।

दो: सहर और इफ्तार के समय सूरह कद्र पढे के इन दोनों वक्तों के दरमीयान यह सवाब रखता है जेसे कोई राहे खुदा में शहीद हो जाए।

तीन: यह दुआ-ए-अज़ीमुश शान पढे जो इमाम रेज़ा (अ.स.) से नक्ल हुई है। और आप ने फरमाया के यह दुआ इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) माहे रमज़ान में सहर के समय पढा करते थे।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ بَهَآئِكَ بِاَبْهَاهُ وَ كُلُّ بَهَآئِكَ بَهِىٌّ

खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे नूर के नूरानी तरीन मरतबाह के जरिए जब के तेरे तमाम मरातिब

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِبَهَآئِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ

नूरानी है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे तमाम मरातिब नूरानियात के वासते से। खुदाया मै सवाल

جَمَالِكَ بِاَجْمَلِهٖ وَ كُلُّ جَمَالِكَ جَمِيْلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ

करता हू तेरे नेक तरीन जमाल के वासते से जब के तेरे कूल जमाल खुबसूरत है। खुदाया मै तेरे कूल जमाल

بِجَمَالِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ جَلَالِكَ بِاَجَلِّهٖ وَ كُلُّ

के वासते से सवाल करता हू। खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे आली तरीन जलाल के वासते से जब

جَلَالِكَ جَلِيْلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِجَلَالِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ

के तेरा कूल जलाल बूलंद है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे कूल जलाल के वासते से खुदाया मै

اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ عَظَمَتِكَ بِاَعْظَمِهَا وَ كُلُّ عَظَمَتِكَ عَظِيْمَةٌ

तुझ से सवाल करता हू तेरे बूजूरग तरीन मरातिब अजमत के वासते से दरानहा ले के तेरे तमाम मरातिब

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِعَظَمَتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ

अजमत अजीम है। खूदाया मै तेरे तमाम मरातिब अजमत के जारिए सवाल करता हू। खूदाया मै तुझ से

نُوْرِكَ بِاَنْوَرِهٖ وَ كُلُّ نُوْرِكَ نَيِّرٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِنُوْرِكَ

सवाल करता हू तेरे नूर के रौशन तरीन मरातिब के जरिए दरानहा लिए के तेरा नूर रौशन है खुदाया मै तुझ

كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ رَحْمَتِكَ بِاَوْسَعِهَا وَ كُلُّ رَحْمَتِكَ

से सवाल करता हू तेरे कूल नूक के वासते से खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरी उसअत तरीन रहमत

وَاسِعَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِرَحْمَتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

के वासते से जब के तेरी कूल रहमत वसीह है खुदाया मै तूझ से सवाल करता हू तेरी कूल रहमत के वासते

مِنْ كَلِمَاتِكَ بِاَتَمِّهَا وَكُلُّ كَلِمَاتِكَ تَامَّةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

से खुदाया मै तूझ से सवाल करता हू तेरे कामील तरीन कलमात के वासते से जब के तेरे कूल कलमात

بِكَلِمَاتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ كَمَالِكَ بِاَكْمَلِهِ وَكُلُّ

मोकम्मल है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे कूल कलमात के जारिए खुदाया मै तुझ से सवाल करता

كَمَالِكَ كَامِلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِكَمَالِكَ كُلِّهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ

हू तेरे हाली तरीन कमाल के वासते से जब के तरे कूल कमाले आली है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू

اَسْئَلُكَ مِنْ اَسْمَائِكَ بِاَكْبَرِهَا وَكُلُّ اَسْمَائِكَ كَبِيْرَةٌ اَللّٰهُمَّ

तेरे कूल कमला के वासते से। खुदाया मै तूझ से सवाल करता हू तेरे बूजूरग तरीन नमो के वासते से जब

اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاَسْمَائِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ عِزَّتِكَ

के तरे कूल नाम बूजूरग है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे कूल नामो के वासते से खुदाया मै तुझ से

بِاَعَزِّهَا وَكُلُّ عِزَّتِكَ عَزِيْزَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِعِزَّتِكَ كُلِّهَا

सवाल करता हू तेरे बूलंद तरीन ईज्ज़त के वासते से जब के तेरी कूल इज्ज़त बंलंद है खुदया मै तुझ से सवाल

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ مَشِيَّتِكَ بِاَمْضَاهَا وَكُلُّ مَشِيَّتِكَ

करता हू तेरी कूल इज्ज़त के वासते से खुदाया मै तूझ से सवाल करता हू तेरी पाफिज तरीन मसिया के वासते

مَاضِيَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْـَٔلُكَ بِمَشِيَّتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ

से जब के तेरी कूल मसियात नाफिज है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरी कूल की कूल मसियत के

اَسْـَٔلُكَ مِنْ قُدْرَتِكَ بِالْقُدْرَةِ الَّتِى اسْتَطَلْتَ بِهَا عَلٰى كُلِّ

वासते से। खुदाया मै तुझ से सवाल करता तेरी इस कदर के वासते से जिस के जारिए तु हर चीज पर कादीर

شَىْءٍ وَ كُلُّ قُدْرَتِكَ مُسْتَطِيْلَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْـَٔلُكَ بِقُدْرَتِكَ

हो गया। जब के तेरी कूल कूदरत हावी है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरी कूल की कूदरत के वासते

كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْـَٔلُكَ مِنْ عِلْمِكَ بِاَنْفَذِهٖ وَ كُلُّ عِلْمِكَ

से खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे नाफिज तरीन इलम के वासते से जब के तेरा कूल इलम नाफिज है

نَافِذٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْـَٔلُكَ بِعِلْمِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْـَٔلُكَ

खुदाया मै सवाल करता हू तेरे कूल इलम के वासते से खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे पसंदीदा तरीन

مِنْ قَوْلِكَ بِاَرْضَاهُ وَ كُلُّ قَوْلِكَ رَضِىٌّ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْـَٔلُكَ

कौल के वासते से जब के तेरा कूल कौल पसंदीदा है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे कूल कौल के

بِقَوْلِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْـَٔلُكَ مِنْ مَسَآئِلِكَ بِاَحَبِّهَا اِلَيْكَ

वासले से खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरी महबूब तरीन हाजतो के वासते से जब के तमाम हाजतें तुझे

وَ كُلُّهَا اِلَيْكَ حَبِيْبَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْـَٔلُكَ بِمَسَآئِلِكَ كُلِّهَا

महबूब है। खुदाया मै सवाल करता हू तुझ से तमाम हाजतों के वासते से जो पूरा कर दिया है खुदाया मै तुझ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ شَرَفِكَ بِاَشْرَفِهٖ وَ كُلُّ شَرَفِكَ شَرِيْفٌ

से सवाल करता हू तेरे शरीफ तरीन मरातिब का जब के हर शरफ शरिफ है। खुदाया मै तुझ से सवाल करता

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِشَرَفِكَ كُلِّهٖ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ

हू तेरे तमाम मरातिब शराफत का। खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे दाएमे बादशाहत के हक के जारिए

سُلْطَانِكَ بِاَدْوَمِهٖ وَ كُلُّ سُلْطَانِكَ دَائِمٌ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ

जब के तेरी कूल बादशाहत दायमी है। खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरी कूल की कूल बादशाहत के

بِسُلْطَانِكَ كُلِّهٖ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ مُلْكِكَ بِاَفْخَرِهٖ وَ كُلُّ

वासते से। खुदाया मै तूझ से सवाल करता हू तेरे बदतरीन मलक के वासते से और जब के तेरा हर मलक

مُلْكِكَ فَاخِرٌ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِمُلْكِكَ كُلِّهٖ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ

बहतरीन हे खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू के तेरे कूल के कूल मलक के वासते से। खुदाया मै तुझ से

اَسْئَلُكَ مِنْ عُلُوِّكَ بِاَعْلَاهُ وَ كُلُّ عُلُوِّكَ عَالٍ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ

सवाल करता हू तेरे बूलंद तरीन मरातिब के वासते से जब के तेरे तमाम मरातिब बुलंद है। खुदाया मै तुझ से

اَسْئَلُكَ بِعُلُوِّكَ كُلِّهٖ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ مَنِّكَ بِاَقْدَمِهٖ

सवाल करता हू तेरे तमाम बुलंद तरीन मोकामात के वासते से। खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे कदीम

وَ كُلُّ مَنِّكَ قَدِيْمٌ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِمَنِّكَ كُلِّهٖ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ

तरीन एहसान के वासते से और तेरा हर एहसान कदीम है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू। खुदाया मै तुझ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ مِنۡ آیَاتِكَ بِاَكۡرَمِهَا وَ كُلُّ اٰیَاتِكَ كَرِیۡمَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ

से सवाल करता हू तेरे तमाम एहसान का। खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरी करीम तरीन निशानियो

اَسۡئَلُكَ بِآیَاتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ بِمَا اَنۡتَ فِیۡهِ مِنَ

के वासते से जब के तेरी कूल निशानिया करीम है। खुदाया मै तुझ से वाल करता हू तेरी कूल आयतो र्वी

الشَّأۡنِ وَالۡجَبَرُوۡتِ وَ اَسۡئَلُكَ بِكُلِّ شَأۡنٍ وَحۡدَهٗ وَ جَبَرُوۡتٍ

वासते से। खुदाया मै सवाल करता हू तेरे उस चीज के वासते से जिस मे तेरी निशान और जबरूत जमा है।

وَحۡدَهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ بِمَا تُجِیۡبُنِیۡ بِهٖ حِیۡنَ اَسۡئَلُكَ

मै सवाल करता हू हर तन्हा शान और हर तन्हा जबरूत के वासते से खुदाया मै सवाल करता हू तुझ से उस

فَاَجِبۡنِیۡ یَا اَللّٰهُ.

चीज के वासते से के अगर उस के जरिए तुझ को बूलाउू तो तू कूबूल करता है पस तू कूबूल कर ले ऐ खूदा।

उसके बाद जो चाहे हाजत तलब करे।

चार: मिस्बाह शेख में अबु हमज़ा की रिवायत है के इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) माहे रमज़ान में रात के बेश्तर हिस्से में नमाज़ें अदा फरमाते थे। और जब सहेर का समय हो जाता था तो यह दुआ पढते थे:

اِلٰهِیۡ لَا تُؤَدِّبۡنِیۡ بِعُقُوۡبَتِكَ وَلَا تَمۡكُرۡ بِیۡ فِیۡ حِیۡلَتِكَ مِنۡ اَیۡنَ لِیَ الۡخَیۡرُ

खुदाया मुझ को अपनी सजा से बा अदब न बना और अपनी तदबीर मे मुझे धोका मे न रहने दे और मुबतेला

يَا رَبِّ وَلَا يُوجَدُ إِلَّا مِنْ عِنْدِكَ وَمِنْ أَيْنَ لِيَ النَّجَاةُ وَلَا تُسْتَطَاعُ

न कर। ऐ परवरदीगार मेरे लिए कहाॅ नेकी है जब के खैर तेरे एलावा किसी के पास नही पाया जाता है और मेरे

إِلَّا بِكَ لَا الَّذِي أَحْسَنَ اسْتَغْنَى عَنْ عَوْنِكَ وَرَحْمَتِكَ وَلَا الَّذِي

लिए कहाॅ नेजात है जब के तेरी महरबानी के एलावा नेजात मुमकीन नही है, ऐ खुदा नही है वो शखस जिस

أَسَاءَ وَاجْتَرَءَ عَلَيْكَ وَلَمْ يُرْضِكَ خَرَجَ عَنْ قُدْرَتِكَ يَا رَبِّ يَا رَبِّ

ने नेकी की है के वो तेरी मदद और रहमत से मुसतसना हो जाए और नही हे वो शखस जो बुराई करे और तेरे

इतनी बार कहे के सांस टूट जाए फिर कहे: يَا رَبِّ.....

मुकाबले मे जुरअत करे और तुझ को राजी न करे के तेरी कुदरत से निकल जाए। ऐ मेरे रब। मेरे रब। मेरे रब।

بِكَ عَرَفْتُكَ وَأَنْتَ دَلَلْتَنِي عَلَيْكَ وَدَعَوْتَنِي إِلَيْكَ وَلَوْ لَا

मै ने तुझ को तेरे जरिए पहचाना और तु ने अपने वजुद पर मेरी रहनुमाई की और अपनी तरफ मुझको

أَنْتَ لَمْ أَدْرِ مَا أَنْتَ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَدْعُوهُ فَيُجِيبُنِي وَإِنْ

बुलाया। अगर तु न होता तो मै न जानता के तु कौन है। हमद है खुदा के लिए जिसको मै बुलाता हू और

كُنْتُ بَطِيئًا حِينَ يَدْعُونِي وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَسْأَلُهُ

वो जवाब देता है। अगर चे मै काहेली और सूस्ती करता हू जब वो मुझको बुलाता है और हमद है उस

فَيُعْطِينِي وَإِنْ كُنْتُ بَخِيلًا حِينَ يَسْتَقْرِضُنِي وَالْحَمْدُ لِلَّهِ

खुदा के लिए के उस से मै सवाल करता हु तो वो जवाब देता है। जब के मै बुखल करता हू जब के वो

الَّذِىْ اُنَادِيْهِ كُلَّمَا شِئْتُ لِحَاجَتِىْ وَ اَخْلُوْ بِهٖ حَيْثُ شِئْتُ

करज चाहता है। और हमद है उस खुदा के लिए के उसको जब मै चाहता हु बुलाता हू और मै उससे

لِسِرِّىْ بِغَيْرِ شَفِيْعٍ فَيَقْضِىْ لِىْ حَاجَتِىْ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَا

अपने राज के लिए तखलिया करता हू जहा चाहो बेगैर शफीए के तो वो मेरी हाजत को पुरा करता है।

اَدْعُوْ غَيْرَهٗ وَلَوْ دَعَوْتُ غَيْرَهٗ لَمْ يَسْتَجِبْ لِىْ دُعَآئِىْ وَالْحَمْدُ

और हमद है उस खुदा के लिए जिस के एलावा से उम्मीद नही लगाता हू और अगर मै उस के गैर को

لِلّٰهِ الَّذِىْ لَا اَرْجُوْ غَيْرَهٗ وَلَوْ رَجَوْتُ غَيْرَهٗ لَاَخْلَفَ رَجَآئِىْ

बुलाता हू तो वो मेरी दुआ को कुबुल न करता और हमद है उस खुदा के लिए जिस ने मुझ को अपने

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ وَكَلَنِىْ اِلَيْهِ فَاَكْرَمَنِىْ وَلَمْ يَكِلْنِىْ اِلَى

उपर छोड। तो मुझ को मोकररम किया और दुसरो के तरफ मुझ् को नही छोड। के वो मुझको जलील

النَّاسِ فَيُهِيْنُوْنِىْ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ تَحَبَّبَ اِلَىَّ وَهُوَ غَنِىٌّ عَنِّىْ

करे और हमद खुदा के लिए जिस ने मुझ से मोहब्बत की जब के वो मुझ से मुसतगना है। और हमद

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ يَحْلُمُ عَنِّىْ حَتّٰى كَاَنِّىْ لَا ذَنْبَ لِىْ فَرَبِّىْ اَحْمَدُ

खुदा के लिए जो मुझ पर हीलम व बा्रदबारी करता हे जैसे के मेरे उपर कोइ्र गुनाह नही है तो मेरा रब

شَىْءٍ عِنْدِىْ وَاَحَقُّ بِحَمْدِىْ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَجِدُ سُبُلَ الْمَطَالِبِ

सब से ज्यादा महबुब चीज है और हमद का ज्यादा मुसतहक है खुदाया मै हाजतो की राहों को तेरी तरफ

اِلَيۡكَ مُشۡرَعَةً وَ مَنَاهِلَ الرَّجَآءِ اِلَيۡكَ (لَدَيۡكَ) مُتۡرَعَةً وَ

खुला पाता हु और उम्मीद के चश्मो को तररी तरफ पु देखता हु और तेरे फजल की मदद तलब करता

الۡاِسۡتَعَانَةَ بِفَضۡلِكَ لِمَنۡ اَمَّلَكَ مُبَاحَةً وَ اَبۡوَابَ الدُّعَآءِ

जो उसके लिए तुझ से आरजू लगाए आसान है और तेरी तरफ दुआ के दरवाजे फरयाद करने वालो के

اِلَيۡكَ لِلصَّارِخِيۡنَ مَفۡتُوۡحَةً وَ اَعۡلَمُ اَنَّكَ لِلرَّاجِيۡ (حِيۡنَ)

लिए खुले हूए है और मै जानता हू के तु उम्मीदवारो की हाजत पुरी करने के लिए तैयार हे और परेशान

بِمَوۡضِعِ اِجَابَةٍ وَلِلۡمَلۡهُوۡفِيۡنَ بِمَرۡصَدِ اِغَاثَةٍ وَاَنَّ فِي اللَّهۡفِ اِلٰى

हालो का मोहाफीज है और तेरे जूद के तरफ तव्वजोह करने मै और तेरे फैसला पर राजी रहने मे बदला

جُوۡدِكَ وَالرِّضَا بِقَضَآئِكَ عِوَضًا مِنۡ مَنۡعِ الۡبَاخِلِيۡنَ وَ

है बखिलो के इनकार का बदल है और बेनेयाजी है दुनिया तलब लोगों के हाथ मे जमा शुदा दौलत से

مَنۡدُوۡحَةً عَمَّا فِيۡ اَيۡدِي الۡمُسۡتَاثِرِيۡنَ وَ اَنَّ الرَّاحِلَ اِلَيۡكَ

और तेरी जानिब सफर करने वाले की मोसाफत करीब है और तु अपनी मखलुक से पोशीदा नही है

قَرِيۡبُ الۡمَسَافَةِ وَاَنَّكَ لَا تَحۡتَجِبُ عَنۡ خَلۡقِكَ اِلَّا اَنۡ تَحۡجُبَهُمُ

सेवाए उस के के आमाल उनको रोक दे और मै अपनी हाजत के साथ तेरा कसद किया है। और तेरी

الۡاَعۡمَالُ دُوۡنَكَ وَ قَدۡ قَصَدۡتُ اِلَيۡكَ بِطَلِبَتِيۡ وَ تَوَجَّهۡتُ

तरफ मोतवजा हुआ हू। अपनी हाजत के साथ और तुझ से मै ने इसतेगासा किया है और तेरी दुआ से

اِلَيْكَ بِحَاجَتِيْ وَ جَعَلْتُ بِكَ اسْتِغَاثَتِيْ وَ بِدُعَآئِكَ تَوَسُّلِيْ

तवस्सुल किया है मै उसका मुसतहक नही हु के तु मेरी दुआ को सूने और न मेरी अफू का हकदार हू

مِنْ غَيْرِ اسْتِحْقَاقٍ لِاِسْتِمَاعِكَ مِنِّيْ وَلَا اسْتِيْجَابٍ لِعَفْوِكَ

बलके मेरी तो बा सिर्फ तेरे करम पर मेरे भरोसे की वजह से है और तेरे वादा की सच्चाई पर मरे इतमेनान

عَنِّيْ بَلْ لِثِقَتِيْ بِكَرَمِكَ وَ سُكُوْنِيْ اِلٰى صِدْقِ وَعْدِكَ وَلَجَائِيْ

की वजह से है और तौहीद पर इमान की पिनहा की वजह सक है और मेरे तेरे मारेफत के याकीन की

اِلَى الْاِيْمَانِ بِتَوْحِيْدِكَ وَ يَقِيْنِيْ (ثِقَتِيْ) بِمَعْرِفَتِكَ مِنِّيْ اَنْ لَا

वजह से है के तेर एलावा मेरा कोइ्र रब नही है और तेरे एयलावा कोई माबुद नही है तु एक हे तेरा कोई

رَبَّ لِيْ غَيْرُكَ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ اَللّٰهُمَّ

शरीक नही खुदाया तु ही कहने वाला है और तेरा कौल हक हे और तेरा वादा सच्चा है और अल्लाह से

اَنْتَ الْقَائِلُ وَقَوْلُكَ حَقٌّ وَوَعْدُكَ صِدْقٌ وَاسْئَلُوا اللّٰهَ مِنْ

उस के फजल का सवाल करो बेशक खदा तुम्हारे उपर रहम करने वाला है। और ऐ मेरे मालिक तेरे

فَضْلِهٖ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا وَلَيْسَ مِنْ صِفَاتِكَ يَا سَيِّدِيْ

सेफात मे से ये नही है के तु सवाल करने का हुकम दे और अता करने से रोक दे और तु अपनी

اَنْ تَأْمُرَ بِالسُّؤَالِ وَ تَمْنَعَ الْعَطِيَّةَ وَ اَنْتَ الْمَنَّانُ بِالْعَطِيَّاتِ

ममलेकत वालो पर बे शुमार अतिया करने वाला है और उनपर अपनी रहमत व लुतफ से मोसलसल

عَلٰى اَهْلِ مَمْلَكَتِكَ وَالْعَآئِدُ عَلَيْهِمْ بِتَحَنُّنِ رَافَتِكَ اِلٰهِىْ

नेमत नाजील करने वाला है खुदाया तु ने मुझको अपनी नेमत औ एहसान से बचपन मे पाला और

رَبَّيْتَنِىْ فِىْ نِعَمِكَ وَاِحْسَانِكَ صَغِيْرًا وَنَوَّهْتَ بِاِسْمِىْ كَبِيْرًا

अपनी अफु व करम का इशारा किया आखेरत मे , ऐ मेरे मौला मेरी मारेफत तेरी जानिब रहनूमा है और

فَيَا مَنْ رَبَّانِىْ فِى الدُّنْيَا بِاِحْسَانِهٖ وَتَفَضُّلِهٖ (بِفَضْلِهٖ) وَنِعَمِهٖ وَ

मेरी मोहब्बत तेरी तरफ शेमाअत करने वाली है और मै अपनी दलील पर तेरी दलालत के बारे मे

اَشَارَ لِىْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلٰى عَفْوِهٖ وَكَرَمِهٖ مَعْرِفَتِىْ يَا مَوْلَاىَ دَلِيْلِىْ

एहतेमाद किये हु और अपनी शफीह से तेरी शेफाअत की तरफ मुतमईन हू। ऐ मेरे मालीक मै तुझको

(دَلَّانِىْ) عَلَيْكَ وَحُبِّىْ لَكَ شَفِيْعِىْ اِلَيْكَ وَاَنَا وَاثِقٌ مِنْ دَلِيْلِىْ

पुकार रहा हू ऐसी जुबान से जिको उस के गुनाह ने गुनगा कर दिया हे खुदाया मै ऐसे दील से तुझ से राज

بِدَلَالَتِكَ وَسَاكِنٌ مِنْ شَفِيْعِىْ اِلٰى شَفَاعَتِكَ اَدْعُوْكَ يَا

व नेयाज करता हु जिस को जुरम ने हलाक मे डाल दिया हे ऐ मेरे रब मै तुझको खौफ जदा उम्मीदवार

سَيِّدِىْ بِلِسَانٍ قَدْ اَخْرَسَهٗ ذَنْبُهٗ رَبِّ اُنَاجِيْكَ بِقَلْبٍ قَدْ

दील के साथ बुला रहा हू मै जब अपने गुन्हा को देखता हू तो डर जाता हू और जब मे तेरे करम को

اَوْبَقَهٗ جُرْمُهٗ اَدْعُوْكَ يَا رَبِّ رَاهِبًا رَاغِبًا رَاجِيًا خَآئِفًا اِذَا

देखता हू तो लालच्। आ जात् है तो अगर तो मुझ को बखश दे तो तु बेहतरीन करम करने वाला है।

رَاَيۡتُ مَوۡلَایَ ذُنُوۡبِیۡ فَزِعۡتُ وَاِذَا رَاَيۡتُ كَرَمَكَ طَمِعۡتُ فَاِنۡ

और अगर तु आजाब मे डाल दे तो जालिम बहर हाल नही है ऐ अल्लाह मेरी हूजत तुझ से सवाल करने

عَفَوۡتَ فَخَيۡرُ رَاحِمٍ وَ اِنۡ عَذَّبۡتَ فَغَيۡرُ ظَالِمٍ حُجَّتِیۡ يَا اَللّٰهُ فِیۡ

की जूरअत मे है बावजुद यके मै ने वो काम किया हे जो तेरा जूदो करम न पसंद करता हे और तेरा करम

جُرۡاَتِیۡ عَلٰی مَسۡـئَلَتِكَ مَعَ اِتۡيَانِیۡ مَا تَكۡرَهُ جُوۡدُكَ وَ كَرَمُكَ وَ

व बखशिश मेरा सरमाय्। हे सखत मे शरम व हया की कमी के बावजुद और मै ने उम्मीद लगाई है के

عُدَّتِیۡ فِیۡ شِدَّتِیۡ مَعَ قِلَّةِ حَيَآئِیۡ رَافَتُكَ وَ رَحۡمَتُكَ وَ قَدۡ رَجَوۡتُ

उन बुराईयों के बावजुद मेरी आरजु को खत्म न करेगा तो तु मेरी आरजू को बर ला और मेरी दुआ का

اَنۡ لَا تَخِيۡبَ بَيۡنَ ذَيۡنِ وَ ذَيۡنِ مُنۡيَتِیۡ فَحَقِّقۡ رَجَآئِیۡ وَاسۡمَعۡ

सून ले। ऐ वो बहतरीन जात जिस से दुआ करने वाला दुआ करता है और ऐ वो बेहतरीन जात जिस से

دُعَآئِیۡ يَا خَيۡرَ مَنۡ دَعَاهُ دَاعٍ وَ اَفۡضَلَ مَنۡ رَجَاهُ رَاجٍ عَظُمَ يَا

उम्मीद करने वाला उम्मीद लगाता हे ऐ मेरे मालीक मेरे उम्मीद अजीम है और मेरा अमल बुरा है तु मुझ

سَيِّدِیۡ اَمَلِیۡ وَسَآءَ عَمَلِیۡ فَاَعۡطِنِیۡ مِنۡ عَفۡوِكَ بِمِقۡدَارِ اَمَلِیۡ

को मेरी उम्मीद के बराबर माफी देदे और मेरे बदतरीन अमल का मावाखेजा न कर क्योंके तेरे करम

وَلَا تُؤَاخِذۡنِیۡ بِاَسۡوَءِ عَمَلِیۡ فَاِنَّ كَرَمَكَ يَجِلُّ عَنۡ مُجَازَاةِ

गुनहगारो को सजा देने से ज्यादा बरतर है और तेरा हिलम कोताही करने वालो के बदला से बड। हे औ

الْمُذْنِبِيْنَ وَ حِلْمَكَ يَكْبُرُ عَنْ مُكَافَاةِ الْمُقَصِّرِيْنَ وَ اَنَا يَا

मै ऐ मेरे मालीक तेरे फजल का चाहने वाला हू और तुझ से भाग के तेरी तरफ आया हू और माफी और

سَيِّدِىْ عَآئِذٌ بِفَضْلِكَ هَارِبٌ مِنْكَ اِلَيْكَ مُتَنَجِّزٌ مَا وَ

बखशीश का वादा हूसन जन रखने वाले के लिए मोसल्लम और यकीनी है ऐ मेरे खुदा मै क्या हू और मेरे

عَدْتَ مِنَ الصَّفْحِ عَمَّنْ اَحْسَنَ بِكَ ظَنًّا وَمَا اَنَا يَا رَبِّ وَ مَا

ख्याल क्या है मुझ को अपन फल अता कर और मुझको अपनी माफी देदे ऐ मेरे खुदा मुझको इज़्ज़त देदे

خَطَرِىْ هَبْنِىْ بِفَضْلِكَ وَتَصَدَّقْ عَلَىَّ بِعَفْوِكَ اَىْ رَبِّ جَلِّلْنِىْ

अपनी परदा पोश के जरिए और मेरे गुन्हा को माफ कर दे अपनी जात की बूजूरगी से अगर तेरे एलावा

بِسِتْرِكَ وَاعْفُ عَنْ تَوْبِيْخِىْ بِكَرَمِ وَجْهِكَ فَلَوِ اطَّلَعَ الْيَوْمَ

कोई और मेरे गुन्हा से वाकीफ होता तो मै उसको हरगीस न करता औ अगर मै जल्दी अजाब से डरता

عَلٰى ذَنْبِىْ غَيْرُكَ مَا فَعَلْتُهٗ وَلَوْ خِفْتُ تَعْجِيْلَ الْعُقُوْبَةِ

मै उस से बचता इस वजह से नही के तु कमजोर देखने वाला है और मामूली चाहने वाला है बल्के

لَاجْتَنَبْتُهٗ لَا لِاَنَّكَ اَهْوَنُ النَّاظِرِيْنَ (اِلَىَّ) وَ اَخَفُّ الْمُطَّلِعِيْنَ

इसलिए के ऐ खुदा तु तो बेहतरीन परदापोश है और सब से बहतर हाकीम है और सब से ज्यादा करीम

(عَلَىَّ) بَلْ لِاَنَّكَ يَا رَبِّ خَيْرُ السَّاتِرِيْنَ وَ اَحْكَمُ الْحَاكِمِيْنَ (وَ

है तु एबो का छुपाने वाला गुन्हाओ का बखशने वाला और गैब का जाने वाला है। गुन्हाओं को अपनी

اَحْلَمُ الْاَحْلَمِيْنَ) وَ اَكْرَمُ الْاَكْرَمِيْنَ سَتَّارُ الْعُيُوْبِ غَفَّارُ

करम से छुपाता है। और अपने हीलम से सजा मे ताखीर करता हे पस तेरे लिए हमद है तेरे हीलम पर

الذُّنُوْبِ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ تَسْتُرُ الذَّنْبَ بِكَرَمِكَ وَ تُؤَخِّرُ

तेरे इलम के बाद और तेरी माफी पर पेरी कुदरत के बाद और ऐ खुदाया मुझको तेरी न फरमानी पर जरी

الْعُقُوْبَةَ بِحِلْمِكَ فَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى حِلْمِكَ بَعْدَ عِلْمِكَ وَ عَلٰى

बनाया और आमादा किया तेरे हीलम ने और तेरी परदापोशी मुझ को कम शर्म करने की तरफ दावत

عَفْوِكَ بَعْدَ قُدْرَتِكَ وَ يَحْمِلُنِيْ وَ يُجَرِّئُنِيْ عَلٰى مَعْصِيَتِكَ

दी है और मेरी अजीम माफ और रहमत की वूसअतकी मारेफत ने मुझ को तेरे हराम करदा कामो पर

حِلْمُكَ عَنِّيْ وَ يَدْعُوْنِيْ اِلٰى قِلَّةِ الْحَيَآءِ سِتْرُكَ عَلَيَّ وَ يُسْرِعُنِيْ

उभार दिया है। ऐ बूरदेबार ऐ करीम ऐ जीन्दा पाईन्दा ऐ गुन्हा के बखशने वाले ऐ तौबा के कुबुल करने

اِلَى التَّوَثُّبِ عَلٰى مَحَارِمِكَ مَعْرِفَتِيْ بِسَعَةِ رَحْمَتِكَ وَ عَظِيْمِ

वाले ऐ अजीम मिननत वाले ऐ कदीम एहसान करने वाले कहॉ है तेरी अजीम परदापोशी कहॉ है तेरी

عَفْوِكَ يَا حَلِيْمُ يَا كَرِيْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا غَافِرَ الذَّنْبِ يَا

अजीम माफी कहाष्@ है तेरी करीब तरीन कुशादगी कहा है तेरी जोरो फरयाद सी, कहॉ है तेरी वसी

قَابِلَ التَّوْبِ يَا عَظِيْمَ الْمَنِّ يَا قَدِيْمَ الْاِحْسَانِ اَيْنَ سِتْرُكَ

रहमत कहॉ है तेरा अजीम अतीया, कहॉ है तेरा बेहरीन तोहफ, कहॉ है तेरा किमती हेबा, कहा है तेरे

الْجَمِيْلُ اَيْنَ عَفْوُكَ الْجَلِيْلُ اَيْنَ فَرَجُكَ الْقَرِيْبُ اَيْنَ غِيَاثُكَ

अजीम फजल, कहाँ है तेरी नेमत बूजूर्गा, कहा है तेरा कदीम एहसान, कहा है तेरा करम, ऐ करीम उसके

السَّرِيْعُ اَيْنَ رَحْمَتُكَ الْوَاسِعَةُ اَينَ عَطَايَاكَ الْفَاضِلَةُ اَيْنَ

जरिए मुझको नेजात दे। और अपनी रहमत से मुझको छुटकारा दे। ऐ एहसान करने वाले ऐ नेकोकार

مَوَاهِبُكَ الْهَنِيْئَةُ اَيْنَ صَنَائِعُكَ السَّنِيَّةُ اَيْنَ فَضْلُكَ

ऐ नेमत वाले ऐ फजल वाले मै ने तेरे अजाब से नेजात के लिए अपने आमाल पर तवक्कल नही किया

الْعَظِيْمُ اَيْنَ مَنُّكَ الْجَسِيْمُ اَيْنَ اِحْسَانُكَ الْقَدِيْمُ اَيْنَ

है बल्के तेरे फजल पर भरोसा किया है। इसलिए के तु तकवा का मालिक और मगफेरत का मालिक

كَرَمُكَ يَا كَرِيْمُ بِهٖ (بِمُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ) فَاسْتَنْقِذْنِيْ وَ

है तु मखलुक पर नेमत के जरिए एहसान की इबतेदा करना है और करम के जरिए गुन्हा को माफ करता

بِرَحْمَتِكَ فَخَلِّصْنِيْ يَا مُحْسِنُ يَا مُجْمِلُ يَا مُنْعِمُ يَا مُفْضِلُ لَسْتُ

है। मै नही जानता हू कि किस चीज का शुकर अदा करम उाकी ने का जो तु ने फैलाई है या उा बुराई का

اَتَّكِلُ فِي النَّجَاةِ مِنْ عِقَابِكَ عَلٰى اَعْمَالِنَا بَلْ بِفَضْلِكَ عَلَيْنَا

जो तु ने छपूाई हैया उन अजीम इम्तेहानात का जिनका मै तू ने मुबतेला किया या उस कसीर बला का

لِاَنَّكَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَ اَهْلُ الْمَغْفِرَةِ تُبْدِءُ بِالْاِحْسَانِ نِعَمًا وَ

जिस से तु ने नेजाद दि है और माफी दी है ऐ उस सखस के दोस्त जा तेरी तरफ दोस्ती के लिए बढे और

تَعْفُوْ عَنِ الذَّنْبِ كَرَمًا فَمَا نَدْرِىْ مَا نَشْكُرُ اَجَمِيْلَ مَا

ऐ उस के खनकी चश्म जो तेरी पन्हा तलब करे और तेरी तरफ सब को छोड कर आए तु नेकी करने

تَنْشُرُ اَمْ قَبِيْحَ مَا تَنْشُرُ اَمْ عَظِيْمَ مَا اَبْلَيْتَ وَاَوْلَيْتَ اَمْ

वाला है और हम बुराई करने वाले तो ऐ परवरदिगार तु हमारी बुराईयों से दर गुजर कर अपनी नेकीयो

كَثِيْرَ مَا مِنْهُ نَجَّيْتَ وَعَافَيْتَ يَا حَبِيْبَ مَنْ تَحَبَّبَ اِلَيْكَ وَيَا

और अच्छाईयों के जरिए और कौन सी जहालत है ऐ खु जिस को तेरा जुद न घेर सकता हो या कौन सा

قُرَّةَ عَيْنِ مَنْ لَاذَبِكَ وَانْقَطَعَ اِلَيْكَ اَنْتَ الْمُحْسِنُ وَنَحْنُ

जमाना है जो तेरे हीलम के जमाने से ज्यादा तवील है और हमारे आमाल के मीकदार तेरी नेमतों के

اَلْمُسِيْئُوْنَ فَتَجَاوَزْ يَا رَبِّ عَنْ قَبِيْحِ مَا عِنْدَنَا بِجَمِيْلِ مَا

मोकाबले में नही पहूच्। सकती और क्या कर हम अपनी आमाल को ज्यादा समझ सकते है के उनके

عِنْدَكَ وَاَىُّ جَهْلٍ يَا رَبِّ لَا يَسَعُهُ جُوْدُكَ اَوْ اَىُّ زَمَانٍ اَطْوَلُ

जारिए तेरे करम का मोकाबला करे और किस तरह गुन्हा गारों पर तनग हो जाएगी तेरी रहमत की

مِنْ اَنَاتِكَ وَمَا قَدْرُ اَعْمَالِنَا فِىْ جَنْبِ نِعَمِكَ وَ كَيْفَ

उस्अत ऐ वसी मगफेरत वाले रहमत के दोनो हाथ फैलाने वाले मै तेरी इज्ज़त की कसम खता हू ऐ मेरे

نَسْتَكْثِرُ اَعْمَالًا نُقَابِلُ بِهَا كَرَمَكَ (كَرَامَتَكَ) بَلْ كَيْفَ

मालीक अगर मुझ को अपनी बारगाह से निकाल देगा तो मै उस दावाजे से न जाऊगा और न तेरी

يَضِيقُ عَلَى الْمُذْنِبِيْنَ مَا وَسِعَهُمْ مِنْ رَحْمَتِكَ يَا وَاسِعَ

खुशामद से बाज रहूगॉ इस लिए के तेरे वजूद को मोकम्मल तौर पर पहचान लिया है और तु जो चाहता

الْمَغْفِرَةِ يَا بَاسِطَ الْيَدَيْنِ بِالرَّحْمَةِ فَوَ عِزَّتِكَ يَا سَيِّدِىْ لَوْ

है करता है जिसको चाहता है और जो चाहता है अजाब करता है और जिसपर चाहता है जो चाहता है

نَهَرْتَنِىْ (اِنْتَهَرْتَنِىْ) مَا بَرِحْتُ مِنْ بَابِكَ وَلَا كَفَفْتُ عَنْ

और जैसे चाहता है रहम करता है तुझ् से तेरे काम का सवाल नही किया जा सकता और तेरी बादशाहत

تَمَلُّقِكَ لِمَا انْتَهٰى اِلَىَّ مِنَ الْمَعْرِفَةِ بِجُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ وَ اَنْتَ

मे नजा नही की जा सकती और तेरे अमर मे कोई शरीक नही है और तेरे हुकूम मे कोई मोखालेफत नही

الْفَاعِلُ لِمَا تَشَآءُ تُعَذِّبُ مَنْ تَشَآءُ بِمَا تَشَآءُ كَيْفَ تَشَآءُ

की जा सकती और कोइै तेरी तदबीर और नजम पर एतेराज नही कर सकता तेरे ही कबजे मे खलक

وَتَرْحَمُ مَنْ تَشَآءُ بِمَا تَشَآءُ كَيْفَ تَشَآءُ لَا تُسْئَلُ عَنْ فِعْلِكَ

और अमर है तो बा बरकत है ऐ खुदा सारे जहॉ का रब है ऐ खुदा ये मोकाम है उस शखस का जो तेरी

وَلَا تُنَازَعُ فِىْ مُلْكِكَ وَلَا تُشَارَكُ فِىْ اَمْرِكَ وَلَا تُضَآدُّ فِىْ

बारगाह मे पन्हा तलब है और तेरे करम की पन्हा चाहता है। और तेरे एहसान और नेमत से मानूस है।

حُكْمِكَ وَلَا يَعْتَرِضُ عَلَيْكَ اَحَدٌ فِىْ تَدْبِيْرِكَ لَكَ الْخَلْقُ وَ

और तु वो जावाद है जिसकी माफी तनग नही हाते है और तेरा फजल कम नही होता है और तेरी रहमत

الْاَمْرُ تَبَارَكَ اللهُ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ يَا رَبِّ هٰذَا مَقَامُ مَنْ

मोखतसर नही है औ हम ने एहतेमाद किया है तुझ पर कदीम चश्म पोशी की बिना पर और अजीम

لَاذَبِكَ وَاسْتَجَارَ بِكَرَمِكَ وَاَلِفَ اِحْسَانَكَ وَنِعَمَكَ وَاَنْتَ

फजल और वसीह रहमत की बूनयाद पर,ऐ परवरदीगार क्या मै सोच्। सकता हू के तू मेरे हुसन जन के

الْجَوَادُ الَّذِي لَا يَضِيْقُ عَفْوُكَ وَلَا يَنْقُصُ فَضْلُكَ وَلَا تَقِلُّ

खेलाफ करेगा या मेरी उम्मीदो को ना काम कर देगा हरगीज नही ऐ करीम ये मेरा तुझ से गुमान नही है

رَحْمَتُكَ وَ قَدْ تَوَثَّقْنَا مِنْكَ بِالصَّفْحِ الْقَدِيْمِ وَالْفَضْلِ

और न ये तमआ है मेरी तेरे लिए ऐ मेरे रब मेरी तुलानी उम्मीद तेरे लिए है बेशक मे अजीम उम्मीद है

الْعَظِيْمِ وَالرَّحْمَةِ الْوَاسِعَةِ اَفَتَرَاكَ يَا رَبِّ تُخْلِفُ ظُنُوْنَنَا اَوْ

तेरे अन्दर मै ने तेरे मासियत की है और उम्मीद करता हु के तु पोशिदा कर देगा और हम ने तुझ को

تُخَيِّبُ اٰمَالَنَا كَلَّا يَا كَرِيْمُ فَلَيْسَ هٰذَا ظَنُّنَا بِكَ وَلَا هٰذَا

पुकारा है और उम्मीद है के तु सून लेगा तो ऐ मेरे मौला हमारी उम्मीद को पुरा करदे। मै ने समझ लिया

فِيْكَ طَمَعُنَا يَا رَبِّ اِنَّ لَنَا فِيْكَ اَمَلًا طَوِيْلًا كَثِيْرًا اِنَّ لَنَا

है कि अपने आमाल के जरिय्। उस का मुतहक नही होगाँ लेकिन तु हमारे बारे मे जानता है और हम

فِيْكَ رَجَآءً عَظِيْمًا عَصَيْنَاكَ وَنَحْنُ نَرْجُوْ اَنْ تَسْتُرَ عَلَيْنَا وَ

तेरे बारे मे के तु हम को बारगाहे से महरूम न करेगा अगर चे हम तेरे रहमत के मुसतहक न होगें पस

دَعَوْنَاكَ وَ نَحْنُ نَرْجُوْ اَنْ تَسْتَجِيْبَ لَنَا فَحَقِّقْ رَجَآئَنَا مَوْلَانَا

तु उहेल है के हम पर एहसान करे और गुन्हागाकरों पर एहसान करे अपने वसी फजल से तु हम पर

فَقَدْ عَلِمْنَا مَا نَسْتَوْجِبُ بِاَعْمَالِنَا وَلٰكِنْ عِلْمُكَ فِيْنَا وَ

एहसान कर इसके जारिय्। जिसका तु उहेल है और हम पर एहसान कर क्योंके हम मोहताज है तेरी

عِلْمُنَا بِاَنَّكَ لَا تَصْرِفُنَا عَنْكَ وَ اِنْ كُنَّا غَيْرَ مُسْتَوْجِبِيْنَ

अता के ऐ बखशने वाले तेरे नुर से हम ने हेदायत पाई और तेरे फजल से हम बेनेयाज हूए और तेरी नेमत

لِرَحْمَتِكَ فَاَنْتَ اَهْلٌ اَنْ تَجُوْدَ عَلَيْنَا وَ عَلَى الْمُذْنِبِيْنَ

के साथ हम ने सूबह और शाम की, हमारे गुन्हा तेरे सामने है। खुदाया हम तुझ से इसतगफार करते है

بِفَضْلِكَ سَعَتِكَ فَامْنُنْ عَلَيْنَا بِمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ جُدْ عَلَيْنَا

इस से ओर तेरे बारगाह मे तोबा करते है तु हम से नेमतो के जरिय्। मोहब्बत करता है और हम गुन्हाओं

فَاِنَّا مُحْتَاجُوْنَ اِلٰى نَيْلِكَ يَا غَفَّارُ بِنُوْرِكَ اهْتَدَيْنَا وَ بِفَضْلِكَ

के जरिय्। से तेरा मोकाबला करते है तेरी नेकी हमारी तरफ नाजील हाती है और बुराई तेरी तरफ बुलन्द

اسْتَغْنَيْنَا وَ بِنِعْمَتِكَ اَصْبَحْنَا وَ اَمْسَيْنَا ذُنُوْبُنَا بَيْنَ يَدَيْكَ

होती है तु हमेशा से करीम बादशाह है और हमेशा रहेगा हमारी तरफ से बुरा अमल तेरी जानिब आता

نَسْتَغْفِرُكَ اللّٰهُمَّ مِنْهَا وَ نَتُوْبُ اِلَيْكَ تَتَحَبَّبُ اِلَيْنَا

है तो वो तुझ को नही रोकता है कि तु हम को अपनी नेमत मे ढापूँ लेऔर हम पर अपनी नेमतों के

بِالنِّعَمِ وَ نُعَارِضُكَ بِالذُّنُوبِ خَيْرُكَ اِلَيْنَا نَازِلٌ وَ شَرُّنَا اِلَيْكَ

जरिय्। एहसान करे तु पाक व बेनेयाज है तु कितना हलीम कितना अजीम किता करीम है इबतेदा और

صَاعِدٌ وَلَمْ يَزَلْ وَلَا يَزَالُ مَلَكٌ كَرِيْمٌ يَاتِيْكَ عَنَّا بِعَمَلٍ

इनतेहा मे तेरे नाम पाकिजा है तेरी हमद अजीम है और तेरी महेबानिया और तेरा बरताव करम का है।

قَبِيْحٍ فَلَا يَمْنَعُكَ ذٰلِكَ مِنْ اَنْ تَحُوْطَنَا بِنِعَمِكَ وَ تَتَفَضَّلَ

ऐ मेरे खुदा तु इस से वसी फजल वाला और उप से अजीम हीलम वाला है कि मेरे फेल और गुन्हा का

عَلَيْنَا بِاٰلَآئِكَ فَسُبْحَانَكَ مَا اَحْلَمَكَ وَ اَعْظَمَكَ وَ اَكْرَمَكَ

मुझ को बदला दे। ऐ मेरे सरदार मुझ को माफ कर दे, माफ कर दे। माफ कर दे। ऐ मेरे मालीक ऐ मेरे

مُبْدِئًا وَ مُعِيْدًا تَقَدَّسَتْ اَسْمَآئُكَ وَ جَلَّ ثَنَآؤُكَ وَ كَرُمَ

मालीक ऐ मेरे माली खुदाया अपनी जिकर मु मुझ को मशगुल कर और मुझ को अपनी नाराजगी से

صَنَائِعُكَ وَ فِعَالُكَ اَنْتَ اِلٰهِيْ اَوْسَعُ فَضْلًا وَ اَعْظَمُ حِلْمًا

बचा ले और अपने अजाब से महफुज कर और अपने बे हिसाब अताया दे और हम पर अपने फजल

مِنْ اَنْ تُقَايِسَنِيْ بِفِعْلِيْ وَ خَطِيْئَتِيْ فَالْعَفْوَ الْعَفْوَ الْعَفْوَ

की नेमत कर और हम को अपने घर के हज की तौफीक दे और अपने नबी की कबर की जियारत की

سَيِّدِيْ سَيِّدِيْ سَيِّدِيْ اَللّٰهُمَّ اشْغَلْنَا بِذِكْرِكَ وَ اَعِذْنَا مِنْ

तौफीक अता कर तेरो दरूर और तेरी रहमत और मगफरेत और तेरी खुशनुदी हो उनपर और उनके

سَخَطِكَ وَ اَجِرْنَا مِنْ عَذَابِكَ وَارْزُقْنَا مِنْ مَوَاهِبِكَ وَ اَنْعِمْ

अहलेबैत परा बेशक तु करीब है दुआ कुबूल करने वाला हे और हम को अपनी एताअत पर अमल

عَلَيْنَا مِنْ فَضْلِكَ وَارْزُقْنَا حَجَّ بَيْتِكَ وَ زِيَارَةَ قَبْرِ نَبِيِّكَ

करने की तौफीक दे। और हम का मौत अपनी मील्लत और अपने नबी की सून्नत पर दे अल्लाह का दूरूद

صَلَوَاتُكَ وَرَحْمَتُكَ وَمَغْفِرَتُكَ وَرِضْوَانُكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى اَهْلِ

हो उन पर औन उनकी आल पर, खुदाया मुझ को बखश दे और मेरे वालदैन को बखश दे और उनप्

بَيْتِهٖ اِنَّكَ قَرِيْبٌ مُجِيْبٌ وَارْزُقْنَا عَمَلًا بِطَاعَتِكَ وَ تَوَفَّنَا

दोनो पर हरम कर जैसे के उन दोनो ने मुझ को बचपन मे पाला और उनको एहसान का बदला अता कर

عَلٰى مِلَّتِكَ وَ سُنَّةِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ

और उन के गुन्हाओं को बखश दे, खुदाया मोमेनीन और मोमेनात को बखश दे जो जिन्दा हूँ उनहें और

وَلِوَالِدَيَّ وَارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِيْ صَغِيْرًا اِجْزِهِمَا بِالْاِحْسَانِ

जो मर चूके हो उनहे। और उनके और हमारे दरमियान नेकीयों का राबता करार दे खुदाया तु बखश दे

اِحْسَانًا وَ بِالسَّيِّئَاتِ غُفْرَانًا اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ

हमारे जिन्दा, मुदा, जाहीर, गाएब, मरद, औरत, छोटे और बडे और आजादा और गुलाम सब को

وَالْمُؤْمِنَاتِ الْاَحْيَاۤءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ وَ تَابِعْ بَيْنَنَ

बरगशता होने वाले झुटे है और खुली हुई गुमराही मे मुबतेला हुए और खुला हुआ घाटा पाया खुदाया तु

وَبَيْنَهُمْ (فِيْ) بِالْخَيْرَاتِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَ مَيِّتِنَا وَ

दुरूद नाजील फरमा मोहम्मद और आले मोहम्मद पर और मेरा खातमा बीलखैर कर और मेरे लिए मेरे

شَاهِدِنَا وَ غَآئِبِنَا ذَكَرِنَا وَ اُنْثَانَا (اُنَاثِنَا) صَغِيْرِنَا وَ كَبِيْرِنَا

दुनिया और आखेरत के अहम उमुर में काफी हो जा और मुझ पर उसको मोसल्लत न कर जो मुझ पर

حُرِّنَا وَ مَمْلُوْكِنَا كَذَبَ الْعَادِلُوْنَ بِاللّٰهِ وَ ضَلُّوْا ضَلَالًا بَعِيْدًا

रहम न करे और अपनी तरफ से मेरे उपर हमेशा एक निगरा करार दे और जो बहतरीन नेमत तु ने मुझ

وَ خَسِرُوْا خُسْرَانًا مُبِيْنًا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ

को दी है उसको न छीन और अपने फजल से मुझ को वसी, हलाल और पाक व पाकीजा रोजी दे खुदाया

وَاخْتِمْ لِيْ بِخَيْرٍ وَاكْفِنِيْ مَا اَهَمَّنِيْ مِنْ اَمْرِ دُنْيَايَ وَ اٰخِرَتِيْ

मुझको अपनी पन्हा मे ले और मुझ को अपनी हेफाजत से महफूज कर और अपनी हेमायत मे हर बला

وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيَّ مَنْ لَا يَرْحَمُنِيْ وَاجْعَلْ عَلَيَّ مِنْكَ وَاقِيَةً بَاقِيَةً

से महफूज रख और मुझ को अपने बैतुल हराम के हज की तौफीक करामत फरमा इस साल आार हर

وَلَا تَسْلُبْنِيْ صَالِحَ مَا اَنْعَمْتَ بِهٖ عَلَيَّ وَارْزُقْنِيْ مِنْ فَضْلِكَ

साल और अपने नबी और अईम्मा अलैहीमुस्सलाम के कबर की जियारत नसीब फरमा और उन

رِزْقًا وَاسِعًا حَلَالًا طَيِّبًا اَللّٰهُمَّ احْرُسْنِيْ بِحَرَاسَتِكَ

मोशाही शुरफा और मवाकिफे करीमा से ऐ मेरे रब दूर न करना खुदाया मेरी तौबा कुबूल कर ले ता के

وَاحْفَظْنِيْ بِحِفْظِكَ وَاكْلَاَنِيْ بِكِلَائَتِكَ وَارْزُقْنِيْ حَجَّ بَيْتِكَ

मै तेरी मासियत न कर सकू और मुझ पर करे खैर और उसपर अमल करसने का इंआम कर और रात

الْحَرَامِ فِيْ عَامِنَا هٰذَا وَفِيْ كُلِّ عَامٍ وَ زِيَارَةَ قَبْرِ نَبِيِّكَ وَ

दिन मै अपने खौफ का इंआम कर जब तक तु मुझ को बाकी रखे ऐ आलमीन के रब खुदाया मै ने

الْاَئِمَّةِ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَلَا تُخْلِنِيْ يَارَبِّ مِنْ تِلْكَ الْمَشَاهِدِ

जितना भी अजम व जजम के साथ कहा के मै ने अपने को मोहैया और आमादा कर लिया और तेरे

الشَّرِيْفَةِ وَ الْمَوَاقِفِ الْكَرِيْمَةِ اَللّٰهُمَّ تُبْ عَلَيَّ حَتّٰى لَا

रूबरू एबादत व नमाज के लिए खड। हो गया और मै ने तुझ से मुनाजात की तो उस वक्त तु ने मुझ को

اَعْصِيَكَ وَ اَلْهِمْنِيْ الْخَيْرَ وَالْعَمَلَ بِهٖ وَ خَشْيَتَكَ بِاللَّيْلِ

नीन्द मे डाल दिया और तु ने अपनी मुनाजात को मुझ से छीन लिया जब मै ने तुझ से मुनाजात कि ऐ

وَالنَّهَارِ مَا اَبْقَيْتَنِيْ يَارَبَّ الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ كُلَّمَا قُلْتُ

खुदा कया हो गया है के जब मै ने कहा के मेरा बातीन नेक हो गया है और मेरे मजलीस तोबा करने

قَدْ تَهَيَّاْتُ وَ تَعَبَّاْتُ (وَ تَعَبَّيْتُ) وَ قُمْتُ لِلصَّلٰوةِ بَيْنَ يَدَيْكَ

वालो की मजलीस के करीब हो गई है तो कोई न कोई मुसिबत आरिज हो गई जिस न मेरे कदम को

وَ نَاجَيْتُكَ اَلْقَيْتَ عَلَيَّ نُعَاسًا اِذَا اَنَا صَلَّيْتُ وَ سَلَبْتَنِيْ

हिला दिया और मेरे और तेरी खदिमत के दरमियान हाएल हो गई मेरे मालीक शायद तु ने मुझको अपने

مُنَاجَاتَكَ إِذَا أَنَا جِئْتُ مَا لِيْ كُلَّمَا قُلْتُ قَدْ صَلَحَتْ سَرِيْرَتِيْ

दरवाजे से निकाल दिया है और अपनी खीदमत से दूर कर दिया है। या शायद तु ने मुझ को अपने हक

وَ قَرُبَ مِنْ مَجَالِسِ التَّوَّابِيْنَ مَجْلِسِيْ عَرَضَتْ لِيْ بَلِيَّةٌ

के हलका समझने वाला पाया है इसलिए तु ने मुझ को दूर कर दिया हौ या शायद तु ने मुझको अपने से

أَزَالَتْ قَدَمِيْ وَ حَالَتْ بَيْنِيْ وَ بَيْنَ خِدْمَتِكَ سَيِّدِيْ لَعَلَّكَ

रूगरदानी पाया है तो तु ने मुझ पर गजब किया है या शायद तु ने मुझको झुटो के मोकाम मे पाया है तो

عَنْ بَابِكَ طَرَدْتَنِيْ وَ عَنْ خِدْمَتِكَ نَحَّيْتَنِيْ أَوْ لَعَلَّكَ رَأَيْتَنِيْ

तु ने मुझ को छोड दिउया है या तु ने मुझ को अपनी नेयमत का शुकरिया न कर पाने वाला पाया है तो

مُسْتَخِفًّا بِحَقِّكَ فَأَقْصَيْتَنِيْ أَوْ لَعَلَّكَ رَأَيْتَنِيْ مُعْرِضًا عَنْكَ

तु ने मुझ को महरूम कर दिया है या शायद तु ने मुझ को उलमा की मजलीस से गायब पाया है तो तु ने

فَقَلَيْتَنِيْ أَوْ لَعَلَّكَ وَجَدْتَنِيْ فِيْ مَقَامِ الْكَاذِبِيْنَ فَرَفَضْتَنِيْ أَوْ

मुझ को रूसवा किया हे या शायद तु ने मुझ को गाफेलीन मे देखा तो तु ने मुझ को अपनी रहममत से

لَعَلَّكَ رَأَيْتَنِيْ غَيْرَ شَاكِرٍ لِنَعْمَآئِكَ فَحَرَمْتَنِيْ أَوْ لَعَلَّكَ

मायूस कर दिया है या शायद तु ने मुझ को अहले बातिल की मजलिसो से मानुस पाया हौ तो तु ने मेरे

فَقَدْتَنِيْ مِنْ مَجَالِسِ الْعُلَمَآءِ فَخَذَلْتَنِيْ أَوْ لَعَلَّكَ رَأَيْتَنِيْ فِيْ

और उन के दरमीयान तखलिया कर दिया है या शायद तु ने मेरी दुआ का सुन्ना पसंद नहि किया है तो

الْغَافِلِيْنَ فَمِنْ رَحْمَتِكَ اٰيَسْتَنِيْ اَوْ لَعَلَّكَ رَ اَيْتَنِيْ اٰلِفَ

मुझको दूर कर दिया है या शायद तु ने मेरे जुरम और खता का बदला दिया है या शायद तु ने मुझ को

مَجَالِسِ الْبَطَّالِيْنَ فَبَيْنِيْ وَ بَيْنَهُمْ خَلَّيْتَنِيْ اَوْ لَعَلَّكَ لَمْ

मेरी बेशरमी की सजा दी है पस अगर तु माफ कर देगा ऐ खुदा तु मुनासिब है क्योंके मुझ से पहले बहूत

تُحِبَّ اَنْ تَسْمَعَ دُعَآئِيْ فَبَاعَدْتَنِيْ اَوْ لَعَلَّكَ بِجُرْمِيْ وَ جَرِيْرَتِيْ

से गुन्हागारों को तु ने माफ किया है क्योंके ऐ परवरदिगार तेरो करम इस से बदतर है के गुन्हागारो को

كَافَيْتَنِيْ اَوْ لَعَلَّكَ بِقِلَّةِ حَيَآئِيْ مِنْكَ جَازَيْتَنِيْ فَاِنْ عَفَوْتَ يَا

बदला दे और मै तेरे फजल की पन्हा चाहने वाला हू और तुझ से भाग कर तेरी तरफ आने वाला हु तु

رَبِّ فَطَالَ مَا عَفَوْتَ عَنِ الْمُذْنِبِيْنَ قَبْلِيْ لِاَنَّ كَرَمَكَ اَيْ

ने जो हुसन रखने जन रखने वाला को माफ करने का वादा किया है वो कतई है खुदाया तु अपने फजल

رَبِّ يَجِلُّ عَنْ مُكَافَاتِ الْمُقَصِّرِيْنَ وَ اَنَا عَآئِذٌ بِفَضْلِكَ هَارِبٌ

मे इस से वसी तर और अपने हील मे इस से अजीम तर है के तु मेरे इमल का मोवाखेजा कर मुझ से या

مِّنْكَ اِلَيْكَ مُتَنَجِّزٌ مَا وَعَدْتَ مِنَ الصَّفْحِ عَمَّنْ اَحْسَنَ بِكَ

मेरे गुन्हाओं की वजह से मुझ को रूसवा करे और ऐ मुरे सरदार मा क्या हु औ किस काबिल हु मेरे

ظَنًّا اِلٰهِيْ اَنْتَ اَوْسَعُ فَضْلًا وَ اَعْظَمُ حِلْمًا مِنْ اَنْ تُقَايِسَنِيْ

सरदार मुझको अपना फजल अता कर और मुझ पर अपनी बखशीश कर और अपनी परदापोशी के

بِعَمَلِي اَوْ اَنْ تَسْتَزِلَّنِي بِخَطِيْئَتِي وَمَا اَنَا يَا سَيِّدِي وَمَا خَطَرِي

जरिए मुझ को इ ल्लत दे और मेरे आजाब को माफ कर दे अपने करम से, मेरे मालीक मै वो बच्चा हूँ जिस

هَبْنِي بِفَضْلِكَ سَيِّدِي وَ تَصَدَّقْ عَلَيَّ بِعَفْوِكَ وَ جَلِّلْنِي

को तू ने पाला है मौ वो जाहिल हूँ जिसको तू ने इलम दिया हौ और मै वो गुमराह हूँ जिस की तूने हेदायत

بِسِتْرِكَ وَاعْفُ عَنْ تَوْبِيْخِي بِكَرَمِ وَجْهِكَ سَيِّدِي اَنَا

की है मै वो बेइज़्ज़त हु हिस को तूने इज़्ज़त दि है औ मै वो खाएफ हूँ जिस को तूने आमान दि है और मै वा

الصَّغِيْرُ الَّذِي رَبَّيْتَهُ وَ اَنَا الْجَاهِلُ الَّذِي عَلَّمْتَهُ وَ اَنَا الضَّآلُّ

भुका हूँ जिसको तूने सैर किया है और वो पयासा हूँ जिसको तूने सैराब किया है और वो बरहैना हूँ

الَّذِي هَدَيْتَهُ وَ اَنَا الْوَضِيْعُ الَّذِي رَفَعْتَهُ وَ اَنَا الْخَآئِفُ الَّذِي

जिसको लेबास पिनहाया है। और वो फखर हूँ जिसको मालदार किया है और वो कमजोर हूँ जिसको

اٰمَنْتَهُ وَ الْجَايِعُ الَّذِي اَشْبَعْتَهُ وَ الْعَطْشَانُ الَّذِي اَرْوَيْتَهُ

तूने ताकतवर बनाया हौ और वो जलील हूँ जिसको तूने इज़्ज़त दि है और वो बिमार हूँ जिसको तूने सफा

وَ الْعَارِي الَّذِي كَسَوْتَهُ وَ الْفَقِيْرُ الَّذِي اَغْنَيْتَهُ وَ الضَّعِيْفُ

दी है व साईलहु जिसको तूने अता किया हौ व गुन्हागार हूँ जिसकी तूने परदापोशी की है व खताकार हूँ

الَّذِي قَوَّيْتَهُ وَ الذَّلِيْلُ الَّذِي اَعْزَزْتَهُ وَ السَّقِيْمُ الَّذِي

जिसके गुन्हा को माफ किया है व मै वा कम हूँ जिसको तूने ज्यादा किया है और वो मुसतजगफ हूँ जिकी

شَفَيْتَهٗ وَالسَّآئِلُ الَّذِیْ اَعْطَیْتَهٗ وَالْمُذْنِبُ الَّذِیْ سَتَرْتَهٗ

तूने मदद की है व मै वो आवारा हूँ जिको तूने पन्हा दि हौ ऐ मेरे परवरदिगार मै वो हु के जिसने तुझ से

وَالْخَاطِئُ الَّذِیْ اَقَلْتَهٗ وَ اَنَا الْقَلِیْلُ الَّذِیْ کَثَّرْتَهٗ

खुलुत मे शर्म नही की और मजमा मे तेरी बन्दगी का पाबन्द न हुआा मै बडे मसाएब वाला हु मै ही वो

وَالْمُسْتَضْعَفُ الَّذِیْ نَصَرْتَهٗ وَ اَنَا الطَّرِیْدُ الَّذِیْ اٰوَیْتَهٗ اَنَا یَا

हु जिसने अपने अपने मालीक के मुकाबले मे जुरअत की है मै ही वो हु जिसने आसमान के जब्बार की

رَبِّ الَّذِیْ لَمْ اَسْتَحْیِكَ فِی الْخَلَآءِ وَلَمْ اُرَاقِبْكَ فِی الْمَلَآءِ اَنَا

न फरमानी की मै ही वो हु के बडी माअसियातों पर मै ने रिशवत दि हौ मै ही वो हु के जब कोइ्र मुसरदा

صَاحِبُ الدَّوَاهِی الْعُظْمٰی اَنَا الَّذِیْ عَلٰی سَیِّدِهٖ اجْتَرٰی اَنَا

आया गुन्हा का तो मै इस गुन्हा की तरफ हलदी निकल कर गया मै वो हु के तु ने मुझको मोहलते तौबा

الَّذِیْ عَصَیْتُ جَبَّارَ السَّمَآءِ اَنَا الَّذِیْ اَعْطَیْتُ عَلٰی مَعَاصِی

दि तो मै इस से बाज न आया और तु ने मेरे ऐब को छुपाया फिर भी मुझको हया न आई और मै ने

الْجَلِیْلِ الرُّشَا اَنَا الَّذِیْ حِیْنَ بُشِّرْتُ بِهَا خَرَجْتُ اِلَیْهَا اَسْعٰی

नाफरमानी की औ तजाउज कर गया और तु ने मुझको अपनी निगाह से गिरा दिया तो मुझे कोई परवाह

اَنَا الَّذِیْ اَمْهَلْتَنِیْ فَمَا ارْعَوَیْتُ وَ سَتَرْتَ عَلَیَّ فَمَا اسْتَحْیَیْتُ

न हुई। तु ने अपने हिलमसे मुझको मोहलत दि और अपनी परदापोशी से मुझको छुपाया यहॉ तक के तु

وَ عَمِلْتُ بِالْمَعَاصِیْ فَتَعَدَّیْتُ وَ اَسْقَطْتَنِیْ مِنْ عَیْنِكَ فَمَا

ने मुझ को गाफ़्लि कर दिया और गुन्हागारो की सजा से तु ने मुझको बचाया जैसे के तुझे मुझ से शर्म आ

بَالَیْتُ فَبِحِلْمِكَ اَمْهَلْتَنِیْ وَ بِسِتْرِكَ سَتَرْتَنِیْ حَتّٰی كَاَنَّكَ

गई। मेरे खुदा मै ने जब तेरी नाफमानी कि तो मै ने इस तरह ना फरमानी नही कि के तेरी रबुबियत का

اَغْفَلْتَنِیْ وَ مِنْ عُقُوْبَاتِ الْمَعَاصِیْ جَنَّبْتَنِیْ حَتّٰی كَاَنَّكَ

इन्कार किया हो और न तेरे हुकूम का इसतखफाफ किया और न तेरी सजा के लिए सिपर बनाया ओर

اسْتَحْیَیْتَنِیْ اِلٰهِیْ لَمْ اَعْصِكَ حِیْنَ عَصَیْتُكَ وَ اَنَا بِرُبُوْبِیَّتِكَ

न तेरे वादाए जजा को बे अहमियत समझ लेकिन खता बहेरहाल आरिज हुई और मेरे नफस ने शुबाह

جَاحِدٌ وَلَا بِاَمْرِكَ مُسْتَخِفٌّ وَلَا لِعُقُوْبَتِكَ مُتَعَرِّضٌ وَلَا

पैदा किया और मेरी हवाहिश मुझ पर गालिब हुई और मेरी बदबखती ने इस पर मदद की और मुझ को

لِوَعِیْدِكَ مُتَهَاوِنٌ لٰكِنْ خَطِیْئَةٌ عَرَضَتْ وَ سَوَّلَتْ لِیْ نَفْسِیْ

मगरूर किया तेरी परदापोशी ने तो मै ने तेरी न फरमानी की और तेरी मोखालफत की अपने से तो अब

وَ غَلَبَنِیْ هَوَایَ وَ اَعَانَنِیْ عَلَیْهَا شِقْوَتِیْ وَ غَرَّنِیْ سِتْرُكَ الْمُرْخٰی

इस वक्त तेरे अजाब से कौन मुझ को नेजात दिलाएगा और कल दुशमनो के हाथ से कौन छोडाएगा और

عَلَیَّ فَقَدْ عَصَیْتُكَ وَ خَالَفْتُكَ بِجُهْدِیْ فَالْاٰنَ مِنْ عَذَابِكَ

अगर तु ने मुझ से अपनी रिशता तोड लिया तो मै किस से रिशता जोडूंगा। तो वाए हो मेरी रूसवाई पर

مَنْ يَسْتَنْقِذُنِیْ وَ مِنْ اَيْدِی الْخُصَمَآءِ غَدًا مَنْ يُخَلِّصُنِیْ وَ

के तेरी किताब ने मेरे तमाम आलाम का एहसार कर लिया हे के अगर तेरे करम और तेरी वूसअत

بِحَبْلِ مَنْ اَتَّصِلُ اِنْ اَنْتَ قَطَعْتَ حَبْلَكَ عَنِّیْ فَوَا سَوْاَتَا عَلٰی

रहमत की उम्मदी न हा और तेरी नही न होती मायुस होने से तो मै जरूर मायूस हो जाता जब मै इस को

مَا اَحْصٰی كِتَابُكَ مِنْ عَمَلِیَ الَّذِیْ لَوْلَا مَا اَرْجُوْ مِنْ كَرَمِكَ

याद करता। ऐ बेहतरीन वो जात जिस से देआ करने वाला दुआ करे और बेहतरीन वो जात जिस से

وَسَعَةِ رَحْمَتِكَ وَ نَهْيِكَ اِيَّایَ عَنِ الْقُنُوْطِ لَقَنَطْتُ عِنْدَ مَا

उम्मीद करने वाला उम्मीद करे ऐ खुदा इसलाम के अहैद से मै तुझ से तवस्सुल करता हु और कुरआन

اَتَذَكَّرُهَا يَا خَيْرَ مَنْ دَعَاهُ دَاعٍ وَ اَفْضَلَ مَنْ رَجَاهُ رَاجٍ اَللّٰهُمَّ

की हुरमत के जारिय्। तुझ पर एहतेमाद करता हु और अपनी दोस्ती जो नबी उम्मी, कोरैशी, हाशमी

بِذِمَّةِ الْاِسْلَامِ اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ وَ بِحُرْمَةِ الْقُرْاٰنِ اَعْتَمِدُ

अरबी, तहामी, मक्की और मदनी से है इस के जारिय्। तेरी बारगाह मे कुरबत तलाश करता हू तो मेरे

اِلَيْكَ وَبِحُبِّی النَّبِیَّ الْاُمِّیَّ الْقُرَشِیَّ الْهَاشِمِیَّ الْعَرَبِیَّ التِّهَامِیَّ

ईमान के इनस को वहशत से न बदल देना और मेरा सवाब इस बन्दा को सवाब न करार देना जो तेरे

الْمَكِّیَّ الْمَدَنِیَّ اَرْجُوا الزُّلْفَةَ لَدَيْكَ فَلَا تُوحِشِ اسْتِيْنَاسَ

एलावा किसी और कि एबादत करता हे इसलिए के कुछ लोग इस लिए ईमान लाए जुबान से ता के उन

اِيْمَانِيْ وَلَا تَجْعَلْ ثَوَابِيْ ثَوَابَ مَنْ عَبَدَ سِوَاكَ فَاِنَّ قَوْمًا

का खुन महफुज हो जाए तो उन्होने अपनी आरजु को पा लिया और हम तुझ पर जुबान व दिल से ईमान

اٰمَنُوْا بِاَلْسِنَتِهِمْ لِيَحْقِنُوْا بِهٖ دِمَآءَهُمْ فَاَدْرَكُوْا مَا اَمَّلُوْا وَ

लाए ता के तु हम को माफ कर दे तु हम को वो अता कर जिसकी हम ने उम्मीद की है और अपनी

اِنَّا اٰمَنَّا بِكَ بِاَلْسِنَتِنَا وَقُلُوْبِنَا لِتَعْفُوَ عَنَّا فَاَدْرِكْنَا مَا اَمَّلْنَا

उम्मीद को हमारे दिलो मे कायम कर दे और हमारे दलि को हेदायत देने के बाद कज न करना और

وَ ثَبِّتْ رَجَآئَكَ فِيْ صُدُوْرِنَا وَلَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا

अपने पास से हम को रहमत अता कर बेशक तु बड। अता करने वाला हे तेरी इज्ज़त की कसम अगर

وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ فَوَعِزَّتِكَ

तु मुझको भगा भी देगा तो मै तेरे दरवाजे से नही जाउुगा और तेरी खुशामद नही छोडूगा क्याके मेरे दिल

لَوِ انْتَهَرْتَنِيْ مَا بَرِحْتُ مِنْ بَابِكَ وَلَا كَفَفْتُ عَنْ تَمَلُّقِكَ لِمَا

मे तेरे करम और तेरी रहमत की वुसअत की मारेफत ईलहाम की गई हो गुलाम अपने मालीक के

اُلْهِمَ قَلْبِيْ (يَاسَيِّدِيْ) مِنَ الْمَعْرِفَةِ بِكَرَمِكَ وَسَعَةِ رَحْمَتِكَ

एलावा किस के पास जाएगा और मखलुक अपने खालीक के एलावा किस की तरफ ईलतेजा करेगी

اِلٰى مَنْ يَذْهَبُ الْعَبْدُ اِلَّا اِلٰى مَوْلَاهُ وَاِلٰى مَنْ يَلْتَجِئُ الْمَخْلُوْقُ

मेरे माबूद अगर तु ने जनजीर कहर मे मुझको बाहन दिया और अपनी अता को सब के सामने मुझ से

اِلَّا اِلٰى خَالِقِهٖ اِلٰهِىْ لَوْ قَرَنْتَنِىْ بِالْاَصْفَادِ وَ مَنَعْتَنِىْ سَيْبَكَ

रोक दिया और मेरी रूसवाई की जानिब बनदो की आखों की रहनूमाई कर दि और मुझको जहन्नम का

مِنْ بَيْنِ الْاَشْهَادِ وَ دَلَلْتَ عَلٰى فَضَايِحِىْ عُيُوْنَ الْعِبَادِ وَ

हुकूम दे दिया और मेरे और नेक लोगो के दरमियान जूदाइ्र डाल दि तब भी मेरी उम्मीद तुझ से खतम

اَمَرْتَ بِىْ اِلَى النَّارِ وَ حُلْتَ بِىْ وَ بَيْنَ الْاَبْرَارِ مَا قَطَعْتُ رَجَآئِىْ

न होगी और तो तेरी बखशिश की उम्मीद रखता हू इस से नही पलटूंगा और न तेरी मोहब्बत मेरे दिल

مِنْكَ وَمَا صَرَفْتُ تَامِيْلِىْ لِلْعَفْوِ عَنْكَ وَلَا خَرَجَ حُبُّكَ مِنْ

से निकलेगी। मै तेरी अता व बखशिश जो मेरे पास हे और तेरी परदापोशी को दुनिया मे नही भूलूंगा।

قَلْبِىْ اَنَا لَا اَنْسٰى اَيَادِيَكَ عِنْدِىْ وَ سِتْرَكَ عَلَىَّ فِىْ دَارِ الدُّنْيَا

मेरे मालीक दुनिया की मोहब्बत मेरे दिल से निकाल दे और जमा कर मेरे और मोहम्मद स.व.व. और

سَيِّدِىْ اَخْرِجْ حُبَّ الدُّنْيَا مِنْ قَلْبِىْ وَ اجْمَعْ بَيْنِىْ وَ بَيْنَ

उन की आल के दरमियान जो तेरी बहतरीन मखलुक है और खातमउननबीईन मरोहम्म्द हौ अल्लाह का

الْمُصْطَفٰى وَآلِهٖ خِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ وَ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ مُحَمَّدٍ

दूरूद हो उन पर और उन की आल पर और मुझको मुनतकील कर दे तोबा के मोकाम की तरफ और

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ انْقُلْنِىْ اِلٰى دَرَجَةِ التَّوْبَةِ اِلَيْكَ وَ اَعِنِّىْ

मेरी मदद कर अपने हाल राज पर गिरया करने मे क्योंके मै ने काहेली औ उम्मीद मे उमर गुजार दी है

بِالْبُكَآءِ عَلٰى نَفْسِىْ فَقَدْ اَفْنَيْتُ بِالتَّسْوِيْفِ وَالْآمَالِ عُمْرِىْ

और अब इस मनजिल मे हु के इसलाह से मायूस हो चूका हू तो मुझ से ज्यादा बदहाल कौन होगा अगर

وَقَدْ نَزَلْتُ مَنْزِلَةَ الْاٰيِسِيْنَ مِنْ خَيْرِىْ (حَيٰوتِىْ) فَمَنْ يَكُوْنُ

मै इसी हालत मे मुतकील किया गया अपनी कबर की तरफ जिसको मै ने अपनी खवाबगाह के लिए

اَسْوَءَ حَالًا مِنِّىْ اِنْ اَنَا نُقِلْتُ عَلٰى مِثْلِ حَالِىْ اِلٰى قَبْرِىْ (قَبْرٍ)

मोहैया नही किया और अमले साहे के जारिय्। इस मे बीसतर नही बिछाया और क्या न गिरया करू

لَمْ اُمَهِّدْهُ لِرَقْدَتِىْ وَلَمْ اَفْرُشْهُ بِالْعَمَلِ الصَّالِحِ لِضَجْعَتِىْ

क्योंके मै नही जानता हू के मेरा मोकाम रजअत किस तरफ है और मै देख रहा हू के मेरे नफस ने मुझको

وَمَالِىْ لَا اَبْكِىْ وَلَا اَدْرِىْ اِلٰى مَا يَكُوْنُ مَصِيْرِىْ وَاَرٰى نَفْسِىْ

धोका दिया हे और रोज गार मेरे साथ मकर कर रहा है और मौत के बाल व पर मेरे सर के पास खुले

تُخَادِعُنِىْ وَ اَيَّامِىْ تُخَاتِلُنِىْ وَ قَدْ خَفَقَتْ عِنْدَ رَاسِىْ اَجْنِحَةُ

हूए है तो क्या गिरया न करू। मै रोता हू कबर से निकलने पर मै रोता हू अपनी कबर की तारिकीयों पर।

الْمَوْتِ فَمَالِىْ لَا اَبْكِىْ اَبْكِىْ لِخُرُوْجِ نَفْسِىْ اَبْكِىْ لِظُلْمَةِ قَبْرِىْ

रोता हू अपनी लहद की तनगी पर। मै रोता हू मुनकिरो नकीर के सवाल के लिए। मै रोतो हू अपनी कबर

اَبْكِىْ لِضِيْقِ لَحْدِىْ اَبْكِىْ لِسُؤَالِ مُنْكَرٍ وَ نَكِيْرٍ اِيَّاىَ اَبْكِىْ

से बरहेना निकलने पर जिल्लत की हालत मे अपनी पुश पर अपना बार उठाए हूए जब केमै कभी दाहेने

لِخُرُوْجِیْ مِنْ قَبْرِیْ عُرْیَانًا ذَلِیْلًا حَامِلًا ثِقْلِیْ عَلٰی ظَهْرِیْ

को देख रहा हूगा और कभी बाए। मखलुक मे से हर एक मेरे काम के एलावा दूसरो मे मशगुल होगा

اَنْظُرُ مَرَّةً عَنْ یَمِیْنِیْ وَ اُخْرٰی عَنْ شِمَالِیْ اِذِ الْخَلَآئِقُ فِیْ شَانٍ

और हर शखस उस दिन अपने काम का मोहताज होगा और दूसरो की जानिब से बे नियाज होगा उस

غَیْرِ شَانِیْ لِكُلِّ امْرِءٍ مِّنْهُمْ یَوْمَئِذٍ شَانٌ یُّغْنِیْهِ وُجُوْهٌ یَّوْمَئِذٍ

दिन कूछ लोग नुरानी चेहरे हंसते हुए हुश होगें और दुसरे लोग वो होंगे जिन के चेहने पर गुन्हा की गरद

مُّسْفِرَةٌ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ وَ وُجُوْهٌ یَّوْمَئِذٍ عَلَیْهَا غَبَرَةٌ

होगी और जिल्लत व खवारी मे छुपे हूए होगें मेरे मालीक तुझ पर ही एहतेमाद और भरोसा और उम्मीद

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ وَّ ذِلَّةٌ سَیِّدِیْ عَلَیْكَ مُعَوَّلِیْ وَ مُعْتَمَدِیْ وَ

और तवक्कूल है और तेरी रहमत से वाबसता हू जिको तु चाहता है अपनी रहमत अता करता है और

رَجَآئِیْ وَ تَوَكُّلِیْ وَ بِرَحْمَتِكَ تَعَلُّقِیْ تُصِیْبُ بِرَحْمَتِكَ مَنْ تَشَآءُ

अपने करम से जिस की चाहता है हेदायत करता है तेरी हमद है के तु ने शिर्क से मेरे दिल को पाक किया

وَ تَهْدِیْ بِكَرَامَتِكَ مَنْ تُحِبُّ فَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰی مَا نَقَّیْتَ مِنَ

और तेरी हमद है के जुबान को जिकर के लिए खोला तो कया मै इस गुन्गी जुबान से तेरा शुकर कर

الشِّرْكِ قَلْبِیْ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰی بَسْطِ لِسَانِیْ اَفَبِلِسَانِیْ هٰذَا

सकता हू या अपने अमल मे इनतेहाई कोशिश के बाद भीमै तुझ को राजी कर सकता हु तेरे शुकर के

الْكَالِّ اَشْكُرُكَ اَمْ بِغَايَةِ جُهْدِىْ فِىْ عَمَلِىْ اُرْضِيْكَ وَمَا قَدْرُ

लिए मेरी जुबान की कया हैसियत है ऐ मेरे परवरदिगार और तेरी नेएमतों और एहसान के मोकाबले मे

لِسَانِىْ يَا رَبِّ فِىْ جَنْبِ شُكْرِكَ وَمَا قَدْرُ عَمَلِىْ فِىْ جَنْبِ نِعَمِكَ

मेरे अमल की कया कियमत है। मेरे माबूद, तेरे जुद ने मेरी उम्मीद को फैलाया है और तेरी बखशिश ने

وَاِحْسَانِكَ اِلَّا اِلٰهِىْ (اِلَّا اَنَّ) اِنَّ جُوْدَكَ بَسَطَ اَمَلِىْ وَ شُكْرَكَ

मेरे अमल को कूबूल किया है मेरे मालीक तेरी तरफ मेरी तवज्जूह हे और तेरी तरफ मेरा खौफ है और

قَبِلَ عَمَلِىْ سَيِّدِىْ اِلَيْكَ رَغْبَتِىْ وَ اِلَيْكَ (مِنْكَ) رَهْبَتِىْ وَ

तेरी तरफ मेरी उम्मीद है और तेरी तरफ मुझको मेरी उम्मीद लाई है और ऐ मेरे यगाना मेरी हिम्मत तुझ

اِلَيْكَ تَامِيْلِىْ وَ قَدْ سَاقَنِىْ اِلَيْكَ اَمَلِىْ وَ عَلَيْكَ (اِلَيْكَ) يَا

पर मोतकिफ है और मेर हूज्ज़त तुझ से मानूस है और मै ने दोनों हाथ तेरी तरप@ डाल दिए है और तेरी

وَاحِدِىْ (عَلِقَتْ) عَكَفَتْ هِمَّتِىْ وَ فِيْمَا عِنْدَكَ انْبَسَطَتْ

एताअत की इसी से मै ने अपने खौफ को मिला दिया है ऐ मेरे मौला तेरे जिकर से मेरा कलब जिन्दा हे

رَغْبَتِىْ وَ لَكَ خَالِصُ رَجَآئِىْ وَ خَوْفِىْ وَ بِكَ اَنِسَتْ مَحَبَّتِىْ وَ

और तुझ से मुनाजात के जारिय्। खौफ के गम को तसकीन देता हू पस ऐ मेरे मौला ऐ मेरी उम्मीदवार

اِلَيْكَ اَلْقَيْتُ بِيَدِىْ وَ بِحَبْلِ طَاعَتِكَ مَدَدْتُ رَهْبَتِىْ يَا

ऐ मेरे मूंतहाए सवाल तु जूदाई डाल दे मेरे और मेरे इस गून्हा के दरमिया जो तेरी एताअत की बाबनदी

مَوْلَایَ بِذِکْرِكَ عَاشَ قَلْبِیْ وَبِمُنَاجَاتِكَ بَرَّدْتُ اَلَمَ الْخَوْفِ

से मुझको रोक रहा हो मै तुझ से सवाल करता हु तुझ से कदीमी उम्मीद और अजीम तरीन तमआ की

عَنِّیْ فَیَا مَوْلَایَ وَیَا مُؤَمَّلِیْ وَیَا مُنْتَهٰی سُؤْلِیْ فَرِّقْ بَیْنِیْ وَبَیْنَ

वजह से के तू ने बनदो पर रहमत और नर्मा को वाजीब करार दिया है अपने लिए हूकूम सिर्फ तेरे लिए

ذَنْبِیَ الْمَانِعِ لِیْ مِنْ لُزُوْمِ طَاعَتِكَ فَاِنَّمَا اَسْئَلُكَ لِقَدِیْمِ

है तेरा कोई शरीक नही है और मखलुक कल तेरी अयाल है और तेरे कबजे मे है और हर चीज तेरे

الرَّجَآءِ فِیْكَ وَ عَظِیْمِ الطَّمَعِ مِنْكَ الَّذِیْ اَوْجَبْتَهٗ عَلٰی

सामने सर तसलीम खम किए हूए है तु बरकत वाला है ऐ आलेमीन के पालने वाले मेरे माबूद तू हम पर

نَفْسِكَ مِنَ الرَّاْفَةِ وَالرَّحْمَةِ فَالْاَمْرُ لَكَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ

रहम कर जब मेरी हूज्ज़त मुनकता हो जाए और तेरे जवाब से मेरी जुबान गुनगी हो जाए और तेरे सवाल

لَكَ وَالْخَلْقُ کُلُّهُمْ عِیَالُكَ وَفِیْ قَبْضَتِكَ وَ کُلُّ شَیْءٍ خَاضِعٌ

के वक्त मेरी अकल मुतेराब हो जाए ऐ मेरी अजीम उम्मीद मुझ को महरूम न कर जब मेरा फकर रो

لَكَ تَبَارَکْتَ یَا رَبَّ الْعَالَمِیْنَ اِلٰهِیْ ارْحَمْنِیْ اِذَا انْقَطَعَتْ

फाका सखत हो जाए और मुझ को न निकाल मेरी जहालत की वजह से और मुझको न रोक मेरे सबर

حُجَّتِیْ وَ کَلَّ عَنْ جَوَابِكَ لِسَانِیْ وَ طَاشَ عِنْدَ سُؤَالِكَ اِیَّایَ

की कमी की वजह से मुझको अता कर मेरे फखर क वजह से और मुझ पर रहम कर मेरी कमजोरी की

لُبِّیْ فَیَا عَظِیْمَ رَجَآئِیْ لَا تُخَیِّبْنِیْ اِذَا اشْتَدَّتْ فَاقَتِیْ وَلَا

वजह से। मेरे मालीक तुझ पर मेरा एहतेमाद है और मेरा ईतमेनान हे और उम्मीद है और मेरा तवककूल

تَرُدَّنِیْ لِجَهْلِیْ وَلَا تَمْنَعْنِیْ لِقِلَّةِ صَبْرِیْ اَعْطِنِیْ لِفَقْرِیْ

है और तेरी रहमत से मेरा राबता है और तेरी बारगाह मे अपना बाझ उतार दिया है और तेरे जूद से अपनी

وَارْحَمْنِیْ لِضَعْفِیْ سَیِّدِیْ عَلَیْكَ مُعْتَمَدِیْ وَمُعَوَّلِیْ وَرَجَائِیْ

हाजत चाहता हू और ऐ मेरे परवरदिगार तेरे करम से मै अपनी दुआ तेरी तरफ खोलता हु और अपने

وَتَوَكُّلِیْ وَبِرَحْمَتِكَ تَعَلُّقِیْ وَبِفَنَآئِكَ اَحُطُّ رَحْلِیْ وَبِجُوْدِكَ

फाका मे तेरी तरफ उम्मीद लगाता हू और अपनी गुरबत को तेरी मालदारी से जबरान करता हू और तेरी

اَقْصِدُ طَلِبَتِیْ وَبِكَرَمِكَ اَیْ رَبِّ اَسْتَفْتِحُ دُعَآئِیْ وَلَدَیْكَ

माफी के साया मे मेरा कयाम है और तेरे जुदो करम की तरफ मे अपनी निगाह को उठाता हू ओर तेरे

اَرْجُوْ فَاقَتِیْ وَبِغَنَاكَ اَجْبُرُ عَیْلَتِیْ وَتَحْتَ ظِلِّ عَفْوِكَ قِیَامِیْ

एहसान की तरफ हमेशा निगाह लगाए रहता हू तो तु मुझ को जहन्नम मे न जलाना जब के तु मेरी उम्मीद

وَاِلٰی جُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ اَرْفَعُ بَصَرِیْ وَ اِلٰی مَعْرُوْفِكَ اُدِیْمُ

का मोकाम है और तू मुझ को जहन्नम में साकिन न करना क्योंके तु मेरी आँख की ठनडक हो ऐ मेरे

نَظَرِیْ فَلَا تُحْرِقْنِیْ بِالنَّارِ وَ اَنْتَ مَوْضِعُ اَمَلِیْ وَلَا تُسْكِنِّیْ

सरदार तु अपने एहसान और अता से मेरे हुसनो जन को न झुठला के तु मेरा मवससिक है और मुझको

الْهَاوِيَةَ فَإِنَّكَ قُرَّةُ عَيْنِي يَا سَيِّدِي لَا تُكَذِّبْ ظَنِّي بِإِحْسَانِكَ

अपने सवाब से महरूम न कर क्योंके तु मेरी एहतेजाज का जानने वाला हौ मेरे माबूद अगर मेरी मौत

وَمَعْرُوفِكَ فَإِنَّكَ ثِقَتِي وَلَا تَحْرِمْنِي ثَوَابَكَ فَإِنَّكَ الْعَارِفُ

करिब है और मेरे अमल ने मुझको तेरे मोकाम कुरब तक नही पहूचाया है तो मै ने अपने गुन्हा के

بِفَقْرِي إِلٰهِي إِنْ كَانَ قَدْ دَنَا أَجَلِي وَلَمْ يُقَرِّبْنِي مِنْكَ عَمَلِي

एतेराफ को सबबे उजर करार दिया है मेरे माबूद अगर तु ने माफ कर दिया तो तुझ से ज्यादा माफ करने

فَقَدْ جَعَلْتُ الْاِعْتِرَافَ إِلَيْكَ بِذَنْبِي وَسَائِلَ عِلَلِي إِلٰهِي إِنْ

का सजावार कौन है और अगर तु ने अजाब में डाल दिया तो तुझ से ज्यादा फैसला मे आदिल कौन है

عَفَوْتَ فَمَنْ أَوْلَى مِنْكَ بِالْعَفْوِ وَإِنْ عَذَّبْتَ فَمَنْ أَعْدَلُ مِنْكَ

रहम कर इस दूनिया मे मेरी गुरबत पर और मौत के वक्त हसरत और कबर मे वहदत पर और लहद मे

فِي الْحُكْمِ ارْحَمْ فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا غُرْبَتِي وَعِنْدَ الْمَوْتِ كُرْبَتِي وَ

वहशत पर और जब मेरा नामा अमल खोला जाए हिसाब के लिए तेरे सामने जिल्लत की हालत मै तो

فِي الْقَبْرِ وَحْدَتِي وَفِي اللَّحْدِ وَحْشَتِي وَإِذَا نُشِرْتُ لِلْحِسَابِ

मेरे उन आमाल को बखश दे जो लोगो पर म्‌खफी है और वो लुतफ जिस से गुन्हा की परदापोशी की

بَيْنَ يَدَيْكَ ذُلَّ مَوْقِفِي وَاغْفِرْ لِي مَا خَفِيَ عَلَى الْآدَمِيِّينَ مِنْ

है इसको बरकरार रख और मुझ पर रहम कर जब बिसतर मर्ग पर पड। हु और मेरे दोस्तो के हाथ

عَمَلِیْ وَ اٰدِمْ لِیْ مَا بِهٖ سَتَرْتَنِیْ وَارْحَمْنِیْ صَرِیْعًا عَلَی الْفِرَاشِ

मुझको पहलु बदलवाते हू और फजल कर मुझ पर जब मै गुसल के लिए लुटा दिया गया हू और नेक

تُقَلِّبُنِیْ اَیْدِیْ اَحِبَّتِیْ وَ تَفَضَّلْ عَلَیَّ مَمْدُوْدًا عَلَی الْمُغْتَسَلِ

परोडी मुझ को दाहिने बाए हरकत देते हु और मुझ पर रहम कर मेरा जनाजाह उठाए हूए अईजा जनाजा

یُقَلِّبُنِیْ صَالِحُ جِیْرَتِیْ وَ تَحَنَّنْ عَلَیَّ مَحْمُوْلًا قَدْ تَنَاوَلَ

के एतेराफ मे चल रहे हू और मूझ पर एहसान कर जब मै इस दुनिया से जा रहा हू जब और मै तनहाई

الْاَقْرِبَآءُ اَطْرَافَ جَنَازَتِیْ وَ جُدْ عَلَیَّ مَنْقُوْلًا قَدْ نَزَلْتُ بِكَ

अपनी कबर मे वारिद हूआ हू और मेरी गुरबत पर रहम कर इस नए घर मे ताके वहॉ भी तेरे एलावा

وَحِیْدًا فِیْ حُفْرَتِیْ وَارْحَمْ فِیْ ذٰلِكَ الْبَیْتِ الْجَدِیْدِ غُرْبَتِیْ حَتّٰی

किसी से मानूस न हू ऐ मेरे मालीक अगर तु मुझ को मेरे नफस के हवाले कर देगा तो मै हलाक हो

لَا اَسْتَانِسَ بِغَیْرِكَ یَا سَیِّدِیْ اِنْ وَكَلْتَنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ هَلَكْتُ

जाउगा। मेरे माली अगर तु मेरी लगजिशो से दर गुजर न करेगा तो मै किस से फरयाद करूगा मै किस

سَیِّدِیْ فَبِمَنْ اَسْتَغِیْثُ اِنْ لَمْ تُقِلْنِیْ عَثْرَتِیْ فَاِلٰی مَنْ اَفْزَعُ

की तरफ फरयाद करूंगा अगर तेरी महेबारी को कबर मे न पा सका और किस की तरफ पिन्हा लुंगा

اِنْ فَقَدْتُ عِنَایَتَكَ فِیْ ضَجْعَتِیْ وَاِلٰی مَنْ اَلْتَجِیُٔ اِنْ لَمْ تُنَفِّسْ

अगर तु मेरे गम को दुर न करेगा। मेरे मालीक मेरे कौन है और कौन मुझ पर रहम करेगा अगर तु रहम

كُرْبَتِيْ سَيِّدِيْ مَنْ لِيْ وَ مَنْ يَرْحَمُنِيْ اِنْ لَمْ تَرْحَمْنِيْ وَ فَضْلَ

न करे और किस का फजल मेरे शामिल हाल होगा अगर मै तेरे फजल को न पा सका बेचारगी के रोज

مَنْ اُؤَمِّلُ اِنْ عَدِمْتُ فَضْلَكَ يَوْمَ فَاقَتِيْ وَ اِلٰى مَنِ الْفِرَارُ مِنَ

और किस की तरफ फरार करूगा गुन्हा से जब मेरी मौक का वक्त आजाएगा। मेरे मालीक तु मुझको

الذُّنُوْبِ اِذَا انْقَضٰى اَجَلِيْ سَيِّدِيْ لَا تُعَذِّبْنِيْ وَ اَنَا اَرْجُوْكَ

अजाब मे मुबतेला न कर क्योंके मै तुझ से उम्मीद लगाए हू खुदाया मेरी उम्मीद को मुत्तहिक फमा और

اِلٰهِيْ (اَللّٰهُمَّ) حَقِّقْ رَجَآئِيْ وَ اٰمِنْ خَوْفِيْ فَاِنَّ كَثْرَةَ ذُنُوْبِيْ لَا

मेरे को अमन से बदल दे क्योके मेरे गुन्हा की कसरत से सिवाए तेरी माफ के किसी और की उम्मीद

اَرْجُوْ فِيْهَا اِلَّا عَفْوَكَ سَيِّدِيْ اَنَا اَسْئَلُكَ مَا لَا اَسْتَحِقُّ وَ

नही कि जा सकती है मेरे मालीक मै तुझ से सवाल करता हु जिसका मै मुसतहक नही हू और तु तकवा

اَنْتَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَ اَهْلُ الْمَغْفِرَةِ فَاغْفِرْ لِيْ وَ اَلْبِسْنِيْ مِنْ

और मगफेरत वाला है तु मुझको बखश दे और मुझको अपने निगाह लुतफ से ऐसा लेबास पिन्हा दे जो

نَظَرِكَ ثَوْبًا يُغَطِّيْ عَلَيَّ التَّبِعَاتِ وَ تَغْفِرُهَا لِيْ وَ لَا اُطَالَبُ بِهَا

मेरे गुन्हो को छूपाए रहे और मेरी बुराईयों से दर गुजर कर के इस का मोतालबा न किया जाए बेशक तू

اِنَّكَ ذُوْ مَنٍّ قَدِيْمٍ وَ صَفْحٍ عَظِيْمٍ وَ تَجَاوُزٍ كَرِيْمٍ اِلٰهِيْ اَنْتَ

कदीम एहसान है और अजीम चश्मपोशीवाला है व करीम दर गुजर करने वाला है मेरे खुदा तु वो करीम

الَّذِیْ تَفِیْضُ سَیْبَكَ عَلٰی مَنْ لَا یَسْئَلُكَ وَ عَلَی الْجَاهِدِیْنَ

हे के तेरा एहसान उसपर भी है जो तुझ से सवाल नही करता है व तेरी रबूबियत के इनकार करने वालो

بِرُبُوْبِیَّتِكَ فَكَیْفَ سَیِّدِیْ بِمَنْ سَئَلَكَ وَ اَیْقَنَ اَنَّ الْخَلْقَ

पर भी है तो इस पर कैसे न होगा जो तुझ से सवाल करे और यकीन रखता हो के खलक करना तेरे

لَكَ وَالْاَمْرَ اِلَیْكَ تَبَارَكْتَ وَ تَعَالَیْتَ یَا رَبَّ الْعَالَمِیْنَ

कबजे मे है व हूकूम देना तेरे कबजे मे है तो बरकत वाला और बूलंद है ऐ आलेमीन के परवरदिगार मेरे

سَیِّدِیْ عَبْدُكَ بِبَابِكَ اَقَامَتْهُ الْخَصَاصَةُ بَیْنَ یَدَیْكَ یَقْرَعُ

माली तेरा वा बनदा तेरे दावाजे पर है जिस को बेचारगी ने यहॉ ला कर खड। कर दिया है वो तेरे एहसान

بَابَ اِحْسَانِكَ بِدُعَآئِهٖ فَلَا تُعْرِضْ بِوَجْهِكَ الْكَرِیْمِ عَنِّیْ وَ

का दरवाजा अपनी दुआ से खटखटा रहा है तो तू अपने करम और बूजुरगी के सबब मुझसे रूगरदानी

اَقْبَلْ مِنِّیْ مَا اَقُوْلُ فَقَدْ دَعَوْتُ (دَعَوْتُكَ) بِهٰذَا الدُّعَآءِ وَ اَنَا

न कर व जो मै कह रहा हूँ कूबूल कर ले। मै ने तुझ को दुआ के जारिये बुलाया है व मै उम्मीद रखता हूँ

اَرْجُوْ اَنْ لَا تَرُدَّنِیْ مَعْرِفَةً مِّنِّیْ بِرَافَتِكَ وَ رَحْمَتِكَ اِلٰهِیْ اَنْتَ

के तू मुझ को नही लौटाएगा क्योंके मै तेरी महेरबानी व रहमत को पहचानता हू। मेरे माबूद तु ही वो है

الَّذِیْ لَا یُحْفِیْكَ سَآئِلٌ وَلَا یَنْقُصُكَ نَائِلٌ اَنْتَ كَمَا تَقُوْلُ

कि साईल तुझको खसता नही कर सकता है और कोइ्र पाने वाला तुझको कम नह कर सकता है तो

وَ فَوْقَ مَا نَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ صَبْرًا جَمِيْلًا وَ فَرَجًا

वैसा है जैसा तु कहता है और जो हम कहते है इस से बुलंन है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू सबर

قَرِيْبًا وَ قَوْلًا صَادِقًا وَ اَجْرًا عَظِيْمًا اَسْئَلُكَ يَا رَبِّ مِنَ الْخَيْرِ

जमील और फरज करीब और कौले सादिक और अजर अजीम का मै तुझ से सवाल करता हू ऐ मेरे

كُلِّهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَ مَا لَمْ اَعْلَمْ اَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ مِنْ خَيْرِ مَا

रब कूल की कूल नेकी का जिस को मै जानता हु और जिसको नही जानता हु खुदाया मै तुझ से सवाल

سَئَلَكَ مِنْهُ عِبَادُكَ الصّٰالِحُوْنَ يَا خَيْرَ مَنْ سُئِلَ وَ اَجْوَدَ مَنْ

करता हु हर इस नेकी का जिस का तुझ से सवाल किया है तेरे नेक बनदो ने। ऐ वो बहतरीन जात जिस

اَعْطٰى اَعْطِنِیْ سُؤْلِیْ فِیْ نَفْسِیْ وَ اَهْلِیْ وَ وَالِدَیَّ وَ وَلَدِیْ وَ اَهْلِ

से सवाल किया जाए और ऐ वो बहरीन जिस ने अता किया तो मेरे मुदा को अता कर जा मेरे बारे मे है

حُزَانَتِیْ وَ اِخْوَانِیْ فِيْكَ وَ اَرْغِدْ عَيْشِیْ وَ اَظْهِرْ مُرُوَّتِیْ وَ اَصْلِحْ

और मेरे अयाल और वालदैन और फरजन और खानदान और बरादराने ईमानी के बारे मे है और मेरे

جَمِيْعَ اَحْوَالِیْ وَ اجْعَلْنِیْ مِمَّنْ اَطَلْتَ عُمْرَهٗ وَ حَسَّنْتَ عَمَلَهٗ وَ

जिन्दागी को खुशहाल बना दे और मेरी मुरव्वत को मुसतहकम और मेरे तमात हालात को नेक बना

اَتْمَمْتَ عَلَيْهِ نِعْمَتَكَ وَ رَضِيْتَ عَنْهُ وَ اَحْيَيْتَهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً

और मुझको करार दे उन मे जिकी उमर को तु ने तुलानी बनाया हो और जिन के अमल को अच्छा किया

فِیْٓ اَدْوَمِ السُّرُوْرِ وَ اَسْبَغِ الْكَرَامَةِ وَ اَتَمِّ الْعَيْشِ اِنَّكَ تَفْعَلُ

है और जिन पर तु ने अपनी नेएमत को मोकम्मल किया और जिन से तु राजी हुआ है और जिका तु ने

مَا تَشَآءُ وَلَا يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ خُصَّنِىْ مِنْكَ

पाकिजा जिन्दागी दि है दाएमी खुशी मे और वाफर करामत मे औ मोकम्मल आराम मे बेशक तु जो

بِخَاصَّةِ ذِكْرِكَ وَلَا تَجْعَلْ شَيْئًا مِّمَّا اَتَقَرَّبُ بِهٖ فِیْٓ اٰنَآءِ اللَّيْلِ

चाहता है करता है और तेरा गैर जो चाहता है नही कर सकता। खुदाया तु अपने खास जिक को मुझ से

وَ اَطْرَافِ النَّهَارِ رِيَآءً وَلَا سُمْعَةً وَلَا اَشَرًا وَلَا بَطَرًا وَاجْعَلْنِىْ

मखसूस कर और न करार दे किसी उस चीज के जरिए मै करीब होता हू आत के वक्तो और दिन के

لَكَ مِنَ الْخَاشِعِيْنَ اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِى السَّعَةَ فِى الرِّزْقِ وَالْاَمْنَ

एहतेराफ में रेयाकारी, खूदनुमाईश् गुरूर और न तकब्बुर और मुझको अपने खुशू करने वालों में करार

فِى الْوَطَنِ وَ قُرَّةَ الْعَيْنِ فِى الْاَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ وَالْمُقَامَ فِىْ

दे खुदाया मेरे रिजक में वूसअत अता कर और वतन मे अमन अता कर और ऑखा की ठंडक अहलो

نِعَمِكَ عِنْدِىْ وَالصِّحَّةَ فِى الْجِسْمِ وَالْقُوَّةَ فِى الْبَدَنِ

अयाल, माल, औलाद और मोकाम अतर कर अपनी नेयमत मे और जिसमानी सेहत और बदन की

وَالسَّلَامَةَ فِى الدِّيْنِ وَاسْتَعْمِلْنِىْ بِطَاعَتِكَ وَ طَاعَتِ

कूवत और दीन की सलामती और मुझको बराबर अपनी एताअत और अपनी रसूल मोहम्मद स.अ.व.

رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ اَبَدًا مَا اسْتَعْمَرْتَنِيْ

की एताअत में मशगुल रख। अल्लाह का दुरूद हो उनपर और उनकी आल पर जब तक तु मुझको

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ اَوْفَرِ عِبَادِكَ عِنْدَكَ نَصِيْبًا فِيْ كُلِّ خَيْرٍ اَنْزَلْتَهٗ

जिन्दा रखे और मेरे लिए करार दे अपने बन्दो मे सब से ज्यादा हिस हर नेकी मे जिसको तु ने नाजिल

وَ تُنْزِلُهٗ فِيْ شَهْرِ رَمَضَانَ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَمَا اَنْتَ مُنْزِلُهٗ فِيْ

किया है और जिसको तु नाजिल करता है माहे रमजान मे शबे कदर मे और जिसको तु हर साल नाजील

كُلِّ سَنَةٍ مِّنْ رَحْمَةٍ تَنْشُرُهَا وَعَافِيَةٍ تُلْبِسُهَا وَبَلِيَّةٍ تَدْفَعُهَا

करने वाला है वो अपनी रहमत जिसको तु फैलाता है और आफियत जिसको तु पिन्हाता है और

وَحَسَنَاتٍ تَتَقَبَّلُهَا وَسَيِّئَاتٍ تَتَجَاوَزُ عَنْهَا وَارْزُقْنِيْ حَجَّ

मुसिबत जिसको तु दुर करता है और नेकियॉ जिन को कुबूल करता है और बुराईयॉ जिन से तु दन गुजर

بَيْتِكَ الْحَرَامِ فِيْ عَامِنَا (عَامِيْ) هٰذَا وَفِيْ كُلِّ عَامٍ وَارْزُقْنِيْ

करता है और मुझको अपनी बैतुल हराम के हज की तौफिक दे उस साल और हर साल और अपने वसी

رِزْقًا وَاسِعًا مِنْ فَضْلِكَ الْوَاسِعِ وَاصْرِفْ عَنِّيْ يَا سَيِّدِيْ

फजल से हम को वसी रिजक अता कर और ऐ मेरे मालिक मुझ से बुराईयों को दूर रख और मेरे करज

الْاَسْوَاءَ وَاقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَالظُّلَامَاتِ حَتّٰى لَا اَتَاَذّٰى

और मजालिम को अदा कर दे यहॉ तक के उन मे से किसी से मुझको अजियत न होने पाए और

بِشَیْءٍ مِّنْهُ وَ خُذْ عَنِّیْ بِاَسْمَاعِ وَ اَبْصَارِ اَعْدَآئِیْ وَ حُسَّادِیْ

दूशमनो, हासिदो, और जाजिमों और बागियो के ऑख, कान को मेरे लिए बन्द कर दे और उन के

وَالْبَاغِیْنَ عَلَیَّ وَانْصُرْنِیْ عَلَیْهِمْ وَ اَقِرَّ عَیْنِیْ (وَ حَقِّقْ ظَنِّیْ) وَ

मुकाबले मे मेरी मदद कर और मेरी ऑख को रौशन कर और मेरे दिल को फहत दे और मेरे गम व

فَرِّحْ قَلْبِیْ وَاجْعَلْ لِیْ مِنْ هَمِّیْ وَ کَرْبِیْ فَرَجًا وَ مَخْرَجًا وَاجْعَلْ

अलम के लिए कुशादगी और रेहाई अता कर और जो भी तमाम मखलुक मे से मेरे साथ बुराई का

مَنْ اَرَادَنِیْ بِسُوْءٍ مِنْ جَمِیْعِ خَلْقِكَ تَحْتَ قَدَمَیَّ وَاکْفِنِیْ

एरादा करे उस को मेरे कदमो के निचे करार दे और मेरे लिए काफी हो जा शैतान व सुलतान के शर

شَرَّ الشَّیْطَانِ وَ شَرَّ السُّلْطَانِ وَ سَیِّئَاتِ عَمَلِیْ وَ طَهِّرْنِیْ مِنَ

और मेरे अमल की बुराई से और मुझको तमाम गुन्हओ से पाक कर दे औ माफी के जरिए मुझको

الذُّنُوْبِ کُلِّهَا وَ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ بِعَفْوِكَ وَ اَدْخِلْنِی الْجَنَّةَ

जहन्नम से बचा ले और अपनी रहमत से मुझको जन्नत मे दाखिल कर और मेरी तजवीज हुरूल ऐन से

بِرَحْمَتِكَ وَ زَوِّجْنِیْ مِنَ الْحُوْرِ الْعِیْنِ بِفَضْلِكَ وَ اَلْحِقْنِیْ

अपने फजल से कर दे और मुझको मिला दे अपने नेक ओलिया मोहम्मद स.व.स. और उन के पाक व

بِاَوْلِیَآئِكَ الصَّالِحِیْنَ مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهِ الْاَبْرَارِ الطَّیِّبِیْنَ

पाकिजा नेक और बेहतरीन आल से और तेरा दुरूद हो उनपर और उपके जिसमे पर और उनकी रूहो

الطَّاهِرِينَ الْاَخْيَارِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِمْ وَ عَلٰى اَجْسَادِهِمْ

पर और अल्हा की रहमत और बरकत हो मेरे माबूद और मेरे सरदार तेरी इज्ज़त और जलालत की

وَاَرْوَاحِهِمْ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ اِلٰهِىْ وَ سَيِّدِىْ وَعِزَّتِكَ وَ

कसम खा कर कहता हू अगर तु ने मुझ से मेरे गुन्हाओ का मोतालबा किया तो मै तुझ से तेरी माफी को

جَلَالِكَ لَئِنْ طَالَبْتَنِىْ بِذُنُوْبِىْ لَاُطَالِبَنَّكَ بِعَفْوِكَ وَلَئِنْ

मोतालबा करूगा और अगर तू ने मुझ से मेरी जात और लईम होने को मोतलबा यिका तो मै तेरे करम

طَالَبْتَنِىْ بِلُؤْمِىْ لَاُطَالِبَنَّكَ بِكَرَمِكَ وَلَئِنْ اَدْخَلْتَنِى النَّارَ

का मोतालबा करूगा और तू ने मुझको जहन्नम मे दाखिल किया तो मै जहन्नम वाला को खबर कर दूंगा

لَاُخْبِرَنَّ اَهْلَ النَّارِ بِحُبِّىْ لَكَ اِلٰهِىْ وَ سَيِّدِىْ اِنْ كُنْتَ لَا

के मै तेरा मोहिब हु मेरे माबूद सरदार अगर तु ने बखशेगा मगर सिर्फ अपने वलीयों और एताअत गुजारो

تَغْفِرُ اِلَّا لِاَوْلِيَائِكَ وَ اَهْلِ طَاعَتِكَ فَاِلٰى مَنْ يَفْزَعُ

को तो किस की तरफ गुन्हागार फरयाद करेगें और अगर तु एहसान नही करेगा मगर वफादारो पर तो

الْمُذْنِبُوْنَ وَاِنْ كُنْتَ لَا تُكْرِمُ اِلَّا اَهْلَ الْوَفَآءِ بِكَ فَبِمَنْ

बुराई करने वाले किस से इसतेगासा करेगें। मेरे माबूद अगर तु मुझको जहन्नम मे दाखिल करेगा तो इस

يَسْتَغِيْثُ الْمُسِيْئُوْنَ اِلٰهِىْ اِنْ اَدْخَلْتَنِى النَّارَ فَفِىْ ذٰلِكَ

मे तेरे दूशमन की खुशी है और अगर तु मुझको जन्नत मे दाखिल करेगा तो इसमें तेरे नबी की खुशी है

سُرُورُ عَدُوِّكَ وَإِنْ اَدْخَلْتَنِي الْجَنَّةَ فَفِي ذٰلِكَ سُرُورُ نَبِيِّكَ وَ

और मै बखुदा चाहता हू के तेझको तेरे नबी की खुशी ज्यादा महबूब है तेरे दूशमन की खुशी के मोकाबले

اَنَا وَاللّٰهِ اَعْلَمُ اَنَّ سُرُورَ نَبِيِّكَ اَحَبُّ اِلَيْكَ مِنْ سُرُورِ عَدُوِّكَ

मे, खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू के मेरे दिल को अपनी मोहब्बत और खसियत से भर दे और

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَمْلَاءَ قَلْبِيْ حُبًّا لَكَ وَ خَشْيَةً مِنْكَ وَ

अपनी किताब की तसदीक और अपने ईमान और बारगाह मे खौफ व शौक से दिल को भर दे ऐ

تَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَاِيْمَانًا بِكَ وَفَرَقًا مِنْكَ وَشَوْقًا اِلَيْكَ يَا

जलालत एकराम वाले अपनी मुलाकात को मेरे लिए महबूब और मेरे मुलाकाल को अपने लिए महबूब

ذَالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ حَبِّبْ اِلَيَّ لِقَآئَكَ وَ اَحْبِبْ لِقَائِيْ

दना दे औ मेरे लिए अपनी मुलाकात मे आराम कुशादगी और करामत अता फरमा। खुदाया मुझको

وَاجْعَلْ لِيْ فِيْ لِقَائِكَ الرَّاحَةَ وَالْفَرَجَ وَالْكَرَامَةَ اَللّٰهُمَّ

मिला दे गुजरे हूए नेक लोगो से और मुझको बाकी नेक लोगो मे करार दे और नेक लोगो के रास्ते लगा

اَلْحِقْنِيْ بِصَالِحِ مَنْ مَضٰى وَاجْعَلْنِيْ مِنْ صَالِحِ مَنْ بَقِيَ وَ خُذْ بِيْ

और मेरे नफस के मुकाबले मे मेरी मदद कर जिस से तु ने नेक लोगो की मदद की है उन के नफसो के

سَبِيْلَ الصَّالِحِيْنَ وَاَعِنِّيْ عَلٰى نَفْسِيْ بِمَا تُعِيْنُ بِهِ الصَّالِحِيْنَ

मोकाबले मे और मेरे अमल का खातमा छाई पर कर और अपनी रहमत से मेरे अमल को सवाब जन्त

عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَاخْتِمْ عَمَلِيْ بِاَحْسَنِهٖ وَاجْعَلْ ثَوَابِيْ مِنْهُ

कीरार दे दे। और मेरी मदद कर हर नेयमत के लिए जो तु ने मुझको अता की है और मुझ को साबित

الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ وَ اَعِنِّيْ عَلٰى صَالِحِ مَا اَعْطَيْتَنِيْ وَ ثَبِّتْنِيْ يَا

कदम रख ऐ मेरे रब औ मुझको न पलटा उस बुराई मे जिस से तु ने मुझको नेजात दि है ऐ आलममीन

رَبِّ وَلَا تَرُدَّنِيْ فِيْ سُوْءٍ اسْتَنْقَذْتَنِيْ مِنْهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ

के रब खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू उस ईमान का जो खत्म न हो तुझ से मुलाकात तक और मेरी

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا لَا اَجَلَ لَهٗ دُوْنَ لِقَآئِكَ اَحْيِنِيْ مَا

जिन्दागी इसी ईमान पर बाकी रख जिस पर जिन्दा रखा और जब मौत भी दे तो इसी ईमान पर दे और।

اَحْيَيْتَنِيْ عَلَيْهِ وَ تَوَفَّنِيْ اِذَا تَوَفَّيْتَنِيْ عَلَيْهِ وَابْعَثْنِيْ اِذَا

और जब उठाए तो इसी ईमान पर उठा और मेरे दिल को रेयाकारी और शक और खुदनुमाई से अपने

بَعَثْتَنِيْ عَلَيْهِ وَ اَبْرِءْ قَلْبِيْ مِنَ الرِّيَآءِ وَالشَّكِّ وَالسُّمْعَةِ فِيْ

दीन मे बचा ताकी मेरा अमल तेरे लिए खालिस हो। खुदाया अपने दीन मे बसिरत अपने हुकूम मे

دِيْنِكَ حَتّٰى يَكُوْنَ عَمَلِيْ خَالِصًا لَكَ اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ بَصِيْرَةً فِيْ

समझदारी और अपने ईलम मे तफकाह और अपनी रहमत के हिस्से और तकवा जो मुझको तेरी न

دِيْنِكَ وَ فَهْمًا فِيْ حُكْمِكَ وَ فِقْهًا فِيْ عِلْمِكَ وَ كِفْلَيْنِ مِنْ

फरमानी से रोकता हो अता कर और मेरे चेहरा को अपने नूर से रौशन कर और मेरी रगबत करार दे

رَحْمَتِكَ وَ وَرَعًا يَحْجُزُنِيْ عَنْ مَعَاصِيْكَ وَ بَيِّضْ وَجْهِيْ

इस मे के जो तेरे पास है और अपने रोस्ता पर मौत दे और अपने रसूल की मिल्लत पर मौत दे और

بِنُوْرِكَ وَاجْعَلْ رَغْبَتِيْ فِيْمَا عِنْدَكَ وَ تَوَفَّنِيْ فِيْ سَبِيْلِكَ وَ عَلٰى

अल्लाह का दूरूद हो उनपर और उन की आल पर। खुदाया मै तेरे पन्हा चाहता हू काहेली, कमजोरी,

مِلَّةِ رَسُوْلِكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ

डर, बूखल, गफलत और सखत दिली और जिल्लत और फकीरी और गूरबत और फाकाह और हर

الْكَسَلِ وَالْفَشَلِ وَالْهَمِّ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَالْغَفْلَةِ

मुसिब्बत और जाहेरी और बातेनी बुराईयो से और मै तेरी पन्हा चाहता हू इस नफस से जो कनाअत नही

وَالْقَسْوَةِ وَالْمَسْكَنَةِ وَالْفَقْرِ وَالْفَاقَةِ وَ كُلِّ بَلِيَّةٍ

करता और उस शिकम से जो सैर नही होता और उस दिल से जो खशेह नही है और उस दुआ से जो

وَالْفَوَاحِشِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ نَفْسٍ لَا

सूनी नही जाती् और उस अमल से जो फायदा नही देता और पनह चाहता हू तेरे ऐ मेरे रब अपने नफस

تَقْنَعُ وَبَطْنٍ لَا يَشْبَعُ وَقَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَدُعَاءٍ لَا يُسْمَعُ وَعَمَلٍ

और दीन और माल और जो तु ने मुझको रिजक दिया है उस पर, शैतान रजीम से, बेशक तु सूनने वाला

لَا يَنْفَعُ وَاَعُوْذُبِكَ يَا رَبِّ عَلٰى نَفْسِيْ وَدِيْنِيْ وَمَالِيْ وَعَلٰى جَمِيْعِ

और जानने वाला है खुदाया कोई शखस मुझको अजाब से पन्हा नही दे सकता है और मै तेरे एलावा

مَا رَزَقْتَنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ

किसी को मलजा पाता नही हू। तु मुझको किसी अजाब मे मुबतेला न कर और मुझको हलाकत मे न

الْعَلِيْمُ اَللّٰهُمَّ اِنَّهٗ لَا يُجِيْرُنِيْ مِنْكَ اَحَدٌ وَلَا اَجِدُ مِنْ دُوْنِكَ

डाल और मुझको दरदनाक अजाब मे न डाल। खुदाया मेरे अमल को कूबूल कर ले और मेरे जिकर

مُلْتَحَدًا فَلَا تَجْعَلْ نَفْسِيْ فِيْ شَيْءٍ مِنْ عَذَابِكَ وَلَا تَرُدَّنِيْ

को बूलंद कर दे और मेरे दरजे को बूलंद कर दे और मेरे बोझ को कम कर दे और मेरी खताओ को मुझे

بِهَلَكَةٍ وَلَا تَرُدَّنِيْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّيْ وَ اَعْلِ

न याद दिला और करार दे मेरी मजलिसो को सवाब और मेरी गुफतगु को सवाब और मेरी दुआ का

ذِكْرِيْ وَارْفَعْ دَرَجَتِيْ وَ حُطَّ وِزْرِيْ وَلَا تَذْكُرْنِيْ بِخَطِيْئَتِيْ

सवाब अपनी रजामंदी और जन्नत ओर मुझको अता करा ऐ मेरे परवरदिगार वो तमाम चीजे जिनको मै

وَاجْعَلْ ثَوَابَ مَجْلِسِيْ وَ ثَوَابَ مَنْطِقِيْ وَ ثَوَابَ دُعَآئِيْ رِضَاكَ

ने तुझ से मांगा है और अपने फजल से ज्या अता कर मै तेरी तरफ रागीब हू ऐ आलममीन के परवरदिगार

وَالْجَنَّةَ وَاَعْطِنِيْ يَا رَبِّ جَمِيْعَ مَا سَاَلْتُكَ وَزِدْنِيْ مِنْ فَضْلِكَ

खुदाया बेशक तु ने अपनी किताब मे नाजिल कया है के हम उसको माफ करदेंगे जो हम पर जुलम करे

اِنِّيْ اِلَيْكَ رَاغِبٌ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ اَنْزَلْتَ فِيْ

और हम ने अपने उपर जुल्म किया है तो हम को माफ कर दे इसलिए के तु उस के लिए ज्यादा हकदार

كِتَابِكَ (الْعَفْوَ وَ اَمَرْتَنَا) اَنْ نَعْفُوَ عَمَّنْ ظَلَمَنَا وَ قَدْ ظَلَمْنَا

है और तु ने हूकम दिया है है के हम साएल को अपने दरवाजे से न लौटाएगा तो अब मै तेरे पास साएल

اَنْفُسَنَا فَاعْفُ عَنَّا فَاِنَّكَ اَوْلٰى بِذٰلِكَ مِنَّا وَ اَمَرْتَنَا اَنْ لَا

बन कर आया हू तु मुझको बेगैर मेरी हाजत पूरी किए हूए न लौटा और तु ने हम को हूकूम दिया है

نَرُدَّ سَآئِلًا عَنْ اَبْوَابِنَا وَ قَدْ جِئْتُكَ سَآئِلًا فَلَا تَرُدَّنِيْ اِلَّا

एहसान करने का, गुलामो और अयाला पर और हम तेरे गुलाम है तु हम को जहन्नम से आजाद कर दे।

بِقَضَآءِ حَاجَتِيْ وَ اَمَرْتَنَا بِالْاِحْسَانِ اِلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُنَا وَ

ऐ मेरी मुसिबत के वक्त मेरी पन्हा और मेरी तक्लीफ के वक्त मेरे फरीयादरस मे तेरी बारगाह मे नाला कर

نَحْنُ اَرِقَّآئُكَ فَاَعْتِقْ رِقَابَنَا مِنَ النَّارِ يَا مَفْزَعِيْ عِنْدَ كُرْبَتِيْ

रहा हू और तुझ से फरयाद करता हू और तेरी पन्हा चाहता हू और एलावा किसी की पन्हा नही चाहता

وَ يَا غَوْثِيْ عِنْدَ شِدَّتِيْ اِلَيْكَ فَزِعْتُ وَ بِكَ اسْتَغَثْتُ وَ لُذْتُ لَا

हू और कशईश तेरे एलावा किसी से नही चाहता हू तु तो मेरी फरयाद को पहूच्। और मेरी लिए

اَلُوْذُ بِسِوَاكَ وَ لَا اَطْلُبُ الْفَرَجَ اِلَّا مِنْكَ فَاَغِثْنِيْ وَ فَرِّجْ عَنِّيْ

कूशादागी कर ऐ वो जात जो असिर को रहाई देता है और बहूत सो को माफ करता है मेरे कम अमल

يَا مَنْ يَفُكُّ الْاَسِيْرَ وَ يَعْفُوْ عَنِ الْكَثِيْرِ اِقْبَلْ مِنِّيْ الْيَسِيْرَ

को कूबूल कर ले और मेरे कसिर गुन्हा को माफ कर दे। बेशक तु रहम करने वाला और बखशने वाला

وَاعْفُ عَنِّي الْكَثِيْرَ اِنَّكَ اَنْتَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ

है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू उस ईमान का जो दिल मे साबित रहे और उस यकीन का जो सजा

اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ وَيَقِيْنًا (صَادِقًا) حَتّٰى اَعْلَمَ

हो सच्चा हो ता के मै जान लू के मुझको इस के एलावा हरगिज कुछ न पहूचगा के जो तु ने मेरे लिए लिख

اَنَّهٗ لَنْ يُصِيْبَنِيْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِيْ وَرَضِّنِيْ مِنَ الْعَيْشِ بِمَا

दिया है और मुझको इस जिन्दागी पर राजी कर जो तु ने मोकरर की है। ऐ सब से ज्यादा रहम करने

قَسَمْتَ لِيْ يَا اَرْحَمَ الرّٰاحِمِيْنَ.

वाले।

पाँच: शेख तूसी ने फरमाया के सहेर के समय यह दुआ पढी जाए:

يَا عُدَّتِيْ فِيْ كُرْبَتِيْ وَيَا صَاحِبِيْ فِيْ شِدَّتِيْ وَيَا وَلِيِّيْ فِيْ نِعْمَتِيْ

ऐ मेरे रनज मे मेरा जखिरा और मेरे साथी मेरी तकलीफ मे और ऐ मेरे वली मेरी नेमत मे और

وَيَا غَايَتِيْ فِيْ رَغْبَتِيْ اَنْتَ السَّاتِرُ عَوْرَتِيْ وَالْمُؤْمِنُ رَوْعَتِيْ

ऐ मेरी रगबत मे इन्तेहा तु मेरे ऐब को छुपाने वाला है और खैफ मे अमान देने वाला है और मेरी

وَالْمُقِيْلُ عَثْرَتِيْ فَاغْفِرْ لِيْ خَطِيْئَتِيْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ

लगजिशो से दर गूजर करने वाला है तु मेरी खताओ को बखश दे खुदाया मै तुझ से सवाल करता

خُشُوْعَ الْاِيْمَانِ قَبْلَ خُشُوْعِ الذُّلِّ فِي النَّارِ يَا وَاحِدُ يَا

हू। ईमान के खुशुह का कबल इस के के जिल्लत के साथ् जहन्नम मे जाऊ। ऐ जात यगानाह ऐ

اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا

यकता, ऐ बे नेयाज, ऐ बे नेयाज फरजन्द व पिदर और ऐ वो जिका कोई हमसर नही है ऐ वो खुदा

اَحَدٌ يَا مَنْ يُعْطِي مَنْ سَاَلَهُ تَحَنُّنًا مِنْهُ وَرَحْمَةً وَيَبْتَدِءُ

जो उसको अता करता है जो उस से सवाल न करे फजल और करम करते हूए अपने दाएमी

بِالْخَيْرِ مَنْ لَمْ يَسْاَلْهُ تَفَضُّلًا مِنْهُ وَكَرَمًا بِكَرَمِكَ الدَّائِمِ

करम से दूरूद नाजिल कर मोहम्मह स.व.स. पर और मुझको वसी और कामिल रहमत अता कर

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاٰلِ مُحَمَّدٍ وَهَبْ لِي رَحْمَةً وَّاسِعَةً جَامِعَةً

जिस से मै दुनिया और आखेरत की नेकिया हासिल कर सकू। खुदाया म@ तुझ से इसतेगफार

اَبْلُغْ بِهَا خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا

करता हू उन गुन्हाओ र्वी लिए जिन के लिए मै ने तोबा की है और फिर दोबारा उन को किया है

تُبْتُ اِلَيْكَ مِنْهُ ثُمَّ عُدْتُ فِيْهِ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِكُلِّ خَيْرٍ

और मै इसतेगफार करता हू हर नेकी के लिए जिस के लिए मै ने चाहा के खालिस तेरे लिए बजा

اَرَدْتُ بِهِ وَجْهَكَ فَخَالَطَنِيْ فِيْهِ مَا لَيْسَ لَكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

लाओ लेकिन इस मे वो चीज शामिल हो गई जो तेरे लिए नही है खुदाया दूरूद नाजिल फरमा

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَاعْفُ عَنْ ظُلْمِيْ وَجُرْمِيْ بِحِلْمِكَ وَ

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे जुलम को माफ कर दे और मेरे जुरम को अपने हिलम

جُوْدِكَ يَا كَرِيْمُ يَا مَنْ لَا يَخِيْبُ سَائِلُهٗ وَلَا يَنْفَدُ نَائِلُهٗ يَا

और जूद से, ऐ करीम ऐ वो खुदा जिस का साईल न उम्मीद नही होता और जिस का अतिया खत्म

مَنْ عَلَا فَلَا شَيْءَ فَوْقَهٗ وَدَنَا فَلَا شَيْءَ دُوْنَهٗ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

नही होता है ऐ वो बूलंद के जिस से बूलंद कोई चीज नही है ऐ वो नजदीक जिस से ज्यादा नजदीक

وَآلِ مُحَمَّدٍ وَارْحَمْنِيْ يَا فَالِقَ الْبَحْرِ لِمُوْسٰى اللَّيْلَةَ اللَّيْلَةَ

कोई नही है दूरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझ पर रहम कर ऐ मुसा के

اللَّيْلَةَ السَّاعَةَ السَّاعَةَ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِيْ مِنَ

लिए दरया को शगाफाह करने वाले। इसी शब मे इसी शब मे, इसी रात मे इसी वक्त इसी वक्त

النِّفَاقِ وَعَمَلِيْ مِنَ الرِّيَاءِ وَلِسَانِيْ مِنَ الْكَذِبِ وَعَيْنِيْ

इसी वक्त। खुदाया मेरे दिल को नेफाक से पाक कर दे और मेरे अमल को रेयाकारी से और मेरी

مِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي

जुबा को झुट से और मेरी ऑख को खयानत से क्योंके तु निगाहों की खयानत को भी जानता है

الصُّدُوْرُ يَا رَبِّ هٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ هٰذَا

और जो दिलो छूपा है इस को भी मेरे परवरदिगार ये उस शखस का हाल है जो तेरी पनह चाहता है

مَقَامُ الْمُسْتَجِيْرِ بِكَ مِنَ النَّارِ هٰذَا مَقَامُ الْمُسْتَغِيْثِ

आतिशे जहन्नम से। ये उसका मोकाम है जो तुझ से आतिशे जहन्नम से पनह चाहता है। ये उसको

بِكَ مِنَ النَّارِ هٰذَا مَقَامُ الْهَارِبِ اِلَيْكَ مِنَ النَّارِ هٰذَا

मोकाम है जो तुझ से फरयाद तलब करता है आतिशे जहन्नम से। ये उस की मनजिल है जो तेरी

مَقَامُ مَنْ يَبُوْءُ لَكَ بِخَطِيْئَتِهٖ وَ يَعْتَرِفُ بِذَنْبِهٖ وَ يَتُوْبُ

तरफ आतिशे जहन्नम से भाग रहा है। ये उसकी हालत है जो तेरी तरफ तोबा करता है अपने गुन्हा

اِلٰى رَبِّهٖ هٰذَا مَقَامُ الْبَائِسِ الْفَقِيْرِ هٰذَا مَقَامُ الْخَائِفِ

से और अपनी गलती का एतेराफ करता है और अपने रब की तरफ तोबा करता है। ये परेशान

الْمُسْتَجِيْرِ هٰذَا مَقَامُ (الْمَحْزُوْنِ) الْمَكْرُوْبِ هٰذَا

और फकीर का मोकाम है ये खाएफ औ पनह चाहने वाले का हाल है। ये महजोन व सितम रसिदा

مَقَامُ الْمَحْزُوْنِ الْمَغْمُوْمِ الْمَهْمُوْمِ هٰذَا مَقَامَ الْغَرِيْبِ

का हाल है। ये मगमुम और अलम रसिदा का हाल है। ये गरिब व दरयाए मासियत मे गरक का

الْغَرِيْقِ هٰذَا مَقَامُ الْمُسْتَوْحِشِ الْفَرِقِ هٰذَا مَقَامُ مَنْ

हाल है ये आवारा हाल और खाएफ का हाल है ये उस का हाल है जो तेरे एलावा अपने गुन्हा का

لَا يَجِدُ لِذَنْبِهٖ غَافِرًا غَيْرَكَ وَ لَا لِضَعْفِهٖ مُقَوِّيًا اِلَّا اَنْتَ

बखशने वाला नही पाता है और न तेरे एलावा किसी को जोअफ का ताकतवर करने वाला पाता

وَ لَا لِهَمِّهٖ مُفَرِّجًا سِوَاكَ يَا اللّٰهُ يَا كَرِيْمُ لَا تُحْرِقْ وَجْهِيْ

है और न तेरे एलावा किसी को अपने गम का दूर करने वाला ऐ खुदा ऐ करीम तु मेरे चेहरा को

بِالنَّارِ بَعْدَ سُجُوْدِیْ لَكَ وَ تَعْفِيْرِیْ بِغَيْرِ مَنٍّ مِّنِّیْ عَلَيْكَ

जहन्नम में न जला जब के मै ने तेरा सज्दा किया है और मै ने खाक पर चहरा रखा है बेगैर किसी

بَلْ لَكَ الْحَمْدُ وَ الْمَنُّ وَ التَّفَضُّلُ عَلَیَّ ارْحَمْ اَیْ رَبِّ اَیْ

एहसान के बलके तेरे लिए हमद और एहसान औ फजल है मुझ पर रहम कर ऐ परवरदिगार ऐ

ऐ रब्बी को एक सांस तक दोहराता रहे। फिर पढे: رَبِّ اَیْ رَبِّ

परवरदिगार ऐ परवरदिगार

ضَعْفِیْ وَ قِلَّةَ حِيْلَتِیْ وَ رِقَّةَ جِلْدِیْ وَ تَبَدُّدَ اَوْصَالِیْ وَ تَنَاثُرَ

मेरी कमजोरी, मेरी तदबीर की कमी और मेरी जिल्द की नर्मा और मेरे अजा के मुताफर्रा हिस्से और गोस्त

لَحْمِیْ وَ جِسْمِیْ وَ جَسَدِیْ وَ وَحْدَتِیْ وَ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ وَ جَزَعِیْ

के फटने और जिस व बदन और मेरी तन्हाई और मेरी वहशत कबर और मामुली मुसिबत पर मेरी फरयाद

مِنْ صَغِيْرِ الْبَلَاءِ اَسْاَلُكَ يَا رَبِّ قُرَّةَ الْعَيْنِ وَ الْاِغْتِبَاطَ يَوْمَ

पर मै तुझ से सवाक करता हू ऐ परवरदिगार खनकी चश्म का और हसरत व शर्मादगी के रोज गबता का ऐ

الْحَسْرَةِ وَ النَّدَامَةِ بَيِّضْ وَجْهِیْ يَا رَبِّ يَوْمَ تَسْوَدُّ الْوُجُوْهُ

मेरे परवरदिगार मेरे चेहरे को नुरान्ा कर दे जिस दिन तमाम चेहरे सियाह हू, मुझको महफुज रख बडे खौफ

آمِنِّیْ مِنَ الْفَزَعِ الْاَكْبَرِ اَسْاَلُكَ الْبُشْرٰی يَوْمَ تُقَلَّبُ

से, मै तुझ से सवाल करता हू बसिरत का जिस रोज दिल और ऑखे मुकलिब हू और बशारत का दूनिया के

الْقُلُوبُ وَ الْاَبْصَارُ وَ الْبُشْرٰى عِنْدَ فِرَاقِ الدُّنْيَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

छोढने के वक्त, सारी हमद खुदा के लिए है जिस से अपनी जिन्दागी मे मदम की उम्मीद लगाए हू और जिस को

الَّذِىْ اَرْجُوْهُ عَوْنًا (لِىْ) فِىْ حَيَاتِىْ وَ اُعِدُّهٗ ذُخْرًا لِيَوْمِ فَاقَتِىْ

फकरो फाकाह के दिन के लिए जखिरा करता हू हमद उस खुदा के लिए जिस को मै बुलाता हू और उस के गैर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَدْعُوْهُ وَ لَا اَدْعُوْ غَيْرَهٗ وَ لَوْ دَعَوْتُ غَيْرَهٗ

को नही बुलाता हू और अगर किसी गैर को बुलाऊ तो मेरी दूआ न काम होगी। हमद उस खुदा के लिए जिस

لَخَيَّبَ دُعَائِىْ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَرْجُوْهُ وَ لَا اَرْجُوْ غَيْرَهٗ وَ لَوْ

से उम्मीद करता हू और जिस के एलावा से उम्मीद नही करता हू और उस के एलावा से उम्मीद लगाऊ तो मेरे

رَجَوْتُ غَيْرَهٗ لَاَخْلَفَ رَجَائِىْ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْمُنْعِمِ الْمُحْسِنِ

उम्मीद के खेलाफ होगा। हमद है खुदा के लिए के जो नेमत देने वाला, एहसान वाला लुतफव फजल करने

الْمُجْمِلِ الْمُفْضِلِ ذِى الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ وَلِىِّ كُلِّ نِعْمَةٍ وَ

वाला है जलालत व करम वाला है हर नेमत का वली है ओर हर नेक का मालीक है और हर शौक व रगबत

صَاحِبِ كُلِّ حَسَنَةٍ وَ مُنْتَهٰى كُلِّ رَغْبَةٍ وَ قَاضِىْ كُلِّ حَاجَةٍ

की इन्तेह है और हर हाजत का पूरा करने वाला है। खुदाया दूरूद नाजील फरमा मोहम्मद व आले मोहम्मद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ ارْزُقْنِى الْيَقِيْنَ وَ حُسْنَ

पर और मुझ को यकीन और हूसनू जन अता कर और मेरे दिल मे अपनी उम्मीद कायम कर और अपने

الظَّنِّ بِكَ وَ اَثْبِتْ رَجَآئَكَ فِيْ قَلْبِيْ وَ اقْطَعْ رَجَائِيْ عَمَّنْ سِوَاكَ

एलावा से मेरी उम्मीद को जुदा कर दे यहाँ तक के मै तेरे एलावा से उम्मीद न लगाऊ और तेरे एलावा पुरशूक

حَتّٰى لَا اَرْجُوَ غَيْرَكَ وَلَا اَثِقَ اِلَّا بِكَ يَا لَطِيْفًا لِّمَا يَشَاءُ اُلْطُفْ

न करू ऐ जिस पर चाहे महेरबानी करने वाले मुझ पर तमाम हालात मे महेबानी कर जो तु पसंद करता हो

لِيْ فِيْ جَمِيْعِ اَحْوَالِيْ بِمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى يَا رَبِّ اِنِّيْ ضَعِيْفٌ عَلَى

और चाहता हो ऐ मेरे रब मै जहन्नम की आग के लिए कमजोर हू तू मुझ पर जहन्नम का अजाब न करना। ऐ

النَّارِ فَلَا تُعَذِّبْنِيْ بِالنَّارِ يَا رَبِّ ارْحَمْ دُعَائِيْ وَ تَضَرُّعِيْ وَ خَوْفِيْ

मेरे रब रहम कर मेरी दुआ और मेर किगया व जारी और मेरे खौफ और मेरी जिल्लत और मिसकिनी और

وَ ذُلِّيْ وَ مَسْكَنَتِيْ وَ تَعْوِيْذِيْ وَ تَلْوِيْذِيْ يَا رَبِّ اِنِّيْ ضَعِيْفٌ عَنْ

पनह और मेरे इसतेगासा पर ऐ मेरे परवरदिगार मै बहोत कमजोर हू दुनिया की हाजतो के तलब करने मे और

طَلَبِ الدُّنْيَا وَ اَنْتَ وَاسِعٌ كَرِيْمٌ اَسْاَلُكَ يَا رَبِّ بِقُوَّتِكَ

तु वसीए करम वाला है मै तुझ से सवाल करता हू तेरी कुवत के वासते से इस पर और तेरी कुदरत के वासते

عَلٰى ذٰلِكَ وَ قُدْرَتِكَ عَلَيْهِ وَ غِنَاكَ عَنْهُ وَ حَاجَتِيْ اِلَيْهِ اَنْ

से उस पर और तेरे उस के मुशतसना होने और मेरी एतेयाज के वासते से के तू मुझको रिजक दे इस साल

تَرْزُقَنِيْ فِيْ عَامِيْ هٰذَا وَ شَهْرِيْ هٰذَا وَ يَوْمِيْ هٰذَا وَ سَاعَتِيْ هٰذِهٖ

और इस महिने मे और इस दिन और इस वक्त ऐसा रिजक जिस के जारिए तु मुझको मुसतगना बना दे उस

رِزْقًا تُغْنِيْنِيْ بِهٖ عَنْ تَكَلُّفِ مَا فِيْ اَيْدِيْ النَّاسِ مِنْ رِزْقِكَ

सैय्। की जहमत से जो लोगो के हाथ म है तेरे पास व पाकिजा और हलाल रिजक से ऐ मेरे परवरदिगार तुझ

الْحَلَالِ الطَّيِّبِ اَيْ رَبِّ مِنْكَ اَطْلُبُ وَ اِلَيْكَ اَرْغَبُ وَ اِيَّاكَ

से मै तलब करता हू औरन तेरी तरफ रागीब हू और तुझ से उम्मीद लगाए हू और तु उस का अहेल है तेरे

اَرْجُوْ وَ اَنْتَ اَهْلُ ذٰلِكَ لَا اَرْجُوْ غَيْرَكَ وَ لَا اَثِقُ اِلَّا بِكَ يَا اَرْحَمَ

एलावा से उम्मीद नही लगाता हू और तेरे एलावा किसी से उम्मीद नही करता हू । ऐ सब से बडे रहम करने

الرَّاحِمِيْنَ اَيْ رَبِّ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ وَ ارْحَمْنِيْ وَ عَافِنِيْ

वाले ऐ परवरदिगार मै ने उपर जुल्म किया है तो मुझको बखश दे मुझ पर रहम कर तु मुझ को माफ कर दे

يَا سَامِعَ كُلِّ صَوْتٍ وَ يَا جَامِعَ كُلِّ فَوْتٍ وَ يَا بَارِءَ النُّفُوْسِ

ऐ हर आवाज के सुन्ने वाले और ऐ हर छूटे हुए को जमा कर वाले और ऐ नफसो को मौत के बाद पैदा करने

بَعْدَ الْمَوْتِ يَا مَنْ لَا تَغْشَاهُ الظُّلُمَاتُ وَ لَا تَشْتَبِهُ عَلَيْهِ

वाले ऐ वो खुदा जिस के लिए दुनिया की जुल्मते बसारत मे मानेए नही होती और जिस पर आवाजे मुशतबाह

الْاَصْوَاتُ وَ لَا يَشْغَلُهٗ شَيْءٌ عَنْ شَيْءٍ اَعْطِ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ

नही होती है और जिसको कोई चीज किसी चीस से मशगूल नही करती है तो अता कर मोहम्मद स.व. को

عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ اَفْضَلَ مَا سَاَلَكَ وَ اَفْضَلَ مَا سُئِلْتَ لَهٗ وَ اَفْضَلَ

उन पर अल्लाह का दूरूद हो और उन की आल पर बहतरीन वो चीज जिसका सवाल किया हे और बहतीरन

مَا اَنْتَ مَسْئُوْلٌ لَهٗ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَ هَبْ لِى الْعَافِيَةَ حَتّٰى

वो जिसका जो तुझ से सवाल किया गया है उन के लिए और बहतीरन वो जो उन के लिए सवाल की गई

تَهْنِئَنِى الْمَعِيْشَةَ وَ اخْتِمْ لِىْ بِخَيْرٍ حَتّٰى لَا تَضُرَّنِى الذُّنُوْبُ

है रोजे कयामत तक और मुझको आफियत अता कर यहॉ तक वीं जिन्दगी को मुझ पर गवारा बना और

اَللّٰهُمَّ رَضِّنِىْ بِمَا قَسَمْتَ لِىْ حَتّٰى لَا اَسْاَلَ اَحَدًا شَيْئًا اَللّٰهُمَّ

खात्मा बिलखैर करता के कोई गुन्हा मुझको नुकसान न पहूचा सके खुदाया मुझको राजी बना इसी पर जो तु

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ افْتَحْ لِىْ خَزَائِنَ رَحْمَتِكَ وَ

ने मेरे लिए मोहय्‌।या यिका है ताके मै किसी से किसी चीज का सवाल न करू खुदाया दूरूद कर मोहम्मद व

ارْحَمْنِىْ رَحْمَةً لَا تُعَذِّبُنِىْ بَعْدَهَا اَبَدًا فِى الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ وَ

आले मोहम्मद पर और मेरे लिए रहमत के खजाने खोल दे और मुझको ऐसी रहमत अता कर जिस के बाद

ارْزُقْنِىْ مِنْ فَضْلِكَ الْوَاسِعِ رِزْقًا حَلَالًا طَيِّبًا لَا تُفْقِرُنِىْ اِلٰى

तु मुझको दुनिया व आखेरत मे कभी अजाब न दे और मुझको अपने वसीए कजल से हलाल और पाकिजा

اَحَدٍ بَعْدَهٗ سِوَاكَ تَزِيْدُنِىْ بِذٰلِكَ شُكْرًا وَ اِلَيْكَ فَاقَةً وَ فَقْرًا

रोजी अता कर ताके मै इस वीं बाद तेरे एलावा किसी का फकीर न हो सकू और तु इस के जारिए मेरे शुकर

وَ بِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ غِنًى وَ تَعَفُّفًا يَا مُحْسِنُ يَا مُجْمِلُ يَا مُنْعِمُ يَا

मे एजाफा कर दे और अपने दरबार मे एहतेजाज को ज्यादा कर दे और अपने करम से अपने गैर से बेनेयाजी

مُفْضِلُ يَا مَلِيكُ يَا مُقْتَدِرُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّا كْفِنِى

को और पाकिजगी दे दे एहसान करने वाले ऐ नेकोकार ऐ नेयमत अता करने वाले ऐ फजल वाले बादशाहा

الْمُهِمَّ كُلَّهٗ وَ اقْضِ لِىْ بِالْحُسْنٰى وَ بَارِكْ لِىْ فِىْ جَمِيْعِ اُمُوْرِىْ

ऐ एकतेदार दूरूद नाजिल फरमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और हमारे तमाम अहेम उमूर के लिए काफी

وَ اقْضِ لِىْ جَمِيْعَ حَوَائِجِىْ اَللّٰهُمَّ يَسِّرْ لِىْ مَا اَخَافُ تَعْسِيْرَهٗ

हो जा और अनजाम बखैर कर और मुझको बरकत दे तमाम उमूर मे और मेरी तमात हाजतो को पूरा कर

فَاِنَّ تَيْسِيْرَ مَا اَخَافُ تَعْسِيْرَهٗ عَلَيْكَ سَهْلٌ يَسِيْرٌ وَ سَهِّلْ لِىْ

खुदाया मेरे लिए आसान कर जिस की सखती से मै डरतो हू क्योके जिस की सखती से मै डरता हू उस का

مَا اَخَافُ حُزُوْنَتَهٗ وَ نَفِّسْ عَنِّىْ مَا اَخَافُ ضِيْقَهٗ وَ كُفَّ عَنِّىْ

आसान करना तेरे लिए बहोत सहेल है और सहेल बना दे उसको जिसकी दूशवारी से खौप@जदा हू और

مَا اَخَافُ غَمَّهٗ وَ اصْرِفْ عَنِّىْ مَا اَخَافُ بَلِيَّتَهٗ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

जिस की तनगी से मै खौफजदा हू इस मे कुशादागी अता कर और जिस के गम से खाफ जदा हू उसको रोक दे

اَللّٰهُمَّ امْلَاْ قَلْبِىْ حُبًّا لَكَ وَ خَشْيَةً مِنْكَ وَ تَصْدِيْقًا لَكَ

और जिस की मुसिबत से मै खौफ जदा हू उसको मुझ से दूर कर दे ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले खुदाया

وَ اِيْمَانًا بِكَ وَ فَرَقًا مِنْكَ وَ شَوْقًا اِلَيْكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ

मेरे दिल को अपनी मोहब्बत और हैसियत से भर दे और अपनी तसदीक और अपने उपर ईमान और शौक

الْاِكْرَامِ اَللّٰهُمَّ اِنَّ لَكَ حُقُوقًا فَتَصَدَّقْ بِهَا عَلَيَّ وَلِلنَّاسِ

और खौफ से भर दे। ऐ जलाल व करामत वाले खुदा खुदाया तेरे मेरे उपर बहोत से हूकूक है तो उसका

قِبَلِي تَبِعَاتٌ فَتَحَمَّلْهَا عَنِّي وَقَدْ اَوْجَبْتَ لِكُلِّ ضَيْفٍ قِرىً

मुतहमील हो जा मेरे लिए और तू ने हर महमान के लिए महमान नवाजी को लाजिम करार दिया है और मै

وَاَنَا ضَيْفُكَ فَاجْعَلْ قِرَايَ اللَّيْلَةَ الْجَنَّةَ يَا وَهَّابَ الْجَنَّةِ يَا

तेरा महेमान हू और तु मेरी महेमान नवाजी मे आज की रात जन्नत करार दे। ऐ जन्नत के अता करना वाले ऐ

وَهَّابَ الْمَغْفِرَةِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ.

बखशीश के अता करनो् वाले और नही है कोई कुवत व ताकत मगर सिर्फ तेरी।

छेः दुआ इद्रीस पढना मुसतहब है जिसे शेख और सय्यद ने रवायत की है और जो चाहे उसे मिसबाह या इकबाल में देख सकता है।

सातः यह दुआ पढे जो मुख्तसर तरीन दुआ है और जो इक्बाल में मौजूद है:

يَا مَفْزَعِي عِنْدَ كُرْبَتِي وَ يَا غَوْثِي عِنْدَ شِدَّتِي اِلَيْكَ فَزِعْتُ وَ

ऐ मेरी मुसिबत के वक्त मेरी पनह और ऐ मेरी सखती के वक् मेरी सखती के वक्त मेरे फरयादरस मे तेरी तरफ

بِكَ اسْتَغَثْتُ وَبِكَ لُذْتُ لَا اَلُوذُ بِسِوَاكَ وَلَا اَطْلُبُ الْفَرَجَ

नाला करता हू और तुझ से फरयाद करता हू और तेरी पनह चाहता हू तेरे एलावा किसी की पनह नही चाहता हू

اِلَّا مِنْكَ فَاَغِثْنِي وَفَرِّجْ عَنِّي يَا مَنْ يَقْبَلُ الْيَسِيرَ وَيَعْفُو عَنِ

और तेरे एलावा किसी से कूशादगी नही चाहता तु मेरी फरयाद को पहूच्। ऐ वो खुदा जो कम को कूबूल करता

الْكَثِيْرِ اِقْبَلْ مِنِّيْ الْيَسِيْرَ وَاعْفُ عَنِّيْ الْكَثِيْرَ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ

है और ज्यादा बूराई को माफ करता है तो मेरे कम अमल को कूबूल कर और मेरे ज्यादा गुन्हा को माफ कर

الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ وَيَقِيْنًا حَتّٰى

बेशक तु माफ करने वाला और रहम करने वाला है। खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू ईमान का जो मेरे दिल मे

اَعْلَمَ اَنَّهُ لَنْ يُصِيْبَنِيْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِيْ وَرَضِّنِيْ مِنَ الْعَيْشِ

कायम रहे और यकीन कमील को ता के मै जान लू के मूझको इस के सिवा कूछ भी नही पहूचेंगा। जो तेरे कलम

بِمَا قَسَمْتَ لِيْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا عُدَّتِيْ فِيْ كُرْبَتِيْ وَيَا صَاحِبِيْ فِيْ

तकदीर ने लिख है और मुझको राजी कर दे उस जिन्दगी से जो तु ने मेरे लिए मोकर्र कि है। ऐ सब से ज्यादा

شِدَّتِيْ وَيَا وَلِيِّ فِيْ نِعْمَتِيْ وَيَا غَايَتِيْ فِيْ رَغْبَتِيْ اَنْتَ السَّاتِرُ عَوْرَتِيْ

रहम करने वाले ऐ मेरी मुसिबत मे मेरा जखीरा और ऐ मेरी सखती के आलम मै मेरे दोस्त और ऐ मेरे वली

وَالْاٰمِنُ رَوْعَتِيْ وَالْمُقِيْلُ عَثْرَتِيْ فَاغْفِرْ لِيْ خَطِيْئَتِيْ يَا اَرْحَمَ

नेयम और ऐ मेरे शौक की इन्तेहा तु ही मेरे ऐब को छूपाने वाला है और मेरे खौफ को अमन में बदलने वाला है

आठः इस तसबीहात को पढे जिनको इक्बाल में नक्ल किया है। الرَّاحِمِيْنَ.

और मेरी लगजिश से दर गूजर करने वाला है तु मेरी गलति को बखश दे। ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले।

سُبْحَانَ مَنْ يَعْلَمُ جَوَارِحَ الْقُلُوْبِ سُبْحَانَ مَنْ يُحْصِيْ عَدَدَ

पाक है वो खुदा जो दिलो के ताअस्सुरात को जानता है पाक है वो खुदा जो गुन्हाओ के अदद को

الذُّنُوبِ سُبْحَانَ مَنْ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ خَافِيَةٌ فِي السَّمٰوَاتِ

जानता है पाक है वो खुदा जिस पर जमीन और आसमान को कोई राज पोशिदा नही है पाक व मून्जा है

وَالْاَرَضِيْنَ سُبْحَانَ الرَّبِّ الْوَدُوْدِ سُبْحَانَ الْفَرْدِالْوِتْرِ سُبْحَانَ

परवरदिगार महेरबान पाक है वो खुदा जो अकेला है पाक है वो खुदा जो अजीत व आजम है पाक है वो

الْعَظِيْمِ الْاَعْظَمِ سُبْحَانَ مَنْ لَا يَعْتَدِيْ عَلٰى اَهْلِ مَمْلَكَتِهٖ

खुदा जो अपने अहले मम्लेकत पर जुलम नही करता है पाक व मूनज्ञा है वो खुदा जो जमीन वाला को

سُبْحَانَ مَنْ لَا يُؤَاخِذُ اَهْلَ الْاَرْضِ بِاَلْوَانِ الْعَذَابِ سُبْحَانَ

मूखतलीफ अजाब नही देता है बावजूद के वो उस के मूसतहक है पाक है वो खुदा जो लुतफ व एहसान

الْحَنَّانِ الْمَنَّانِ سُبْحَانَ الرَّئُوْفِ الرَّحِيْمِ سُبْحَانَ الْجَبَّارِ الْجَوَادِ

वाला है पाक व मूनज्ञा है। खुदा महेरबान और रहीम है पाक है वो खुदा जो जब्बार और जव्वाद है पाक है

سُبْحَانَ الْكَرِيْمِ الْحَلِيْمِ سُبْحَانَ الْبَصِيْرِ الْعَلِيْمِ سُبْحَانَ الْبَصِيْرِ

वो खुदा जो करीम और बूर्दबार है। पाक हे वो खुदा जो देखने वाला और जानने वाला है। पाक है वो खुदा

الْوَاسِعِ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَلٰى اِقْبَالِ النَّهَارِ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَلٰى اِدْبَارِ النَّهَارِ

जो देखने वाला वूसअत वाला है। पाक है वो खुदा इसी के लिए पाकीजगी है जब दिन आ जाए पाकीजगी

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَلٰى اِدْبَارِ اللَّيْلِ وَ اِقْبَالِ النَّهَارِ وَلَهُ الْحَمْدُ وَ الْمَجْدُ

है खुदा की जब दिन चला जाए खुदा की पाकीजगी है रात के जाने और दिन के आने पर और उसी

وَ الْعَظَمَةُ وَالْكِبْرِيَآءُ مَعَ كُلِّ نَفَسٍ وَ كُلِّ طَرْفَةِ عَيْنٍ وَكُلِّ لَمْحَةٍ

के लिए हमद, बूजूरगी, अजमत और किबरेयाई है हर नफस के साथ और हर चश्म जदन मे और हर

سَبَقَ فِيْ عِلْمِهٖ سُبْحَانَ مِلْاَ مَا اَحْصٰى كِتَابُكَ سُبْحَانَكَ زِنَةَ

लमहा जो इस के ईलम मे साबीक हूआ है तेरी ससबीह व पाकीजगी है ऐ खुदा जिस कदर किताब और

عَرْشِكَ سُبْحَانَكَ سُبْحَانَكَ سُبْحَانَكَ.

तेरे ईलम ने एहसार किया है तेरी पाकीजगी है तेरे अरश के हम बद तु पाक है। तु पाक है। तु पाक है।

मालूम होना चाहिए के अगर रोज़े की नीय्यत सहरी खाने के बाद करे तो बेहतर है वरना शबे अव्वल से आखिर शब तक किसी समय भी नीय्यत कर सकता है और नीय्यत के माना सिर्फ यह है के कल खुदा के लिए उन तमाम चीज़ों से परहेज़ करूंगा जो रोज़े को तोडने वाली है। और बिलकुल उचित है के माहे रमज़ान की रातों में नमाज़े शब को न छोडे और उसे ज़रूर अमल में ले आए।

चौथी किस्म: आमाल अय्याम माहे रमज़ान

एक: हर रोज़ इस दुआ को पढे जिसको शेख और सय्यद ने नक्ल किया है:

اَللّٰهُمَّ هٰذَا شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْ اَنْزَلْتَ فِيْهِ الْقُرْاٰنَ هُدًى

खुदाया ये रमजान को महिना है जिस में तु ने कुरआन को नाजिल किया है जो लोगों के लिए हेदायत है

لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ وَهٰذَا شَهْرُ الصِّيَامِ

और हेदायत की निशानियॉं है और हक व बातिल मे फर्र करने वाला है और ये रोजा को महिना है और

وَ هٰذَا شَهْرُ الْقِيَامِ وَ هٰذَا شَهْرُ الْاِنَابَةِ وَ هٰذَا شَهْرُ التَّوْبَةِ

ये एबादत को महिना है और ये तोबा को महिना है और ये खुदा की तरफ आने का महिना है और ये

وَهٰذَا شَهْرُ الْمَغْفِرَةِ وَالرَّحْمَةِ وَ هٰذَا شَهْرُ الْعِتْقِ مِنَ النَّارِ

मगफेरत और रहमत का महिना है ये जहननम से आजादी का महिना है और जन्नत के लिए कामयाबी

وَالْفَوْزِ بِالْجَنَّةِ وَ هٰذَا شَهْرٌ فِيْهِ لَيْلَةُ الْقَدْرِ الَّتِيْ هِيَ خَيْرٌ مِنْ

का महिना हैऔर ये वो महिना है जिस मे शबे कदर है जो हजार महिने से बेहतर है खुदाया तु दूरूद

اَلْفِ شَهْرٍ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَعِنِّيْ عَلٰى

नाजिल फरमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी मदद फरमा उसके रोजा और एबादत पर और

صِيَامِهٖ وَقِيَامِهٖ وَسَلِّمْهُ لِيْ وَسَلِّمْنِيْ فِيْهِ وَاَعِنِّيْ عَلَيْهِ بِاَفْضَلِ

उस महिना को मेरे लिए सालीम बना दे और मुझको इसमें सालिम रख और मेरी मदद कर अपनी

عَوْنِكَ وَ وَفِّقْنِيْ فِيْهِ لِطَاعَتِكَ وَ طَاعَةِ رَسُوْلِكَ وَ اَوْلِيَآئِكَ

बहतरीन मदद के साा और इसमें मुझको अपनी एताअत और अपने रसूल और अपने वलीयों की

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ فَرِّغْنِيْ فِيْهِ لِعِبَادَتِكَ وَ دُعَآئِكَ وَ تِلَاوَةِ

एताअत की तौफिक अता कर अल्लाह का दूरूद उप पर और उसमें मुझको फारिग रख। अपनी एबादत

كِتَابِكَ وَاَعْظِمْ لِيْ فِيْهِ الْبَرَكَةَ وَاَحْسِنْ لِيْ فِيْهِ الْعَافِيَةَ وَاَصِحَّ

और दुआ, अपनी किताब की तलावत के लिए और इसमें मेरे लिए बरकत को ज्यादा कर और इसमे

فِيْهِ بَدَنِيْ وَ اَوْسِعْ فِيْهِ رِزْقِيْ وَ اكْفِنِيْ فِيْهِ مَا اَهَمَّنِيْ وَ اسْتَجِبْ

मेरे आफियत को हसीन बना और इस मे मेरे बदन को सेहत दे और इसमें मुझको उसअते रिजक दे और

فِيْهِ دُعَائِيْ وَ بَلِّغْنِيْ فِيْهِ رَجَائِيْ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

इसमे मेरे लिए मेरे अहेम उमूर मे केफालत कर और इस मे मेरी दूआ को कूबूल कर और इसमे मेरी

وَّ اَذْهِبْ عَنِّيْ فِيْهِ النُّعَاسَ وَ الْكَسَلَ وَ السَّامَةَ وَ الْفَتْرَةَ

उम्मी को दे दे। खुदाया दूरूद नाजिल फरमा मोहम्मद और आले मोहम्मद पर और इस मे मुझ से

وَ الْقَسْوَةَ وَ الْغَفْلَةَ وَ الْغِرَّةَ وَ جَنِّبْنِيْ فِيْهِ الْعِلَلَ وَ الْاَسْقَامَ وَ

खशतगी और सुस्ती और बे हाली और कसल मंदी और कसावत कलबी और गफलत और गुरूक को

الْهُمُوْمَ وَ الْاَحْزَانَ وَ الْاَعْرَاضَ وَ الْاَمْرَاضَ وَ الْخَطَايَا وَ

दूर कर दे और मुझ से बरतरफ कर दे इसमे बिमारियोख् अमराज, गमो व हजन और हवादिस व

الذُّنُوْبَ وَ اصْرِفْ عَنِّيْ فِيْهِ السُّوْءَ وَ الْفَحْشَآءَ وَ الْجَهْدَ وَ الْبَلَآءَ

अवारिज और गलती और गुन्हाओं को और मुझ से दूर कर दे अस मे बुराई और फहेश काम और बला

وَ التَّعَبَ وَ الْعَنَآءَ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

व जहमत तकान और बे तौहज्ञी को बेशक तु ही दुआ का सुन्ने वाला है। खुदाया तु दूरूद नाजिद कर

اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَعِذْنِيْ فِيْهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ وَ هَمْزِهٖ وَ لَمْزِهٖ وَ

मोहम्महद व आले मोहम्मद पर और इस महिना में मुझको बचा ले शैतान मरदूद से और इसकी ऐब जूई

نَفْثِهٖ وَ نَفْخِهٖ وَ وَسْوَسَتِهٖ وَ تَثْبِيْطِهٖ وَ كَيْدِهٖ وَ مَكْرِهٖ وَ حَبَآئِلِهٖ

और बद गोई और बूरी फिकरो के वारिद करने से और इस के वसवसो और ला परवा करने से ओर

وَ خُدَعِهٖ وَ اَمَانِيِّهٖ وَ غُرُوْرِهٖ وَ فِتْنَتِهٖ وَ شَرَكِهٖ وَ اَحْزَابِهٖ وَ اَتْبَاعِهٖ

इसके फरेब और मकर से और उस के जालो और धोको से और उसके गलत आरजूओ और गुरूर से

وَ اَشْيَاعِهٖ وَ اَوْلِيَآئِهٖ وَ شُرَكَآئِهٖ وَ جَمِيْعِ مَكَآئِدِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

और उसकी फीतनाह अनगेजी और उसके शुरका और उसके गोरोह और उसकी पैरवी करने वालो

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ ارْزُقْنَا قِيَامَهٗ وَ صِيَامَهٗ وَ بُلُوْغَ الْاَمَلِ فِيْهِ

और उसके ओलीया और साथियो से और उसके तमाम मकरो से। खुदाया दूरूद नाजिल फरमा मोहम्मद

وَ فِيْ قِيَامِهٖ وَ اسْتِكْمَالَ مَا يُرْضِيْكَ عَنِّيْ صَبْرًا وَّ احْتِسَابًا وَّ

व आले मोहम्मद पर और हम को तौफिक दे एबादत और रोजा की उम्मद के पा जाने की इसमें और

اِيْمَانًا وَّ يَقِيْنًا ثُمَّ تَقَبَّلْ ذٰلِكَ مِنِّيْ بِالْاَضْعَافِ الْكَثِيْرَةِ وَ

इसमे मे एताअत करे की और ईतकमाल रूह की जिस से तु मुझ से राजी हो जाए सबर व एखलास,

الْاَجْرِ الْعَظِيْمِ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ

एहतेसाब व ईमान व याकीन के साथ फिर तु कूबूल कर ले मेरे अमल को बहूत ज्यादा फरावानी के साथ

مُحَمَّدٍ وَ ارْزُقْنِي الْحَجَّ وَ الْعُمْرَةَ وَ الْاِجْتِهَادَ وَ الْقُوَّةَ وَ النَّشَاطَ وَ

और अजर अजीम के साथ ऐ तमाम आलम के पालने वा खुदया दूरूद नाजील कर मोहम्मह व आले

لِاِنَابَةَ وَالتَّوْبَةَ وَالْقُرْبَةَ وَالْخَيْرَ الْمَقْبُوْلَ وَالرَّغْبَةَ وَالرَّهْبَةَ وَ

मोहम्मद पर और मुझको तौफीक दे हज और उमरा और कोशिश और ताक और खुशी और अनाबत

التَّضَرُّعَ وَالْخُشُوْعَ وَالرِّقَّةَ وَالنِّيَّةَ الصَّادِقَةَ وَصِدْقَ اللِّسَانِ

औ तौबा और कुरबत और खेर मकबूल और शौक, डर और गिरय्। व राजी और खूशोअ, नर्मा कलब

وَالْوَجَلَ مِنْكَ وَالرَّجَآءَ لَكَ وَالتَّوَكُّلَ عَلَيْكَ وَالثِّقَةَ بِكَ وَ

और सच्ची नियत और जुबान की सच्चाई और खौफ और तुझ से उम्मीद और तुझ पर तवक्कुल और तुझ

الْوَرَعَ عَنْ مَحَارِمِكَ مَعَ صَالِحِ الْقَوْلِ وَ مَقْبُوْلِ السَّعْيِ وَ

पर शौक तेरे हराम से बचने की बहतरीन कौल के साथ और कोशिश मकबूल और बुलंद कैसे हुए

مَرْفُوْعِ الْعَمَلِ وَمُسْتَجَابِ الدَّعْوَةِ وَلَا تَحُلْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ شَيْءٍ

अमल और मकबूल देआ की, और न हाएल हो मेरे और उस के दरमीयान कोई हाएल न कोई हादेसा

مِّنْ ذٰلِكَ بِعَرَضٍ وَلَا مَرَضٍ وَلَا هَمٍّ وَلَا غَمٍّ وَلَا سُقْمٍ وَلَا

न बिमारी और न गम व आलम और न गफलत और निसयान बल्के हर काम तेरे अमर की तरफ

غَفْلَةٍ وَلَا نِسْيَانٍ بَلْ بِالتَّعَاهُدِ وَالتَّحَفُّظِ لَكَ وَفِيْكَ وَالرِّعَايَةِ

तव्वजह करते हूए और खुददार ीव तहफफुज के साथ और तेरे हक का लेहाज रखते हूए तेरे एहद और

لِحَقِّكَ وَالْوَفَآءِ بِعَهْدِكَ وَ وَعْدِكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

वादा को पूरा करते हूए अनजाम पाए तेरी रहमत से ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले खुदाया दूरूद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَاقْسِمْ لِىْ فِيْهِ اَفْضَلَ مَا

नाजील फरमा मोहम्म और आले मोहम्मद पर और उसमे मेरा हिस्सा वो बेहतीरन सिस्ह करार दे जो तूने

تَقْسِمُهٗ لِعِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ وَ اَعْطِنِىْ فِيْهِ اَفْضَلَ مَا تُعْطِىْ

अपने नेक बन्दो के लिए करार दिया है और उसमे मुझको अता कर वो बहतरीन चीज जिसको तु ने

اَوْلِيَآئَكَ الْمُقَرَّبِيْنَ مِنَ الرَّحْمَةِ وَالْمَغْفِرَةِ وَالتَّحَنُّنِ وَالْاِجَابَةِ

अपने मोकररब वलीयो को अता किया है रहमत और मगफेरत और लुतफ और दुआ का मकबूल होना

وَالْعَفْوِ وَالْمَغْفِرَةِ الدَّآئِمَةِ وَالْعَافِيَةِ وَالْمُعَافَاةِ وَالْعِتْقِ مِنَ

और माफी और मगफेरत दाएमी और आफियत और सलामती और जहन्नम से आजादी और जन्नत की

النَّارِ وَالْفَوْزِ بِالْجَنَّةِ وَخَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

आमयाबी और दुनया व आखेरत की नेकी खुदाया दुरूद नाजील कर मोहम्म्द व आले मोहम्मद पर और

مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّاجْعَلْ دُعَآئِىْ فِيْهِ اِلَيْكَ وَاصِلًا وَرَحْمَتَكَ وَ

मेरी दुआ को इस महिना मे अपनी तरफ पहूचा दे और अपनी रहमत और खैर को इस मे मेरी तरफ

خَيْرَكَ اِلَىَّ فِيْهِ نَازِلًا وَعَمَلِىْ فِيْهِ مَقْبُوْلًا وَسَعْيِىْ فِيْهِ مَشْكُوْرًا

नाजील कर और मेरे अमल को कूबूल कर ले और मेरी कोशिश को कूबूल कर और मेरे गुन्हा को

وَّذَنْبِىْ فِيْهِ مَغْفُوْرًا حَتّٰى يَكُوْنَ نَصِيْبِىْ فِيْهِ الْاَكْثَرَ وَحَظِّىْ فِيْهِ

बखश दे ता के मेरा मोकददर इस मे ज्यादा और मेरा हिससा इस मे कसिर हो। खुदाया दूरूद नाजील कर

الْاَوْفَرَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ وَفِّقْنِيْ لِلَيْلَةِ الْقَدْرِ

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको तौफीक दे शबे कदर मे बहतरीन हालत मे जिस पर तु अपने

عَلٰى اَفْضَلِ حَالٍ تُحِبُّ اَنْ يَكُوْنَ عَلَيْهَا اَحَدٌ مِنْ اَوْلِيَآئِكَ وَ

वलीयो मे से किसी को रखना चाहता है और तेरे नज्दीक ज्यादा पसंदीदा हे खुदाया मेरे लिए इस मे शबे

اَرْضَاهَا لَكَ ثُمَّ اجْعَلْهَا لِيْ خَيْرًا مِنْ اَلْفِ شَهْرٍ وَّ ارْزُقْنِيْهَا

कदर को हजार माह से बेहतर करार दे और इसमे मुझको बहतरीन जिरक दे जो तु ने उसको दिया है

اَفْضَلَ مَا رَزَقْتَ اَحَدًا مِمَّنْ بَلَّغْتَهٗ اِيَّاهَا وَ اَكْرَمْتَهٗ بِهَا

जिसको तु ने शबे कदर तक पहूचा दिया हे और जिसको तु ने सरफराज किया है और मुझ को इस मे

وَاجْعَلْنِيْ فِيْهَا مِنْ عُتَقَآئِكَ مِنْ جَهَنَّمَ وَ طُلَقَآئِكَ مِنَ النَّارِ وَ

जहन्नम से आजाद होने वालो मे करार दे और आग से छुटकारा पाने वालो मे और अपनी मखलुक मे

سُعَدَآءِ خَلْقِكَ بِمَغْفِرَتِكَ وَ رِضْوَانِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ

सआदत याफता लोगो मे अपनी मगफेरत और रिजवान के जारिए ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَارْزُقْنَا فِيْ شَهْرِنَا هٰذَا الْجِدَّ

खुदाया दूरूद नाजील कर मोहम्मद व अले मोहम्मद पर और हम को अता कर दे अस माह मे कोशिश

وَالْاِجْتِهَادَ وَالْقُوَّةَ وَ النَّشَاطَ وَ مَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى اَللّٰهُمَّ رَبَّ

और कूवत और एबादत मे निशात का और तु जो चहता है और जिस से तु राजी होता है खुदाया ऐ सूबहे

الْفَجْرِ وَلَيَالٍ عَشْرٍ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ وَرَبَّ شَهْرِ رَمَضَانَ وَمَا

और दस रातो और वतर के परवरदिगार और परवरदिगार माहे रमजान और जो तु ने इस मे कुआन

اَنْزَلْتَ فِيْهِ مِنَ الْقُرْاٰنِ وَرَبَّ جَبْرَئِيْلَ وَمِيْكَآئِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ

नाजील किया है और जिबरईल व मिकाईल और इसराफील व ईजराईल और तमाम मलाएका

وَ عِزْرَائِيْلَ وَ جَمِيْعِ الْمَلٰئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ رَبَّ اِبْرَاهِيْمَ وَ

मोकर्राबीन के रब और इबराहीम व ईसमाईल और ईसहाक व याकूब के रब और मुसा व ईसा और

اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ رَبَّ مُوْسٰى وَ عِيْسٰى وَ جَمِيْعِ

तमाम नबयों और रसूलो के परवरदिगार औ खातमुल अम्मीया मोहम्मद स.व. के परवरदिगार तेरा

النَّبِيِّيْنَ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَرَبَّ مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ صَلَوَاتُكَ

दूरूद हो उन पर और उप सब पर और मै तुझ से सवाल करता हू तेरे हक के वासते से जो उन के हक

عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ وَ اَسْئَلُكَ بِحَقِّكَ عَلَيْهِمْ وَ بِحَقِّهِمْ

के वासते से जो तुझ पर है और तेरे अलीम हक के वासते से के तु दूरद भेजे उन पर और उन की आल

عَلَيْكَ وَ بِحَقِّكَ الْعَظِيْمِ لَمَّا صَلَّيْتَ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَعَلَيْهِمْ

पर और तमाम अम्मीया पर और मुझ पर नजरे रहमत फरमा के तु मुझ से हमेशा राजी रहे और इसमे

اَجْمَعِيْنَ وَ نَظَرْتَ اِلَيَّ نَظْرَةً رَحِيْمَةً تَرْضٰى بِهَا عَنِّيْ رِضًى لَا

मुझ पर कभी नाराज न हो और मुझको अता कर दे मेरी तमाम हाजतें और आरजूए और उम्मीदे और

سَخَطَ عَلَيَّ بَعْدَهُ اَبَدًا وَ اَعْطَيْتَنِيْ جَمِيْعَ سُؤْلِيْ وَ رَغْبَتِيْ وَ اُمْنِيَّتِيْ

मेरे एरादे और मुझ से दूर कर दे वो चीजे जिसको मै न पसंद करता हू और खौफ व हेरास रखता हू और

وَ اِرَادَتِيْ وَ صَرَفْتَ عَنِّيْ مَا اَكْرَهُ وَ اَحْذَرُ وَ اَخَافُ عَلٰى نَفْسِيْ وَ

जिस से मै नही डरता हू और मेरे अहलो अयाल और माल से और मेरे भाईयो और मेरी जूरिया से खुदाया

مَا لَا اَخَافُ وَ عَنْ اَهْلِيْ وَ مَالِيْ وَ اِخْوَانِيْ وَ ذُرِّيَّتِيْ اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ

तेरी तरफ अपने बुन्हाओ से भाग कर आया हू तु मुझको पन्हा दे तौबा करने वाले की तरह और मेरी

فَرَرْنَا مِنْ ذُنُوْبِنَا فَاٰوِنَا تَائِبِيْنَ وَ تُبْ عَلَيْنَا مُسْتَغْفِرِيْنَ

तौबा कूबूल कर ले इसतगफार करने वाले की तरह और हम को बखश दे पनाह चाहने वाले की तरह

وَ اغْفِرْ لَنَا مُتَعَوِّذِيْنَ وَ اَعِذْنَا مُسْتَجِيْرِيْنَ وَ اَجِرْنَا مُسْتَسْلِمِيْنَ

और हम को पनाह दे पनाह के तलबगार की तरह और हम को अजर दे तसली अमर करने वाले तरह

وَ لَا تَخْذُلْنَا رَاهِبِيْنَ وَ اٰمِنَّا رَاغِبِيْنَ وَ شَفِّعْنَا سَائِلِيْنَ وَ

और हम को रूसवा न कर डरने वाले की तरह और हम को महफुज कर रगबत करने वाले की तरह

اَعْطِنَا اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ قَرِيْبٌ مُجِيْبٌ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ وَ اَنَا

और हमारी शफाअत कर सवाल करने वालो की तरह बेशक तु दुआ का सुन्ने वाला है करिब है और

عَبْدُكَ وَ اَحَقُّ مَنْ سَئَلَ الْعَبْدُ رَبَّهُ وَ لَمْ يَسْئَلِ الْعِبَادُ مِثْلَكَ

कूबूल करने वाला है खुदाया तु मेरा रब है और मै तेरा बन्दा हू और ज्यादा सजावार बन्दा के जो अपने

كَرَمًا وَ جُوْدًا يَا مَوْضِعَ شَكْوَى السَّائِلِيْنَ وَ يَا مُنْتَهٰى حَاجَتِي

रब से सवाल करे और तेरे जैसे किस से बन्दो ने रम वजूद का सवाल नही किया है ऐ सवाल करने वालो

الرَّاغِبِيْنَ وَ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ وَ يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ

की फरयाद का मोकाम और ऐ शौक रखने वाला की इन्तेहा हाजत औ ऐ फयाद करने वालो की

الْمُضْطَرِّيْنَ وَ يَا مَلْجَاَ الْهَارِبِيْنَ وَ يَا صَرِيْخَ الْمُسْتَصْرِخِيْنَ وَ يَا

फरयादरस और परेशान खातिर लोगो की दुआ के कूबूल करने वाले और ऐ भागने वालो की पनह और

رَبَّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَ يَا كَاشِفَ كَرْبِ الْمَكْرُوْبِيْنَ وَ يَا فَارِجَ

ऐ फरयाद करने वालो की फरयादरस और ऐ कमजोरो के परवरदिगार और ऐ गमजदों गम के दूर करने

هَمِّ الْمَهْمُوْمِيْنَ وَ يَا كَاشِفَ كَرْبِ الْعَظِيْمِ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا

वाले और ऐ रनज वालो के रनज के दूर करने वाले और बडे बडे मसाएब के खत्म करने वाले ऐ अल्लाह,

رَحِيْمُ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَاغْفِرْ لِيْ

ऐ रहम करने वाले ऐ महेबानी करने वाले ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले दूरूद मोहम्मद व आले

ذُنُوْبِيْ وَ عُيُوْبِيْ وَ اِسَاۤئَتِيْ وَ ظُلْمِيْ وَ جُرْمِيْ وَ اِسْرَافِيْ عَلٰى نَفْسِيْ

मोहम्मद पर और मेरे गुन्हा को बखश दे और मेरे ऐबो और मेरी बूराईयो और मेरे जुल्म और जूरम और

وَارْزُقْنِيْ مِنْ فَضْلِكَ وَ رَحْمَتِكَ فَاِنَّهٗ لَا يَمْلِكُهَا غَيْرُكَ وَاعْفُ

ज्यादती नफस को बखश दे और अपने फजल व रहमत का रिजक मुझ को दे क्योंके उसका मालीक

عَنِّیْ وَغْفِرْلِیْ کُلَّ مَا سَلَفَ مِنْ ذُنُوْبِیْ وَاعْصِمْنِیْ فِیْمَا بَقِیَ مِنْ

तेरे एलावा और कोई नही है और मुझको माफ कर दे और मुझको बखश दे जो गुन्हा भी मेरे पहले हो

عُمْرِیْ وَاسْتُرْ عَلَیَّ وَ عَلٰی وَالِدَیَّ وَ وَلَدِیْ وَ قَرَابَتِیْ وَ اَهْلِ

चुके हो और मुझको मेरी बाकी उमर म महफुज रख और मेरे और मेरे वालदैन और मेरी औलाद और

حُزَانَتِیْ وَمَنْ کَانَ مِنِّیْ بِسَبِیْلٍ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ فِی

अजीज और मुझ से वाबसता और जो भी मोमेनीन व मोमेनात हू दुनिया व आखेरत मे उन के गुन्हाओं

الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ فَاِنَّ ذٰلِکَ کُلَّهٗ بِیَدِکَ وَاَنْتَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ

को छूपा ले क्योंके ये सब का सब तेरे कबजे मे है और तू बहूत वसी बखश्ने वाला है पस तु मुझको महरूम

فَلَا تُخَیِّبْنِیْ یَا سَیِّدِیْ وَلَا تَرُدَّ دُعَآئِیْ وَلَا یَدِیْ اِلٰی نَحْرِیْ حَتّٰی

न कर। ऐ मेरे मालीक और मेरी दूआ को न लौटा और न मेरे हाथ को मेरी गरदन की तरफ कर के तु

تَفْعَلَ ذٰلِکَ بِیْ وَتَسْتَجِیْبَ لِیْ جَمِیْعَ مَا سَئَلْتُکَ وَتَزِیْدَنِیْ مِنْ

मेरे वासते सखती कर और तु कूबूल कर ले तमाम उन चीजो को जिनका मै ने तुझ से सवाल किया है

فَضْلِکَ فَاِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ وَنَحْنُ اِلَیْکَ رَاغِبُوْنَ اَللّٰهُمَّ

और अपने फजल से ज्यादा अता कर के तु हर चीज पर कादीर हे और हम तेरी तरफ रागीब है खुदाया

لَکَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰی وَالْاَمْثَالُ الْعُلْیَا وَالْکِبْرِیَآءُ وَالْاٰلَآءُ

तेरे लिए अच्छे नाम है और बुलंद मिसाले है और किबरेयाई और नेयमते है मै तुझ से सवाल करता हू

اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اِنْ كُنْتَ قَضَيْتَ

तेरे नाम से जो बिसमिल्लाहिररहमान निर्रहीम मे है अगर तु ने इस राम मे मलाएका और रू को नाजील

فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ تَنَزُّلَ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوْحِ فِيْهَا اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

होना मोकददर किया है के तु दुरूद नाजील फरमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे नाम को नेक

وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِيْ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ مَعَ الشُّهَدَآءِ

बखतो मे करार दे और मेरी रूह को शेहदा मे और मेरे एहसान को मोकामे ईल्लीन मे और मेरी बुराई को

وَاِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَ اَنْ تَهَبَ لِيْ يَقِيْنًا

बखश् दे और मुझ को वो यकीन दे जिस से मेरा दिल मुतमईन रहे और ऐसा ईमान जिस मे शक का गुजर

تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ وَ اِيْمَانًا لَا يَشُوْبُهٗ شَكٌّ وَ رِضًى بِمَا قَسَمْتَ لِيْ وَ

न हो और इस पर रजा मंदी जो तु ने मेरे लिए मोकर्र की हे और मुझको दुनिया और आखेरत मे नेकी

اٰتِنِيْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنِيْ عَذَابَ النَّارِ وَ

अता कर और मुझ को जहन्नम के अजाब से बचा ले और अगर तु ने फैसेला नही किया है मलाएका

اِنْ لَمْ تَكُنْ قَضَيْتَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ تَنَزُّلَ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوْحِ

और रूह के इस मे नाजील करने का तु मुझको मोवख्खीर रख उस वक्त तक (यानि जिन्दा रख) और

فِيْهَا فَاَخِّرْنِيْ اِلٰى ذٰلِكَ وَارْزُقْنِيْ فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ

उसमें मुझको अपने जिकर, अपने शूकर और अपनी एबादत की नेकीकी तौफीक अता कर और दूरूद

طَاعَتِكَ وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ بِاَفْضَلِ

नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर अपना बहतरीन दूरूद ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले, ऐ

صَلَوَاتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا رَبَّ مُحَمَّدٍ اغْضَبِ

यकता ऐ बेनेयाज ऐ मोहम्मद के जब आज के दिन मोहम्मद और उपकी पाकीजा इज़्ज़त के हवाले से

الْيَوْمَ لِمُحَمَّدٍ وَ لِاَبْرَارِ عِتْرَتِهٖ وَاقْتُلْ اَعْدَآئَهُمْ بَدَدًا

दुशमनो पर गजब कर और उपके तमाम दुशमनो को मोकम्मल तौर पर कतल कर औ रूऐ जमीन पर

وَاَحْصِهِمْ عَدَدًا وَلَا تَدَعْ عَلٰى ظَهْرِ الْاَرْضِ مِنْهُمْ اَحَدًا وَلَا

किसीको उन मे से न छोड और उनमें से किसी को तु न बखश ऐ बहतरीन रफीक ऐ बहतरीन खलिफा

تَغْفِرْ لَهُمْ اَبَدًا يَا حَسَنَ الصُّحْبَةِ يَا خَلِيْفَةَ النَّبِيِّيْنَ اَنْتَ اَرْحَمُ

बनाने वाले पैगमब्बरो को तु सब से ज्यादा रहम करने वाला है ऐ पैदा करने वाले , ऐ जाहीर करने वाले

الرَّاحِمِيْنَ الْبَدِئُ الْبَدِيْعُ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِكَ شَىْءٌ وَالدَّآئِمُ

तेरे मिसल कोई नही है और दाएमी है किसी से गाफिल नही है और वो जिन्दा है जो कभी मरता नही है

غَيْرُ الْغَافِلِ وَالْحَىُّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ اَنْتَ كُلَّ يَوْمٍ فِىْ شَاْنٍ اَنْتَ

तेरे लिए रोजआना एक शान है तु मोहम्मद को खिलीफा बनाने वाला तु मोहम्मद को नासिर और

خَلِيْفَةُ مُحَمَّدٍ وَّ نَاصِرُ مُحَمَّدٍ وَّ مُفَضِّلُ مُحَمَّدٍ اَسْئَلُكَ اَنْ تَنْصُرَ

मोहम्मद को फजीलत अता करने वाला हे म तुझ से सवाल करता हू के मोहम्मद के वसी और मोहम्मद

وَصِيِّ مُحَمَّدٍ وَّ خَلِيْفَةَ مُحَمَّدٍ وَّ الْقَآئِمَ بِالْقِسْطِ مِنْ اَوْصِيَآءِ

के खलिफा की और मोहम्मद के ओलीआ मे अदालत के साथ कयाम करने वाले और आखेरी एमान

مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ اِعْطِفْ عَلَيْهِمْ نَصْرَكَ يَا لَا اِلٰهَ

कीनुसरत फरमा तेरा दुरूद हो उन पर और उप सब पर और अपनी नुसरत को उन के लिए मरकूज कर

اِلَّا اَنْتَ بِحَقِّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اجْعَلْنِىْ

ऐ वो खुदा के तेरे एलावा कोई खुदा नही है इस हक के वासते से के तेरे एलावा कोई खुदा नही है दुरूद

مَعَهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاجْعَلْ عَاقِبَةَ اَمْرِىْ اِلٰى غُفْرَانِكَ وَ

फरमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको उपके साथ दुनिया व आखेरत मे करार दे और मेरा

رَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ كَذٰلِكَ نَسَبْتَ نَفْسَكَ يَا سَيِّدِىْ

अनजाम कार अपनी मगफेरत और रहमत को करार दे ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले और तु ने खुद

بِاللَّطِيْفِ بَلٰى اِنَّكَ لَطِيْفٌ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَالْطُفْ

को इसी महेबानी से मनसूब किया है ऐ मेरे सरदार बेशक तु महेबानी करने वाला है तु दुरूद नाजील

لِمَا تَشَآءُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَارْزُقْنِىَ الْحَجَّ

फरमा मोहम्मद व आपले मोहम्मद पर और महेरबानी कर तु जिस पर चाहे महेरबानी करता है खुदाया

وَالْعُمْرَةَ فِىْ عَامِنَا هٰذَا وَتَطَوَّلْ عَلَىَّ بِجَمِيْعِ حَوَائِجِىْ لِلْاٰخِرَةِ

तु दूरूद नाजील फरमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको हज और उम्रा की तौफी अता कर

وَالدُّنْيَا

फिर तीन बार ये दुआ पढ़े:

इस साल और मेरी तमाम दुनिया और आखेरत की हाजतो को पूरा फरमा

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّيْ وَ اَتُوبُ اِلَيْهِ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُجِيْبٌ اَسْتَغْفِرُ اللهَ

अपने रब अल्लाह से इसतेगफार करता हु और इसकी की तरफ तोबा करता हु बेशक मेरा रब रहम करने

رَبِّيْ وَ اَتُوبُ اِلَيْهِ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَدُوْدٌ اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّيْ وَ اَتُوبُ اِلَيْهِ

वाला और महेरबान है मै अपने रब अल्लाह से इसतेगफार करता हू और इसी की तरफ तौबा करता हू

اِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ اِنَّكَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ رَبِّ اِنِّيْ عَمِلْتُ

बेशक वो बडा बबखने वाला है खुदाया मुझको बखश दे बेशब तु बडा रहम वाला है खुदाया मै ने बुराई

سُوْٓءً وَ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

की है और अपने नफस पर जुलम किया हे तु मुझको बखश दे बेशक तेरे एलावा कोई गुन्हाओ का

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ الْحَلِيْمُ الْعَظِيْمُ

बखशनेवाला नही है मै उव खुदा से इसतेगफार करता हू के इस के एलावा कोई खुदा नही हे वो जिन्दा

الْكَرِيْمُ الْغَفَّارُ لِلذَّنْبِ الْعَظِيْمِ وَ اَتُوْبُ اِلَيْهِ اَسْتَغْفِرُ اللهَ اِنَّ

और पाईनदा बुर्दबार है अजीम और करीम है बखशने वाला है गुन्हाए अजीम का और उसकी तरफ

اللهَ كَانَ غَفُوْرًا رَحِيْمًا

उसके बाद इस दुआ को पढ़े:

इसतेगफार करता हू मै अल्ला सके इसतेगफार करता हू बेशक खुदा बखशने वाला रहम करने वाला है

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَجْعَلَ فِيْمَا تَقْضِيْ وَ

खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू के तु दुरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और

تُقَدِّرُ مِنَ الْاَمْرِ الْعَظِيْمِ الْمَحْتُوْمِ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ مِنَ الْقَضَاءِ

उन अहेम और बडे उमूर मे से जिन को अपने कजा व कदर से शबे कदर मे हतमी तौर पर करार

الَّذِيْ لَا يُرَدُّ وَلَا يُبَدَّلُ اَنْ تَكْتُبَنِيْ مِنْ حُجَّاجِ بَيْتِكَ الْحَرَامِ

दिया है जो तबदील और मूतागैयर नही होते है तु मुझको अपने बैतूल हराम के हाजीयो मे लिख दे

الْمَبْرُوْرِ حَجُّهُمُ الْمَشْكُوْرِ سَعْيُهُمُ الْمَغْفُوْرِ ذُنُوْبُهُمُ الْمُكَفَّرِ

जिन को हज कूबूल हो जिन की कोशिश काबीले शूकरऔर जिन के गुन्हा बखशे हूए हु जिनकी

عَنْهُمْ سَيِّاٰتُهُمْ وَ اَنْ تَجْعَلَ فِيْمَا تَقْضِيْ وَ تُقَدِّرُ اَنْ تُطِيْلَ عُمْرِيْ

बुराईया महवे की हूई हु और तु अपने कजा व कदर से मेरी उमर को दुलानी बना दे और मेरे

وَ تُوَسِّعَ رِزْقِيْ وَ تُؤَدِّيَ عَنِّيْ اَمَانَتِيْ وَ دَيْنِيْ اٰمِيْنَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ

रिजक मे उसअत अतर कर और मेरी एमानत और करिजा को अदा कर दे ऐ अलेमीन के रब

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ مِنْ اَمْرِيْ فَرَجًا وَ مَخْرَجًا وَارْزُقْنِيْ مِنْ حَيْثُ

इस दुआ को कूबूल फरमा ले खुदाया मेरे अमर मे कुशासगी और आसानी पैदा कर और मुझको

اَحْتَسِبُ وَمِنْ حَيْثُ لَا اَحْتَسِبُ وَاحْرُسْنِيْ مِنْ حَيْثُ اَحْتَرِسُ

रिजक अता कर उस जगह से जिस का मै गुमान करता हू और जिसको गुमान नही करता हु और

وَ مِنْ حَيْثُ لَا اَحْتَرِسُ وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ سَلِّمْ

तु मुझको महफूज कर जहॉ से मै अपनी हेफाजत करता हू और जहॉ नही करता हू और दूरूद

كَثِيْرًا

नाजील फरमा मोहम्मद और उनकी आल पर और ज्यादा नाजील कर।

दो: ओलमा ने फरमाया है के रमज़ान महीने में शुरू से आखिर तक रोज़ाना इन तसबीहात को पढे जिनके दस हिस्से हैं। और हर हिस्से में दस सुब्हानल्लाह हैं।

(١) سُبْحَانَ اللّٰهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ

(१) पाक है वो खुदा जो मखलुक का पैदा करने वाला है पाक हे वो खुदा जो सुरत गर आलम है,

الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللّٰهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ سُبْحَانَ اللّٰهِ

पाक है वो खुदा जो तमाम जोडों का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो तारिकीयों और नूर

فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ سُبْحَانَ اللّٰهِ

का बनाने वाला है, पाक है वो खुदा जो दाना और बीज को शगाफता करने वाला है, पाक है वो

خَالِقِ مَا يُرٰى وَ مَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ سُبْحَانَ

खुदा जो हर चीज का खालीक है, पाक है वो खुदा जो देखी और अनदेखी चीज का पैदा करने

اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الَّذِيْ لَيْسَ شَيْءٌ اَسْمَعَ

वाला है, पाक है वो खुदा जिस के कलमात लामतनाही है पाक है वो खुदा जो आलेमीन का रब

مِنْهُ يَسْمَعُ مِنْ فَوْقِ عَرْشِهٖ مَا تَحْتَ سَبْعِ اَرَضِيْنَ وَ يَسْمَعُ مَا

है पाक है वो खुदा जो ऐसा सुनने वाला है के कोई चीज उस से ज्यादा सुनने वाली नही है वो अर्श

فِي الظُّلُمَاتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ يَسْمَعُ الْاَنِيْنَ وَ الشَّكْوٰى وَ يَسْمَعُ

की बूलंदी से सुनना है सातो जमीन की पसती तक वो सुनता है बयाबान और दरया की तारिकीयो

السِّرَّ وَ اَخْفٰى وَ يَسْمَعُ وَسَاوِسَ الصُّدُوْرِ وَ لَا يُصِمُّ سَمْعَهٗ

मे वो सुनता है नाला व जारी को सुनता है राज और मखफी को वो सुनता है दिलो के वसवसों

صَوْتٌ.

को और कोई आवाज उसकी समाअत से फौत नही होती है

(٢) سُبْحَانَ اللهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ

(२) पास है वो खुदा जो मखलुक का पैदा करने वाला है पाक है वो खुदा जो सुरत गर है, पाक है

الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ سُبْحَانَ

वो खुदा जो तमाम जोडो का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो तारिकीयो और रोशनी का

اللهِ فَالِقِ الْحَبِّ وَ النَّوٰى سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ سُبْحَانَ اللهِ

बनाने वालाप है, पाक है वो खुदा जो बीज और दाना को शगाफता करने वाला है, पाक है वो

خَالِقِ مَا يُرٰى وَ مَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللهِ مِدَادًا كَلِمَاتِهٖ سُبْحَانَ اللهِ

खुदा जो हर हर चीज का खालीक है, पाक है वो खुदा जो देखी और अनदेखी चीजो का खालीक

رَبِّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللهِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ شَىْءٌ اَبْصَرَ مِنْهُ

है पाक है वो खुदा जिसके कलमात ला मतनाही हैख् पाक है वो खुदा जो आलमीन का रब है,

يُبْصِرُ مِنْ فَوْقِ عَرْشِهٖ مَا تَحْتَ سَبْعِ اَرَضِيْنَ وَ يُبْصِرُ مَا فِىْ

पाक है वो खुदा जो बसिर है कोई उस से ज्यादा देखने वाला नही है वो अरश की बुलंदी स`ले

ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ

कर सातों जमीन के निचे तक देखता है और जो बयाबान और दरया की तारिकीयों मे है उसको

وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ لَا تُغْشِىْ بَصَرَهُ الظُّلْمَةُ وَلَا يُسْتَتَرُ مِنْهُ

भी देखता है और वो लतीफ व खबीर है तारिकी उस की नगाह से पोशिदा नही है और न कोई

بِسِتْرٍ وَ لَا يُوَارِىْ مِنْهُ جِدَارٌ وَ لَا يَغِيْبُ عَنْهُ بَرٌّ وَ لَا بَحْرٌ وَ لَا

पारदा उसकी बसिरत को हाएल होता है और न कोई दिवार उस से छिपा सकती है और न उस

يَكِنُّ مِنْهُ جَبَلٌ مَا فِىْ اَصْلِهٖ وَ لَا قَلْبٌ مَا فِيْهِ وَ لَا جَنْبٌ مَا

की निगाह से खुशकी व तरी गाएब है और उस के छिपे नही है जो पहाडों की जड मे मादनयात

فِىْ قَلْبِهٖ وَ لَا يَسْتَتِرُ مِنْهُ صَغِيْرٌ وَّ لَا كَبِيْرٌ وَ لَا يَسْتَخْفِىْ مِنْهُ

है और न जो दिल मे है और कोई छोटी चीज उस से मखफी है और न बडी चीज और न छोटी

صَغِيْرٌ لِصِغَرِهٖ وَلَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ هُوَ

चीज अपने छोटा होने की वजह से मखफी है और न आसमान व जमीन मे से कोई चीज उस से

الَّذِىْ يُصَوِّرُكُمْ فِى الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ

पोशिदा है। वही वो खुदा है जो रहम मे सूरतगीरी करता है जैसे भी चाहता है इस के एलावा कोई

الْحَكِيْمُ.

माबबूद नही है वो गाएब हिकमत वाला है

(٣) سُبْحَانَ اللّٰهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ

(३) पाक है वो खुदा जो मुखलुक का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो सूरत गर है, पाक है

الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللّٰهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ سُبْحَانَ

वो खुदा जो तमाम जोडो का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो तारिकीयो और रोशनी का

اللّٰهِ فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ كُلِّ شَىْءٍ سُبْحَانَ اللّٰهِ

बनाने वाला है, पाक है वो खुदा जो बीज और दाना का शगाफता करने वाला है, पाक है वो खुदा

خَالِقِ مَا يُرٰى وَمَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ مِدَادًا كَلِمَاتِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ

जो हर चीज का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो देखी और अनदेखी चीजो का खालीक

رَبِّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللّٰهِ الَّذِىْ يُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ وَ

है, पाक है वो खुदा जिस के कलमात बे ईन्तेहा है, पाक है वो खुदा जो आलमीन का रब है, पाक

يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ

है वो खुदा जो सनगीन बादलो को ईजाद करता है और कडक जिस के हमद की तसबीह करती है

فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَآءُ وَيُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهِ

और मलाएका उस के खैफ से तसबीह करते है और वो बिजलीयो को भेजता है फिर जहॉ चाहता

وَيُنَزِّلُ الْمَآءَ مِنَ السَّمَآءِ بِكَلِمَتِهِ وَيُنْبِتُ النَّبَاتَ بِقُدْرَتِهِ وَ

है वहॉ तक पहूचा देता है और हवाओ को भेजता है अपनी रहमत की बशारत बना कर और

يَسْقُطُ الْوَرَقُ بِعِلْمِهِ سُبْحَانَ اللهِ الَّذِىْ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ

अपने हूकम से आसमान से बारीश नाजील करता है और अपनी कूदरत से नबातात उगाता है

ذَرَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَلَا اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَا اَكْبَرُ اِلَّا فِىْ

और अपने ईलम से पत्तको को गिराता है, पाक है वो खुदा जिस से जमीन और आसमान को कोई

كِتَابٍ مُبِيْنٍ.

जररा भी दूर नही है न छोटा और न बडा मगर ये के किताबे मूबीन मे उसको शूमार किया गया है।

(٤) سُبْحَانَ اللهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ

(४) पाक है वो खुदा जो मखलुक का पैदा करना वाला है, वो खुदा जो मूसव्वीर है, पाक है वो

الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ سُبْحَانَ

खुदा जो तमाम जोडो का पैदा करना वाला है, पाक है वो खुदा जो तारिकीयो और रोशनी का

اللهِ فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ كُلِّ شَىْءٍ سُبْحَانَ اللهِ

बनाने वाला है, पाक है वो खुदा जो बीज और दाना को शगाफता करने वाला है, पाक है वो खुदा

خَالِقِ مَا يُرٰى وَ مَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ مِدَادَا كَلِمَاتِهٖ سُبْحَانَ

जो हर चीज का खालीक है पाक है वो खुदा जो देखी और अन देखी चीजो का खालीक है, पाक

اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللّٰهِ الَّذِىْ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى

है वो खुदा जिस के कलमात बे ईन्तेहा है, पाक है वो खुदा जो आलमीन का रब है, पाक है वो

وَ مَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَ مَا تَزْدَادُ وَ كُلُّ شَىْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ

खुदा जो हर मोवन्नस के हमल को चानता है और रहम मे जो कमी होती है और जो ज्यादती होती

عَالِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ سَوَآءٌ مِنْكُمْ مَنْ

है और हर चीज की मिकदार उस के नजदीक मोअय्यन है वो गैब और जाहीर को जाने वाला

اَسَرَّ الْقَوْلَ وَ مَنْ جَهَرَ بِهٖ وَ مَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَ سَارِبٌ

है, बडा है, बंलंद है उस के लिए बराबर है चाहे कोई अपनी बात को छूपाए और चाहे जाहीर करे

بِالنَّهَارِ لَهٗ مُعَقِّبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ

और जो रात की तारिकीयो मे छूपा है और दिन मे जाहीर है उस के लिए हर चीज के आगे और

اَمْرِ اللّٰهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الَّذِىْ يُمِيْتُ الْاَحْيَآءَ وَ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَ يَعْلَمُ

पिछे उस के पासबान हे और अमर खुदा से उसकी हेफाजत करते है, पाक है वो खुदा जो जिन्दो

مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ وَ يُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا يَشَآءُ اِلٰى اَجَلٍ

को मौत देता है और मुरदो को जिन्दा करता है और जानता है जिनको जमीन कम रती है और वो

مَسَمًّى.

साबित करता रहमो मे जो चाहता है मोअय्यन मूददत तक के लिए।

(٥) سُبْحَانَ اللهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللهِ

(५) पाक है वो खुदा जो मखलुक का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो सूरत गर है, पाक

خَالِقِ الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ

है वो खुदा जो तमाम जोडो का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो तारिकीयो और रोशनी

سُبْحَانَ اللهِ فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ

का बनाने वाला है, पाक है वो खुदा जो बीज और दाना का शगाफता करने वाला है, पाक है वो

سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ مَا يُرٰى وَ مَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللهِ مِدَادَ

खुदा जो हर चीज का खालीक है, पाक है वो खुदा जो देखी और अन देखी का खालीक है, पाक

كَلِمَاتِهٖ سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللهِ مَالِكِ الْمُلْكِ

है वो खुदा जिस के कलमात बे ईन्तेहा है, पाक है वो खुदा जो आलमीन का रब है, पाक है वो

تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَ تُعِزُّ مَنْ

खुदा जो काएनात का मालीक है जिसको चाहता है मुलक अता करता है और जिस से चाहता है

تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

मुलक छीन लेता है और जिस को चाहता है इज़्ज़त देता है और जिस को चाहता है जलील करता

تُوْلِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ تُخْرِجُ الْحَيَّ

है तेरे कबजे मे खैर है तु हर चीज पर कादीर है रात को दिन मे दाखिल करता है और दिन को

مِنَ الْمَيِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمِيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ

रात मे जिन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को जिन्दा से, और तु जिसे चाहता है बे हिसाब

حِسَابٍ.

रोजी देता है

(٦) سُبْحَانَ اللهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ

(६) पाक है वो खुदा जो मखलुक का पैदा करने वाला है पो है वो खुदा जो सूरत गर है, पाक है

الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ سُبْحَانَ اللهِ

वो खुदा जो तमाम जोडो का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो तारिकीयो और रोशनी का

فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ

बनाने वाला है, पाक है वो खुदा जो देखी और अन देखी चीजो का पैदा यकरने वाला है पाक है

مَا يُرٰى وَ مَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ

वो खुदा जिस र्वी कलमात बे ईन्तेहा है पाक है वो खुदा जो आलमीन का रब है, पाक है वो खुदा

الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللهِ الَّذِيْ عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا اِلَّا

जिस के पास गैब के खजाने है जिनको इस के एलावा कोई नही जानता है और वो जानता है जो

هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا

खुशकी और तरी मे है और कोई पता नही गिरता है मगर वो उसको जानता है और नही है कोई

حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ اِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِيْنٍ.

दाना जमीन की तारिकीयो मे और न खुशक व तर मगर ये के किताबे मूबीन है मौजूर है।

(٧) سُبْحَانَ اللّٰهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللّٰهِ

(७) पाक है वो खुदा जो मखलुक का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो सूरत गर है, पाक है वो

خَالِقِ الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللّٰهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ

खुदा जो तमाम जोडो का खालीक है पाक है वो खुदा जो तारिकीयो और रोशनी का बनाने वाला है,

سُبْحَانَ اللّٰهِ فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ

पाक है वो खुदा जो बीज और दाना को शगाफता करने वाला है, पाक है वो खुदा जो हर चीज का पैदा

سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ مَا يُرٰى وَمَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ مِدَادَ

करने वाला है, पाक है वो खुदा जो देखी और उन देखी चीजो का खालीक है पाक है वो खुदा जिस

كَلِمَاتِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يُحْصِيْ

के कलमात बे ईन्तेहा है, पाक है वो खुदा जो आलमीन का परवरदिगार है, पाक हे वो खुदा जिस की

مِدْحَتَهُ الْقَآئِلُوْنَ وَلَا يَجْزِيْ بِاٰلَآئِهِ الشَّاكِرُوْنَ الْعَابِدُوْنَ

मदह का एहसह मदहा करने वाले नही कर सकते और जिस की नेमतों का शूकर शूकर करने वाले

وَهُوَ كَمَا قَالَ وَفَوْقَ مَا نَقُوْلُ وَاللّٰهُ سُبْحَانَهٗ كَمَا اَثْنٰى عَلٰى

और एबादत गूजार लोग नही अदा कर सकते, वैसा है जैसे उसने कहा और हमारे कौल से बुलंद

نَفْسِهٖ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهٖ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ

है और अल्लाह पाक व बे नेयाज है वैसा जैसे उसने खुद सना की है और कोई किसी चीज के जरए

كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَؤُدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ

उस के ईलम का अहाता नही कर सकता मगर जो चाहे इस के तहत सलतनत ने आसमानो और

الْعَظِيْمِ.

जमीन के घेर लिया है और उन दोनो की हेफाजत उसको थकाती नही है और वो बुलंद व अजीम है

(٨) سُبْحَانَ اللّٰهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللّٰهِ

(८) पाक है वो खुदा्र जो मखलुक का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो सूरतगर है, पाक

خَالِقِ الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللّٰهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ

है वो खुदा जो तमाम जोडो का पैदा करने वाला है पाक है वो खुदा जो तारिकीयो और रोशनी का

سُبْحَانَ اللّٰهِ فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ

बनाने वाला है, पाक है वो खुदा जो हर चीज का खालीक है, पाक है वो खुदा जो देखी और अन देखी

سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ مَا يُرٰى وَمَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ مِدَادَ

चीजो का खालीक है, पाक है वो खुदा जिस के कलमात बे ईन्तेहा है, पाक है वो खुदा जो आलमीन

كَلِمَاتِهِ سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللهِ الَّذِىْ يَعْلَمُ

का रब है, पाक है वो खुदा जो जानता है उस चीज को जो जमीन मे दाखील होती है और जो उस से

مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ

निकलती है और जो आसमान से नाजील होती है और जो आसमान पर बूलंद होती है और जमीन

وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَلَا يَشْغَلُهُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ

के अन्दर जो है और जो जमीन से निकलती है वो उस को मशगूल नही करती है उस चीज से जो

مِنْهَا عَمَّا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَلَا يَشْغَلُهُ

आसमान से नाजील होती है और आसमान मे बूलंद होती है और नही गाफील करती है उसको

مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا عَمَّا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ

आसमान से नाजील होन वाली और आसमान की तरफ बूलंद होने वाली उस से जो जमीन मे है

وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَلَا يَشْغَلُهُ عِلْمُ شَىْءٍ عَنْ عِلْمِ شَىْءٍ وَلَا

और जमीन से निकलती है और उसको किसी चीज का ईलम किसी चीज के ईलम से गाफील नही

يَشْغَلُهُ خَلْقُ شَىْءٍ عَنْ خَلْقِ شَىْءٍ وَلَا حِفْظُ شَىْءٍ عَنْ حِفْظِ

करता है और किसी चीज का पैदा करना दूसरी चीज के पैदा करने से गाफील नही करता है और न

شَىْءٍ وَلَا يُسَاوِيْهِ شَىْءٌ وَلَا يَعْدِلُهُ شَىْءٌ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَىْءٌ وَ

किसी शै की हेफाजत करना दूसरी चीज की हेफाजत से और उस के बराबर काई चीज नही है और

هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ.

न उसकी नजीर कोई चीज है, कोई चीज उसके मीसल नही है वो सूनने वाला और देखने वाला है।

(٩) سُبْحَانَ اللّٰهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ

(९) पाक है वो खुदा जो मखलुक का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो सूरतगर है, पाक है

الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللّٰهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ سُبْحَانَ اللّٰهِ

वो खुदा जो तारिकीयो और रोशनी का बनाने वाला है, पाक है वो खुदा जो बीज और दाना का

فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ سُبْحَانَ اللّٰهِ خَالِقِ

शगाफता करने वाला है, पाक है वो खुदा जो हर चीज का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो

مَا يُرٰى وَ مَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللّٰهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ

देखी और अन देखी चीजो का खालीक है, पाक है वो खुदा जिस के कलमात बे ईन्तेह है, पाक है

الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰئِكَةِ

वो खुदा जो आलमीन का रब है, पाक है वो खुदा जो आसमानो और जमीन का पैदा करने वाला

رُسُلًا اُوْلِیْ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَ ثُلَاثَ وَرُبَاعَ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ

हे और मलाएका को रसूल और दो तीन चार परो वाला बनाने वाला है मखलुक मे जिस को

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا

चाहता है ज्यादा कर देता है बेशक खुदा हर चीज पर कादीर हे जो रहमत का दरवाजा वो लोगो

مُمْسِكَ لَهَا وَ مَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ

के लिए खोल दे इस का कोई बन्द करने वाला नही है और जो वो बन्द कर दे तो उस के बाद उस

الْحَكِيْمُ.

का कोई खोलने वाला नही है और वो गालीब हिकमत वाला है।

(١٠) سُبْحَانَ اللهِ بَارِءِ النَّسَمِ سُبْحَانَ اللهِ الْمُصَوِّرِ سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ

(१०) पाक है वो खुदा जो मखलुक का पैदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो सूरतगर है, पाक है वो

الْاَزْوَاجِ كُلِّهَا سُبْحَانَ اللهِ جَاعِلِ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرِ سُبْحَانَ

खुदा जो तमाम जोडो का पेदा करने वाला है, पाक है वो खुदा जो अधेंरो और रोशनी का बनाने वाला

اللهِ فَالِقِ الْحَبِّ وَالنَّوٰى سُبْحَانَ اللهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ سُبْحَانَ اللهِ

है पाक हे वो खुदा जो बीज और दाना का शगाफता करने वाला है, पाक है वो खुदा जो तमाम चीजो

خَالِقِ مَا يُرٰى وَمَا لَا يُرٰى سُبْحَانَ اللهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهِ سُبْحَانَ اللهِ

का खालीक है, पाक है वो खुदा जो देखी और अन देखी चीजो का खालीक है, पाक है वो खुदा जिस

رَبِّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَ اللهِ الَّذِيْ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِيْ

के कलमात बे ईन्तेहा है, पाक है वो खुदा जो आलमीन का रब हे, पाक है वो खुदा जो जानता है उसको

الْاَرْضِ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَجْوٰى ثَلَاثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ

जो आसमानो मे है और जो जमीन मे है और कोई तीन आदमी राज दाराना बात नही करते है मगर ये

إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ أَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَمَا

के उन मे का चौथा खुदा होता है और न पॉच सरगोसी करते है मगर ये के उन मे का छेटा खुदा होता

كَانُوْا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّ اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

है और न उस से कम और न उस से ज्यादा मगर ये के खुदा उन के साथ है जहॉ भी वो हू फिर वो

عَلِيْمٌ.

उन को उन के आमाल से रोजे कयामत बा खबर करेगा, बेशक खुदा हर चीज का जानने वाला है।

तीन: शेख तूसी और सय्यद इब्ने ताऊस का यह भी कहना है के इस सलवात को भी रोज़ाना पढ़े:

إِنَّ اللهَ وَمَلٰئِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوا

बेशक अल्लाह और उस के मलाएका दूरूद भेजते है नबी पर ऐ ईमान वाला तू भी दूरूद भेजो उन पर और

عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا لَبَّيْكَ يَا رَبِّ وَسَعْدَيْكَ وَسُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ

सलाम पढो जो सलाम का हक है ऐ खुदा मै ने कूबूल किया और मै हाजिर हूआ और पाक व बे नेयाज है

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ

तु खुदाया दूरूद नाजील फरमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और बरकत नाजील कर मोहम्मद व आले

وَبَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَاٰلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ

मोहम्मद पार जैसा के तु ने दूरूद भेजा और बरकत नाजील की ईबराहीम और आले इबराहीम पर बेशक

ارْحَمْ مُحَمَّدًا وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا رَحِمْتَ إِبْرَاهِيْمَ وَاٰلَ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ

तु हमद किया हूआ और बूजूरगी वाला है खुदाया रहमत भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जैसा के तू

حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا سَلَّمْتَ عَلٰى

ने रहमत नाजील की है इबराहीम और आले इबराहीम पर बेशक तु हमीद व मजीद हौ खुदाया सलाम

نُوْحٍ فِي الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ امْنُنْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا مَنَنْتَ

भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जैसा के तु ने सलाम भेजा है नूह पर आलमीन मे खुदाया एहसान

عَلٰى مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا شَرَّفْتَنَا

कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जैसा के तु ने एहसान किया है मुसा और हारून पर खुदाया दूरूद

بِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا هَدَيْتَنَا بِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जैसा के तु ने उन के जारिए हमको शरफ बखशा है खुदाया दूरूद

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ ابْعَثْهُ مُقَامًا مَّحْمُوْدًا يَغْبِطُهٗ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ

नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जैसा के तु ने उन के जारिए हमारी हेदायत की है खुदाया दूरूद

وَ الْاٰخِرُوْنَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ السَّلَامُ كُلَّمَا طَلَعَتْ شَمْسٌ اَوْ غَرَبَتْ

नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उन को मोकामे महमूद मे मबऊस कर जिस की वजह से

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهِ السَّلَامُ كُلَّمَا طَرَفَتْ عَيْنٌ اَوْ بَرَقَتْ عَلٰى مُحَمَّدٍ

औव्वालीन व आखेरीन के लोग गबतह करे मोहम्मद और उनकी आल पर सलाम जब सूरज निकले

وَ اٰلِهِ السَّلَامُ كُلَّمَا ذُكِرَ السَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ السَّلَامُ كُلَّمَا

और गुरूब करे मोहम्मद और आले मोहम्मद पर सलाम जब ऑख बन्द हो या खुले मोहम्मद व आले

سَبَّحَ اللّٰهَ مَلَكٌ اَوْ قَدَّسَهُ السَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ فِي الْاَوَّلِيْنَ وَ

मोहम्मद पर सलाम हो जब भी जीक सलाम किया जाए मोहम्मद व आले मोहम्मद पर औव्वलीन मे

السَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ فِي الْاٰخِرِيْنَ وَ السَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ

सलाम हो मोहम्मद व आले मोहम्मद पर आखेरीन मे सलाम मोहम्मद व आले मोहम्मद पर दुनिया और

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْبَلَدِ الْحَرَامِ وَ رَبَّ الرُّكْنِ وَ

आखेरत मे खुदाया ऐ मोहतेरम शहर के रब और रूक व मोकाम के रब और हल व हराम के रब अपने

الْمَقَامِ وَ رَبَّ الْحِلِّ وَالْحَرَامِ اَبْلِغْ مُحَمَّدًا نَبِيَّكَ عَنَّا السَّلَامَ

नबी मोहम्मद को हमारा सलाम पहूचा खुदाया मोहम्मद को शौकत और बहजत, सूरूर और करामत

اللّٰهُمَّ اَعْطِ مُحَمَّدًا مِنَ الْبَهَآءِ وَالنَّضْرَةِ وَ السُّرُوْرِ وَ الْكَرَامَةِ

और गबतह और वसिले और मनजेलत औयर मोकाम और शरफ और रफअत और शेफाअत अता

وَ الْغِبْطَةِ وَ الْوَسِيْلَةِ وَ الْمَنْزِلَةِ وَ الْمَقَامِ وَ الشَّرَفِ الرِّفْعَةِ وَ

कर कयामत के रोज इस से बेहतर जो तु अपनी मखलुक मे किसी को अता करता हो और मोहम्मद को

الشَّفَاعَةِ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَفْضَلَ مَا تُعْطِيْ اَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ

अता कर इस से कई गुन्हा ज्यादा नेकियॉ जो तु मखलुक को अता करता हो जिस का एहसाह तेरे एलावा

وَاَعْطِ مُحَمَّدًا فَوْقَ مَا تُعْطِي الْخَلَائِقَ مِنَ الْخَيْرِ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً لَا

कोई न कर सके खुदाया दूरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर पाक व पाकीजा तैय्यबो ताहीर

يُحْصِيهَا غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ اَطْيَبَ وَ اَطْهَرَ وَ

और साफ सूथरा और बढने वाला और बहतरीन जो तु नू दूरूद भेजा हो औव्वलीन और आखरीन मे से

اَزْكٰى وَ اَنْمٰى وَ اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ

किसी पर और अपनी मखलुक मे से किसी पर ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले खुदाया दूरूद नाजील

وَ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَلِيٍّ اَمِيْرِ

कर अमीरूल मोमेनीन हजरत अली अ.ल. पर और उसको दूस्त रख जो उहे दूस्त रखे और उसको

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ ضَاعِفِ الْعَذَابَ

दूश्मन रख जो उन्हे दूश्मन रख और उस के अजाब मे एजाफा कर जो उन के खुन मे शरीक है खुदाया

عَلٰى مَنْ شَرِكَ فِيْ دَمِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى فَاطِمَةَ بِنْتِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ

दूरूद नाजील कर अपने नबी की बेटी जनाब फातेमा स.अ. पर उन पर और उन की आल पर सलाम

عَلَيْهِ وَ اٰلِهِ السَّلَامُ وَ الْعَنْ مَنْ اٰذٰى نَبِيَّكَ فِيْهَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى

हो और लानत कर जो तेरे नबी को इजीयत दे इस के बारे मे खुदाया दूरूद नाजील कर हसन व हूसैन

الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ اِمَامَيِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُمَا وَ عَادِ

अ.स. पर जो मुसलमानो के एमाम है और उन से मोहब्बत कर जो उन दोनो से मोहब्बत करे और उस

مَنْ عَادَاهُمَا وَ ضَاعِفِ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ شَرِكَ فِيْ دِمَائِهِمَا اَللّٰهُمَّ

को दुश्मन रख जो उन दोनो से दुश्मनी करे और उस के अजाब मे ज्यादती कर जो उन दोनो के खुन करने

صَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ اِمَامِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ

मे शरीक है खुदाया दूरूद कर अली इब्नुल हूसैन मुस्लमानो के एमाम पर और उसको दोस्त रख जो उन्हे

مَنْ عَادَاهُ وَ ضَاعِفِ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ ظَلَمَهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ

दोस्त रखे और उसे दूश्मन रख जो उन्हे देश्मन रखे और उस के अजाब मे एजाफा कर जिस ने उन पर

بْنِ عَلِيٍّ اِمَامِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ ضَاعِفِ

जुलम किया हो खुदाया दूरूद नाजील कर मोहम्मद इब्ने अली अ.स. मुस्लमानो के एमाम पर और उन से

الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ ظَلَمَهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ اِمَامِ

मोहब्बत कर जो उन से मोहब्बत करे और उसे दूश्मन रख जो उन से दूश्मनी करे और उस के अजाब मे

الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ ضَاعِفِ الْعَذَابَ

एजाफर कर जो उन पर जुलम करे खुदाया दूरूद नाजील कर जाफर इब्ने मोहम्मद मुस्लमाना के एमाम

عَلٰى مَنْ ظَلَمَهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُوْسَى بْنِ جَعْفَرٍ اِمَامِ الْمُسْلِمِيْنَ

पर और उसे दोस्त रख जो उन्हे दोस्त रख और उसको दुश्मन रख जो उन को दुश्मनी करे और अजाब

وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ ضَاعِفِ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ شَرِكَ

को उस के बढा दे जो उनपर जुलम करे खुदाया दूरूद पाजील कर मुसा इब्ने जाफर पर जो मुल्मानो के

فِيْ دَمِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُوْسَى اِمَامِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ

एमाम है और उस से मोहब्बत कर जो उन से मोहब्बत करे और उन से दूश्मनी कर जो उन से दूश्मनी

وَلَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ ضَاعِفِ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ شَرِكَ فِيْ دَمِهٖ

करे और उस शखश के अजाब मे ज्यादती कर जो उन के खुन बहाने मे शरीक हो खुदाया दूरूद नाजील

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ اِمَامِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ

कर अली इब्ने मुसा अ.स. पर जो मुस्लमानो के एमाम है और उन को दोस्त रख जो उन को दोस्त रखे

عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ ضَاعِفِ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ ظَلَمَهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

और उसे दूश्मन रख जो उन्हे दूश्मन रखे और उस पर अजाब मे ज्यादती कर जो उप के खुन मे शरीक

عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ اِمَامِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ

हो खुदाया दूरूद नाजील फरमा अली इब्ने मोहम्मद पर जो मुस्लमानो के एमाम है और उसको दोस्त रख

وَ ضَاعِفِ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ ظَلَمَهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ بْنِ

जो उन्हे दोस्त रखे और उसे दूश्मन रख जो उन्हे दूश्मन रखे और उसके अजाब मे ज्यादती कर जो उन

عَلِيٍّ اِمَامِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ ضَاعِفِ

पर जुलम करे खुदाया दुरूद कर हसन इब्ने अली पर जो मुस्लमानो के एमाम है और उसे दोस्त रख जो

الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ ظَلَمَهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الْخَلَفِ مِنْ بَعْدِهٖ اِمَامِ

उन्हे दोस्त रखे उनके बाद उन के जानशीन पर जो मुस्लमानो के एमाम है और दोस्त रख उस को जो

الْمُسْلِمِيْنَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ عَجِّلْ فَرَجَهٗ اَللّٰهُمَّ

उन्हे दोस्त रखे और दूश्मन रख उसको जो उन से दूश्मनी रखे और उन के जूहूर मे जल्दी कर खुदाया

صَلِّ عَلَى الْقَاسِمِ وَ الطَّاهِرِ اِبْنَيْ نَبِيِّكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُقَيَّةَ

दूरूद नाजील फरमा अपने नबी के दोनो बेटो कासिम और ताहीर पर खुदाया दूरूद कर रोकैय्या बिन्ते

بِنْتِ نَبِيِّكَ وَالْعَنْ مَنْ اٰذٰى نَبِيَّكَ فِيْهَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اُمِّ

पैगमबरे इस्लाम पर और लानत कर उन पर जो उन के बारे मे तेरे नबी को अजीयत दे खुदाया दूरूद

كُلْثُوْمَ بِنْتِ نَبِيِّكَ وَالْعَنْ مَنْ اٰذٰى نَبِيَّكَ فِيْهَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

नाजील फरमा अपनी नबी की बेटी उम्मे कूलसूम पर और लानत कर उस पर जो तेरे नबी को उन के

ذُرِّيَّةِ نَبِيِّكَ اَللّٰهُمَّ اخْلُفْ نَبِيَّكَ فِيْ اَهْلِ بَيْتِهٖ اَللّٰهُمَّ مَكِّنْ لَهُمْ

बारे मे अजीयत दे खुदाया दूरूद नाजील फरमा नबी की जुररीयत पर खुदाया अपने नबी की जानशीन

فِي الْاَرْضِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ عَدَدِهِمْ وَ مَدَدِهِمْ وَ اَنْصَارِهِمْ

करार दे उन के अहले बैत मे खुदाया उन को जमीन मे बादशाहत अता कर खुदाया जाहीर व बातीन मे

عَلَى الْحَقِّ فِي السِّرِّ وَ الْعَلَانِيَةِ اَللّٰهُمَّ اطْلُبْ بِذَحْلِهِمْ وَ وِتْرِهِمْ

हम को उन के शियो मे और उन के अनसार मे हक के उपर करार दे खुदाया तु उन के दुश्मनो से उन के

وَ دِمَائِهِمْ وَ كُفَّ عَنَّا وَ عَنْهُمْ وَ عَنْ كُلِّ مُؤْمِنٍ وَ مُؤْمِنَةٍ بَاْسَ كُلِّ

सितम और ख्वान का बदला ले ले और हम से और उन से और हर मोमीन व मोमेनात से हर जाहीर व

بَاغٍ وَ طَاغٍ وَ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّكَ اَشَدُّ بَاْسًا وَ اَشَدُّ

सरकश के जुलम व जौर और हर जमीन पर हरकत करने वाले को जिस की जमान हैयवता तेरे कब्जे

تَنْكِيلًا. सय्यद इब्ने ताऊस ने फरमाया है के उसके बाद कहे:

मे है उस के जुलम को रोक दे बेशक तु सब से सखतगीr र और सखत उकाब वाला है।

يَا عُدَّتِي فِي كُرْبَتِي وَيَا صَاحِبِي فِي شِدَّتِي وَيَا وَلِيِّ فِي نِعْمَتِي وَيَا غَايَتِي

ऐ मेरे रन्ज व गम मे मेरा सरमाया, ऐ मेरे साथी मेरी सखती मे और ऐ मेरे वली नेयमत और ऐ

فِي رَغْبَتِي أَنْتَ السَّاتِرُ عَوْرَتِي وَالْمُؤْمِنُ رَوْعَتِي وَالْمُقِيلُ عَثْرَتِي

मेरे शौक की इन्तेहा तु मेरे रोब का छुपाने वाला है और मेरे खौफ से अमान देने वाला और मेरी

فَاغْفِرْ لِي خَطِيئَتِي يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ उसके बाद कहे:

लगजीश को दर गूजर करने वालाउ है तु मेरी अता को बखश दे ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले।

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَدْعُوكَ لِهَمٍّ لَا يُفَرِّجُهُ غَيْرُكَ وَلِرَحْمَةٍ لَا تُنَالُ

खुदाया तुझको बुलाता हू इस गम के लिए जिसको तेरे अलावा कोई खतम नही कर सकता है व उस

إِلَّا بِكَ وَلِكَرْبٍ لَا يَكْشِفُهُ إِلَّا أَنْتَ وَلِرَغْبَةٍ لَا تُبْلَغُ إِلَّا

यरहमत के लिए जो तेरे अलावा किसी से नही पाई जा सकती है और उस मुसिबत के लिए जिस को तेरे

بِكَ وَلِحَاجَةٍ لَا يَقْضِيهَا إِلَّا أَنْتَ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا كَانَ مِنْ

अलावा कोई दूर नही कर सकता है व उस शौक के लिए जो तेरे अलावा किसी से नही पाया जा सकता

شَأْنِكَ مَا أَذِنْتَ لِي بِهِ مِنْ مَسْأَلَتِكَ وَرَحِمْتَنِي بِهِ مِنْ

और उस हाजत के लिए जिस को तेरे एलावा कोई नही पूरा कर सकता खुदाया जिस तरह तु ने अपनी

ذِكْرِكَ فَلْيَكُنْ مِنْ شَأْنِكَ سَيِّدِيْ الْاِجَابَةُ لِيْ فِيْمَا دَعَوْتُكَ

शान से मुझ को सवाल करने की इजाजत दी और तु ने रहम किया मुझ पर अपने जीक से तु अपनी

وَعَوَآئِدُ الْاِفْضَالِ فِيْمَا رَجَوْتُكَ وَالنَّجَاةُ مِمَّا فَزِعْتُ اِلَيْكَ

शाने करम से ऐ मेरे सरदार उन हाजतो को भी कूबूल फरमा ले जिकी तु ने तुझ से दूआ की है और जिन

فِيْهِ فَاِنْ لَمْ اَكُنْ اَهْلًا اَنْ اَبْلُغَ رَحْمَتَكَ فَاِنَّ رَحْمَتَكَ اَهْلٌ

मुसलसल एहसानात की मै ने तुझ से उम्मीद लगाई है वो अता कर और नेजात अता कर जिस से मै तेरी

اَنْ تَبْلُغَنِيْ وَ تَسَعَنِيْ وَ اِنْ لَمْ اَكُنْ لِلْاِجَابَةِ اَهْلًا فَاَنْتَ

तरफ डरता हू पस अगर मै अहल नही हू के तेरी रहमत पाऊ तो तेरी रहमत अहल है के मुझको पहूचे अरौर

اَهْلُ الْفَضْلِ وَرَحْمَتُكَ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَلْتَسَعْنِيْ رَحْمَتُكَ

मुझको घेर ले और अगर मै कूबूलीयत की अहैलीयत नही रखता हू तो तु साहेब फजल है और तेरी रहमत

يَا اِلٰهِيْ يَا كَرِيْمُ اَسْئَلُكَ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى

हर शै को घेरे है तो तु अपनी रहमत से मुझ को घेर ले ऐ मेरे खुदाया ऐ करीम मै तूझ से सवाल करता हू

مُحَمَّدٍ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَنْ تُفَرِّجَ هَمِّيْ وَ تَكْشِفَ كَرْبِيْ وَ غَمِّيْ وَ

तेरी करीम जात के वासते से के तु दूरूद नाजील कर मोहम्मद और उन के अहले बैत पर और मेरे गम को

تَرْحَمَنِيْ بِرَحْمَتِكَ وَ تَرْزُقَنِيْ مِنْ فَضْلِكَ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ

दूर कर और मेरी मुसिबत व गम को खत्म कर और मुझ पर अपनी रहमत रहम कर और मुझको अपने

قَرِيْبٌ مُجِيْبٌ.

चार: शेख तूसी और इब्ने ताऊस ने कहा है के रमज़ान महीने में यह दुआ भी पढे:

फजल से रिजक अता कर बेशक तु दुआ का सूनने वाला करीब और कूबूल करने वाला है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ مِنۡ فَضۡلِكَ بِاَفۡضَلِهٖ وَ كُلُّ فَضۡلِكَ فَاضِلٌ

खुदाया मै तुझ से दरखास्त करता हू तेरे बहतरीन फजल की और तेरा हर फजल व करत बहतर

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ بِفَضۡلِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ مِنۡ

है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरे कूल के कूल फजल का खुदाया मै तुझ से सवाल करता

رِزۡقِكَ بِاَعَمِّهٖ وَ كُلُّ رِزۡقِكَ عَآمٌّ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ بِرِزۡقِكَ

हू तेरे सब से ज्यादा आम रिजक का और तेरा रिजक आम है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू

كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ مِنۡ عَطَآئِكَ بِاَهۡنَائِهٖ وَ كُلُّ عَطَآئِكَ

तेरे कूल के कूल रिजक का खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरी बहतरीन अता का और तेरी

هَنِىۡءٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ بِعَطَآئِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ

हर अता बहतरीन बन है खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू तेरी कूल की कूल अता का। खुदाया

مِنۡ خَيۡرِكَ بِاَعۡجَلِهٖ وَ كُلُّ خَيۡرِكَ عَاجِلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ

मै तुझ से सवाल करता हू तेरे बहूत जल्दी वाले खैर का और तेरा खैर जल्दी वाला है खुदाया मै

بِخَيۡرِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡـَٔلُكَ مِنۡ اِحۡسَانِكَ بِاَحۡسَنِهٖ وَ كُلُّ

तुझ से सवाल करता हू तेरे कूल के कूल खैर का खुदाया मै तूझ से सवाल करताउ हू तेरे बहूत बडे

اِحْسَانِكَ حَسَنٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْـئَلُكَ بِاِحْسَانِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ

एहसान का और तेरा कूल एहसान अच्छा है खुदाया मै तूझ से कूल के कूल एहसान का सवाल

اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِمَا تُجِیْبُنِیْ بِهٖ حِیْنَ اَسْئَلُكَ فَاَجِبْنِیْ یَا اَللّٰهُ وَ صَلِّ

करता हू खुदाया मै तुझ से सवाल करता हू उस का जिस को तु कूबूल करता है जब मै तुझ से

عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ الْمُرْتَضٰی وَ رَسُوْلِكَ الْمُصْطَفٰی وَ اَمِیْنِكَ وَ

सवाल करता हू तो तु कूबूल कर ले ऐ खुदाया और दूरूद नाजील कर अपने बन्दा मोहम्मद पर

نَجِیِّكَ دُوْنَ خَلْقِكَ وَ نَجِیْبِكَ مِنْ عِبَادِكَ وَ نَبِیِّكَ بِالصِّدْقِ

जो पसन्दीदा है और अपने रसूल पर जो मुनतखिब है। और अमीन और खास बन्दा पर तमाम

وَ حَبِیْبِكَ وَ صَلِّ عَلٰی رَسُوْلِكَ وَ خِیَرَتِكَ مِنَ الْعَالَمِیْنَ

मखलुकात और अपने बन्दो मे नजीब पर और अपने सच्चे नबी पर और अपने हबीब पर और

الْبَشِیْرِ النَّذِیْرِ السِّرَاجِ الْمُنِیْرِ وَ عَلٰی اَهْلِ بَیْتِهِ الْاَبْرَارِ

दूरूद पाजील कर अपने रसूल और काएनात मे अपने नेक तरीन बन्दा पर जो बशारत देने वाले

الطَّاهِرِیْنَ وَ عَلٰی مَلٰٓئِكَتِكَ الَّذِیْنَ اسْتَخْلَصْتَهُمْ لِنَفْسِكَ وَ

डराने वाले रोशन चिराब है और उन के अहलेबैत पर जो नेक व पाकिज.ा है और अपने मलायके

حَجَبْتَهُمْ عَنْ خَلْقِكَ وَ عَلٰی اَنْبِیَآئِكَ الَّذِیْنَ یُنْبِئُوْنَ عَنْكَ

पर जिन को तु ने अपने लिए खास किया है और जिन को तु ने मखलुक से हेजाब मे रखा है और

بِالصِّدْقِ وَعَلٰى رُسُلِكَ الَّذِيْنَ خَصَصْتَهُمْ بِوَحْيِكَ وَ فَضَّلْتَهُمْ

अपने उन नबयों पर जो तेरी जानिब से सच्चाई की खबर लोगो को देते है और अपने रसूलों पर

عَلَى الْعَالَمِيْنَ بِرِسَالَاتِكَ وَعَلٰى عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ الَّذِيْنَ

जिन को तु ने अपने वही के लिए मखसूस किया है और जिनको तु ने आलमीन पर फजीलत दी

اَدْخَلْتَهُمْ فِيْ رَحْمَتِكَ الْاَئِمَّةِ الْمُهْتَدِيْنَ الرَّاشِدِيْنَ وَ اَوْلِيَائِكَ

है अपने पैगाम के साथ और अपने खालिस व सालेह बन्दो पर जिनको तु ने अपनी रहमत मे

الْمُطَهَّرِيْنَ وَ عَلٰى جِبْرَئِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ وَ اِسْرَافِيْلَ وَ مَلَكِ

दाखिल किया है जो एमाम है हेदायत पाए हूए पेशवा और अपने पाक व पाकीजा वलीयो पर और

الْمَوْتِ وَعَلٰى رَضْوَانَ خَازِنِ الْجِنَانِ وَعَلٰى مَالِكٍ خَازِنِ النَّارِ

जिबरईल, मिकाईला्, ईसराफील, मलक-उल-मौत और रिजवान खाजीन जन्नत और मालीक

وَ رُوْحِ الْقُدُسِ وَالرُّوْحِ الْاَمِيْنِ وَ حَمَلَةِ عَرْشِكَ الْمُقَرَّبِيْنَ

खाजीन जहन्नम और रूहूल कूदस और रूहूल अमीन और अपने अर्श के मुकररब उठाने वालो

وَعَلَى الْمَلَكَيْنِ الْحَافِظَيْنِ عَلَيَّ بِالصَّلٰوةِ الَّتِيْ تُحِبُّ اَنْ يُصَلِّيَ

पर और उन दोनो मलाएका पर जो मुझ पर निगरा है ऐसा दुरूद जो तु पसंद करता है के आसमान

بِهَا عَلَيْهِمْ اَهْلُ السَّمٰوٰتِ وَ اَهْلُ الْاَرَضِيْنَ صَلٰوةً طَيِّبَةً

व जमीन के रहने वाले उन पर भेजे पाक व पाकिज दूरूद ज्याद बरकत वाला साफ सूथरा बढने

كَثِيْرَةً مُبَارَكَةً زَاكِيَةً نَامِيَةً ظَاهِرَةً بَاطِنَةً شَرِيْفَةً فَاضِلَةً

वाला जाहीर बातिन शर्फ व फलज वाला जिन के जरिए से उन का फजल औव्वलीन व आखेरीन

تُبَيِّنُ بِهَا فَضْلَهُمْ عَلَى الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ اَعْطِ

पर तु जाहीर कर दे, खुदाया हजरत मोहम्मद को वसिला और शर्फ और फजीलत अता कर

مُحَمَّدًا الْوَسِيْلَةَ وَالشَّرَفَ وَالْفَضِيْلَةَ وَاَجْزِهٖ خَيْرَ مَا جَزَيْتَ

और उन को जजा दे उस से बेहतर जो तु ने जजा दी है किसी नबी को उस की उम्मत से खुदाया

نَبِيًّا عَنْ اُمَّتِهٖ اَللّٰهُمَّ وَاَعْطِ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهِ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ مَعَ

अता कर मोहम्मद (अल्लाह का दूरूद हो उन पर और उनकी आल पर) को हर कूरबत के साथ

كُلِّ زُلْفَةٍ زُلْفَةً وَمَعَ كُلِّ وَسِيْلَةٍ وَسِيْلَةً وَمَعَ كُلِّ فَضِيْلَةٍ

कूरबत और हर वसिला के साथ वसिला और हर फजीलत के साथ फजीलत और हर शर्फ के

فَضِيْلَةً وَمَعَ كُلِّ شَرَفٍ شَرَفًا تُعْطِيْ مُحَمَّدًا وَاٰلَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

साथ शर्फ, जो तु अता करेगा मोहम्मद और उन की आल को रोजे कयामत, उस से बहतरी जो

اَفْضَلَ مَا اَعْطَيْتَ اَحَدًا مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ

तु ने औव्वलीन व आखेरीन मे से किसी को अता किया हौ खुदाया मोहम्मद स.अ. को मोकाम

وَاجْعَلْ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ اَدْنَى الْمُرْسَلِيْنَ مِنْكَ

तमाम रसूलो मे सब से ज्यादा मोकररब और जन्नत मे अपने पास सब से ज्यादा वसीह मन्जील

مَجْلِسًا وَ اَفْسَحَهُمْ فِي الْجَنَّةِ عِنْدَكَ مَنْزِلًا وَ اَقْرَبَهُمْ اِلَيْكَ

करार दे और अपनी तरफ सब से ज्यादा करीबी वसीला करार दे पहला शाफैए महशर और

وَسِيْلَةً وَاجْعَلْهُ اَوَّلَ شَافِعٍ وَ اَوَّلَ مُشَفَّعٍ وَ اَوَّلَ قَآئِلٍ وَ اَنْجَحَ

पहला शफाअत किया हूआ और पला कहने वाला और कामयाब सवाल करने वाला और उन

سَآئِلٍ وَابْعَثْهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِيْ يَغْبِطُهٗ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ وَ

को मोकाम महमूद पयर पहूचा दे के जिस पर औव्वालीन व आखेरीन के लोग गबताह करे ऐ

الْاٰخِرُوْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ

सब से ज्यादा रहम करने वाले और मै तुझ से सवाल करता हू के दूरूद नाजील कर मोहम्मद व

مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَسْمَعَ صَوْتِيْ وَ تُجِيْبَ دَعْوَتِيْ وَ تَجَاوَزَ عَنْ خَطِيْئَتِيْ

आले मोहम्मद पर और मेरी आवाज को सून ले और मेरी दूआ को कूबूल कर और मेरी खता को

وَ تَصْفَحَ عَنْ ظُلْمِيْ وَ تُنْجِحَ طَلِبَتِيْ وَ تَقْضِيَ حَاجَتِيْ وَ تُنْجِزَ لِيْ

दर गूजर कर और मेरे जुलम से चशम पोशी कर और मेरे मतालिब को कामयाब कर और मेरी

مَا وَعَدْتَنِيْ وَ تُقِيْلَ عَثْرَتِيْ وَ تَغْفِرَ ذُنُوْبِيْ وَ تَعْفُوَ عَنْ جُرْمِيْ وَ

हाजत को पूरा कर और जिस का तु ने मुझ से वादा किया है उस को पूरा कर और मेरी लगजीश

تُقْبِلَ عَلَيَّ وَ لَا تُعْرِضَ عَنِّيْ وَ تَرْحَمَنِيْ وَ لَا تُعَذِّبَنِيْ وَ تُعَافِيَنِيْ وَ

को खत्म कर और मेरे गुन्हाओ को माफ रक और मेरे जूर्म को बखश दे व मेरी तरफ तवज्ञो कर

لَا تَبْتَلِيَنِيْ وَ تَرْزُقَنِيْ مِنَ الرِّزْقِ اَطْيَبَهٗ وَ اَوْسَعُ وَلَا تَحْرِمْنِيْ

और मुझ से रूख न फीरा व ज्यादा वसीह हो व मूझको ऐ परवरदिगार महरूम न कर व मेरे कर्ज

يَا رَبِّ وَاقْضِ عَنِّيْ دَيْنِيْ وَضَعْ عَنِّيْ وِزْرِيْ وَلَا تُحَمِّلْنِيْ مَا لَا

को अदा कर दे व मेरे बोज को खत्म कर दे व मुझ को उस का मोतहम्मील न बना जिस को मै

طَاقَةَ لِيْ بِهٖ يَا مَوْلَايَ وَ اَدْخِلْنِيْ فِيْ كُلِّ خَيْرٍ اَدْخَلْتَ فِيْهِ مُحَمَّدً

न उठा सकू ऐ मेरे मौला और मुझ को दाखिल कर दे हर उस नेकी मे जिस मे तु ने मोहम्मद व

وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ وَ اَخْرِجْنِيْ مِنْ كُلِّ سُوْءٍ اَخْرَجْتَ مِنْهُ مُحَمَّدًا وَ اٰلَ

आले मोहम्मद को दाखिल किया है व मुझ को निकाल दे हर उस बूराई से जिस से तु न मोहम्मद

مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ وَ السَّلَامُ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ وَ

व आले मोहम्मद को निकाल दिया है तेरा दूरूद हो मोहम्मद व उन की आले पाक पर व सलाम

رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ. उसके बाद तीन बार कहे:

हो उन पर व उन की आल पर और अल्लाह की रहमत और बरकत हो।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِيْ فَاسْتَجِبْ لِيْ كَمَا وَعَدْتَنِيْ

खुदाया मै तुझ से दूआ करता हू जैसा के तु ने हूकूम दिया है तु तो कूबूल कर ले मेरी देआ को

फिर कहे:

जैसा तू ने वादा किया है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ قَلِیْلًا مِنْ كَثِیْرٍ مَعَ حَاجَةٍ بِیْ اِلَیْهِ

खुदाया मै तूझ से सवाल करता हू बहूत मे से कम का जब के मेरी एहतेयाज उस की तरफ बहूत

عَظِیْمَةٍ وَّغِنَاكَ عَنْهُ قَدِیْمٌ وَهُوَ كَثِیْرٌ وَهُوَ عَلَیْكَ سَهْلٌ

अजीम है और तेरा उस से मुशतगना हाना कदीम है और वो मेरे नजदीक कसिर है और वो तेरे

یَسِیْرٌ فَامْنُنْ عَلَیَّ بِهٖ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ اٰمِیْنَ رَبَّ

लिए सहल और आसान है तु मेरे उपर उस के जरिए एहसान कर बेशक तु हर चीज पर कादीर

الْعَالَمِیْنَ.

पाँच: यह दुआ पढे:

है मेरी दूआ कूबूल कर ले।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِیْ فَاسْتَجِبْ لِیْ كَمَا وَعَدْتَنِیْ

खुदाया मै तुझ से दूआ करता हू जैसा के तु ने हूकूम दिया है तु तो कूबूल कर ले मेरी देआ को जैसा तू ने वादा किया है।

यह दुआ लंबी है इस लिए इसे नक्ल नहीं किया गया है। ज़ादुल माद में इसे देखा जा सकता है।

छेः शेख मुफीद ने किताबे मुकन्ना में रिवायत की है अली बिन महज़यार के हवाले से इमाम मोहम्मद तकी (अ.स.) से के मुस्तहब है के माहे रमज़ान के दिन और रात में अव्वल से आखिर तक यह दुआ पढे:

یَا ذَا الَّذِیْ كَانَ قَبْلَ كُلِّ شَیْءٍ ثُمَّ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ ثُمَّ یَبْقٰی وَیَفْنٰی

ऐ वो खुदा जो हर चीज के पहले से था फिर उसने हर चीज को पैदा किया फिर वो बाकी है और

كُلُّ شَيْءٍ يَا ذَا الَّذِيْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَ يَاذَا الَّذِيْ لَيْسَ فِيْ

हर चीज फानी है ऐ वो खुदा जिस के मिसल कोई चीज नही है और ऐ वो खुदा के उस के एलावा

السَّمٰوٰتِ الْعُلٰى وَلَا فِي الْاَرَضِيْنَ السُّفْلٰى وَلَا فَوْقَهُنَّ وَلَا تَحْتَهُنَّ

कोई माबूद बुलंद आसमानो मे और पूशत तरीन जमीन मे और न उन के उपर और न उन के

وَلَا بَيْنَهُمَّ اِلٰهٌ يُعْبَدُ غَيْرُهٗ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَا يَقْوٰى عَلٰى اِحْصَآئِهٖ

निचे और न उन के दरमीयान वाही नही है जिस की दूआ की जाती हो तेरे लिए हमद है के जिस

اِلَّا اَنْتَ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلٰوةً لَا يَقْوٰى عَلٰى اِحْصَآئِهَا

को तेरे एलावा कोई एहसा नही कर सकता है तु तो दूरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद

اِلَّا اَنْتَ.

पर जिस के एहसा पर तेरे एलावा कोई कूवत न रखता हो।

सात: कफअमी ने बलदुल अमीन में और मिस्बाह में इख्तेसार से सय्यद इब्ने बाकी से नक्ल किया है के जो व्यकति हर रोज़ रमज़ान महीने में यह दुआ पढे खुदा उसके चालीस साल के गुनाहों को माफ कर देगा।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ شَهْرِ رَمَضَانَ الَّذِيْ اَنْزَلْتَ فِيْهِ الْقُرْاٰنَ وَ افْتَرَضْتَ

खुदाया इस माहे रमजान के परवरदिगार जिस मे तु ने कुरआन नाजील किया है और जिस ो तु ने

عَلٰى عِبَادِكَ فِيْهِ الصِّيَامَ ارْزُقْنِيْ حَجَّ بَيْتِكَ الْحَرَامِ فِيْ هٰذَا

अपने बन्दो पर रोजा फर्ज किया है मुझको अपने बैतूल हराम के हज की तौफिक अता कर इस

الْعَامِ وَفِيْ كُلِّ عَامٍ وَاغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الْعِظَامَ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُهَا

साल और हर साल और मेरे अजीम गून्हाओ को बखश दे क्योंके तेरे एलावा कोई बडे गुन्हाओ

غَيْرُكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ.

को बखश नही सकता है ऐ जलालत और करम वाले।

आठ: हर रोज़ सौ बार यह ज़िक्र पढे जिसको मोहद्दिसे फैज़ काशानी ने खुलासतुल अज़कार में नक्ल किया है।

سُبْحَانَ الضَّارِّ النَّافِعِ سُبْحَانَ الْقَاضِيْ بِالْحَقِّ سُبْحَانَ الْعَلِيِّ الْأَعْلٰى

पाक है वो खुदा जो जरर का मालीक और नफा वाला है, पाक है वो खुदा जो हक के साथ फैसला

سُبْحَانَهُ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالٰى.

करने वाला है, पाक है वो खुदा जो बुलंद है, पाक व मोनज़्ज़ा है उन की हमद करते है, पाक व बर तर है।

नौ: शेख मुफीद ने मुकन्ना में लिखा है: रमज़ान महीने के मुसतहब्बात में हर रोज़ सौ बार सलवात पढ़ना भी है। और अगर ज़्यादा पढे तो ज़्यादा फज़ीलत हैं।

मतलब-२

माहे रमज़ान में दिन रात के मख्सूस आमाल

पहली रात के आमाल

इस रात में चंद आमाल हैं:

एक: चाँद देखना। बाज़ हज़रात ने इस महीने में चाँद देखने को वाजिब करार

दिया है।
दो: चाँद देखने के बाद उसकी तरफ इशारा करके बल्के रू बकिबला होकर हाथों को बुलंद कर के यूँ कहे:

رَبِّیْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِیْنَ اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَیْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِیْمَانِ

मेरा रब और तेरा रब वो खुदा है जो आलमीन का परवरदिगार है खुदाया उस चाँद को हम पर तालेए कर

وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ وَالْمُسَارَعَةِ اِلٰی مَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی اَللّٰهُمَّ

अमन व ईमान और सलामती और इस्लाम के साथ और उस चीज की तरफ जल्दी के साथ जो तु पसंद

بَارِكْ لَنَا فِیْ شَهْرِنَا هٰذَا وَارْزُقْنَا خَیْرَهُ وَعَوْنَهُ وَاصْرِفْ عَنَّا ضُرَّهُ

करता है और जीस से तु राजी है खुदया हम को बरकत अता कर हमारे इस महिने मे और हम को उस

وَشَرَّهُ وَبَلَائَهُ وَفِتْنَتَهُ.

के खैर और मदद का रिजक अता कर और उस के नुकसान, शर, बला और फितना को हम से दूर कर।

रिवायत में है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) चाँद देखने के बाद अपने चेहरे को किबले की ओर करके फरमाते थे:

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَیْنَا بِالْاَمْنِ وَ الْاِیْمَانِ وَ السَّلَامَةِ وَ الْاِسْلَامِ

खुदाया हमारे उपर उस चाँद को नूमायाँ कर अमन व ईमान और सलामती व इस्लाम और

وَ الْعَافِیَةِ الْمُجَلَّلَةِ وَ دِفَاعِ الْاَسْقَامِ وَ الْعَوْنِ عَلَی الصَّلَاةِ وَ

आफियत जलील के साथ और बमारियो के दूर करने के साथ और नमाज व रोजा और एबादत

الصِّيَامِ وَ الْقِيَامِ وَتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ اَللّٰهُمَّ سَلِّمْنَا لِشَهْرِ رَمَضَانَ

और तेलावत कूआन पर मदद के साथ खुदाया हम को सालीम रख माहे रमजान के लिए और

وَ تَسَلَّمْهُ مِنَّا وَ سَلِّمْنَا فِيْهِ حَتّٰى يَنْقَضِيَ عَنَّا شَهْرُ رَمَضَانَ وَ قَدْ

उस को कूबूल कर हम से और हम को सालीम रख उस मे ता के जब माहे रमजान हम से खत्म हो

عَفَوْتَ عَنَّا وَ غَفَرْتَ لَنَا وَ رَحِمْتَنَا.

तो तु ने हम को बखश दिया हो और हम को माफ कर दिया हो और तु ने हम पर रहम किया हो।

इमाम जाफर सादिक (अ.स.) से नक्ल किया गया है के जब चाँद देखे तो इस प्रकार कहे:

اَللّٰهُمَّ قَدْ حَضَرَ شَهْرُ رَمَضَانَ وَ قَدِ افْتَرَضْتَ عَلَيْنَا صِيَامَهٗ وَ

खुदाया माहे रमजान आ गया है और तु ने इस मे हमारे उपर अपने रोजा को फर्ज किया है और तु ने इस मे

اَنْزَلْتَ فِيْهِ الْقُرْآنَ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ

कूआन को नाजील किया है जो लोगो के लिए हेदायत है और हेदायत की निशानिया है और हक व बातील

اَللّٰهُمَّ اَعِنَّا عَلٰى صِيَامِهٖ وَ تَقَبَّلْهُ مِنَّا وَ سَلِّمْنَا فِيْهِ وَ سَلِّمْنَا مِنْهُ وَ

मे फर्क करने वाला है खुदाया हमारी मदद कर उस के रोजा पर और हमारे अमल को कूबूल कर ले और हम

سَلِّمْهُ لَنَا فِيْ يُسْرٍ مِّنْكَ وَ عَافِيَةٍ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ يَا رَحْمَانُ

को इस मे सालीम रख और हम को इस से सालीम रख और इस को हमारे लिए सालीम रख अपनी तरफ

يَارَحِيمُ.

से आसानी के साथ और आफियत के साथ बेशक तु हर चीज पर कादीर है ऐ रहम करने वाले ऐ महेरबान।

तीन: सहीफे कामेला की दूआ न. ४३ को चाँद देखने के समय पढे। जिसकी रिवायत सय्यद बिन ताऊस ने की है। के इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) रास्ते से गुज़र रहे थे के आपकी नज़र माहे रमज़ान के चाँद पर पड गई। आप ठहर गये और आपने यह दुआ पढी:

اَيُّهَا الْخَلْقُ الْمَطِيْعُ الدَّائِبُ السَّرِيْعُ الْمُتَرَدِّدُ فِيْ مَنَازِلِ

ऐ वो मखलुक जो मूतिए है और फरमा बरदार जो मनाजिल फलकी मे एलाही तकदीर के साथ जल्दी

التَّقْدِيْرِ الْمُتَصَرِّفُ فِيْ فَلَكِ التَّدْبِيْرِ اٰمَنْتُ بِمَنْ نَوَّرَ بِكَ

जल्दी रवा दवा है और फलक तदबीर मे चलने वाला है मै ईमान लाया उस पर जिस ने तेरे जारिए से

الظُّلَمَ وَ اَوْضَحَ بِكَ الْبُهَمَ وَ جَعَلَكَ اٰيَةً مِّنْ اٰيَاتِ مُلْكِهٖ وَ

तारिकीयो को रोशन किया और मूबहम को वाजेह किया और तुझको अपनी बादशाहत की निशानियो

عَلَامَةً مِنْ عَلَامَاتِ سُلْطَانِهٖ فَحَدَّ بِكَ الزَّمَانَ وَامْتَهَنَكَ

मे से एक निशानी और अपनी सलतनत की अलामतो मे से एक अलामत करार दिया है और तेरे जारिए

بِالْكَمَالِ وَ النُّقْصَانِ وَ الطُّلُوْعِ وَ الْاُفُوْلِ وَ الْاِنَارَةِ وَ

से जमाना को महदूद किया है और तुझ से खीदमत की कमाल व नूकसान के साथ और तुलूल व

الْكُسُوْفِ فِيْ كُلِّ ذٰلِكَ اَنْتَ لَهٗ مُطِيْعٌ وَ اِلٰى اِرَادَتِهٖ سَرِيْعٌ

गुरूब के साथ और रोशन करने और बे नूरी के साथ हर बात मे तु उस का मुतीए है और इस के एरादा

سُبْحَانَهٗ مَآ اَعْجَبَ مَا دَبَّرَ فِيْ اَمْرِكَ وَ اَلْطَفَ مَا صَنَعَ فِيْ

की तरफ जल्दी करने वाला है पाक है वो खुदा जिस ने तेरे अमर की तदबीर मे कितनी तअज्जुब खैज

شَانِكَ جَعَلَكَ مِفْتَاحَ شَهْرٍ حَادِثٍ لِاَمْرٍ حَادِثٍ فَاَسْئَلُ

चीजो को रख है और तेरी शान मे लतीफ तरीन सिनअत को रख है तुझ को नए महिना की कलीद नए

اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبَّكَ وَ خَالِقِيْ وَ خَالِقَكَ وَ مُقَدِّرِيْ وَ مُقَدِّرَكَ وَ

अमर के लिए करार दिया हे तो मै अल्लाह से सवाल करता हू जो मेरा और तेरा रब है और मेरा और

مُصَوِّرِيْ وَ مُصَوِّرَكَ اَنْ يُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ وَ اَنْ يَّجْعَلَكَ

तेरा खलिक है और मेरा और तेरा मोकददर करने वाला है और मेरा और तेरा सूरत गर है के वो दूरूद

هِلَالَ بَرَكَةٍ لَا تَمْحَقُهَا الْاَيَّامُ وَ طَهَارَةٍ لَا تُدَنِّسُهَا الْاٰثَامُ

नाजील करे मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और तुझ को करार दे बरकत का चाँद जिस को जमाने

هِلَالَ اٰمْنٍ مِنَ الْاٰفَاتِ وَ سَلَامَةٍ مِّنَ السَّيِّئَاتِ هِلَالَ

महवे न कर सके और पाकिजा चाँद जिस को गुन्हा गन्दा न कर सके आफतों से मामून और बूराईयो से

سَعْدٍ لَا نَحْسٍ فِيْهِ وَ يُمْنٍ لَا نَكَدَ مَعَهٗ وَ يُسْرٍ لَا يُمَازِجُهٗ

महफूज चाँद नेकी का चाँद जिस मे कोई नहूसत न हो और बरकत का चाँद जिस मे कोई खराबी न हो

عُسْرٍ وَ خَيْرٍ لَا يَشُوْبُهُ شَرٌّ هِلَالَ اَمْنٍ وَ اِيْمَانٍ وَ نِعْمَةٍ وَ

और आसानी का चॉद जिस से सखती न मिली हो और नेकी का चाँद जिस से बूराई न मिली हो अमन व

اِحْسَانٍ وَ سَلَامَةٍ وَ اِسْلَامٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ

ईमान और नेएमत व एहसान और सलामती व ईसलाम का चाँद खुदाया दुरूद नाजील फरमा मोहम्मद

وَ اجْعَلْنَا مِنْ اَرْضٰى مَنْ طَلَعَ عَلَيْهِ وَ اَزْكٰى مَنْ نَظَرَ اِلَيْهِ

व आले मोहम्मद पर और हम को करार दे उन बहतरीन लोगो मे जिस पर चाँद तुलुल करे और पाकिजा

وَ اَسْعَدَ مَنْ تَعَبَّدَ لَكَ فِيْهِ وَ وَفِّقْنَا اَللّٰهُمَّ فِيْهِ لِلتَّوْبَةِ

तरीन लोगो मे जो उस की तरफ देखे और नेक बखत तरीन लोगो मे जो इस मे तेरी एबादत करे और

وَ اعْصِمْنَا فِيْهِ مِنَ الْاٰثَامِ وَ الْحَوْبَةِ وَ اَوْزِعْنَا فِيْهِ شُكْرًا

हम को तौफीक दे। ऐ खुदा एताअत और तौबा की और हम को बचा इसमे खता और नाफरमानी से

نِعْمَتِ وَ اَلْبِسْنَا فِيْهِ جُنَنَ الْعَافِيَةِ وَ اَتْمِمْ عَلَيْنَا

और इस मे हम को तौफीक दे शूकर नेएमत की और हम को पंहा दे उस मे आफीयत का लेबास और

بِاسْتِكْمَالِ طَاعَتِكَ فِيْهِ الْمِنَّةَ اِنَّكَ اَنْتَ الْمَنَّانُ الْحَمِيْدُ

हम पर तमाम कर दे अपनी एताअत के इसतकमाल जारिए इसमे एहसान को बेशक एहसान करने

وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ وَ اجْعَلْ لَنَا فِيْهِ عَوْنًا

वाला साहेब हमद है और दुरूद नाजील कर मोहम्मद और उन की पाकीजा आल पर औ हमारे लिए

مِنْكَ عَلٰى مَا نَدَبْتَنَا اِلَيْهِ مِنْ مُفْتَرَضِ طَاعَتِكَ وَ تَقَبَّلْهَا

करार दे मदद अपनी तरफ से उस चीज पर जिस की तरफ तु ने हम को अपनी एताअत के फरिजे मे से

اِنَّكَ الْاَكْرَمُ مِنْ كُلِّ كَرِيْمٍ وَ الْاَرْحَمُ مِنْ كُلِّ رَحِيْمٍ اٰمِيْنَ

बूलाया है और हमारे आमाल को कूबूल कर ले, बेशक तु तमाम करम कनरे वालो से ज्यादा करीम है

اٰمِيْنَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

और हर रहम करने वाले से बडा रहीम है खुदा कूबूल करे कूबूल करे ऐ आलमीन के परवरदिगार ।

चार: याद रहे के रमज़ान महीने की चाँद रात में अपनी ज़ौजा से हम बिस्तरी करना मुस्तहब है और यह इस महीने की खुसूसियात में है वरना हर महीने में पहली शब में मुजामेअत मकरूह है।

पाँच: पहली रात का गुस्ल मुस्तहब है। रिवायत में है के जो व्यक्ति रमज़ान की पहली रात में गुस्ल करेगा उसके बदन में आईंदा साल तक खुजली न पैदा होगी।

छे: नहर में गुस्ल करे और तीस चुल्लू पानी अपने सर पर डाले ताके तहारते मानवी भी आईंदा रमज़ान तक हासिल रहे।

सात: कब्रे इमाम हुसैन (अ.स) की ज़ियारत करे ताके उसके गुनाह ज़ाएल हो जाएं और उसे उस साल के हाजियों और उमराह करनेवालों का सवाब मिल जाए।

आठ: आजकी रात से हज़ार रकअत नमाज़ की शुरूआत करे जिसका तज़केरा दूसरी किस्म में हो चुका है।

नौ: दो रकअत न्‌माज़ पढे। हर रकअत में सूरह हम्द और सूरह अनआम पढे और खुदा से दुआ करे के परवरदिगार उसे हर उस चीज़ से सुरक्षित रखे जिसका खौफ उसके दिल में है।

दस: यह दुआ पढे: अल्लाहुम्-म इन्नहाज़श् शह्ल् मुबार-क जिसका ज़िक्र शबे

आखिर रमज़ान में हो चुका है।
ग्यारह: मगरिब नमाज़ के बाद हाथों को बुलंद करके यह दुआ पढे जो इमाम जवाद (अ.स.) से इकबार में नक्ल की गई है:

اَللّٰهُمَّ يَا مَنْ يَّمْلِكُ التَّدْبِيْرَ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ يَا مَنْ

खुदाया ऐ वो जात जो तदबीर आलम का मालीक है और वो हर चीज पर कादिर है ऐ वो खुदा

يَّعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَ مَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ وَ تُجِنُّ الضَّمِيْرُ

जो निगाहो की खयानत को जानता है और जो दिलो मे छूपा है और जो जमीर का राज है उसको

وَ هُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ نَوٰى فَعَمِلَ وَ لَا

भी जानता है और वो लतीफ व खबीर है खुदाया हम को करार दे उन मे जिस ने नियम की और

تَجْعَلْنَا مِمَّنْ شَقِيَ فَكَسِلَ وَ لَا مِمَّنْ هُوَ عَلٰى غَيْرِ عَمَلٍ يَتَّكِلُ

अमल किया और न करार दे उन मे जिस ने बद बखती की तो काहेली की और न उन मे जो गैर

اَللّٰهُمَّ صَحِّحْ اَبْدَانَنَا مِنَ الْعِلَلِ وَ اَعِنَّا عَلٰى مَا افْتَرَضْتَ

अमल पर एहतेमाद करते हो खुदाया हमारे जिसमो को बिमारियो से महफूज कर और हमारी मदद

عَلَيْنَا مِنَ الْعَمَلِ حَتّٰى يَنْقَضِيَ عَنَّا شَهْرُكَ هٰذَا وَ قَدْ اَدَّيْنَا

कर उस पर जो तू ने अमल हम पर फर्ज किया है ता की जब हम से ये तेरा महिना खत्म हो तो हम

مَفْرُوْضَكَ فِيْهِ عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ اَعِنَّا عَلٰى صِيَامِهٖ وَ وَفِّقْنَا

तेरे फरिजे को उस मे अदा कर चुके हू जो हम पर है खुदाया हमारी मदद कर उसके रोजे पर और

لِقِيَامِهٖ وَ نَشِّطْنَا فِيْهِ لِلصَّلَاةِ وَ لَا تَحْجُبْنَا مِنَ الْقِرَائَةِ وَ

हम को तौफीक दे उस की एबादत की और उस मे निशात अता कर नमाज के लिए और हम को

سَهِّلْ لَنَا فِيْهِ اِيْتَاءَ الزَّكَاةِ اَللّٰهُمَّ لَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا وَصَبًا

न महरूम करना केराअत से और हमारे लिए आसान बना दे इस मे जकात का देना खुदाया हम

وَ لَا تَعَبًا وَ لَا سَقَمًا وَ لَا عَطَبًا اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا الْاِفْطَارَ مِنْ

पर बिमारी, तकान और रनज और हलाकत को मोसल्लत न करना खुदाया अपने रीजक हलाल

رِزْقِكَ الْحَلَالِ اَللّٰهُمَّ سَهِّلْ لَنَا فِيْهِ مَا قَسَمْتَهٗ مِنْ رِزْقِكَ

से हम को इफतार की तौफीक अता कर खुदाया हमारे लिए आसान बना उस मे जो तु ने मोकददर

وَ يَسِّرْ مَا قَدَّرْتَهٗ مِنْ اَمْرِكَ وَ اجْعَلْهُ حَلَالًا طَيِّبًا نَقِيًّا مِنَ

किया है अपना रीजक और आसान कर जो तु ने मोकर्रर किया है अपना अमर और उस को

الْاٰثَامِ خَالِصًا مِنَ الْاٰصَارِ وَ الْاَجْرَامِ اَللّٰهُمَّ لَا تُطْعِمْنَا

हलाल पाकिजा गुन्हा से साफ और खता से खालीस करार दे खुदाया हम को न खुला मगर

اِلَّا طَيِّبًا غَيْرَ خَبِيْثٍ وَ لَا حَرَامٍ وَ اجْعَلْ رِزْقَكَ لَنَا حَلَالًا

पाकीजा न के खराब और हराम और अपने रीजक को हमारे लिए हलाल बना जिस मे गन्दगी न

لَا يَشُوْبُهٗ دَنَسٌ وَ لَا اَسْقَامٌ يَا مَنْ عِلْمُهٗ بِالسِّرِّ كَعِلْمِهٖ

मिली हो और न बिमारीयॉं हो ऐ वो खुदा जिस का ईलम राजो का भी वैसा ही है जैसा के जाहीर

بِالْاَعْلَانِ يَا مُتَفَضِّلًا عَلٰى عِبَادِهٖ بِالْاِحْسَانِ يَا مَنْ هُوَ عَلٰى كُلِّ

का है ऐ अपने बन्दो पर फजल करने वाले एहसान के जारिए ए वो खुदा जो हर चीज पर कादीर

شَیْءٍ قَدِيْرٌ وَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ اَلْهِمْنَا ذِكْرَكَ وَ جَنِّبْنَا

है और हर चीज का जानने वाला वाकीफ कार है हम को अपने ज़िक का इलहाम कर और हम

عُسْرَكَ وَ اَنِلْنَا يُسْرَكَ وَ اهْدِنَا لِلرَّشَادِ وَ وَفِّقْنَا لِلسَّدَادِ وَ

को सखती से बचा और हम को अपनी आसानी अता कर और हमारी हेदायत कर राहे रासत

اعْصِمْنَا مِنَ الْبَلَايَا وَ صُنَّا مِنَ الْاَوْزَارِ وَ الْخَطَايَا يَا مَنْ لَا

की तरफ और हम को सही की तौफीक अता कर और हम को बचा ले बलाओ से और हम को

يَغْفِرُ عَظِيْمَ الذُّنُوْبِ غَيْرُهٗ وَ لَا يَكْشِفُ السُّوْءَ اِلَّا هُوَ يَا

महफूज रख गुन्हाओ और खताओ से ऐ वो खुदा जिस के एलावा कोई अजीम गुन्हा को बखश

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ اَكْرَمَ الْاَكْرَمِيْنَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ

नही सकता और न इस के एलावा कोई गम को दूर सकता है ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले,

بَيْتِهِ الطَّيِّبِيْنَ وَ اجْعَلْ صِيَامَنَا مَقْبُوْلًا وَ بِالْبِرِّ وَ التَّقْوٰى

ऐ सब से ज्यादा करम करने वाले तु दुरूद नाजील कर मोहम्मद और उन के अहलेबैते तैय्याबीन

مَوْصُوْلًا وَ كَذٰلِكَ فَاجْعَلْ سَعْيَنَا مَشْكُوْرًا وَ قِيَامَنَا

व ताहेरीन पर और हमारे रोजो को कूबूल कर और नेकी और तकवा से मिला दे और इसी तरह

مَبْرُوْرًا وَقُرْآنَنَا مَرْفُوْعًا وَدُعَائَنَا مَسْمُوْعًا وَاهْدِنَا لِلْحُسْنٰى

हमारी कोशिश को मशकूर बना और हमारे कयाम नमाज को पसंदीदा कर और हामरी केराअत

وَجَنِّبْنَا الْعُسْرٰى وَيَسِّرْنَا لِلْيُسْرٰى وَاَعْلِ لَنَا الدَّرَجَاتِ

कूरान को बुलंद कर और हमारी दूआ को सून ले। और हमारी हेदायत कर नेकी के लिए और हम

وَضَاعِفْ لَنَا الْحَسَنَاتِ وَاقْبَلْ مِنَّا الصَّوْمَ وَالصَّلَاةَ وَ

से सखती को दूर कर और आसानी की तौफीक दे और हमारे दरजात को बुलंद कर और हमारी

اسْمَعْ مِنَّا الدَّعَوَاتِ وَاغْفِرْ لَنَا الْخَطِيْئَاتِ وَتَجَاوَزْ عَنَّا

नेकियो को कई गुन्हा कर और हमारे रोजा और नमाज को कूबूल कर और हमारी दूआओ को

السَّيِّئَاتِ وَاجْعَلْنَا مِنَ الْعَامِلِيْنَ الْفَائِزِيْنَ وَلَا تَجْعَلْنَا

सून ले और हमारे गुन्हाओ को बखस दे और हमारी बूराईयो से दरगूजर कर और हम को करार

مِنَ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ حَتّٰى يَنْقَضِيَ شَهْرُ

दे अमल करने वालो और कामयाब होने वालो मे और न करार दे उन मे जिन पर गजब नाजील

رَمَضَانَ عَنَّا وَقَدْ قَبِلْتَ فِيْهِ صِيَامَنَا وَقِيَامَنَا وَزَكَّيْتَ

हूआ और जो गुमराह है यहॉ तक के जब माहे रमजान हम से खत्म हो तो तु कूबूल कर चूका

فِيْهِ اَعْمَالَنَا وَغَفَرْتَ فِيْهِ ذُنُوْبَنَا وَاَجْزَلْتَ فِيْهِ مِنْ كُلِّ

हो हमारे रोजो और एबादतो को और पाक कर चूका हो इस मे हमारे आमाल को औरतु बखश

خَيْرٍ نَصِيْبَنَا فَاِنَّكَ الْاِلٰهُ الْمُجِيْبُ وَ الرَّبُّ الْقَرِيْبُ وَ اَنْتَ

चूका हो इस मे हमारे गुन्हाओ को और तू ने इस मे हर नेकी मे मेरा हिस्सा ज्यादा रखा हो, बेशक

بِكُلِّ شَیْءٍ مُحِيْطٌ.

बारहः इस शब में वह दुआ भी पढे जो इकबार में इमामे सादिक (अ.स.) से नक्ल की गई है।

तु खुदा है कूबूल करने वाला और परवरदिगार करीब है और तू हर शै का एहाता किए हूए है।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ شَهْرِ رَمَضَانَ مُنَزِّلَ الْقُرْآنِ هٰذَا شَهْرُ رَمَضَانَ

खुदाया ऐ माहे रमजान के परवरदिगार, ऐ कुरआन के नाजील करने वाले ये रमजान का महिना

الَّذِیْ اَنْزَلْتَ فِيْهِ الْقُرْآنَ وَ اَنْزَلْتَ فِيْهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدٰى

हे जिस मे तु ने कूआन को नाजील किया है और इस मे तु ने नाजील की है हेदायत की रोश्न

وَ الْفُرْقَانِ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا صِيَامَهٗ وَ اَعِنَّا عَلٰى قِيَامِهٖ اَللّٰهُمَّ

निशानियॉ और हक व बातील मे फर्क करने वाली अलामात खुदाया हम को उस के रोजा की

سَلِّمْهُ وَ سَلِّمْنَا فِيْهِ وَ سَلِّمْهُ مِنَّا فِیْ يُسْرٍ مِنْكَ وَ مُعَافَاةٍ وَ اجْعَلْ

ताफीक दे और उस की एबादत पर हमारी मदद कर खुदाया उस को हमारे लिए सालीम रख और

فِيْمَا تَقْضِیْ وَ تُقَدِّرُ مِنَ الْاَمْرِ الْمَحْتُوْمِ وَ فِيْمَا تَفْرُقُ مِنَ الْاَمْرِ

हम को इस मे सालीम रख और उस को हम से कूबूल कर अपनी आसानी और आफीयत के

الْحَكِيْمِ فِیْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ مِنَ الْقَضَاءِ الَّذِیْ لَا يُرَدُّ وَ لَا يُبَدَّلُ اَنْ

साथ और करार दे अपने हत्मी कजा व कदर से और इस मे जो तु उमूर हकीमाना को तकसिम

تَكْتُبَنِیْ مِنْ حُجَّاجِ بَیْتِكَ الْحَرَامِ الْمَبْرُوْرِ حَجُّهُمُ الْمَشْكُوْرِ

करता है शबे कदर मे वो फैसला जो बदलता नही है और न रद होता है के तु मूझ को लिख दे

سَعْیُهُمُ الْمَغْفُوْرِ ذُنُوْبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنْهُمْ سَیِّئَاتُهُمْ وَ اجْعَلْ

अपने बैतुल हराम के हज करने वालो मे जिन का हज मकबूल और जिन की कोशिश मशकूर

فِیْمَا تَقْضِیْ وَ تُقَدِّرُ اَنْ تُطِیْلَ لِیْ فِیْ عُمْرِیْ وَ تُوَسِّعَ عَلَیَّ مِنَ الرِّزْقِ

और जिन का गुन्हा मगफूर हो और जिन की बूराईयॉ खत्म की हूई है और अपने कजा व कदर

الْحَلَالِ.

से मेरे तुले उमर करार दे और रिजक हलाल की उसअत करार दे।

तेरह: सहीफे कामेला की दुआ न. ४० भी पढे।

चौदह: यह दुआ पढे जिसे सय्यद ने इकबार में नक्ल किया है। और काफी लंबी है।

पंद्रह: यह दुआ पढे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّهٗ قَدْ دَخَلَ شَهْرُ رَمَضَانَ اَللّٰهُمَّ رَبَّ شَهْرِ رَمَضَانَ

खुदाया ऐ माहे रमजान के परवरदिगार जिस मे तु ने कूआन को नाजील किया है और जिस को

الَّذِیْ اَنْزَلْتَ فِیْهِ الْقُرْآنَ وَ جَعَلْتَهٗ بَیِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدٰی وَ الْفُرْقَانِ

तु ने हेदायत की निशानियॉ और हम व बातील मे फर्क करने वाला बनाया है खुदाया मुझ को

اَللّٰهُمَّ فَبَارِكْ لَنَا فِيْ شَهْرِ رَمَضَانَ وَاَعِنَّا عَلٰى صِيَامِهٖ وَصَلٰوتِهٖ وَ

बरकत अता कर माहे रमजान मे, हमारी मदद कर उस के रोजो और उस की नमाजो पर और

تَقَبَّلْهُ مِنَّا.

उस को कूबूल कर ले हम से।

रिवायत में है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) रमज़ान महीने के शुरू होते समय ही यह दुआ पढा करते थे।

सोलह: रिवायत में है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) रमज़ान महीने की पहली रात में यह दुआ भी पढा करते थे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَكْرَمَنَا بِكَ اَيُّهَا الشَّهْرُ الْمُبَارَكُ اَللّٰهُمَّ فَقَوِّنَا

हमद है खुदा के लिए जिस ने हम को बा ईज़्ज़त किया तेरे जारिए, ऐ बरकत वाले महिना खुदाया

عَلٰى صِيَامِنَا وَ قِيَامِنَا وَ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَ انْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

हम को कूवत दे हमारे रोजा और हमारी एबादत पर और हमारे कदम को साबित रख और हामरी

الْكَافِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْوَاحِدُ فَلَا وَلَدَ لَكَ وَ اَنْتَ الصَّمَدُ فَلَا

मदद कर काफि लोगो के मुकाबले मे, खुदाया तु एक है तेरे कोई औवलाद नही है और तु बे

شِبْهَ لَكَ وَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ فَلَا يُعِزُّكَ شَيْءٌ وَ اَنْتَ الْغَنِيُّ وَ اَنَا الْفَقِيْرُ

नेयाज है तेरे मिसल कोई नही है और तु ईज़्ज़त वाला हौ तुझको कोई चीज ईज़्ज़त नही देती है और

وَ اَنْتَ الْمَوْلٰى وَ اَنَا الْعَبْدُ وَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ وَ اَنَا الْمُذْنِبُ وَ اَنْتَ

तु गनी है और मै फकीर हू और तु मालीक है और मै गुलाम हू और तु बखशने वाला है और मै

الرَّحِيْمُ وَ اَنَا الْمُخْطِئُ وَ اَنْتَ الْخَالِقُ وَ اَنَا الْمَخْلُوقُ وَ اَنْتَ الْحَيُّ

गुन्हागार हू और तु रहम करने वाला है और मै खताकार हू और तु खालीक है और मै मखलुक हू

وَ اَنَا الْمَيِّتُ اَسْاَلُكَ بِرَحْمَتِكَ اَنْ تَغْفِرَ لِيْ وَ تَرْحَمَنِيْ وَ تَتَجَاوَزَ عَنِّيْ

और तु जिन्दा है और मै मुर्दा मै तुझ से सवाल करता हू तेरे रहमत के जारिए के तु मुझ को बखश

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

दे और मुझ पर रहम कर और मुझ से दर गुजर कर

सतरह: पहले बाब में बयान हो चुका है के रमज़ान की पहली तारीख में दुआ जौशने कबीर भी पढ़ना मुस्तहब है।
अठ्ठारह: दुआए हज पढे जिसका ज़िक्र अव्वल माहे रमज़ान में हो चुका है।
उन्नीस: जब रमज़ान महीना शुरू हो तो बेहतर यह है के ज़्यादा से ज़्यादा तिलावते कुरान करे और इमाम सादिक (अ.स) से मनकूल है के आप तिलावत शुर करने से पहले यह दुआ पढा करते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَشْهَدُ اَنَّ هٰذَا كِتَابُكَ الْمُنْزَلُ مِنْ عِنْدِكَ عَلٰى

खुदाया मै गवाही देता हू के ये तरे किताब है जो तेरे पास से नाजील हूई है ये तेरे रसूल मोहम्मद

رَسُوْلِكَ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ كَلَامُكَ

बिन अब्दुल्लाह पर अल्लाह का दूरूद हो उन पर और उन की आल पर और तेरा कलामे नातीक

النَّاطِقُ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ جَعَلْتَهُ هَادِيًا مِنْكَ اِلٰى خَلْقِكَ وَحَبْلًا

है तेरे नबी की जुबान पर तु ने उस को अपनी तरफ से हादी बनाया हे अपनी मखलुक की तरफ

مُتَّصِلًا فِيمَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ عِبَادِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّي نَشَرْتُ عَهْدَكَ وَ

और मुत्तसिल रस्सी बनाया है अपने और अपने बन्दा के दरमियान खुदाया मै ने तेरे फमान और

كِتَابَكَ اَللّٰهُمَّ فَاجْعَلْ نَظَرِيْ فِيهِ عِبَادَةً وَقِرَاءَتِيْ فِيهِ فِكْرًا

किताब को खाला खुदाया इस मे मेरे नजर करने को एबादत बना दे और मेरी केराअत को फिर्क

وَفِكْرِيْ فِيهِ اِعْتِبَارًا وَاجْعَلْنِيْ مِمَّنِ اتَّعَظَ بِبَيَانِ مَوَاعِظِكَ

बना दे और मेरी फीर्क को एतेबार बना दे और मुझको उस गरोह मे करार दे जो तेरे मोएजाह के

فِيهِ وَاجْتَنَبَ مَعَاصِيَكَ وَلَا تَطْبَعْ عِنْدَ قِرَاءَتِيْ عَلٰى سَمْعِيْ وَ

बयान को कूबूल करता हो और तेरी मआसियत से बचता हो और पढने के वक्त मेरे कान पर

لَا تَجْعَلْ عَلٰى بَصَرِيْ غِشَاوَةً وَلَا تَجْعَلْ قِرَاءَتِيْ قِرَاءَةً لَا تَدَبُّرَ

मोहर न लगा देना और मेरी आँख पर परदा न डाल देना और न करार दे मेरी केराअत को ऐसी

فِيهَا بَلِ اجْعَلْنِيْ اَتَدَبَّرُ آيَاتِهِ وَاَحْكَامَهُ آخِذًا بِشَرَائِعِ دِيْنِكَ وَ

केराअत जिस मे को तदब्बूर न हो बल्के मुझको ऐसा बना दे के मै उस की आयतों और अहकाम

لَا تَجْعَلْ نَظَرِيْ فِيهِ غَفْلَةً وَلَا قِرَاءَتِيْ هَذَرًا اِنَّكَ اَنْتَ الرَّءُوْفُ

के बारे मे तदब्बूर करता रहू तेरे दीन की शरीअत पर अमल करते हूए और उस मे मेरी निगाह

الرَّحِيْمُ. तिलावते कुरआन के बाद इस दुआ को पढे:

को गफलत न बना देना और न मेरी मेराअत को दे फाएदा, बेशक तु महेरबान और रहम वाला है

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ قَدْ قَرَاْتُ مَا قَضَيْتَ لِیْ مِنْ کِتَابِكَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَهٗ عَلٰی

खुदाया मै ने उस को पढ लिया है जिस को तु ने फैसला किया है अपनी किताब से , जिस को तु न

نَبِيِّكَ الصَّادِقِ صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ فَلَكَ الْحَمْدُ رَبَّنَا اَللّٰهُمَّ

नाजील किया है अपने नबी सादिक पर अल्लाह का दूरूद हो उन की आल पर पर, तेरे लिए हमद

اجْعَلْنِیْ مِمَّنْ يُحِلُّ حَلَالَهٗ وَ حَرَّمَ حَرَامَهٗ وَ يُؤْمِنُ بِمُحْکَمِهٖ وَ

है ऐ मेरे यरब खुदाया मुझको करार दे उन मे से जो उस के हलाल को हलाल और उस के हराम

مُتَشَابِهِهٖ وَ اجْعَلْهُ لِیْ اُنْسًا فِیْ قَبْرِیْ وَ اُنْسًا فِیْ حَشْرِیْ وَ اجْعَلْنِیْ

को हराम जानते हू और जो ईमान रखते हो उस के मोहकम औ मुताशाबाह प्र और उस को मेरी

مِمَّنْ تُرَقِّيْهِ بِکُلِّ آيَةٍ قَرَاَهَا دَرَجَةً فِیْ اَعْلَا عِلِّيِّيْنَ اٰمِيْنَ رَبَّ

लिए इनस करार दे मेरी कबर मे मेरे हशर मे और मुझ को करार दे उन मे जो हर आयत पढकर

الْعَالَمِيْنَ.

बूलंदी की तफर जाते हौ एक दरजा आला इल्लीन मे ऐ आलमीन के रब मेरी दुआ कूबूल कर ले

रमज़ान महीने का पहला दिन

इस दिन में भी चंद आमाल हैं:

एक: आबे जारी से गुस्ल करना। और तीस चुल्लू पानी सर पर डाले के तमाम

दर्दों और बीमारियों से साल भर के नजात का ज़रिया है।
दो: अक चुल्लू गुलाब चेहरे पर डाले ताके ख्वारी और परेशानी से नजात पाए। और फिर थोडा सर पर भी डाले ताके उस साल सरसाम से महफ़ूज़ रहे।
तीन: दो रकअत नमाज़ अव्वले माह पढे और सदका दे।
चार: दो रकअत नमाज़ पढे, पहली रकअत में हम्द और सूरह फतह और दूसरी रकअत में हम्द और जो सूरह चाहे पढे ताके परवरदिगार उस साल की तमाम बुराईयों को दूर कर दे और आइंदा साल तक अपनी हिफाज़त में रखे।
पाँच: तुलूए फज्र के बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ قَدْ حَضَرَ شَهْرُ رَمَضَانَ وَ قَدِ افْتَرَضْتَ عَلَيْنَا

खुदाया माहे रमजान आ गया हे और तु ने इस के रोजा को हम पर फर्ज किया है और

صِيَامَهُ وَ اَنْزَلْتَ فِيْهِ الْقُرْآنَ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ

तु ने इस मे कूआन नाजील किया है लोगो के लिए खुदाया हमारी मदद कर उस के

الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ اَللّٰهُمَّ اَعِنَّا عَلٰى صِيَامِهٖ وَ تَقَبَّلْهُ مِنَّا وَ

रोजो पर और उस को कूबूल कर ले और सलामती से उस को मुझ से ले ले और

تَسَلَّمْهُ مِنَّا وَ سَلِّمْهُ لَنَا فِيْ يُسْرٍ مِنْكَ وَ عَافِيَةٍ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ

उस को हमारे लिए सालीम रख अपनी तरफ से आसानी और आफीयत में

شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

छेः सहीफे कामेला की दुआ ४४ पढ़े। अगर शब में नहीं पढ़ सका है।
सातः अल्लामा मजलिसी ने ज़ादुल माद में फरमाया है के कुलैनी, शेख तूसी, और दूसरे हज़रात नें सही सनद के साथ रिवायत की है के इमाम मूसा काज़म (अ.स.) ने फरमाया है के रमज़ान महीने में अव्वले साल यानी महीने के पहले दिन इस दुआ को पढे और फरमाया है के जो भी इस दुआ को रज़ाए खुदा के लिए और बिला किसी गरज़ और रियाकारी के पढेगा उस साल किसी फितना या गुमराही और आफत में मुब्तेला न होगा। न दीन में और न दुनिया में और उसे परवरदिगार उस साल की तमाम बलाओं से महफूज़ रखेगा। दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ دَانَ لَهٗ كُلُّ شَیْءٍ وَبِرَحْمَتِكَ

ऐ खुदा मै तुझ से सवाल करता हू तेरे नाम के जारिए जिस के लिए हर चीज मसखर है और तेरी

الَّتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ وَبِعَظَمَتِكَ الَّتِیْ تَوَاضَعَ لَهَا كُلُّ شَیْءٍ

रहमत के जारिए जो हर चीज को घेरे हूए है और तेरी अजमत के जारिए जिस के लिए हर चीज

وَ بِعِزَّتِكَ الَّتِیْ قَهَرَتْ كُلَّ شَیْءٍ وَ بِقُوَّتِكَ الَّتِیْ خَضَعَ لَهَا

मोतवाजे है और तेरी ईज्ज़त के जारिए जिस ने हर चीज पर गलबा किया है और तेरी कूवत के

كُلُّ شَیْءٍ وَبِجَبَرُوْتِكَ الَّتِیْ غَلَبَتْ كُلَّ شَیْءٍ وَبِعِلْمِكَ الَّذِیْ

जारिए जिस की हर चीज खजे है और तेरे जबरूत के जारिए जो हर चीज पर गालीब है और तेरे

اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ یَا نُوْرُ یَا قُدُّوْسُ یَا اَوَّلَ قَبْلَ كُلِّ شَیْءٍ وَ یَا

ईलम के जारिए जो हर चीज का एहाता किए है ऐ नूर ऐ पाकिजा ऐ हर चीज से पहले और ऐ हर

بَاقِيًا بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ

चीज के बाद बाकी रहने वाले ऐ अल्लाह, ऐ रहमान दूरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद

وَّ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُغَيِّرُ النِّعَمَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ

पर और मेरे उन गुन्हाओ को बखश दे जो नेएमतो को बदल देते है और मेरे उन गुन्हाओ को

الَّتِي تُنْزِلُ النِّقَمَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تَقْطَعُ الرَّجَاءَ وَ

बखश दे जो अजाब नाजील करते है और उन गुन्हाओ को बखश दे जो उम्मीद को मुनकता

اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُدِيلُ الْاَعْدَاءَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ

कर देते हे और मेरे उन गुन्हाओ को बखश दे जो दूश्मनो को उभारते है और मेरे उन गुन्हाओ

الَّتِي تَرُدُّ الدُّعَاءَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي يُسْتَحَقُّ بِهَا نُزُولُ

को बखश दे जो दूआ को रद करते है और मेरे उन गुन्हाओ को बखश दे जो बला के नाजील

الْبَلَاءِ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تَحْبِسُ غَيْثَ السَّمَاءِ وَ

होने का मुसतहक बनाते है और मेरे उन गुन्हाओ को बखश दे जो आसमान की बारीश को

اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تَكْشِفُ الْغِطَاءَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ

रोकते है और मेरे उन गुन्हाआ को बखश दे जो पर्दा को उठा देते है और मेरे उन गुन्हाओ को

الَّتِي تُعَجِّلُ الْفَنَاءَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُورِثُ النَّدَمَ

बखश दे जो फना के लिए जल्दी करते है और उन गुन्हाओ को बखश दे जो नदामत लाते है और

وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تَهْتِكُ الْعِصَمَ وَ اَلْبِسْنِي دِرْعَكَ

गुन्हाओ को बखश दे जो तहफफूजात को खत्म कर देते है और मुझ को पना दे अपना जोशन

الْحَصِينَةَ الَّتِي لَا تُرَامُ وَ عَافِنِي مِنْ شَرِّ مَا اُحَاذِرُ بِاللَّيْلِ

मोहकम जिस तक किसी की रसाई न हो और मुझ को आफीयत अता कर उन तमाम बूराईयो

وَ النَّهَارِ فِي مُسْتَقْبَلِ سَنَتِي هٰذِهِ اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوَاتِ

से जिन से मै दिन रात डरता हू अपने आले वाले साल मे खुदाया ऐ सातो आसमानो के रब और

السَّبْعِ وَ رَبَّ الْاَرَضِينَ السَّبْعِ وَ مَا فِيهِنَّ وَ مَا بَيْنَهُنَّ وَ رَبَّ

जो उन मे है और जो उन के दरमियान मे है और अर्श अजीम के रब और सबए मसानी के रब

الْعَرْشِ الْعَظِيمِ وَ رَبَّ السَّبْعِ الْمَثَانِي وَ الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ

और कूआन अजीम के रब और इसराफील, मिकाईल, और जिबरईल के रब और मोहम्मद के

وَ رَبَّ اِسْرَافِيلَ وَ مِيكَائِيلَ وَ جَبْرَائِيلَ وَ رَبَّ مُحَمَّدٍ صَلَّى

रब, अल्लाह का दूरूद हो उन पर और उन की आल पर जो सैय्यदूल मूरसलीन और खातमुल

اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ وَ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ اَسْئَلُكَ

नबीन हो मै तुझ से सवाल करता हू तेरे जारिए और जो तु ने अपना नाम रखा है ऐ अजीम तु वो

بِكَ وَ بِمَا سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ يَا عَظِيمُ اَنْتَ الَّذِي تَمُنُّ

है जो अजीम एहसान करता है और हर खतरा को दूर करता है और हर फाएदा को देना है और

بِالْعَظِيْمِ وَ تَدْفَعُ كُلَّ مَحْذُوْرٍ وَ تُعْطِيْ كُلَّ جَزِيْلٍ وَ تُضَاعِفُ

तु कलील व कसीर नेकीयो को ज्यादा करता है और जो तु चाहता है करता है ऐ कूदरत वाले

الْحَسَنَاتِ بِالْقَلِيْلِ وَ بِالْكَثِيْرِ وَ تَفْعَلُ مَا تَشَاءُ يَا قَدِيْرُ يَا اَللّٰهُ

ऐ अल्लाह ऐ रहमान, दूरूद नाजील कर मोहम्मद और उन के अहलेबैत अ.स. पर और अपने

يَا رَحْمٰنُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ اَلْبِسْنِيْ فِيْ مُسْتَقْبَلِ

लेबासे पोशिदा को इस आने वाले साल मे मुझको पिन्हा और मेरे चेहरे को रोशन कर अपने नूर

سَنَتِيْ هٰذِهٖ سِتْرَكَ وَ نَضِّرْ وَجْهِيْ بِنُوْرِكَ وَ اَحِبَّنِيْ بِمَحَبَّتِكَ

से और अपनी मोहब्बत से मुझ को महबूब कर और मुझ को अपनी मर्जी और शर्फ कर उम्मत

وَ بَلِّغْنِيْ رِضْوَانَكَ وَ شَرِيْفَ كَرَامَتِكَ وَ جَسِيْمَ عَطِيَّتِكَ

और अताए बुजूग तक पहूचा दे और मुझ को अता कर वो नेकी जो तेरे पास है और जिस नेकी

وَ اَعْطِنِيْ مِنْ خَيْرِ مَا عِنْدَكَ وَ مِنْ خَيْرِ مَا اَنْتَ مُعْطِيْهِ

का तु अता करने वाला है किसी एक मखलुक को और मुझ को इस के साथ अपनी आफीयत

اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ وَ اَلْبِسْنِيْ مَعَ ذٰلِكَ عَافِيَتَكَ يَا مَوْضِعَ كُلِّ

का लेबास पिन्हा दे ऐ हर फरयाद का मोकाम और ऐ हर मुनाजात के गवाह और ऐ हर राज के

شَكْوٰى وَ يَا شَاهِدَ كُلِّ نَجْوٰى وَ يَا عَالِمَ كُلِّ خَفِيَّةٍ وَ يَا دَافِعَ

जानने वाले और ऐ दूर करने वाले उस मुसिबत के जो तु चाहता है ऐ करीम माफ करने वाले, एा

مَا تَشَاءُ مِنْ بَلِيَّةٍ يَا كَرِيْمَ الْعَفْوِ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ وَ تَوَفَّنِيْ

बहतरीन दर गुजर करने वाले मुझको मौत अता कर मिल्लते इबराहीम और फीतरते तौहिद और

عَلٰى مِلَّةِ اِبْرَاهِيْمَ وَ فِطْرَتِهٖ وَ عَلٰى دِيْنِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

दीन मोहम्मद स.व.स. और उन की सून्नत पर और बहतरीन मौत दे दरा हालॉके तेरे दोस्तो को

وَ آلِهٖ وَ سُنَّتِهٖ وَ عَلٰى خَيْرِ الْوَفَاةِ فَتَوَفَّنِيْ مُوَالِيًا لِاَوْلِيَائِكَ وَ

दोस्त रहू और तेरे दूश्मनो को दूश्मन खुदाया मुझ को इस साल हर हमल या कौल या फेल जो

مُعَادِيًا لِاَعْدَائِكَ اَللّٰهُمَّ وَ جَنِّبْنِيْ فِيْ هٰذِهِ السَّنَةِ كُلَّ عَمَلٍ

मुझ को तुझ से दूर करता हो उस से बचा ले और हर वो कौल या अमल या फेल अता कर जो

اَوْ قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ يُبَاعِدُنِيْ مِنْكَ وَ اجْلِبْنِيْ اِلٰى كُلِّ عَمَلٍ اَوْ

मुझ को तुझ से करीब करता हो इस साल मै ऐ सब से अजीम रहम करने वाले और मुझ को रोक

قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ يُقَرِّبُنِيْ مِنْكَ فِيْ هٰذِهِ السَّنَةِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

दे हर अमल या कॉल या फेल से जिस के अनजाम के नूकसान से मै डरता हू और तेरे अजाब

وَ امْنَعْنِيْ مِنْ كُلِّ عَمَلٍ اَوْ قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ يَكُوْنُ مِنِّيْ اَخَافُ

से डरता हू खास तौर पर के तू उस की वजह से मुझ से करीम रूख फिरा लेगा जिस की वजह

ضَرَرَ عَاقِبَتِهٖ وَ اَخَافُ مَقْتَكَ اِيَّايَ عَلَيْهِ حِذَارَ اَنْ تَصْرِفَ

से मै तेरे नजदीक अपने हिस्सा की कमी का मुसतहक हो जाऊगा ऐ महेरबान, ऐ रहम करने

وَجْهَكَ الْكَرِيْمَ عَنِّيْ فَاَسْتَوْجِبَ بِهٖ نَقْصًا مِنْ حَظٍّ لِيْ

वाले, खुदाया मुझ को करार दे मेरे उस आने वाले साल मे अपनी हेफाजत और अपने जवार

عِنْدَكَ يَا رَءُوْفُ يَا رَحِيْمُ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ فِيْ مُسْتَقْبَلِ

और अपनी हेमायत मे और मुझ को लेबासे आफीयत से आरासता कर दे और मुझ को अपनी

سَنَتِيْ هٰذِهٖ فِيْ حِفْظِكَ وَفِيْ جِوَارِكَ وَفِيْ كَنَفِكَ وَ جَلِّلْنِيْ سِتْرَ

करामत अता कर के तेरा पडोसी ईज़्ज़तदार हे और तेरी सना जलील है और तेरे एलावा कोई

عَافِيَتِكَ وَهَبْ لِيْ كَرَامَتَكَ عَزَّ جَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا اِلٰهَ

खुदा नही है खुदाया मुझ को उन का ताऐ कर दे जो तेरे दोसत पहले गुजर गए और मुझको उन से

غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ تَابِعًا لِصَالِحِ مَنْ مَضٰى مِنْ اَوْلِيَائِكَ

मिला दे मे और मै तेरी पन्हा चाहता हू , खुदाया के मै खता और मेरा जुल्म मुझ पर एहाताह कर

وَ اَلْحِقْنِيْ بِهِمْ وَ اجْعَلْنِيْ مُسَلِّمًا لِمَنْ قَالَ بِالصِّدْقِ عَلَيْكَ

ले और मेरा अनने नफस पर ज्यादती करना और मेरी खवाहिशे नफस की पैरवी और अपनी

مِنْهُمْ وَ اَعُوْذُ بِكَ اَللّٰهُمَّ اَنْ تُحِيْطَ بِيْ خَطِيْئَتِيْ وَ ظُلْمِيْ وَ

खवाहिशो मे मशगूल रहना मोहित हो जाए तो वो मेरे और तेरी रहमत व रिजवान के दरमियान

اِسْرَافِيْ عَلٰى نَفْسِيْ وَ اتِّبَاعِيْ لِهَوَايَ وَ اشْتِغَالِيْ بِشَهَوَاتِيْ

हाएल हो जाए तो मै तेरी नजर मे भुला हूआ हू और तेरे अजाब और गुस्सा के लिए पेश किया

فَيَحُوْلُ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَ بَيْنَ رَحْمَتِكَ وَ رِضْوَانِكَ فَاَكُوْنَ

हूआ हू खुदयाया म्ाझको हर नेक अमल की तौफीक अता कर जिस से तु मुझ से राजी हो जाए

مَنْسِيًّا عِنْدَكَ مُتَعَرِّضًا لِسَخَطِكَ وَنِقْمَتِكَ اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِىْ

और मुझ को अपनी बारगाह से करीब कर ले खुदाया जिस तरह तु ने अपने पैगम्बर मोहम्मद

لِكُلِّ عَمَلٍ صَالِحٍ تَرْضٰى بِهٖ عَنِّىْ وَ قَرِّبْنِىْ اِلَيْكَ زُلْفٰى اَللّٰهُمَّ

स.व.स. के लिए दुश्मनो के खौफ से केफालत की है और उन के गम को दूर किया है और उन

كَمَا كَفَيْتَ نَبِيَّكَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ هَوْلَ عَدُوِّهٖ

के रन्ज को खत्म किया है और अपने वादा को उनके लिए सच्चा किया है और मुझको तसलीम

وَ فَرَّجْتَ هَمَّهٗ وَ كَشَفْتَ غَمَّهٗ وَ صَدَقْتَهٗ وَعْدَكَ وَ اَنْجَزْتَ

करने वाला बना दे उस का जो सच्ची बात कहे तेरे बारे और उन के लिए अपने अहेद को पूरा

لَهٗ عَهْدَكَ اَللّٰهُمَّ فَبِذٰلِكَ فَاكْفِنِىْ هَوْلَ هٰذِهِ السَّنَةِ وَ

किया है ऐ खुदा इस तरह मेरे लिए काफी हो जा इस साल के खौफ, आफता, बिमारियो और

آفَاتِهَا وَ اَسْقَامَهَا وَ فِتْنَتَهَا وَ شُرُوْرَهَا وَ اَحْزَانَهَا وَ ضِيْقَ

फितना और बूराईयो और गमो और रोजी की तन्गी से मेरे लिए और मुझ को अपनी रहमत

الْمَعَاشِ فِيْهَا وَ بَلِّغْنِىْ بِرَحْمَتِكَ كَمَالَ الْعَافِيَةِ بِتَمَامِ

से पहूचा दे कमाल आफियत तक मोकम्मल दाएमी नेएमत आखिर उमर ते मै तुझ से सवाल

دَوَامِ النِّعْمَةِ عِنْدِيْ اِلٰى مُنْتَهٰى اَجَلِيْ اَسْاَلُكَ سُؤَالَ مَنْ

करता हू उस शखश जैसा सवाल जिस ने गलती की हो ओर जुल्म किया हो और जलील हूआ

اَسَاءَ وَظَلَمَ وَاسْتَكَانَ وَاعْتَرَفَ وَاَسْئَلُكَ اَنْ تَغْفِرَ لِيْ مَا

और एतेराफे गुन्हा किया है और मै तुझ से सवाल करता हू के मेरे गुजसजा गुन्हाओ को बखश

مَضٰى مِنَ الذُّنُوْبِ الَّتِيْ حَصَرَتْهَا حَفَظَتُكَ وَاَحْصَتْهَا كِرَامُ

दे जिन को तेरे मोहाफिजो ने लिख लिया है और तेरे मलाएका ने जिन का एहसार कर लिया है

مَلَائِكَتِكَ عَلَيَّ وَاَنْ تَعْصِمَنِيْ اِلٰهِيْ اَللّٰهُمَّ مِنَ الذُّنُوْبِ فِيْمَا

मुण पर और मुझ को ऐ खुदा बचा ले मेरी बकिया जिन्दगी मे आखीर तक के लिए गुन्हाओ से ऐ

بَقِيَ مِنْ عُمْرِيْ اِلٰى مُنْتَهٰى اَجَلِيْ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ صَلِّ

मेरे खुदा ऐ रहम करने वाले ऐ रहीम तु दूरूद नाजील कर मोहम्मद व अैहलेबैते मोहम्मद पर और

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَهْلِ بَيْتِ مُحَمَّدٍ وَآتِنِيْ كُلَّ مَا سَاَلْتُكَ وَرَغِبْتُ

मुझ को हर वो चीज दे दे जिस का मै ने तुझ से सवाल किया है और जिस का मै तुझसे मुशताक

اِلَيْكَ فِيْهِ فَاِنَّكَ اَمَرْتَنِيْ بِالدُّعَاءِ وَتَكَفَّلْتَ لِيْ بِالْاِجَابَةِ يَا

हूआ हू क्योंके तु ने दूआ का हूकम दिया हे और मेरे लिए कुबूल करने का कफील हूआ है सब

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

से ज्यादा रहम करने वाले

लेखक के अनुसार सय्यद ने इस दुआ को पहली शब के आमाल में लिखा है।

रमज़ान महीने की छे तारीख

छे रमज़ान हिजरी २०१ में लोगों ने इमाम रज़ा (अ.स.) की बयअत की है और सय्यद ने रिवायत की है के इस नेअमत के शुक्र के लिए दो रकअत नमाज़ पढी जाए। और हर रकअत में सूरह हम्द और पच्चीस बार सूरह तौहीद पढ़ा जाए।

रमज़ान की तेरहवीं रात

रौशन रातों की पहली रात है। इससे तीन आमाल हैं।

एक: गुस्ल

दो: चार रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द और पच्चीस बार सूरह तौहीद।

तीन: दो रकअत नमाज़ जो तेरहवीं रजब और तेरहवीं शाबान की रातों में भी पढ़ी जाती है जिसमें हर रकअत में सूरह हम्द के बाद यासीन सूरह मुल्क और सूरह तौहीद पढ़ा जाता है।

रमज़ान की चौधवीं रात

चार रकअत नमाज़ मुस्तहब है दो सलाम के साथ इसके अलावा दुआ मोजीर के ज़ैल में यह बयान किया जा चुका है। के जो व्यक्ति रमज़ान महीने के रौशन दिनों में इस दुआ को पढ़ेगा उसके गुनाह बख्श दिये जाएंगे चाहे बारिश के कतरों दरख्त के पत्तों और बयाबान की रेत के बराबर है।

पंदरहवीं शब

बाबरकत रातों में है। इसमें चंद आमाल हैं।

एक: गुस्ल

दो: ज़ियारत इमाम हुसैन (अ.स.)

तीन: छे रकअत नमाज़, हम्द, यासीन, मुल्क और तौहीद के साथ।

चार: सौ रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द के बाद दस बार सूरह तौहीद। शेख मुफीद ने मुकन्ना में अमीरूल मोमिनीन से रिवायत की है के

जो व्यक्ति इस अमल को बजा लाएगा परवरदिगार उसके पास दस फरिश्तों को भेजेगा जो उसे दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रखें और मौत के समय तीस फरिश्ते नाज़ल करेगा जो उसे आतिशे जहन्नम से बचा लेगे।

पाँच: रिवायत में है के इमाम सादिक से पूछा गया के उस व्यक्ति के बारे में क्या फरमाते हैं जो पंदरहवीं रमज़ान कब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) के पास हाज़र रहे? फरमाया क्या बेहतरीन रात है के जो व्यक्ति पंद्रहवीं रमज़ान में हज़रत की कब्र के पास दस रकअत नमाज़, नमाज़े इशा के बाद पढ़े। और यह नमाज़ नाफिले शब के अलावा ही और हर रकअत में सूरह हम्द के बाद दस बार सूरह तौहीद पढ़े। और खुदा से आतिशे जहन्नम से पनाह मांगे। तो परवरदिगार उसको पनाह दे देगा और दुनिया से उस समय तक न जाएगा जब तक उन मलाएका को न देखले जो बेहिश्त की बशारत देने वाले हैं और जहन्नम से बचाने वाले हैं।

पंद्रहवीं रमज़ान

हिजरी दो में विलादत बा सआदत इमाम हसन मुजतबा (अ.स.) है।

शेख मुफीद ने फरमाया है के १९५ हिजरी में इमाम मोहम्मद तकी (अ.स.) की विलादत भी इसी तारीख में थी। अगरचे मशहूर रिवायत इसके खिलाफ है। लेकिन बहर हाल बाबरकत दिन है। इसमें सदकाद और कारे खैर की बेइन्तेहा फज़ीलत है।

सतरहवीं रात

इन्तेहाई मुबारक रात है। इस शब में लशकरे इसलाम ने लश्करे कुफ्फार से बद्र में सामना किया। और इसके दिन में जंग बद्र वाकेअ हुई। जिस में परवरदिगार ने रसूले अकरम (स.अ.व.व.) को मुश्रीकों पर विजय दी। जो इसलाम की सबसे बड़ी विजय थी।

इसी से ओलमा ने फरमाया है उस दिन में रोज़ा, सदका, शुक्रे खुदा, गुस्ल और इबादत वगैरा अंजाम दे। जो शब में भी फज़ीलत रखती है।

लेखक के अनुसार शबे बद्र के रिवायत में वारिद हुई है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) ने शबे बद्र अपने असहाब से फरमाया के कौन है जो जाकर बद्र

के कुएं से पानी ले आएं? ताके हम सब अपनी प्यास बुझाएं। असहाब खामोश रहे और किसी में हिम्मत पैदा न हुई। तो अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) ने मशकीज़ा उठाया और पानी की तलाश में निकल पडे। रात इन्तेहाई सर्द थी और तेज़ हवाएं चल रही थीं। अंधेरी रात में आप कुएं के पास पहुँचे। कुवां भी काफी गहरा था और अंधेरा। आपके पास कोई डोर भी नहीं था जिसके ज़रिए पानी निकाल सकते। चुनानचे आप कूएं में उतरे मशकीज़े को भर लिया। लेकर रसूले अकरम (स.अ.व.व.) की तरफ चलें। अचानक तेज़ हवा चली और आप बैठ गए। जब हवा का ज़ोर कम हुआ तो फिर चले और फिर दोबारा तेज़ आंधी चली। तो फिर बैठ गए और फिर उठ कर चले। और तीसरी बार फिर वही वाकेआ पेश आया। यहाँ तक आपने अपने को रसूले अकरम (स.अ.व.व.) तक पहुँचा दिया। हज़रत ने फरमाया: या अबल हसन तुमने बड़ी देर लगा दी। अर्ज़ की के तीन बार आंधियों का ज़ोर से सामना आया और मैं लरज़ गया। लेहाज़ा उसके ज़ोर के कम होने का इन्तेज़ार करता रहा। फरमाया क्या तुम्हें मालूम है यह क्या था? अर्ज़ की हुज़ूर बेहतर जानते हैं। फरमाया पहली बार जिब्रईल थे जो हज़ार फरिश्तों के साथ तुम्हें सलाम करने आए थे। उसके बाद मीकाईल हज़ार फरिश्तों के साथ आए थे और तुम्हें सलाम कर रहे थे। उसके बाद इसराफिल हज़ार फरिश्तों के साथ आए और सबने तुमको सलाम किया। यह सब आज हमारी मदद के लिए आए थे।

मोअल्लिफ का बयान है के उसी नुकते की तरफ उस व्यक्ति ने इशारा किया है जिसने यह कहा है के अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) के लिए एक रात में तीन हज़ार तीन फज़ीलतें थी। और इसी वाक्ये की तरफ सय्यद हिमयरी ने अपने कसीदे में इशारा किया है।

وَالْمَرْءُ عَمَّا قَالَ مَسْئُولٌ		اُقْسِمُ بِاللّٰهِ وَآلَائِهِ
शायद मेरे कलाम का परवरदिगार है।		हर शख़स अपनी बात का गर ज़िम्मेदार है।
عَلَى التُّقَى وَالْبِرِّ مَجْبُولٌ		اِنَّ عَلِيَّ بْنَ اَبِي طَالِبٍ

तक़वे का और ख़ैर का एक शाहकार है।		मेरा अली (अ.स.) जो है अबु तालिब का लख़्ते दिल।
وَ اَحْجَمَتْ عَنْهَا الْبَهَالِيلُ		كَانَ اِذَا الْحَرْبُ مَرَّتْهَا الْقَنَا
वो मुतमईन है और जहॉ बे क़रार हे।		देखा है उसको इस तरह मैदाने जंग मे
اَبْيَضُ مَاضِي الْحَدِّ مَصْقُولٌ		يَمْشِي اِلَى الْقِرْنِ وَفِي كَفِّهٖ
जैसे ख़ुदा के हाथ मे ये ज़ुल्फ़ेक़ार है।		जाता है सूए दुश्मने इस्लाम इस तरह।
اَبْرَزَهُ لِلْقَنَصِ الْغِيلُ		مَشْيَ الْعَفَرْنٰى بَيْنَ اَشْبَالِهٖ
जैसे नज़र के सामने कोई शिकार है।		बढ़ता है सूए मारकह शेरों के दरमिया।
عَلَيْهِ مِيكَالُ وَ جِبْرِيلُ		ذَاكَ الَّذِي سَلَّمَ فِي لَيْلَةٍ
ब रौज़े बद्र उसका बडा इफ़तेख़ार है।		उस पर सलाम करते हैं मीकाईल व जिब्रईल।
اَلْفٍ وَ يَتْلُوهُمْ سَرَافِيلُ		مِيكَالُ فِي اَلْفٍ وَ جِبْرِيلُ فِي
और सब के साथ फ़ौजे मलक एक हज़ार है।		मीकाईल व जीब्रईल व इस्राफ़ील आए हैं।
كَاَنَّهُمْ طَيْرٌ اَبَابِيلُ		لَيْلَةَ بَدْرٍ مَدَداً اُنْزِلُوا
ये इन्तेज़ाम नुसरते परवरदिगार है।		मैदॉ मे आए फ़ौजे अबाबील की तरह।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِكِتَابِكَ الْمُنْزَلِ وَمَا فِيْهِ وَفِيْهِ اسْمُكَ الْاَكْبَرُ

खुदाया मै तुझ से दरखास करता हू तेरी नाजील शूदा किताब के जारिए और जो कुछ इस मे है

وَاَسْمَآؤُكَ الْحُسْنٰى وَمَا يُخَافُ وَيُرْجٰى اَنْ تَجْعَلَنِىْ مِنْ عُتَقَآئِكَ مِنَ

और उसमें तेरा अजीम नाम है और तेरे नेक नाम है और जिस से खौफ किया जाता है और उम्मीद

النَّارِ.

लगाई जाती है के तु मूझ को जहन्नम से आजाद कर दे

उन्नीसवीं रात

यह पहली शबे कद्र है और शबे कद्र वह रात है जिसकी फज़ीलत और खूबी तक कोई रात पहुँच नहीं सकती है। इस रात में हर अमल हज़ार महीनों से बेहतर है और साल भर के ओमूर का फैसला भी इसी रात में होता है। मलाएका और सब से बुलंद फरिश्ता - रूहूल कुद्स का नुज़ूल होता है। और इमामे ज़माना (अ.त.फ.श.) की खिदमत में सब हाज़र होते हैं। जो कुछ किसी के बारे में मुकद्दर हुआ है वह इमाम की खिदमत में पेश होता है।

शबे कद्र के आमाल

शबे कद्र के आमाल की दो किस्में हैं। एक किस्म तीनों रातों में मुश्तरक है और दूसरी किस्म में हर रात के मखसूस आमाल है।

सामानय आमाल

मुश्तरक किस्म में चंद चीज़ें हैं

एक: गुस्ल। अल्लामा मजलिसी ने फरमाया है के इस गुस्ल को गुरूबे आफताब के फौरन बाद होना चाहिए बल्के नमाज़े मगरेबैन भी उसी गुस्ल से पढनी चाहिए।

दो: दो रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द के बाद सात बार सूरह तौहीद। नमाज़ के बाद सत्तर बार اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوبُ اِلَيْهِ के रिवायत पैगंबर में है के ऐसा व्यक्ति अपनी जगह से न उठेगा मगर यह के परवरदिगार उसे और उसके वालेदैन को बख्श देगा।

तीन: कुराने मजीद को खोल कर सामने रखे और यह कहे:

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذَا الْقُرْاٰنِ وَ بِحَقِّ مَنْ اَرْسَلْتَهٗ بِهٖ وَ بِحَقِّ كُلِّ

खुदाया उस कूआन के हक के वासते से और उस शखस के हक के वासते से जिस को तु ने भेजा

مُؤْمِنٍ مَدَحْتَهٗ فِيْهِ وَ بِحَقِّكَ عَلَيْهِمْ فَلَا اَحَدَ اَعْرَفُ بِحَقِّكَ

है उस के साथ और हर मोमीन के हक के वासते से जिस की तु ने उस मे मदह कि है और तेरे हक

مِنْكَ.

के वासते से उन के उपर कोई तुझ से ज्यादा तेरे हक का पहचानने वाला नही है

उसके बाद दस बार हर एक को कहे:

بِكَ يَا اللّٰهُ، بِمُحَمَّدٍ، بِعَلِيٍّ، بِفَاطِمَةَ، بِالْحَسَنِ، بِالْحُسَيْنِ، بِعَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ، بِمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، بِجَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، بِمُوسَى بْنِ جَعْفَرٍ، بِعَلِيِّ بْنِ مُوسَى، بِمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، بِعَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ، بِالْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ، بِالْحُجَّةِ

और अंत में अपनी हाजत तलब करे।
पाँच: ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.)। के रिवायत में है के शबे कद्र में आसमान से मुनादी आवाज़ देता है के परवरदिगारे आलम ने हर ज़ाएरे कब्रे हुसैन को बख्श दिया है।
छे: इन रातों में शब्बेदारी भी मुस्तहब है। के रिवायतों में है इन रातों में शब्बेदारी करने वालों के गुनाह बख्श दिए जाते हैं। चाहे वह आसमान के सितारों, पहाड़ की संगीनो और दरिया के पैमाने के बराबर ही क्यों न हो।
सात: सौ रकअत नमाज़ की भी बेहद फज़ीलत वारिद हुई है। और बेहतर यह है के हर रकअत में सूरह हम्द के बाद दस बार सूरह तौहीद पढे।
आठ: यह दुआ पढे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَمْسَيْتُ لَكَ عَبْدًا دَاخِرًا لَا اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا

खुदाया मै ने शाम की है बन्दा आसता बोस की तरह जो अपने लिए किसी नफा और नुकसान का

وَّ لَا ضَرًّا وَ لَا اَصْرِفُ عَنْهَا سُوْءًا اَشْهَدُ بِذٰلِكَ عَلٰى نَفْسِيْ وَ

एखतेयार नही रखता है और अपने नफस से किसी बूराई को दूर नही कर सकता मै गवाही देता हू की

اَعْتَرِفُ لَكَ بِضَعْفِ قُوَّتِيْ وَ قِلَّةِ حِيْلَتِيْ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ

अपने नफस पर और तुस से एतेराफकरता हू अपनी कूवत की कमजोरी और अपनी तदबीर की कमी

مُحَمَّدٍ وَ اَنْجِزْ لِيْ مَا وَعَدْتَنِيْ وَ جَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ

का तु मोहम्मद व आले मोहम्मद पर दुरूद कर और जिस का तु ने मुझ से वादा किया है उस को पूरा

مِنَ الْمَغْفِرَةِ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ اَتْمِمْ عَلَيَّ مَا آتَيْتَنِيْ فَاِنِّيْ عَبْدُكَ

कर दे औ जिस का तु ने तमाम मोमेनीन व मोमेनात से वादा किया है बखश देने का उस रात मे उसे

الْمِسْكِيْنُ الْمُسْتَكِيْنُ الضَّعِيْفُ الْفَقِيْرُ الْمَهِيْنُ اَللّٰهُمَّ

पूरा कर दे और जो तु ने मुझ को दिया हे उस को मुकम्मल अता कर मै तेरा मिसकीन, हाजत मंद,

لَا تَجْعَلْنِيْ نَاسِيًا لِذِكْرِكَ فِيْمَا اَوْلَيْتَنِيْ وَ لَا لِاِحْسَانِكَ فِيْمَا

कमजोर औीर फकीर और न तवा बन्दा हू खुदाया मुझको अपने ज़िक का भूलने वाला न करार देना

اَعْطَيْتَنِيْ وَ لَا آيِسًا مِنْ اِجَابَتِكَ وَ اِنْ اَبْطَاَتْ عَنِّيْ فِيْ سَرَّاءَ اَوْ

इस मे जिस को तु ने अता किय है और न अपने एहसान से गाफिल जिस मे तु ने मुझ को अता किया हे

ضَرَّآءَ اَوْ شِدَّةٍ اَوْ رَخَآءٍ اَوْ عَافِيَةٍ اَوْ بَلَآءٍ اَوْ بُؤْسٍ اَوْ نَعْمَآءَ اِنَّكَ

और न अपनी कूबूलियत से मायूस होने वाला चाहे देर हो जाए मुझ से राहत मे, नूकसान मे या सखती

سَمِيْعُ الدُّعَآءِ.

मे या आसाईश मे या आफीयत मे या बला मे या तनगी मे या नेमत मे, बेशक तु दूआ का सूनने वाला है

इस दुआ को कफअमी ने इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) से रिवायत की है के आप कयाम ओ कऊद, रूकूओ सुजूद हर हाल में पढ़ा करते थे। अल्लामा मजलिसी ने फरमाया है के इस शब में बेहतरीन अमल तलबे इस्तेगफार और दुआ है। दुनियाओ आखेरत के लिए, अपने वालेदैन के लिए। अकरबा के लिए, ज़िंदाओ मुर्दा बिरादरे ईमानी के लिए। और जहाँ तक मुम्किन हो सलवात मोहम्मदो आले मोहम्मद पर पढ़े। वाज़ेह रहे के रिवायत में यह भी है के इन तीन रातों में दुआ जौशने कबीर पढ़े। जिसका ज़िक्र पहले हो चुका है। और रिवायत में है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) से पूछा गया के अगर शबे कद्र मिल जाए तो क्या करें? फरमाया आफेयत तलब करो।

शबे कद्र की रातों के मखसूस आमाल

उन्नीसवीं शब के आमाल

एक: सौ बार कहे: अस्तग़फ़ेरूल्ला-ह रब्बी व अतूबो इलैहे
दो: सौ बार कहे:अल्लाहुम्मल् अन् क़-त-ल-त अमीरिल् मोअ्मेनी-न
तीन: यह दुआ पढ़े जो इन शब्दों से शुरू होती हैं: या ज़ल्लज़ी का-न क़ब्-ल कुल्ले शैइन्
चार: यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْمَا تَقْضِيْ وَ تُقَدِّرُ مِنَ الْاَمْرِ الْمَحْتُوْمِ وَ فِيْمَا تَفْرُقُ

खुदाया तु मोकररब फरमा अपनी कजा व कदर मे खतमी अमर और जिस मे तु तकसीम करता

مِنَ الْاَمْرِ الْحَكِيْمِ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ فِي الْقَضَاءِ الَّذِي لَا يُرَدُّ وَلَا

है उमुर हकीमाना को शबे कदर मे और उस फैसला मे जो रददे बदल नही किया जाता है के तु

يُبَدَّلُ اَنْ تَكْتُبَنِيْ مِنْ حُجَّاجِ بَيْتِكَ الْحَرَامِ الْمَبْرُوْرِ حَجُّهُمْ

मुझ को लिख दे अपने बैतुल हराम के हाजियो मे जिन का हज मकबूल हो जिन की कोशिश

الْمَشْكُوْرِ سَعْيُهُمُ الْمَغْفُوْرِ ذُنُوْبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنْهُمْ سَيِّئَاتُهُمْ

मशकूर हो जिन के गून्हा बखशे हूए हू जिन की बूराईया दर गूजर की हूई हू और करार दे अपने

وَاجْعَلْ فِيْمَا تَقْضِيْ وَتُقَدِّرُ اَنْ تُطِيْلَ عُمْرِيْ وَتُوَسِّعَ عَلَيَّ فِيْ رِزْقِيْ وَ

कजा व कदर मे के मेरी उमर लंबी हो और मेरा रिजक वसीह हो और मेरे साथ ऐसा बरताव

تَفْعَلَ بِيْ كَذَا وَ كَذَا

कर...

उसके बाद अपनी हाजत तलब करे।

एक्किस्वीं शब के आमाल

इस रात की फज़ीलत उन्नीसवीं शब से ज़्यादा है। और चाहिए के गुस्ल, शब्बेदारीओ ज़ियारत, सात सूरह तौहीद की नमाज़, अमले कुरान, सौ रकअत नमाज़, जौशने कबीर, वगैरह सब इस रात में बजा ले आए और रिवायत में उस रात का गुस्ल, शब्बेदारी और सअई इबादत की इस रात में और तेईसवीं रात में ताकीद की गई है। और यह के शबे कद्र इन्हीं दो रातों में से कोई एक रात है। बाज़ रिवायत में है के इमाम (अ.स.) से सवाल किया गया के इन दो रातों में शबे कद्र मोअय्यत फरमा दें। तो फरमाया के खुदा से तलब करने में यह दो रातें इस कद्र आसान हैं या यह के फरमाया क्या बुराई है

अगर अमले खैर दो रातों में कर लो?
शेख सदूक ने फरमाया के मेर उस्तादों ने कहा है के जो व्यक्ति भी इन दो रातों को इल्मी बातचीत में गुज़ार दे यह बेहतर अमल है।
बहर हाल आज की रात इन दुआओं को शुरू करे जो अंतिम दस रातों की दुआएं हैं।
शेख कुलैनी ने काफी में इमामे सादिक (अ.स.) से नक्ल किया है के आप ने फरमाया: रमज़ान महीने के अंतिम दस रातों में हर रात यह दुआ पढ़े:

اَعُوْذُ بِجَلَالِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَنْ يَنْقَضِيَ عَنِّيْ شَهْرُ رَمَضَانَ اَوْ

मै पनहा चाहता हू तेरी करीम जात के जलाल से के माहे रमजान मुझ से खत्म हो या उस रात

يَطْلُعَ الْفَجْرُ مِنْ لَيْلَتِيْ هٰذِهٖ وَ لَكَ قِبَلِيْ ذَنْبٌ اَوْ تَبِعَةٌ تُعَذِّبُنِيْ

की फजर तालेए हो और मै तेरी बारगाह मे कोई गुन्हा या जेम्मेदारी रखता हू जिस पर तु मुझ को

عَلَيْهِ.

अजाब करे

कफअमी ने बलदुल अमीन के हाशिए में नक्ल किया है के इमाम जाफरे सादिक (अ.स.) आखीर अशरे की हर रात में फराएज़ और नवाफिल के बाद यह दुआ पढते थे:

اَللّٰهُمَّ اَدِّ عَنَّا حَقَّ مَا مَضٰى مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ وَ اغْفِرْ لَنَا

खुदाया अदा कर दे हम से उस हक को जो माहे रमजान का गुजर गया और हमारी तकसीर को

تَقْصِيْرَنَا فِيْهِ وَ تَسَلَّمْهُ مِنَّا مَقْبُوْلًا وَلَا تُؤَاخِذْنَا بِاِسْرَافِنَا

माफ कर दे और उस को ह से ले ले मकबूल हालत मे और हम से मोवाखेजा न कर हमारे नफसो

عَلٰى اَنْفُسِنَا وَ اجْعَلْنَا مِنَ الْمَرْحُوْمِيْنَ وَ لَا تَجْعَلْنَا مِنَ

पर इसराफ का और हम को करार दे रहमत पाए हूए लोगों मे और हम को महरूम लोगों मे न

الْمَحْرُوْمِيْنَ.

करार दे

फरमाया के जो व्यक्ति ऐसा कहेगा परवरदिगार गुज़रे दिनों की सब कोताहीयों को माफ कर देगा और आईंदा अंतिम महीने तक गुनाहों से उसे बचा कर रखेगा।

सैय्यद बिन ताऊस ने इकबाल में इब्ने अबी अम्र से मराज़म से नक्ल किया है के इमामे सादिक (अ.स.) आखरी दस रातों में हर रात को यह दुआ पढ़ते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ قُلْتَ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْ

खुदाया तु ने खुद अपनी इस किताब मे जो माहे रमजान मे नाजील की है फरमाया के है इसी

اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَ بَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدٰى وَ

महिना मे कूआन नाजील किया गया जो हेदायत है लोगो के लिए और हेदायत की निशानिया है

الْفُرْقَانِ فَعَظَّمْتَ حُرْمَةَ شَهْرِ رَمَضَانَ بِمَا اَنْزَلْتَ فِيْهِ مِنَ

और हक व बातील मे फरक करने वाला है तो तु ने इस महिने की हूरमत को अजीम करार दिया है

الْقُرْآنِ وَ خَصَصْتَهُ بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ وَ جَعَلْتَهَا خَيْرًا مِنْ اَلْفِ

इस लिएके तु ने इस मे कुरआन नाजील किया है और उसको मखसूस किया है शबे कदर से और

شَهْرٍ اَللّٰهُمَّ وَهٰذِهٖ اَيَّامُ شَهْرِ رَمَضَانَ قَدِ انْقَضَتْ وَلَيَالِيْهِ

तु ने उस को हजार महिने से बहतर बनाया है खुदाया ये माहे रमजान के दिन खतम हो गए और

قَدْ تَصَرَّمَتْ وَ قَدْ صِرْتُ يَا اِلٰهِيْ مِنْهُ اِلٰى مَا اَنْتَ اَعْلَمُ

उस की राते गुजर गई और ऐ खुदा मै इस माह मे कैसा रहा तु मुझ से बहतर इस का जानने वाला

بِهٖ مِنِّيْ وَ اَحْصٰى لِعَدَدِهٖ مِنَ الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ فَاَسْاَلُكَ بِمَا

है और तु ज्यादा एहसा करने वाला है उस के अदद का तमाम मखलुक से पस, मै तुझ से सवाल

سَئَلَكَ بِهٖ مَلَائِكَتُكَ الْمُقَرَّبُوْنَ وَ اَنْبِيَاؤُكَ الْمُرْسَلُوْنَ وَ

करता हू उस चीज का जिस का तुझ से तेरे मोकररब और तेरे मुरसलीन और तेरे नेक बन्दो ने

عِبَادُكَ الصَّالِحُوْنَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَفُكَّ

सवाल किया है के तु दूरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको जहन्नम से

رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ وَ تُدْخِلَنِي الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ وَ اَنْ تَتَفَضَّلَ

आजादी अता कर और अपनी रहमत से मुझ को जन्नत मे दाखिल कर और अपने अफू व करम

عَلَيَّ بِعَفْوِكَ وَ كَرَمِكَ وَ تَتَقَبَّلَ تَقَرُّبِيْ وَ تَسْتَجِيْبَ دُعَائِيْ وَ

से मुझ पर फजल कर और मेरे तकररूब को कूबूल कर और मेरे दुआ को कूबूल कर और मुझ

تَمُنَّ عَلَيَّ بِالْاَمْنِ يَوْمَ الْخَوْفِ مِنْ كُلِّ هَوْلٍ اَعْدَدْتَهٗ لِيَوْمِ

पर एहसान कर खाफ के रोज अमन के जारिए हर खतरा से जिस को तु ने रोज कयामत के लिए

الْقِيَامَةِ اِلٰهِي وَ اَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَ بِجَلَالِكَ الْعَظِيْمِ

मोहैय्या किया है खुदाया मै तेरी करीम जात के वासते से पनहा चाहता हू और तेरे अजीम जलाल

اَنْ يَنْقَضِيَ اَيَّامُ شَهْرِ رَمَضَانَ وَ لَيَالِيْهِ وَ لَكَ قِبَلِيْ تَبِعَةٌ

के जारिए के माहे रमजान खत्म हो जाए और उस की राते तमाम हू और तेरा मेरे उपर कोई फरिजा

اَوْ ذَنْبٌ تُؤَاخِذُنِيْ بِهٖ اَوْ خَطِيْئَةٌ تُرِيْدُ اَنْ تَقْتَصَّهَا مِنِّيْ لَمْ

या कोई मेरा गुन्हा हो जिस का तु मुझ से मोवाखेजा कर या कोई मेरी गलती हो जिस का इनतेकाम

تَغْفِرْهَا لِيْ سَيِّدِيْ سَيِّدِيْ سَيِّدِيْ اَسْاَلُكَ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

तु मुझ से चाहता हो जिस को तु ने बखशा न हो मेरे मालीक, मेरे मालीक, मेरे मालीक मै तुझ से

اِذْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اِنْ كُنْتَ رَضِيْتَ عَنِّيْ فِيْ هٰذَا الشَّهْرِ فَازْدَدْ

सवाल करता हू ऐ खुदा के तेरे एलावा कोई खुदा नही है क्योंके तेरे एलावा कोई खुदा नही है अगर

عَنِّيْ رِضًا وَ اِنْ لَمْ تَكُنْ رَضِيْتَ عَنِّيْ فَمِنَ الْاٰنَ فَارْضَ عَنِّيْ يَا

तु मुझ से राजी हो गया है इसी महिने मे तु रजा व खुशनुदी मे एजाफा फरमा और अगर तु मुझ से

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا اللّٰهُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنْ لَمْ يَلِدْ وَ لَمْ يُوْلَدْ وَ

राजी नही हूआ है तो इसी वक्त राजी हो जा ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले ऐ अल्लाह ऐ यकता

لَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ.

इसके बाद यह दुआ बार बार पढ़े:

ऐ बे नेयाज, ऐ वो जिस के न कोई औवलाद है न बाप है और न जिस का कोई हमसर भी नही है

يَا مُلَيِّنَ الْحَدِيْدِ لِدَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَا كَاشِفَ الضُّرِّ وَ الْكَرَبِ

ऐ दाउुद अ.स. के लिए लोहे को नरम करने वाले, और ऐ अैय्यूब अ.स. से अजीम दरदो रन्ज

الْعِظَامِ عَنْ اَيُّوْبَ عَلَيْهِ السَّلَامُ اَىْ مُفَرِّجَ هَمِّ يَعْقُوْبَ عَلَيْهِ

के दूर करने वाले , ऐ जनाबे याकूब अ.स. से गम को दूर कर के खुशी अता करने वाले और ऐ

السَّلَامُ اَىْ مُنَفِّسَ غَمِّ يُوْسُفَ عَلَيْهِ السَّلَامُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ

जनाबे यूसूफ अ.स. के गम को खत्म करने वाले दुरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद

اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ وَ افْعَلْ بِيْ مَا

पर जैसा के तु अहेल है के उन सब पर दूरूद नाजील फरमाए औ मेरे साथ वो सूलूक कर जिस

اَنْتَ اَهْلُهٗ وَلَا تَفْعَلْ بِيْ مَا اَنَا اَهْلُهٗ.

का तू अहेल है और वो सूलूक न करना जिस का मै अहेल हू

शेख कुलैनी ने काफी में नक्ल किया है के यह दुआ भी पढ़े जो उन्होंने अपनी सनद के साथ और मुकन्ना और मिस्बाह में बगैर सनद के साथ नक्ल की गई है। के आखरी अशरे की पहली रात, यानी एक्किस्वीं शब में यह दुआ पढ़े:

يَا مُوْلِجَ اللَّيْلِ فِي النَّهَارِ وَ مُوْلِجَ النَّهَارِ فِي اللَّيْلِ وَ مُخْرِجَ الْحَيِّ مِنَ

ऐ रात को दिन मे दाखील यकरने वाले और दिन को रात मे दाखिल करने वाले और जिन्दा को

الْمَيِّتِ وَ مُخْرِجَ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ يَا رَازِقَ مَنْ يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

मुरदा से निकालने वाले और मुरदा को जिन्दा से निकालने वाले, ऐ रोजी देने वाले जिस को चाहिए बे

يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا اَللّٰهُ يَا رَحِيْمُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى

हिसाब ऐ अल्लाह ऐ रहम करने वाले ऐ अल्लाह ऐ रहीम ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह तेरे ही

وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبْرِيَآءُ وَ الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

नेक नाम है और बुलंद तरीन मिसाले है और किबरेयाई और नेएमते है मै तुझ से सवाल करता हू के

وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِيْ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ

तु दुरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे नाम को उस रात मे नेक बखतो मे करार

مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَ اَنْ تَهَبَ

दे और मेरी रूह को शूहदा के साथ और मेरी एताअत को ईल्लीन मे और मेरी बूराईया को माफ किया

لِيْ يَقِيْنًا تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ وَ اِيْمَانًا يُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّيْ وَ تُرْضِيَنِيْ

हूआ और मुझ को अता कर वो यकीन जो मेरे दिन से बराबर मिला रहे और वो ईमान के शक मुझ

بِمَا قَسَمْتَ لِيْ وَ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَ قِنَا

से दूर हो जाए और मुझ को राजी कर दे इस से जो तु ने मेरे लिए तकसीम की है औ हम को दुनिया

عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَ ارْزُقْنِيْ فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ الرَّغْبَةَ

मे नेकी और आखेरत मे नेकी अता कर और जहन्नम की जलाने वाली आग से हम को बचा ले और

اِلَيْكَ وَ الْاِنَابَةَ وَ التَّوْفِيْقَ لِمَا وَفَّقْتَ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ وَ

उस रात मे हम को अपने ज़िक की तौफीक दे , और अपने शूक्र की और अपनी तरफ रगबत की और

عَلَيۡهِمُ السَّلَامُ.

बाईसवीं शब की दुआ

तोबा की और वा तौफीक जो तु ने मोहम्मद व आले मोहम्मद अ.स. को अता फरमाई है

يَا سَالِخَ النَّهَارِ مِنَ اللَّيْلِ فَإِذَا نَحْنُ مُظْلِمُوْنَ وَمُجْرِيَ الشَّمْسِ

ऐ तारिक रात से दिन के निकालने वाले, पस हम तारिकी वाले हे और सूरज को अपने हूकम

لِمُسْتَقَرِّهَا بِتَقْدِيْرِكَ يَا عَزِيْزُ يَا عَلِيْمُ يَا مُقَدِّرَ الْقَمَرِ مَنَازِلَ حَتّٰى

तकदीर से चलाने वाले ऐ बा ईज़्ज़त ऐ साहेबे ईल्म और ऐ चाँद के लिए मंजिलो के मोकरर्र करने

عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ يَا نُوْرَ كُلِّ نُوْرٍ وَّ مُنْتَهٰى كُلِّ رَغْبَةٍ وَ وَلِيَّ

वाले यहॉ तक शाख खुरमा की तरह लागर हो जाए ऐ तमाम नूरो के नू और ऐ हर शौक की

كُلِّ نِعْمَةٍ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا اَللّٰهُ يَا قُدُّوْسُ يَا اَحَدُ يَا وَاحِدُ يَا فَرْدُ يَا اَللّٰهُ

इन्तेहाइ्र मंजील और हर नेएमत की वली ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह तेरे ही लिए बहतरीन नाम है और

يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبْرِيَآءُ وَ

बुलंद मिसाले और बुजूरगी और इंआम है मै तुझ से सवाल करता हू के तू दुरूद नाजील कर

الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ بَيْتِهٖ وَ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِيْ فِيْ

मोहम्मद और उन के अहलेबैत अ.स. पर और मेरे नाम को करार दे उस रात मे खुश बखतो मे

هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ

और मेरी रूह को शहीदों के साथ और मेरे आमाल को ईल्लीन मे और मेरी बूराईयो को बखशा

اِسَآئَتِیْ مَغْفُوْرَۃً وَ اَنْ تَھَبَ لِیْ یَقِیْنًا تُبَاشِرُ بِہٖ قَلْبِیْ وَ اِیْمَانًا یُذْھِبُ

हूआ और मुझ को ऐसा यकीन दे जो मेरे दिल से मिला रहे और ऐसा ईमान दे जो मेरे शक को दूर

الشَّكَّ عَنِّیْ وَ تُرْضِیَنِیْ بِمَا قَسَمْتَ لِیْ وَ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّ فِی

कर दे और मुझको राजी कर दे उस से जो तु ने मेरे लिए तकसीम किया है और दूनिया मे नेकी

الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِیْقِ وَ ارْزُقْنِیْ فِیْھَا ذِكْرَكَ

और आखेरत मे नेकी अता कर और जहन्नम की जलती हूई आग से बचा ले और उस रात मे

وَ شُكْرَكَ وَ الرَّغْبَۃَ اِلَیْكَ وَ الْاِنَابَۃَ وَ التَّوْفِیْقَ لِمَا وَفَّقْتَہٗ مُحَمَّدًا وَّ

मुझ को अपने जिक्र और शूकर और रगबत और उस तौफीक की तौफीक दे जो तु ने मोहम्मद

اٰلَ مُحَمَّدٍ عَلَیْھِمُ السَّلَامُ.

व आले मोहम्मद अ.स. को तौफीक अता की है

तेईसवीं शब की दुआ

یَا رَبَّ لَیْلَۃِ الْقَدْرِ وَ جَاعِلَھَا خَیْرًا مِنْ اَلْفِ شَھْرٍ وَّ رَبَّ اللَّیْلِ وَ

ऐ शबे कदर के रब और उस को हजार महिने से बहतर बनाने वाले औ रात दिन पहाड, दरया,

النَّھَارِ وَ الْجِبَالِ وَ الْبِحَارِ وَ الظُّلَمِ وَ الْاَنْوَارِ وَ الْاَرْضِ وَ السَّمَآءِ

तारिकी और रोशनी जमीन व आसमान के परवरदिगार ऐ पैदा करने वाले ऐ सूरत गर ऐ महेरबान

یَا بَارِئُ یَا مُصَوِّرُ یَا حَنَّانُ یَا مَنَّانُ یَا اَللہُ یَا رَحْمٰنُ یَا اَللہُ یَا قَیُّوْمُ یَا

ऐ नेएमत देने वाले ऐ अल्लाह, ऐ रहमान ऐ काएम बजाते खूद ऐ अल्लाह ऐ पैदा करने वाले। ऐ

اَللّٰهُ يَا بَدِيْعُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَ الْاَمْثَالُ

अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह तेरे ही लिए बहतरीन नाम है और बूलंद मिसाले और बूजूर्गा और

الْعُلْيَا وَ الْكِبْرِيَآءُ وَ الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ

नेएमते है मै तूझ से सवाल करता हू के तू दुरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और

مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِي فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ مَعَ

मेरे नाम को तु करार दे आज की रात खूश बखतो मे और मेरी रूह को शहीदो के साथ और

الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَّ اَنْ تَهَبَ لِي

मेरे अमल को मोकामे ईल्लीन मे और मेरी गलतीयो को बखशा हुआ और मुझको अता कर वो

يَقِيْنًا تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ وَ اِيْمَانًا يُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّيْ وَ تُرْضِيَنِيْ

यकीन पर मेरे दिल से मिला यरहे और ईमान जो मुझ से शक को दूर कर दे और तू मुझको राजी

بِمَا قَسَمْتَ لِيْ وَ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَ

कर दे उस से जो तू ने तकसीम किया है और मुझको अता कर दुनिया मे नेकी और आखेरत मे

قِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَ ارْزُقْنِي فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ

नेकी और हम को बचा जहन्नम की जलती हूई आग से और मुझको तौफीक अता कर उस रात

الرَّغْبَةَ اِلَيْكَ وَ الْاِنَابَةَ وَ تَوْبَةَ لِمَا وَفَّقْتَ مُحَمَّدًا وَ اٰلَ مُحَمَّدٍ

मे अपने जिक्र, शूकर और अपनी रगबत की और अनाबत और तोबा की और तौफीक की जो

عَلَيۡهِمُ السَّلَامُ.

तु ने मोहम्मद व आले मोहम्मद अ.स. को अता की है

मोहम्मद बिन ईसा ने अपनी सनद से सालेहीन (अ.स.) से रिवायत की है कि फरमाया कि तेईसवीं शब में इस दूआ को सजदो, कयाम, कोऊद और हर हालत में तमाम महीने में और जिस कदर मुम्किन हो और जब तुम्हें यह दुआ याद आ जाए पढ़ते रहो मालिक की हम्दो सना और मोहम्मो आले मोहम्मद (अ.स.) पर सलवात के बाद कहो:

اَللّٰهُمَّ كُنۡ لِوَلِيِّكَ اَلۡحُجَّةِ بۡنِ الۡحَسَنِ صَلَوَاتُكَ

खुदाया अपने वली (फुलां बिन फुलां की जगह इमामे ज़माना का नाम ले) हज़रत हुज्जत इब्ने हसन

عَلَيۡهِ وَعَلٰى اٰبَآئِهٖ فِىۡ هٰذِهِ السَّاعَةِ وَفِىۡ كُلِّ سَاعَةٍ وَلِيًّا وَحَافِظًا

तेरी सलवात उन पर और उन के आबाए ताहेरीन पर उन के लिए इस वक्त में और हर वक्त में

وَقَائِدًا وَنَاصِرًا وَدَلِيۡلًا وَعَيۡنًا حَتّٰى تُسۡكِنَهٗ اَرۡضَكَ طَوۡعًا وَ

सरपरस्त, मोहाफिज़, पेशवा, मददगार, रेहनुमा और निगरां हो जा ताकि उन्हें अपनी ज़मीन पर

تُمَتِّعَهٗ فِيۡهَا طَوِيۡلًا

सुकून के साथ साकिन फरमा और उन्हें एक तवील मुद्दते राहत इनायत फरमा।

इसके अलावा यह दुआ पढ़े:

يَا مُدَبِّرَ الۡاُمُوۡرِ يَا بَاعِثَ مَنۡ فِى الۡقُبُوۡرِ يَا مُجۡرِىَ الۡبُحُوۡرِ، يَا مُلَيِّنَ

अय कामों की तदबीर करने वाले, कब्रों से लोगों को निकालने वाले, दरयाओं को जारी करने

الْحَدِيْدِ لِدَاوُدَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ افْعَلْ بِيْ كَذَا

वाले, दाऊद के लिए लोहे को नर्म करने वाले, मोहम्मदो आले मोहम्मद (अ.स.) पर रहमत

وَ كَذَا

नाज़ल फरमा और आज की रात हमारी हाजतों को पूरा फरमा।

अपनी हाजत बयान करे اَللَّيْلَةَ اللَّيْلَةَ हाथों को आसमान की तरफ उठाए और इस दुआ يَا مُدَبِّرَ الْاُمُوْرِ को हर हालत में, रूकू में, सजदे में, उठते बैठते बराबर दोहराता रहे और माहे रमज़ान की आखरी रात भी इसी तरह दोहराए।

चौबीसवीं शब की दुआ

يَا فَالِقَ الْاِصْبَاحِ وَ جَاعِلَ اللَّيْلِ سَكَنًا وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ

ऐ सूबह के शगाफता करने वाले और रात को आराम करार देने वाले और सूरज चाँद को हिसाब

حُسْبَانًا يَا عَزِيْزُ يَا عَلِيْمُ يَا ذَا الْمَنِّ وَ الطَّوْلِ وَ الْقُوَّةِ وَ الْحَوْلِ وَ

से मुनज़्ज़म कने वाले, ऐ साहेबे ईज़्ज़त, ऐ आलमे कूल, ऐ एहसान व नेएमत वाले और कूवत व

الْفَضْلِ وَ الْاِنْعَامِ وَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا اَللّٰهُ يَا

ताकत और फजल व इनआम और जलाल व ईकराम वाले, ऐ अल्लाह , ऐ रहमान, ऐ अल्लाह,

فَرْدُ يَا وِتْرُ يَا اَللّٰهُ يَا ظَاهِرُ يَا بَاطِنُ يَا حَيُّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ لَكَ الْاَسْمَاءُ

ऐ यकता , ऐ अकेले, ऐ अल्लाह, ऐ जाहीर ऐ बातीन ऐ जिन्दा तेरे एलावा कोई खुदा नही है तेरे

الْحُسْنٰى وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبْرِيَآءُ وَ الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ

लिए बहतरीन नाम है और बुलंद और बूजूर्गा औ नेएमते है मै तुझ से सवाल करता हू के तु दुरूद

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِي فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ

नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे नाम को करार दे उस रात मे ने लोगो मे और

وَ رُوْحِيْ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَ

मेरी रूह को शहीदो के साथ और मेरे आमाल को मोकामे ईल्लीन मे और मेरी बूराईयो को बखशा

اَنْ تَهَبَ لِيْ يَقِيْنًا تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ وَ اِيْمَانًا يُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّيْ وَ

हूआ और मेझ को अता कर यकीन जो मेरे दिल से मिला रहे और ईमान जो मेरे शक को दूर

تُرْضِيَنِيْ بِمَا قَسَمْتَ لِيْ وَ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

कर दे और रजा उस स जो तु ने मेरी लिए तकसीम की है और हम को दे दे दूनिया मे नेकी और

وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَ ارْزُقْنِيْ فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ

आखेरत म नेकी और हम को बचा ले जहन्नम र्वी जलते हूए शोलो से और मूझ को तौफीक दे

الرَّغْبَةَ اِلَيْكَ وَ الْاِنَابَةَ وَ التَّوْفِيْقَ لِمَا وَفَّقْتَهٗ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ

अपने जिक्र, शुकर, और अपनी तरफ शौक और तोबा व अनाबत की औ तौफीक जिस की तु

عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ.

पच्चीसवीं शब की दुआ

ने तौफीक दी है मोहम्मद व आले मोहम्मद को तेरा दुरूद हो उन तमाम के ऊपर

يَا جَاعِلَ اللَّيْلِ لِبَاسًا وَ النَّهَارِ مَعَاشًا وَ الْاَرْضِ مِهَادًا وَ الْجِبَلِ

ऐ रात को लेबास बनाने वाले और दिन को रोजी का वक्त करार देने वाले और जमीन को गहवारा

اَوْتَادًا يَا اَللّٰهُ يَا قَاهِرُ يَا اَللّٰهُ يَا جَبَّارُ يَا اَللّٰهُ يَا سَمِيْعُ يَا اَللّٰهُ يَا قَرِيْبُ يَا

और पहाडो को मीख बनाने वाले ऐ अल्लाह, ऐ कहेर वाले, ऐ अल्लाह, ऐ जब्बार, ऐ अल्लाह, ऐ

اَللّٰهُ يَا مُجِيْبُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَ الْاَمْثَالُ

सूनने वाले, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ करीब ऐ अल्लाह ऐ कूबूल करने वाले ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ

الْعُلْيَا وَ الْكِبْرِيَآءُ وَ الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्लाह तेरे लिए बहतरीन नाम है और बुलंद मिसाले और बूजूर्गा और नेएमते मै तुझ से सवाल

وَ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِي فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ مَعَ الشُّهَدَآءِ

करता हू के दुरूद नाजील कर मोहम्मह व आले मोहम्मद पर और मेरे नाम को उस रात मे नेक

وَ اِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَّ اَنْ تَهَبَ لِيْ يَقِيْنًا تُبَاشِرُ

बखतो मे करार दे और मेरी रूह को शहीदो के साथ और मेरे अमल को मोकामे ईल्लीन मे और

بِهٖ قَلْبِيْ وَ اِيْمَانًا يُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّيْ وَ تُرْضِيَنِيْ بِمَا قَسَمْتَ لِيْ

मेरी बूराईयो को बखशा हूआ और अता कर मुझ को वो यकीन जिस से मेरे दिल मुतमईन रहे

وَ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

और ईमान जिस से मेरा अशक चला जाए और उस पर रजामंदी जो तु ने मेरे लिए तकसीम की

الْحَرِيْقِ وَ ارْزُقْنِى فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ الرَّغْبَةَ اِلَيْكَ وَ

है और हम को अता कर दूनिया मे नेकी और आखेरत मे नेकी और हम को बचा ले जहन्नम की

الْاِنَابَةَ وَ التَّوْبَةَ وَ التَّوْفِيْقَ لِمَا وَفَّقْتَهُ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ وَ

आतीश सोजॉ से और हम को तौफीक दे इस मे अपने जिक्र, शुकर, और रगबत और अनाबत

عَلَيْهِمُ السَّلَامُ.

छब्बीसवीं शब की दुआ

और तोबा की और तौफीक दे जो तु ने मोहम्मद व आले मोहम्मद अ.स. को तौफीक दी है

يَا جَاعِلَ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ اٰيَتَيْنِ يَا مَنْ مَحَا اٰيَةَ اللَّيْلِ وَ جَعَلَ

ऐ रात और दिन को दो निशानी बनाने वाले और ऐ वो खुदा जिस ने रात की आयत को तारिक किया और दिन

اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِنْهُ وَ رِضْوَانًا يَا مُفَصِّلَ

की आयत को नूरानी बताया ता के तूम उस के फजल व करम से रोजी तलब करो ऐ हर चीम मे फासला औ

كُلِّ شَيْءٍ تَفْصِيْلًا يَا مَاجِدُ يَا وَهَّابُ يَا اَللّٰهُ يَا جَوَادُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ

हद मोअैय्यन करने वाले, ऐ साहेबे वजूदो करम, ऐ अता करने वाले, ऐ अल्लाह जौव्वाद ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह,

يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبْرِيَآءُ وَ

ऐ अल्लाह तेरे लिए बहतरीन नाम है व बुलंद मिसाले और बूजूर्गा व नेएमते है मै तुझ से सवाल करता हू के तु

الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِى

दुरूद नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर व करार दे मेरे नाम को उस राम मे नेक बखतो मे व मेरी रूह

فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيْ فِيْ

को शहीदो के साथ व मेरे अमल को मोकामे ईल्लीम मे व मेरी बूराईयो को बखशा हूआ व अता कर मुझ को

عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَّ اَنْ تَهَبَ لِيْ يَقِيْنًا تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ

यकीन जा मेरे दिल से जुदा न होता हो व ईमान के दुरूद नाजील कर मोहम्मद पर व मेरे नाम को उस रात मे

وَ اِيْمَانًا يُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّيْ وَ تُرْضِيَنِيْ بِمَا قَسَمْتَ لِيْ وَ اٰتِنَا فِي

नेक बखतो मे करार दे व मेरी रूह को शहीदो के साथ व मेरे अमल को मोकामे ईल्लीन मे व मेरी बूराईयो को

الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ

बखशा हूआ व अता कर मूझको वो यकीन जिस से मेरा दिल मुतमईन रहे व ईमान जिस से मेरा अश्क चला

وَ ارْزُقْنِيْ فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ الرَّغْبَةَ اِلَيْكَ وَ الْاِنَابَةَ وَ

जाए व उस पर रजा मंदी जो तु ने मेरे लिए तकसीम की है व हम को अता कर दूनिया मे नेकी व आखेरत

التَّوْبَةَ وَ التَّوْفِيْقَ لِمَا وَفَّقْتَهٗ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ

मे नेकी व हम को बचा ले जहन्नम की आतीश सूजॉ से व हम को तौफीम दे इस मे अपने जिक्र, शुकर और

السَّلَامُ.

सत्ताईसवीं शब की दुआ

रगबत और अनाबत और तोबा की और तौफीक जो तु ने मोहम्मद व आले मोहम्मद अ.स. को तौफीक दी है

يَا مَادَّ الظِّلِّ وَ لَوْ شِئْتَ لَجَعَلْتَهٗ سَاكِنًا وَ جَعَلْتَ الشَّمْسَ

عَلَيْهِ دَلِيْلًا ثُمَّ قَبَضْتَهُ قَبْضًا يَسِيْرًا يَا ذَا الْجُوْدِ وَ الطَّوْلِ

उन पर ऐ साया के फैलाने वाले और अगर तु चाहता है तो उस को साकीन कर देता और तू ने सूरज

وَ الْكِبْرِيَآءِ وَ الْاٰلَآءِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ

को उस पर दलील बनाया है फिर तू ने उस को थूडा थूडा गिरफ मे ले लिया, ऐ साहेबे वजूदे करम और

الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا قُدُّوْسُ يَا سَلَامُ يَا مُؤْمِنُ يَا

बूजूर्गा और नेएमत वाले तेरे एलावा कोई खुदा नही है तू गैब और जाहीर का जानने वाला है रहमान व

مُهَيْمِنُ يَا عَزِيْزُ يَا جَبَّارُ يَا مُتَكَبِّرُ يَا اللّٰهُ يَا خَالِقُ يَا بَارِءُ يَا مُصَوِّرُ

रहीम है तेरे एलावा कोई खुदा नही है ऐ पाकीजा ऐ सलाम ऐ अमान देने वाले, ऐ निगरानी करने वाले,

يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَ

ऐ गालीब, ऐ जब्बार, ऐ किबरेयाई वाले, ऐ अल्लाह, ऐ खालीक, ऐ पैदा करने वाले, ऐ सूरत गर, ऐ

الْكِبْرِيَآءُ وَ الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ

अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह तेरे लिए बहतरीन नाम है और बुलंद मिसाले और बूजूर्गा और नेएमते है

تَجْعَلَ اسْمِيْ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ

मै तूझ से सवाल करतो हू के तू दुरूद नाजील कर मोहम्मद और आले मोहम्मद और करार दे मेरे नाम

اِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَّ اَنْ تَهَبَ لِيْ يَقِيْنًا تُبَاشِرُ

को खुश बखतो मे उस राम मे और मेरी रूह को शहीदो के साथ और मेरे अमल को ईल्लीन मे और मेरी

بِهٖ قَلْبِیْ وَ اِیْمَانًا یُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّیْ وَ تُرْضِیَنِیْ بِمَا قَسَمْتَ لِیْ وَ

बूराईयो को बखशा हूआ और मूझ को अता कर वा यकीन जो मेरे दिल से मिल रहे और वो ईमान जो

اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

मेरे शक को खत्म कर दे और मुझको राजी कर दे उस से जो तु ने मेरा हिस्सा रखा है और हम को दे

الْحَرِیْقِ وَ ارْزُقْنِیْ فِیْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ الرَّغْبَةَ اِلَیْكَ وَ

दे दूनिया मे नेकी और आखेरत मे भी नेकी और हम को बचा ले जहन्नम की जलती हूई आग से और

الْاِنَابَةَ وَ التَّوْبَةَ وَ التَّوْفِیْقَ لِمَا وَفَّقْتَهٗ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ عَلَیْهِ وَ

हम को तौफीक अता कर उस मे अपने जिक्र, शुकर, और अपनी तरफ शौक, तोबा, अनाबत की और

عَلَیْهِمُ السَّلَامُ.

अठ्ठाईसवीं शब की दुआ

तौफीक की जो तु ने मोहम्मद व आले मोहम्मद को तौफीक अता की है अल्लाह का दूरूद हो उन पर

یَا خَازِنَ اللَّیْلِ فِی الْهَوَآءِ وَ خَازِنَ النُّوْرِ فِی السَّمَآءِ وَ مَانِعَ

ऐ रात को फजा मे मखजून करने वाले और नूर को आसमान मे मखजून करने वाले और

السَّمَآءِ اَنْ تَقَعَ عَلَی الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ وَ حَابِسَهُمَا اَنْ تَزُوْلَا یَا

आसमान को रोकने वाले के वो जमीन पर गिर जाए मगर उस के हूकूम से और उन दोनो को

عَلِیْمُ یَا عَظِیْمُ یَا غَفُوْرُ یَا دَآئِمُ یَا اَللّٰهُ یَا وَارِثُ یَا بَاعِثَ مَنْ فِیْ

फना होने से रोकने वाले, ऐ साहेबे zल्म, ऐ अजीम, ऐ बखशने वाले ऐ दाएम ऐ अल्लाह ऐ वारीस

الْقُبُوْرِ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا

ऐ कबर से उठाने वाले ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह तेरे लिए बहतरीन नाम है और बूलंद मिसाले

وَ الْكِبْرِيَآءُ وَ الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ

और बूजूर्गा और नेएमते है मै तूझ से सवाल करता हू के दुरूद नाजील कर मोहम्मद व आले

تَجْعَلَ اسْمِي فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ

मोहम्मद पर और मेरे नाम को करार दे इस रात मे खुश बखतो मे और मेरी रूह को शहीदा के

اِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَّ اَنْ تَهَبَ لِيْ يَقِيْنًا تُبَاشِرُ

साथ और मेरे अमल को मोकामे ईल्लीन मे और मेरी बूराईयो को बखशा हूआ और तू मुझ को

بِهٖ قَلْبِيْ وَ اِيْمَانًا يُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّيْ وَ تُرْضِيَنِيْ بِمَا قَسَمْتَ لِيْ وَ

ऐसा यकीन दे दे जो मेरे दिल से जूदा न होता हो और ऐसा ईमान जिस से मेरा शक चजा जाए और

اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

मुझको राजी कर दे उस पर जो तु ने मेरा नसीब बनाया हे और हम को अता कर दे दूनीया मे नेकी

الْحَرِيْقِ وَ ارْزُقْنِيْ فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ الرَّغْبَةَ اِلَيْكَ وَ

और आखेरत मे नेकी और हम को बचा ले जहन्नम की जलती हूई आग से और हम को नसीब

الْاِنَابَةَ وَ التَّوْبَةَ وَ التَّوْفِيْقَ لِمَا وَفَّقْتَهٗ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ وَ

फरमा इस मे अपना जिक्र अपना शुकर और अपनी तरफ रगबत और तोबा व अनाबत और

उन्तीस्वीं शब की दुआ

عَلَيْهِمُ السَّلَامُ.

तौफी जिस की तु ने मोहम्मद व आले मोहम्मद को तौफीक दी है अल्लाह का दुरूद हो उन सब पर

يَا مُكَوِّرَ اللَّيْلِ عَلَى النَّهَارِ وَ مُكَوِّرَ النَّهَارِ عَلَى اللَّيْلِ يَا عَلِيْمُ يَا

ऐ रात को दिन और दिन को रात पर लपेटने वाले ऐ साहेबे ईल्म ऐ साहेबे हिकमत ऐ तमाम

حَكِيْمُ يَا رَبَّ الْاَرْبَابِ يَا سَيِّدَ السَّادَاتِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا اَقْرَبَ

पालने वालो के परवरदिगार ऐ तमाम मालीको के मालीक ऐ अल्लाह, तेरे लिए बहतरीन नाम

اِلَيَّ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَ

है और बुलंद मिसाले है और बूजूर्गा और नेएमत है मै तुझ से सवाल करता हू के तु दुरूद

الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبْرِيَآءُ وَ الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

नाजील कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे नाम को करार दे नेक बखतो मे उस राम

وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِيْ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ

मे और मेरी रूह को शहीदो के साथ और मेरे अमल को मोकामे ईल्लीन मे और मेरे गुन्हाओ

مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَ اَنْ تَهَبَ

को बखशा हूआ और मूझको अता कर यकीन जो मेरे दिन से जुदा न हो और ईमान जो मेरे

لِيْ يَقِيْنًا تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ وَ اِيْمَانًا يُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّيْ وَ تُرْضِيَنِيْ

शक को दूर कर दे और मुझको राजी कर दे उस से जो तु ने मेरा हिस्सा लगाया है और हमको

بِمَا قَسَمْتَ لِيْ وَ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا

अता कर दुनिया मे नेकी और आखेरत मे नेकी हम को बचा ले जहन्नम की जलती हूई आग से

عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَ ارْزُقْنِيْ فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ الرَّغْبَةَ

और हम को नसीब कर अपनी जिक्र, शुकर और अपनी तरफ रगबत और तोबा व अनाबत

اِلَيْكَ وَ الْاِنَابَةَ وَ التَّوْبَةَ وَ التَّوْفِيْقَ لِمَا وَفَّقْتَهُ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ

और तौफीक जो तु ने मोहम्मद व आले मोहम्मद को तौफीक दी है अल्लाह का दुरूद दुरूद हो

عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ.

उस सब पर

तीसवीं शब की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا شَرِيْكَ لَهُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَمَا يَنْبَغِيْ لِكَرَمِ وَجْهِهِ وَ عِزِّ

हमद उव खुदा की जिस का कोई शरीक नही है हमद खुदा के लिए जो मुनासिब है उस की करीम जात

جَلَالِهِ وَ كَمَا هُوَ اَهْلُهُ يَا قُدُّوْسُ يَا نُوْرُ يَا نُوْرَ الْقُدُّوْسِ يَا سُبُّوْحُ يَا

और ईज़्ज़त जलाल के लिए और जिस का वो अहेल है ऐ पाकिजा, ऐ नूर, ऐ नूरूल कूदस, ऐ पाकीजा,

مُنْتَهَى التَّسْبِيْحِ يَا رَحْمٰنُ يَا فَاعِلَ الرَّحْمَةِ يَا اَللّٰهُ يَا عَلِيْمُ يَا كَرِيْمُ

ऐ इन्तेहा पाकीजगी, ऐ रहमान, ऐ रहमत के पैदा करने वाले, ऐ अल्लाह, ऐ अलीम, ऐ कबीर अल्लाह, ऐ

يَا كَبِيْرُ يَا اَللّٰهُ يَا لَطِيْفُ يَا جَلِيْلُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا سَمِيْعُ يَا بَصِيْرُ يَا

लतीफ, ऐ जलील, ऐअल्लाह, ऐ सूनने वाले, ऐ देखने वाले, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह

اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبْرِيَآءُ

तेरे लिए बहतरीन नाम है और बूलंद मिसाले है और बूजूर्गा और नेएमते है मै तुझ से सवाल करता हू

وَ الْاٰلَآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَجْعَلَ اسْمِي

के दूरूद नाजील फरमा मोहम्मद और उन के अहलेबैत पर और मेरा नाम करार दे उस रात मे खुश

فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيْ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيْ فِيْ

बखतो मे और मेरी रूह को शहीदो के साा और मेरे अमल को मोकामे ईल्लीन मे और मेरी बूराईयो

عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِيْ مَغْفُوْرَةً وَ اَنْ تَهَبَ لِيْ يَقِيْنًا تُبَاشِرُ بِهٖ قَلْبِيْ

को बखशा हूआ और मुझ को अता कर वो यकीन जो मेरे दिल से एलाहेदा न हो और ईमान जो मेरे

وَ اِيْمَانًا يُذْهِبُ الشَّكَّ عَنِّيْ وَ تُرْضِيَنِيْ بِمَا قَسَمْتَ لِيْ وَ اٰتِنَا فِي

शक को दूर कर दे और मुझ को राजी कर दे उस से जो तु ने मेरा हिस्सा करार दिया है और हम को

الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَ

अता कर दूनिया मे नेकी और आखेरत मे नेकी और हम को बचा ले जहन्नम की जलती हूई आग

ارْزُقْنِيْ فِيْهَا ذِكْرَكَ وَ شُكْرَكَ وَ الرَّغْبَةَ اِلَيْكَ وَ الْاِنَابَةَ وَ التَّوْبَةَ

से और हम को नसीब कर उस मे अपना ज़्रिक, शूकर, अपनी तरफ तव्वजूह, अनाबत और तोबा

وَ التَّوْفِيْقَ لِمَا وَفَّقْتَهٗ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ.

और तोफीक जिस की तू ने मोहम्मद व आले मोहम्मद को तौफीक दी है उन पर अल्लाह का दूरूद हो,

एक्किस्वीं शब के बकिया आमाल

कफअमी ने सय्यद इब्ने बाकी से नक्ल किया है के एक्किस्वीं रात को यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَاقْسِمْ لِيْ حِلْمًا يَسُدُّ عَنِّيْ بَابَ

खुदाया दूरूद नाजील फरमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे हिलम का वो हिस्सा करार दे जो मुझ से जहालत

الْجَهْلِ وَ هُدًى تَمُنُّ بِهٖ عَلَيَّ مِنْ كُلِّ ضَلَالَةٍ وَ غِنًى تَسُدُّ بِهٖ عَنِّيْ

के दरवाजे को बन्द कर दे और वो हेदायत करार दे जिस के जारिए से तू मुझ से हर गूमराही को दूर कर दे और

بَابَ كُلِّ فَقْرٍ وَ قُوَّةً تَرُدُّ بِهَا عَنِّيْ كُلَّ ضَعْفٍ وَ عِزًّا تُكْرِمُنِيْ بِهٖ عَنْ

मालदारी जिस के जारिए तू मेरे उपर फकर व फाका के दरवाजे बन्द कर दे और कूवत जिस की वजह से हर कमजोरी

كُلِّ ذُلٍّ وَ رِفْعَةً تَرْفَعُنِيْ بِهَا عَنْ كُلِّ ضَعَةٍ وَ اَمْنًا تَرُدُّ بِهٖ عَنِّيْ كُلَّ

को खत्म कर दे और ईज्ज़त जिस के जारिए हर जात से मुझ को मोकर्ररम बना दे और बूलंदी जिस के जारिए तू मुझ

خَوْفٍ وَ عَافِيَةً تَسْتُرُنِيْ بِهَا عَنْ كُلِّ بَلَاءٍ وَ عِلْمًا تَفْتَحُ لِيْ بِهٖ كُلَّ

को हर पसती से बूलंद कर दे और अमन व आमान जिस के जारिए तू हर खौफ को मूझ से रोक दे और आफियत

يَقِيْنٍ وَ يَقِيْنًا تُذْهِبُ بِهٖ عَنِّيْ كُلَّ شَكٍّ وَ دُعَاءً تَبْسُطُ الْاِجَابَةَ فِيْ

जिस के जारिए तू मुझको हर मुसिबत से छूपा दे और ईलम जिस के जारिए तू मेरे लिए हर यकीन का दर खोल दे और

هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ فِيْ هٰذِهِ السَّاعَةِ السَّاعَةِ السَّاعَةِ يَا كَرِيْمُ

यकीन जिस के जारिए तू मुझ से हर शक को दूर कर दे और दूआ जिस के जारिए तू मेरे लिए कूबूलियत को फैला दे

وَ خَوْفًا تَنْشُرُ لِیْ بِهٖ كُلَّ رَحْمَةٍ وَ عِصْمَةٍ تَحُوْلُ بِهَا بَيْنِیْ وَ بَيْنَ

उस रात मे और उस वक्त मे उसी वक्त उसी वक्त उसी वक्त ऐ करीम और वो खौफ के जिस के जारिए तू मेरे लिए हर

الذُّنُوْبِ حَتّٰى اُفْلِحَ بِهَا عِنْدَ الْمَعْصُوْمِيْنَ عِنْدَكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

रहमत को फैला दे और ईसमत के जिस के जारिए तू मेरे और गून्हाओं के दरमियान हाएल हो जाए यहॉ तक के इस

الرَّاحِمِيْنَ.

के जारिए मै मासूमीन अ.स. के नजदीक कामयाब हू तेरी रहमत से ऐ सब से ज्यादा रहम करने वाले

और रिवायत में यह है के हम्माद बिन उसमान एक्किस्वीं रात को इमामे सादिक (अ.स.) की खिदमत में हाज़र हुआ। हज़रत ने पुछा: क्या तुमने गुस्ल कर लिया है? जवाब दिया: यकीनन। आप (अ.स) पर मेरी जान कुरबान। आपने चटाई मंगवाई और नमाज़ पढ़ने लगे और बराबर नमाज़ पढ़ते रहे और हम्मद भी हज़रत के साथ नमाज़ें अदा करते रहे। यहाँ तक के जब आप नमाज़ से फारिग हुए आपने दुआ की। हम्माद ने आमीन कही। यहाँ तक के तुलूए फज्र के समय हज़रत ने अज़ान और एकामत कही और अपने गुलामों को भी तलब किया। उसके बाद नमाज़े सुब्ह अदा फरमाई। पहली रकअत में सूरह हम्द और सूरह कद्र पढ़ा और दूसरी रकतअ में हम्द और तौहीद पढ़ी। नमाज़ के बाद तसबीह और तहमील व तकदीस और सनाए परवरदिगार, मोहम्मद व आले मोहम्मद पर सलवात और मोअमेनीन व मोअमेनात के लिए दुआओं में मशगूल हो गए। फिर उसके बाद सजदे में सर रखा और एक घंटे तक सिवाए सांसों के और कोई आवाज़ सुनाई न देती थी। उसके बाद यह दुआ पढ़ी: لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ وَالْاَبْصَارِ यह दुआ सय्यद इब्ने ताऊस ने इक्बाल में नक्ल की है।

और शेक कुलैनी ने रिवायत की है के इमामे बाकर (अ.स.) एक्किसवीं और तेईस्वीं शब में आधी रात तक दुआएं पढ़ते रहते थे। और उसके बाद

नमाज़े शुर करते थे और इस माह के आखरी अशरे में हर रात में गुस्ल भी मुस्तहब है और रिवायत में है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) इस अशरे की हर शब में गुस्ल करते थे और इस अशरे में एतेकाफ भी मुस्तहब है जिसकी बेपनाह फज़ीलत है और यह एतेकाफ का बेहतरनी समय है। रसूले अकरम (स.अ.व.व.) की तारीख में है के माहे रमज़ान के आखरी अशरे में एतेकाफ फरमाते थे। आपके लिए मस्जिद में एक खैमा लगाया जाता था और आप दामन को समेट लेते थे, बिस्तर को पलट देते थे। वाज़ेह रहे के हिजरी चालिस में एक्किस्वीं शब में मौलाए काएनात अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) की शहादत वाकेअ हुई है। जिसकी बिना पर आले मोहम्मद के चाहने वालों का गम ताज़ा हो जाता है। रिवायत है के इस रात का गम ताज़ा हो जाता है। रिवायत में है के इस रात भी शबे शहादते इमाम हुसैन (अ.स.) की तरफ ज़मीन से जो पत्थर उठाया जाता था उसके नीचे ताज़ा खून जोश मारता था।

शेख मुफीद लिखते हैं: इस रात में ब कसरत सलवात पढ़े और आले मोहम्मद के ज़ालिमों और अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) के कातिलों पर लानत करे। और एक्किस्वीं रोज़े शहादते अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) है। लेहाज़ा मुनासिब है के आपकी ज़ियारत पढ़ी जाए और वह कलेमात अदा किये जाएं जो जनाबे खिज़्र ने अदा किए थे। और जो इस दिन ज़ियारत के बराबर है।

तेईसवीं शब

हदियतुज़ ज़ाएरीन में है के यह दूसरी शबे कद्र की रातों से अफज़ल है। और बहुत सी हदीसों से मालूम होता है के असली शबे कद्र यही है। इस रात में तमाम उमूर हिकमते खुदा के मुताबिक मुकद्दर होते हैं। इस शब के लिए दो शबों के आमाल के अलावा चंद आमाल हैं।

एक: सूरह अनकबूत व सूरह रूम को पढ़ना। इमाम सादिक (अ.स.) ने कसम खाकर फरमाया है के इन दोनों सूरों को इस रात में पढ़ने वाला अहले बेहिश्त में है।

दो: सूरह दोखान का पढ़ना।

तीन: हज़ार बार सूरह कद्र पढ़ना।

चार: इस रात को बल्के हर समय में यह दुआ बार बार पढ़ना: اَللّٰهُمَّ كُنْ لِوَلِيِّكَ

पाँच: यह दुआ पढ़

اَللّٰهُمَّ امْدُدْ لِيْ فِيْ عُمْرِيْ وَ اَوْسِعْ لِيْ فِيْ رِزْقِيْ وَ اَصِحَّ لِيْ جِسْمِيْ

ऐ खुदा मेरी उमर मे एजाफा फरमा और मेरे रिजक मे तुसअत अतर कर और मेरे जिसम को

وَبَلِّغْنِيْ اَمَلِيْ وَ اِنْ كُنْتُ مِنَ الْاَشْقِيَاءِ فَامْحُنِيْ مِنَ الْاَشْقِيَاءِ

सेहत दे और मेरी आरजू तक पहूचा दे और अगर मै बद बखतो मे हू तू बद बखतो मे से मेरा नाम

وَا كْتُبْنِيْ مِنَ السُّعَدَاءِ فَاِنَّكَ قُلْتَ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ عَلٰى نَبِيِّكَ

मिटा दे और खुश नसीबो मे लिख दे क्याके तु ने अपनी इस किताब मे जिस को तू ने नाजील

الْمُرْسَلِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَآلِهٖ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ وَعِنْدَهٗ

किया है अपने नबी मूसल पर तेरा दूरूद हो उन पर और उन की आल पर कहा है के खुदा जो

اُمُّ الْكِتَابِ.

चाहता है मिटा देता है और जो चाहता है बाकी रखता है और उस के पास असल किताब है

छेः यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْمَا تَقْضِيْ وَ فِيْمَا تُقَدِّرُ مِنَ الْاَمْرِ الْمَحْتُوْمِ وَ فِيْمَا

खुदाया करार दे अपने कजा व कदर के हतमी उमूर मे से और उव मे जो तू मोकरर करता हे

تَفْرُقُ مِنَ الْاَمْرِ الْحَكِيْمِ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ مِنَ الْقَضَاءِ الَّذِيْ لَا يُرَدُّ

हिकमत वाले अमर से उस शबे कदर मे इस फैसले से जो न रद किया जाता है और न बदला जा

وَ لَا يُبَدَّلُ اَنْ تَكْتُبَنِيْ مِنْ حُجَّاجِ بَيْتِكَ الْحَرَامِ فِيْ عَامِيْ هٰذَا

सकता है के तू मूझ को लिख दे अपने बैतूल हराम के हाजीयो मे इस साल, वो हाजी के जिन का

الْمَبْرُوْرِ حَجُّهُمُ الْمَشْكُوْرِ سَعْيُهُمُ الْمَغْفُوْرِ ذُنُوْبُهُمْ، الْمُكَفَّرِ

हज मकबूल है, जिन की कोशिश पसिंदीदा है जिन के गून्हा बखशे हूए है और जिन की बूराईयॉ

عَنْهُمْ سَيِّئَاتُهُمْ، وَاجْعَلْ فِيْمَا تَقْضِيْ وَ تُقَدِّرُ اَنْ تُطِيْلَ عُمْرِيْ، وَ

खत्म की जा चूकी है और अपने कजा व कदर मे मेरे लिए करार दे के तू मेरी उमर को तूलानी

سात: यह दुआ पढ़े जो इकबार में नक्ल की गई है: تُوَسِّعَ لِيْ فِيْ رِزْقِيْ.

बना दे और मेरे रिजक मे वूसअत अता कर

يَا بَاطِنًا فِيْ ظُهُوْرِهٖ وَ يَا ظَاهِرًا فِيْ بُطُوْنِهٖ وَ يَا بَاطِنًا لَيْسَ يَخْفٰى، وَ

ऐ खुदा जो पोसिदा है अपने जहूर मे और जाहीर है अपने पोशिदा होने मे और ऐ वो बातीन जो छूपा

يَا ظَاهِرًا لَيْسَ يُرٰى، يَا مَوْصُوْفًا لَا يَبْلُغُ بِكَيْنُوْنَتِهٖ مَوْصُوْفٌ وَ

नही है और ऐ वो जाहीर जो देखा नही जाता है ऐ वो मौसूफ के जिस की हकीकत जात तक न कोई

لَا حَدٌّ مَحْدُوْدٌ، وَ يَا غَائِبًا غَيْرَ مَفْقُوْدٍ، وَ يَا شَاهِدًا غَيْرَ مَشْهُوْدٍ،

सिफत पहूच सकती है और न हद महदूद ऐ वो गाएब जो हमेशा हाजिर हे और ऐ हाजीर जो देखा नही

يُطْلَبُ فَيُصَابُ، وَ لَمْ يَخْلُ مِنْهُ السَّمَاوَاتُ وَ الْاَرْضُ وَ مَا

जाता है जो उस को तलब करता है पाता है और उस से आसमान व जमीन और जो कूछ उन दोनो के

بَيْنَهُمَا طَرْفَةَ عَيْنٍ، لَا يُدْرَكُ بِكَيْفٍ، وَلَا يُؤَيَّنُ بِأَيْنٍ وَلَا بِحَيْثٍ،

दरमीयान मे है चश्म जदन के लिए भी नही है वो कैफ के साथ अदराक नही किया जाता है और उस

أَنْتَ نُورُ النُّورِ وَرَبُّ الْأَرْبَابِ، أَحَطْتَ بِجَمِيعِ الْأُمُورِ، سُبْحَانَ مَنْ

के लिए मकान व जग्ह नही है तो नूर का नूर है और परवरदिगारो का परवरदिगार है तू ने तमाम उमूर

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ سُبْحَانَ مَنْ هُوَ هٰكَذَا وَلَا

का अहाता कर लिया है वो पाक है उस के मिसल कोई चीज नही है वो सूनने वाला और देखने वाला

هٰكَذَا غَيْرُهُ.

है पाक है वो जो उन सिफतो वाला है और उस के एलावा कोई उन औसाफ वाला नही है

इसके बाद अपनी हाजतें तलब करें।
आठ: अव्वले शब के गुस्ल के अलावा एक गुस्ल आखरी शब में भी वारिद हुआ है। वाज़ेह रहे के इस रात के गुस्ल, शब्बेदारी, ज़ियारत इमाम हुसैन (अ.स.) और सौ रकअत नमाज़ की बेपनाह फज़ीलत और ताकीद वारिद हुई है।
शेख ने तहज़ीब में अबू बसीर के हवाले से इमामे सादिक (अ.स.) से रिवायत की है के इस शब के बारे में यह उम्मीद है के यह शबे कद्र है। लेहाज़ा सौ रकअत नमाज़ पढ़ो। हर रकअत में दस बार सूरह तौहीद पढ़ो। अबू बसीर ने पूछा: मौला अगर इतनी ताकत न हो के खड़े हो कर अदा कर सकूँ। फरमाया बैठ कर पढ़ो। या अगर बैठ कर पढ़ने की भी ताकत न हो तो फरमाया के बिसतर पर लेट कर पढ़ो। दाएमुल इसलाम की रिवायत है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) रमज़ान महीने के अंतिम दस रातों में अपने बिस्तर को लपेट देते थे। और कम को मज़बूत बांध लेते थे इबादत के लिए। और तेइस्वीं शब में अपने घर वालों को बेदार करते थे। और अगर किसी को नींद आती थी

तो उसके चेहरे पर पानी छिडकते थे। हज़रते फातेमा (अ.स.) भी अपने घर वालों को इजाज़त नहीं देती थी के सो जाए और उनकी नींद का इलाज कम खाना देने से फरमाती थीं। और सबको उस शब्बेदारी के लिए आमादा करती थीं। के दिन में आराम कर लें ताके रात को नींद न आए। और फरमाती थीं के महरूम वही व्यक्ति है जो आज की रात की बरकतों से महरूम रह जाएं। रिवायत में है के इमाम सादिक (अ.स.) सख्त मरीज़ थे मगर जब तेईसवीं शब आई तो आपने अपने गुलामों को हुक्म दिया और वह आप को उठाकर मस्जिद में ले आए। और आप सुबह तक मस्जिद ही में रहे। अल्लामा मजलिसी ने फरमाया के इस शब में जितना कुरान मुम्किन हो पढ़े और सहीफा कामेला की दुआओं को पढ़े। खास तौर पर दुआ मकारेमुल अख्लाक, दुआए तौबा। और यह भी याद रहे के इन रातों के दिन भी रातों ही की तरह मोहतरम हैं। लेहाज़ा उनमें तिलावत, इबादत और दुआओं का सिलसिला रहना चाहिए। बल्के मोअतबर रिवायत में वारिद हुआ है के रोज़े कद्र भी फज़ीलत में मिस्ले शबे कद्र है।

सत्ताईसवीं रात

इस रात में गुस्ल वारिद हुआ है। इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) से नक्ल किया है के आप इस रात अव्वल शब से अंतिम रात तक यह दुआ पढ़ा करते थे:

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِىْ التَّجَافِىَ عَنْ دَارِ الْغُرُوْرِ وَ الْاِنَابَةَ اِلٰى دَارِ الْخُلُوْدِ وَ

खुदाया मूझको दारे गूरूर व फरेब से दूर कर के हमेशा रहने वाले घर की तरफ मोतवज्जाह कर दे

الْاِسْتِعْدَادَ لِلْمَوْتِ قَبْلَ حُلُوْلِ الْفَوْتِ.

और मौत के लिए आमादा कर दे , मौत के आने से पहले

रमज़ान महीने की अंतिम रात

इन्तेहाई बाबरकत रात है। इस रात के लिए चंद आमाल हैं:
एक: गुस्ल।
दो: ज़ियारत इमाम हुसैन (अ.स.)।
तीन: सूरह अनआम, कहफ और यासीन पढ़ना और सौ बार यह कहना: اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوبُ اِلَيْهِ
चार: यह दुआ पढ़े जो शेखे कुलैनी ने इमामे जाफरे सादिक (अ.स.) से नक्ल की है:

اَللّٰهُمَّ هٰذَا شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىْ اَنْزَلْتَ فِيْهِ الْقُرْآنَ وَقَدْ تَصَرَّمَ

खुदाया ये माहे रमजान है जिस मे तू ने कूआन को नाजील किया है और दर गूजर किया अब मै

وَاَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ يَارَبِّ اَنْ يَطْلُعَ الْفَجْرُ مِنْ لَيْلَتِىْ هٰذِهٖ اَوْ

तेरी करीम जात की पनहा चाहता हू ऐ मेरे परवरदिगार के मेरी उस रात की सूबह तालेह हो या

يَتَصَرَّمَ شَهْرُ رَمَضَانَ وَلَكَ قِبَلِىْ تَبِعَةٌ اَوْ ذَنْبٌ تُرِيْدُ اَنْ تُعَذِّبَنِىْ

माहे रमजान गूजर जाए दर आन हालाके मेरे जिम्मा तेरा कोइ्र गून्हा या गलती रह जाए जिस की

بِهٖ يَوْمَ اَلْقَاكَ.

बिन पर तू मूझ को अजाब देना चाहे मूलाकात के रोज

पाँच: यह दुआ पढ़े जो पहले आ चुकी है तेईसवीं शब के आमाल में:या मुदब्बेरल् उमूरे
छेः विदाए रमज़ान की दुआएं पढ़े जिन्हें शेख कुलैनी, सदूक, शेख मुफीद,

शेख तूसी और सय्यद बिन ताऊस ने नक्ल किया है। और शायद बेहतरीन दुआ सहीफा कामेला की दुआ नं. ४५ है। सय्यद बिन ताऊस ने इमाम सादिक (अ.स.) से रिवायत की है के जो व्यक्ति रमज़ान महीने की आखरी शब में इस महीने को विदा करे और यह कहे:परवरदिगार ऐसे बंदे को सुब्ह से पहले माफ कर देगा और उसे तौबा और इबादत की तौफीक देगा।

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ صِيَامِيْ لِشَهْرِ رَمَضَانَ وَ اَعُوْذُ بِكَ

खुदाया उस को माहे रमजान का मेरा आखरी बार रोजा रखना न करार दे और मै तेरी पनहा

اَنْ يَطْلُعَ فَجْرُ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ اِلَّا وَ قَدْ غَفَرْتَ لِيْ.

चाहता हू उस से के उस रात की सूबह हो जाए और तू मूझ को बखश न दे

परवरददिगार ऐसे बन्न्दे को सुब्ह से पहले माफ कर देगा और उसे तौबा और अेनाबत की तौफीक देगा। सय्यद इब्ने ताऊस और शेखे सदूक ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अनसारी से रिवायत की है के मैं रसूले अकरम (स.अ.व.व.) की खिदमत में माहे रमज़ान के आखरी जुमा को हाज़र हुआ। जैसे ही हज़रत ने मुझे देखा, फरमाया: जाबिर, यह रमज़ान महीने का आखरी जुमा है उसे रूखसत करो और यह कहो:

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ صِيَامِنَا اِيَّاهُ فَاِنْ جَعَلْتَهُ فَاجْعَلْنِيْ

खुदाया मेरे रोजा रखने को आखरी रोजा दारी न करार देना और अगर तू ने करार दे दिया तू मूझ

مَرْحُوْمًا وَ لَا تَجْعَلْنِيْ مَحْرُوْمًا.

को काबिले यरहम करार देना और महरूम न करार देना

जो व्यक्ति भी आज की तारीख में इस दुआ को पढ़ेगा दो में से एक खूबी ज़रूर मिलेगी या आईंदा रमज़ान तक बाकी रहेगा या परवरदिगार मगफेरतो रहमत बेहिसाब इनायत फरमाएगा:

सय्यद इब्ने ताऊस और कफअमी ने रसूले अकरम (स.अ.व.व.) से नक्ल किया है के जो व्यक्ति भी माहे रमज़ान की अंतिम रात में दस रकअत नमाज़ पढ़े और हर रकअत में सूरह हम्द के बाद दस बार सूरह तौहीद पढ़े और रूकू और सुजूद में दस बार कहे:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ

पाक है खुदा हमद खुदा के लिए है अल्लाह के एलावा कोई खुदा नही है और अल्लाह बडा है

और हर दो रकअत के बाद तशहहुद और सलाम पढ़े। और जब दस रकअत तमाम हो जाए तो हज़ार बार कहे: اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَ اَتُوبُ اِلَيْهِ उसके बाद सजदे में सर रख कर यह दुआ पढ़े:

يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ يَا رَحْمَانَ الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ

ऐ जिन्दा व पाईन्दा, ऐ जलालत और बूजूर्गा वाले ऐ दूनिया और आखेरत मे रहम करने वाले और

وَ رَحِيمَهُمَا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ يَا اِلٰهَ الْاَوَّلِينَ وَ الْآخِرِينَ اِغْفِرْ لَنَا

दोनो जगहो मे महेरबान ऐ सब से बडे रहम करने वाले ऐ अव्वालीन व आखेरीन के माबूद हमारे

ذُنُوبَنَا وَ تَقَبَّلْ مِنَّا صَلَاتَنَا وَ صِيَامَنَا وَ قِيَامَنَا.

गून्हाओ को बखश दे और हमारी नमाज रोजा और एबादत को कूबूल फरमा ले

जनाबे रसूल फरमाते हैं: कसम है उस ज़ात की जिसने मुझे नबी बनाया है के जिब्रईल, इस्राफील से और इस्राफील परवरदागिर से यह खबर लाए हैं के ऐसा व्यक्ति सजदे से सर न उठाएगा मगर खुदा उसको बख्श देगा। उसके रमज़ान के महीने को कबूल कर लेगा और उसके गुनाहों से दर गुज़र कर लेगा। यह नमाज़ शबे ईदुल फित्र भी वारिद हुई है। लेकिन इस रिवायत में यह है के तसबीहाते अरबा को रूकू और सुजूद की तसबीह के बदले में पढ़े। और इगफिर लना ज़ोनुबना के बदले इग्फिरली ज़न्बी व तकब्बल सौमी व सलाती व केयामी वारिद हुआ है।

तीसवाँ दिन

सय्यद इब्ने ताऊस ने इस आखरी दिन के लिए के दुआ नक्ल की है जिसकी इब्तेदा है: अल्लाहुम्म इन्नक अर्हमुर राहेमीन। क्योंके आम तौर से लोग आज के दिन कुरआन खत्म करते हैं लेहाज़ा खत्मे कुरआन के बाद सहिफा कामेला की दुआ न. ४२ को पढ़ना चाहिए। शेख तूसी ने नकल किया है के इस के अलावा इस दुआ को पढ़े जो अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) से नक्ल की गई है:

اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ بِالْقُرْآنِ صَدْرِىْ وَ اسْتَعْمِلْ بِالْقُرْآنِ بَدَنِىْ وَ نَوِّرْ

खुदाया मेरे सिने को कूआन के जारिए कूशादा कर दे और कूरआन के साथ मेरे बदन को मशगूल रख

بِالْقُرْآنِ بَصَرِىْ وَ اَطْلِقْ بِالْقُرْآنِ لِسَانِىْ وَ اَعِنِّىْ عَلَيْهِ مَا اَبْقَيْتَنِىْ

और कूआन के जारिए मेरी ऑख को रोशनी दे और कूआन के जारिए मेरी जुबान को खोल दे और

فَاِنَّهُ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ.

मेरी मदद फरमा उस पर जब तक तु मुझको बाकी रखे क्योंके कोई कूवत व ताकत तेरे एलावा नही है

इस के अलावा इस दुआ को पढ़े जो अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) से नक्ल की गई है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ اِخْبَاتَ الْمُخْبِتِیْنَ وَ اِخْلَاصَ الْمُوْقِنِیْنَ وَ

खुदाया मै तूझ से सवाल करता हू मूनकर मेजाज लोगो की इनकेसारी का और साहेबान यकीन के

مُرَافَقَةَ الْاَبْرَارِ وَ اسْتِحْقَاقَ حَقَائِقِ الْاِیْمَانِ وَ الْغَنِیْمَةَ مِنْ كُلِّ

इखलास का और नेक लोगो की रेफकत और ईमान के हकाएक के इसतेहकाक का और हर नेक से

بِرٍّ وَ السَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ وَ وُجُوْبَ رَحْمَتِكَ وَ عَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَ

फाएदा का और हर नेकी से फएदा का और हर बूराई से महफूज रहने का और तेरी रहमत के वाजीब

الْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَ النَّجَاةَ مِنَ النَّارِ.

होने का और तेरी मगफेरत के फर्ज का और जन्नत की कामयाबी का और जहन्नम से हेफाजत का

अल्लामा मज्लिसी ने आमाल माहे रमज़ान के आखरी फस्ल में ज़ादुल माद में नक्ल किया है और मैं यहाँ सिर्फ आप के बयान को नक्ल कर रहा हूँ।

रमज़ान की रातों की नमाज़ें

पहली रात की नमाज़: चार रकअत नमाज़ है। हर रकअत में सूरह हम्द के बाद पंद्रह बार सूरह तौहीद।

दूसरी रात की नमाज़: चार रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द के बाद बीस बार सूरह कद्र।

तीसरी रात की नमाज़: दस रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द और पचास बार सूरह तौहीद।

चौथी रात की नमाज़: आठ रकअत नमाज़। हर रकअत में हम्द और बीस

बार सूरह कद्र।
पाँचवी रात की नमाज़: दो रकअत नमाज़। हर रकअत में हम्द के बाद पचास बार सूरह तौहीद और नमाज़ के बाद सौ बार सलवात।
छठी रात की नमाज़: चार रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द के बाद सूरह मुल्क।
सातवीं रात की नमाज़: चार रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द और तेरह बार सूरह कद्र।
आठवीं शब: दो रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द और दस बार सूरह तौहीद। और सलाम के बाद हज़ार बार सुब्हानल्लाह।
नवीं शब की नमाज़: नमाज़े इशा और सौने के दरमियान छे रकअत। हर रकअत में सूरह हम्द के बाद सात बार आयतुल कुर्सा। और नमाज़ के बाद पचास बार सलवात।
दसवीं रात की नमाज़: बीस रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द और तीस बार सूरह तौहीद।
ग्यारहवीं शब: दो रकअत नमाज़। हर रकअत में हम्द और बीस बार सूरह कौसर।
बारहवीं रात की नमाज़: आठ रकअत नमाज़। हर रकअत में हम्द और बीस बार सूरह कद्र।
तेरहवीं रात की नमाज़: चार रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द और पच्चीस बार सूरह तौहीद।
चौधहवीं रात की नमाज़: छे रकअत नमाज़। हर रकअत में हम्द और तीस बार सूरह ज़िलज़ाल।
पंधरहवीं रात की नमाज़: चार रकअत नमाज़। पहली दो रकअतों में हम्द के बाद सौर बार सूरह तौहीद और आखरी दो रकअतमों में हम्द के बाद पचास बार सूरह तौहीद।
सौलहवीं रात की नमाज़: बारह रकअत नमाज़ है। हर रकअत में सूरह हम्द के बाद बारह बार सूरह तकासोर।
सत्रहवीं रात की नमाज़: दो रकअत नमाज़ है। पहली रकअत में सूरह हम्द के

बाद जो सूरह चाहे और दूसरी रकअत में हम्द के बाद सौ बार सूरह तौहीद। और नमाज़ के बाद सौ बार ला एलाह इल्लल्लाह।

अठ्ठारहवीं रात की नमाज़: चार रकअत नमाज़। हर रक्त में पच्चीस बार सूरह कौसर।

उन्नीसवीं रात की नमाज़: पचास रकअत नमाज़। सूरह हम्द और सूरह ज़िलज़ाल।

बीसवीं से चौबीसवीं रात की नमाज़: आठ रकअत नमाज़ है। सूरह हम्द के बाद जो सूरह चाहे वह पढ़े।

पच्चीसवीं रात की नमाज़: आठ रकअत नमाज़ है। हर रकअत में सूरह हम्द और दस बार सूरह तौहीद।

छब्बीसवीं रात की नमाज़: आठ रकअत नमाज़ है। हर रकअत में सूरह हम्द और सौ बार सूरह तौहीद।

सत्ताइसवीं रात की नमाज़: चार रकअत नमाज़ है। हर रकअत में सूरह हम्द और सूरह मुल्क और अगर न हो सके तो सूरह तौहीद पच्चीस बार।

अठ्ठाइस्वीं रात की नमाज़: छे रकअत नमाज़ है। हर रकअत में हम्द के बाद आयतुल कुर्सी, सौ बार सूरह तौहीद, सौ बार सूरह कौसर। नमाज़ के बाद सौ बार सलवात।

लेखक के अनुसार अठ्ठाइसवीं रात की नमाज़ जैसा के मैने देखा है इस प्रकार है के छे रकअत नमाज़ पढ़े। पहले सूरह हम्द और दस बार आयतुल कुर्सी, दस बार सूरह कौसर, दस बार सूरह तौहीद और सौ बार सलवात के साथ।

उनतीसवीं रात की नमाज़: दो रकअत नमाज़। हर रकअत में सूरह हम्द और बीस बार सूरह तौहीद।

तीसवीं रात की नमाज़: बारह रकअत नमाज़ है। हर रकअत में सूरह हम्द और बीस बार सूरह तौहीद। और नमाज़ के बाद सौ बार सलवात।

ज़ाहिर है के इन तमाम नमाज़ों में हर दो रकअत के बाद सलाम ज़रूरी है।

रमज़ान महीने के दिनों की दुआएं

इब्ने अब्बास से रिवायत है के रसूले अकरम (स.अ.व.व.) ने माहे रमज़ान के दिनों की दुआओं के लिए बे पनाह फज़ीलत बयान फरमाई है। और हर रोज़

के लिए एक विशेष दुआ है। उसकी खास फज़ीलत और खास सवाब है। हम यहाँ पर सिर्फ दुआ का ज़िक्र कर रहे हैं और सवाब देने वाला परवरदिगार है।

पहले दिन की दुआ:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صِيَامِيْ فِيْهِ صِيَامَ الصَّآئِمِيْنَ وَقِيَامِيْ فِيْهِ قِيَامَ

खुदाया मेरा रोजा उस दिन मे रोजा दारो के रोजा की तरह करार दे और मेरी नमाज नमाज गूजारो

الْقَآئِمِيْنَ وَنَبِّهْنِيْ فِيْهِ عَنْ نَوْمَةِ الْغَافِلِيْنَ وَهَبْ لِيْ جُرْمِيْ فِيْهِ يَا

की नमाज की तरह करार दे और मूझको होशियार कर दे गाफिलो की नीद से और मेरे गून्हा को

اِلٰهَ الْعَالَمِيْنَ وَاعْفُ عَنِّيْ يَا عَافِيًا عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ.

बखश दे ऐ आलमीन के माबूद और मूझको माफ कर दे ऐ गून्हागारो के माफ करने वाले

दूसरे दिन की दुआ:

اَللّٰهُمَّ قَرِّبْنِيْ فِيْهِ اِلٰى مَرْضَاتِكَ وَجَنِّبْنِيْ فِيْهِ مِنْ سَخَطِكَ

खुदाया मूझको उस दिन मे अपनी मर्जा से करीब कर और उस दिन मे मूझको अपने गूस्सा औ

وَنَقِمَاتِكَ وَوَفِّقْنِيْ فِيْهِ لِقِرَآئَةِ اٰيَاتِكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

अजाब से बचा ले और मूझको उस मे तौफीक अता कर अपने कूआन की आयतो के पढने की

الرَّاحِمِيْنَ.

अपनी रहमत के जारिए से ऐ सब से बडे रहम करने वाले

तीसरे दिन की दुआ:

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ فِيْهِ الذِّهْنَ وَالتَّنْبِيْهِ وَبَاعِدْنِيْ فِيْهِ مِنَ السَّفَاهَةِ

खुदाया उस दिन मूझको होश और बेदारी अता फरमा और मूझ को बेवकूफी और जहालत से दूर

وَالتَّمْوِيْهِ وَاجْعَلْ لِيْ نَصِيْبًا مِنْ كُلِّ خَيْرٍ تُنْزِلُ فِيْهِ بِجُوْدِكَ يَا

कर और मेरे लिए हर उस नेकी मे जो तू उस रोज नाजील करेगा हिस्सा करार दे ऐ सब से बडे

اَجْوَدَ الْاَجْوَدِيْنَ.

चौथे दिन की दुआ:

जो दो बखशिश वाले

اَللّٰهُمَّ قَوِّنِيْ فِيْهِ عَلٰى اِقَامَةِ اَمْرِكَ وَاَذِقْنِيْ فِيْهِ حَلَاوَةَ ذِكْرِكَ وَ

खुदाया मूझ को कूवत दे उस दिन अपने अमर अनजाम देने की और मूझको अपने ज़िक की शिरनी

اَوْزِعْنِيْ فِيْهِ لِاَدَآءِ شُكْرِكَ بِكَرَمِكَ وَاحْفَظْنِيْ فِيْهِ بِحِفْظِكَ وَ

चखा दे और मूझ को अपने शूकर के अदा करने के लिए आमादा कर अपने करम से और मूझ को

سِتْرِكَ يَا اَبْصَرَ النَّاظِرِيْنَ.

पाँचवें दिन की दुआ:

अपनी हेफाजत के जारिए और अपनी पर्दापोशी के जारिए महफूज कर ऐ सब से ज्यादा देखने वाल

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ فِيْهِ مِنَ الْمُسْتَغْفِرِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ فِيْهِ مِنْ عِبَادِكَ

खुदाया मुझको उस दिन मे तोबा करने वालो मे करार दे और मूझको अपने नेक बनदो मे करार

الصَّالِحِيْنَ الْقَانِتِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ فِيْهِ مِنْ اَوْلِيَآئِكَ الْمُقَرَّبِيْنَ

दे जो तेरी एताअत करने वाले है और मूझको करार दे अपने मोकररीब तरीन दोस्तो मे अपनी

بِرَافَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ. **छटे दिन की दुआ:**

महेरबानी से ऐ सब से बडे रहम करने वाले

اَللّٰهُمَّ لَا تَخْذُلْنِيْ فِيْهِ لِتَعَرُّضِ مَعْصِيَتِكَ وَلَا تَضْرِبْنِيْ بِسِيَاطِ

ऐ खुदाया मुझको उस दिन मआसियत की वजह से रूसवा न करना और अपने अजाब के

نَقِمَتِكَ وَ زَحْزِحْنِيْ فِيْهِ مِنْ مُوْجِبَاتِ سَخَطِكَ بِمَنِّكَ وَاَيَادِيْكَ

ताजियाना से न मारना और मूझ को दूर न कर देना अपने गूस्सा के मोजबात की वजह से अपने

يَا مُنْتَهٰى رَغْبَةِ الرَّاغِبِيْنَ. **सातवें दिन की दुआ:**

एहसान से और नेएमतो से ऐ शौको रगबत रखने वालो के इन्तेहा, आरजू

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ فِيْهِ عَلٰى صِيَامِهٖ وَقِيَامِهٖ وَجَنِّبْنِيْ فِيْهِ مِنْ هَفَوَاتِهٖ

खुदाया तू मेरी मदद कर उस दिन के रोजा और एबादत पर और मूझको महफूज रख उस मे

وَ اٰثَامِهٖ وَارْزُقْنِيْ فِيْهِ ذِكْرَكَ بِدَوَامِهٖ بِتَوْفِيْقِكَ يَاهَادِيَ

लगजिशो और गून्हाओ से और उस मे अपने ज़िक दाएम की तौफीक दे अपनी तौफीक से ऐ

الْمُضِلِّيْنَ. **आठवें दिन की दुआ:**

गूमराओ की रहनूमाई करने वाले

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ فِيْهِ رَحْمَةَ الْاَيْتَامِ وَ اِطْعَامَ الطَّعَامِ

खुदा उस दिन मे मुझ को तौफीक अता फरमा यतीमो पर रहम करने , भूको को खाना खिलाने

وَ اِفْشَآءِ السَّلَامِ وَ صُحْبَةَ الْكِرَامِ بِطَوْلِكَ يَا مَلْجَاَ

और इस्लाम को फैलाने और नेक लोगो की सोहबत मे रहने की अपी ईनआम के जारिए ऐ

الْاٰمِلِيْنَ.

नवें दिन की दुआ:

आरजू मंदो की पनहागाह

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ فِيْهِ نَصِيْبًا مِنْ رَحْمَتِكَ الْوَاسِعَةِ وَاهْدِنِيْ فِيْهِ

खुदाया मेरे लिए उस दिन अपनी रहमत का मोकम्मल वसीह हिस्सा करार दे और उस मे मेरी

لِبَرَاهِيْنِكَ السَّاطِعَةِ وَ خُذْ بِنَاصِيَتِيْ اِلٰى مَرْضَاتِكَ الْجَامِعَةِ

हेदायत कर अपनी रोशन दलीलो के जारिए और मेरी परेशानी को अपनी जामे खुशनूदी की

بِمَحَبَّتِكَ يَا اَمَلَ الْمُشْتَاقِيْنَ.

दसवें दिन की दुआ:

जानिब ले जा अपनी मोहब्बत के जारिए ऐ शौक वालो के आरजू

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ فِيْهِ مِنَ الْمُتَوَكِّلِيْنَ عَلَيْكَ وَ اجْعَلْنِيْ فِيْهِ مِنَ

खुदाया मुझको उस मे अपने ऊपर तवक्कूल करने वालो मे करार दे और मूझको उस मे अपनी

الْفَآئِزِيْنَ لَدَيْكَ وَ اجْعَلْنِيْ فِيْهِ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ اِلَيْكَ بِاِحْسَانِكَ

बारगाह मे कामयाब होने वालो मे करार दे और मेझको उस मे अपने दरबार मे मोकररब लोगो

يَا غَايَةَ الطَّالِبِيْنَ.

ग्याहरवें दिन की दुआ:

मे करार दे अपनी एहसान से ऐ तलब करने वालो का मकसद

اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيَّ فِيْهِ الْاِحْسَانَ وَ كَرِّهْ اِلَيَّ فِيْهِ الْفُسُوْقَ وَ

खुदाया उस दिन एहसान और नेकी को मेरे लिए महबूब कर दे और फिसको फजूर और ईसयान

الْعِصْيَانَ وَ حَرِّمْ عَلَيَّ فِيْهِ السَّخَطَ وَ النِّيْرَانَ بِعَوْنِكَ يَا غِيَاثَ

को न पसनदिदा कर दे और उस मे मूझ पर गूस्सा और जहन्नम को हराम करार दे दे अपनी मदद

الْمُسْتَغِيْثِيْنَ.

बारहवें दिन की दुआ:

से ऐ फरयाद करने वालो के फरयाद रस

اَللّٰهُمَّ زَيِّنِّيْ فِيْهِ بِالسِّتْرِ وَ الْعَفَافِ وَاسْتُرْنِيْ فِيْهِ

खुदाया मूझ को उस दिन मे परदा पोशी और पाकीजगी से आरासता कर दे और मूझको कनाअत

بِلِبَاسِ الْقُنُوْعِ وَ الْكِفَافِ وَاحْمِلْنِيْ فِيْهِ عَلَى الْعَدْلِ

और केफालत का लेबास पिन्हा कर छूपा दे और मूझको अदल व इन्साफ मे लगा दे और मूझ

وَالْاِنْصَافِ وَ اٰمِنِّيْ فِيْهِ مِنْ كُلِّ مَا اَخَافُ بِعِصْمَتِكَ

को महफूल कर दे हर उस चीज से जिस से मै खौफ करता हू अपनी हेफजत के जारिए ऐ खौफ

يَا عِصْمَةَ الْخَائِفِيْنَ.

तेरहवें दिन की दुआ:

करने वालो के बचाने वाले

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِيْ فِيْهِ مِنَ الدَّنَسِ وَ الْاَقْذَارِ وَ صَبِّرْنِيْ فِيْهِ عَلٰى

खुदाया मूझ को उस मे गन्दगी और कसाफत से पाक कर दे और मूझ को सबर दे दे काएनात

كَائِنَاتِ الْاَقْدَارِ وَ وَفِّقْنِيْ فِيْهِ لِلتُّقٰى وَ صُحْبَةِ الْاَبْرَارِ بِعَوْنِكَ يَا

कजा व कदर पर और मूझको तौफी दे दे तकवा की और नेक लोगो की सोहबत की अपनी मदद

चौदहवें दिन की दुआ: قُرَّةَ عَيْنِ الْمَسَاكِيْنِ.

से ऐ मिसकीयनो की ऑख की ठन्डक

اَللّٰهُمَّ لَا تُوَاخِذْنِيْ فِيْهِ بِالْعَثَرَاتِ وَ اَقِلْنِيْ فِيْهِ مِنَ الْخَطَايَا وَ

खुदाया उस दिन मेरी लगजिशो का मुझ से मोवाखेजा न कर और मेरी खताओ और गलतीयो के

الْهَفَوَاتِ وَلَا تَجْعَلْنِيْ فِيْهِ غَرَضًا لِلْبَلَايَا وَ الْاٰفَاتِ بِعِزَّتِكَ يَا عِزَّ

उजर को कूबूल कर ले और मूझको बला व आफत के तीन का निशाना न बनाना अपनी ईज्ज़त

पंद्रहवें दिन की दुआ: الْمُسْلِمِيْنَ.

के वासते से ऐ मूसलमानो को ईज्ज़त देना

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ فِيْهِ طَاعَةَ الْخَاشِعِيْنَ وَ اشْرَحْ فِيْهِ صَدْرِيْ بِاِنَابَةِ

खुदाया उस दिन मे खूजूअ व खूशोअ करने वाले बन्दो की एताअत मेरा नसीब कर और मेरे सिने को उस मे

सोलहवें दिन की दुआ: الْمُخْبِتِيْنَ بِاَمَانِكَ يَا اَمَانَ الْخَائِفِيْنَ.

कूसादा कर अपने खुदा से डरने वालो की फरोतनी की तरह अपनी अमान से ऐ खौफ रखने वालो के अमान

اَللّٰهُمَّ وَ فِّقْنِيْ فِيْهِ لِمُوَافَقَةِ الْاَبْرَارِ وَ جَنِّبْنِيْ فِيْهِ مُرَافَقَةَ

खुदाया मुझ को उस मे तौफीक अता कर नेको कारो की मोवाफेकत की और मुझ को महफूज

الْاَشْرَارِ وَاٰوِنِیْ فِیْهِ بِرَحْمَتِكَ اِلٰی دَارِ الْقَرَارِ بِاِلٰهِیَّتِكَ يَا اِلٰهَ

रख बदकारो की रेफाकत से और अपनी रहमत से मूझ को बहीशते दारूल करार मे जगह दे

الْعٰلَمِیْنَ.

सत्रहवें दिन की दुआ:

अपनी उलूहियत के जारिए ऐ आलमीन के माबूद

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْهِ لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَاقْضِ لِیْ فِیْهِ الْحَوَآئِجَ وَالْاٰمَالَ يَا

खुदाया उस मे मेरी हेदायत फमा नेक आमाल के लिए और उस मे मेरी हाजतो और उमीदो को

مَنْ لَا يَحْتَاجُ اِلَی التَّفْسِيْرِ وَالسُّؤَالِ يَا عَالِمًا بِمَا فِیْ صُدُوْرِ الْعَالَمِيْنَ

बर ला ऐ वो जात जो तफसीर और सवार की मोहताज है ऐ वो खुदा जो मखलुक के दिलो मे

صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهِ الطَّاهِرِيْنَ.

अठ्ठारहवें दिन की दुआ:

पाशिदा राजो का जानने वाला हे दूरूद नाजील फरमा मोहम्मद और उन की पाकीजाह आले पर

اَللّٰهُمَّ نَبِّهْنِیْ فِیْهِ لِبَرَكَاتِ اَسْحَارِهٖ وَنَوِّرْ فِیْهِ قَلْبِیْ بِضِيَآءِ اَنْوَارِهٖ

खुदाया मुझको उस मे बेदार रख उस क सहर क बरकतो के लिए और उस मे मेरे दिल को नूरानी

وَ خُذْ بِكُلِّ اَعْضَآئِیْ اِلَی اتِّبَاعِ اٰثَارِهٖ بِنُوْرِكَ يَا مُنَوِّرَ قُلُوْبِ

कर उस के नूर से और मेरे तमाम अजा व जवारेह को उस के आसाज व बरकात के लिए मसखर

الْعَارِفِیْنَ.

उन्नीसवें दिन की दुआ:

कर अपने नूर के जारिए ऐ मारेफत वालो के दिलो को रोशन करने वाले

اَللّٰهُمَّ وَ فِّرْ فِيْهِ حَظِّيْ مِنْ بَرَكَاتِهٖ وَ سَهِّلْ سَبِيْلِيْ اِلٰى

खुदाया उस मे मेरे लिए उस की बरकत ज्यादा कर और मेरे लिए राह आसान कर उस की नेकीयो

خَيْرَاتِهٖ وَ لَا تَحْرِمْنِيْ قُبُوْلَ حَسَنَاتِهٖ يَا هَادِيًا اِلَى الْحَقِّ

की तरफ और मूझ को महरूम न कर उस की नेकीयो के कूबूल करने से ऐ दीन हक की जानिब

الْمُبِيْنِ.

बीसवें दिन की दुआ:

रहनूमाई करने वाले

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ فِيْهِ اَبْوَابَ الْجِنَانِ وَ اَغْلِقْ عَنِّيْ فِيْهِ اَبْوَابَ

खुदाया मेरे लिए उस दिन मे जन्नत के दावाजो को खोल दे और मेरे ऊपर बन्द कर दे जहन्नम के

النِّيْرَانِ وَ وَفِّقْنِيْ فِيْهِ لِتِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ يَا مُنْزِلَ السَّكِيْنَةِ فِيْ قُلُوْبِ

दरवाजो को और मूझको उस मे कूरआन मजीद की तेलावत की तौफीक दे ऐ मोमिनो के दिलो

الْمُؤْمِنِيْنَ.

एक्कीसवें दिन की दुआ:

मे सूकून के नाजील करने वाले

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ فِيْهِ اِلٰى مَرْضَاتِكَ دَلِيْلًا وَ لَا تَجْعَلْ لِلشَّيْطَانِ

खुदाया मेरे लिए उस मे अपनी मर्जा की जानिब रहनूमाई करार दे और मूझ पर शैतान के लिए

فِيْهِ عَلَيَّ سَبِيْلًا وَ اجْعَلِ الْجَنَّةَ لِيْ مَنْزِلًا وَّ مَقِيْلًا يَا قَاضِيَ حَوَائِجِ

राह न करार दे और जन्नत को मेरे लिए मनजिल और मोकाम करार दे ऐ तलब गारो की हाजतो

الطَّالِبِيْنَ. **बाईसवें दिन की दुआ:**

को पूरा करने वाले

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ فِيْهِ اَبْوَابَ فَضْلِكَ وَ اَنْزِلْ عَلَيَّ فِيْهِ بَرَكَاتِكَ

खुदाया उस दिन मेरे लिए अपने फजल के दावाजे खोल दे और मूझ पर अपनी बरकते नाजील

وَ وَفِّقْنِيْ فِيْهِ لِمُوْجِبَاتِ مَرْضَاتِكَ وَ اَسْكِنِّيْ فِيْهِ بُحْبُوْحَاتِ

फरमा और मूझको उस मे तौफीक दे अपनी मर्जा के असबाब की और जन्नत के बीचो बीच मेरा

جَنَّاتِكَ يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ. **तेईसवें दिन की दुआ:**

मसकन करार दे ऐ परेशान लोगो की दूआओ के कूबूल करने वाले

اَللّٰهُمَّ اغْسِلْنِيْ فِيْهِ مِنَ الذُّنُوْبِ وَ طَهِّرْنِيْ فِيْهِ مِنَ الْعُيُوْبِ

खुदाया मूझ को उस मे गून्हाओ से पाकीजा कर दे और ऐबो से साफ कर दे और मेरे दिल का

وَامْتَحِنْ قَلْبِيْ فِيْهِ بِتَقْوٰى الْقُلُوْبِ يَا مُقِيْلَ عَثَرَاتِ

इम्तेहान तकवा के जारिए ले कर मरतबाह अता कर दे, ऐ गून्हागारो की गलजिसो के माफ करने

الْمُذْنِبِيْنَ. **चौबीसवें दिन की दुआ:**

वाले

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ فِيْهِ مَا يُرْضِيْكَ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِمَّا يُؤْذِيْكَ

खुदाया मै तूझ से सवाल करता हू इस मे उस चीज का जो तूझको पसंद हो और मै तेरी पनहा

وَ اَسْئَلُكَ التَّوْفِيْقَ فِيْهِ لِاَنْ اُطِيْعَكَ وَلَا اَعْصِيَكَ يَا جَوَادَ

चहता हू उस से जो तूझको अजीयत दे और मै तूझ से सवाल करता हू तौफीक का ता के मै तेरी

السَّائِلِيْنَ.

पच्चीसवें दिन की दुआ:

एताअत करू और मासियत न क दू ऐ सवाल करने वालो को अता करने वाले

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ فِيْهِ مُحِبًّا لِاَوْلِيَآئِكَ وَ مُعَادِيًا لِاَعْدَآئِكَ مُسْتَنًّا

खुदाया मूझको इस मे अपने दास्तो का दोस्त और अपने दूश्मनो का दूश्मन करार दे और अपने

بِسُنَّةِ خَاتَمِ اَنْبِيَآئِكَ يَا عَاصِمَ قُلُوْبِ النَّبِيِّيْنَ.

खातमूल अंबिया की सून्नत का पाईद बना दे ऐ पैगम्बरो के दिलो की हेफाजत करने वाले

छब्बीसवें दिन की दुआ:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ سَعْيِيْ فِيْهِ مَشْكُوْرًا وَ ذَنْبِيْ فِيْهِ مَغْفُوْرًا وَ عَمَلِيْ

खुदाया मेरी कोशिशे को इस मे मकबूल बना दे और मेरे गून्हाओ को बखश दे और अमल को

فِيْهِ مَقْبُوْلًا وَ عَيْبِيْ فِيْهِ مَسْتُوْرًا يَا اَسْمَعَ السَّامِعِيْنَ.

मकबूल कर दे और मेरे ऐब को पोशिसा कर दे ऐ सब से ज्यादा सूनने वाले

सत्ताईसवें दिन की दुआ:

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ فِيْهِ فَضْلَ لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَصَيِّرْ اُمُوْرِ فِيْهِ مِنَ الْعُسْرِ

खुदाया इस मे शबे कदर की फजीलत मेरे हिस्से मे करार दे और मेरे उमूर को मूश्किल से

اِلَى الْيُسْرِ وَاقْبَلْ مَعَاذِيْرِيْ وَحُطَّ عَنِّيْ الذَّنْبَ وَ الْوِزْرَ يَا رَؤُفًا

आसानी की तरफ ले जा और मेरे उजर को कूबूल कर ले और मेरे गून्हा और बोज को खत्म कर

لِعِبَادِهِ الصَّالِحِيْنَ.

दे ऐ अपने नेक बन्दो पर महेरबान

अठ्ठाइसवें दिन की दुआ:

اَللّٰهُمَّ وَفِّرْ حَظِّيْ فِيْهِ مِنَ النَّوَافِلِ وَ اَكْرِمْنِيْ فِيْهِ بِاِحْضَارِ

खुदाया इस मे मूसतहबात ते मेरा ज्यादा हिस्सा अता कर और मूझ को मोकररम बना मसाएल

الْمَسَآئِلِ وَقَرِّبْ فِيْهِ وَسِيْلَتِيْ اِلَيْكَ مِنْ بَيْنِ الْوَسَائِلِ يَا مَنْ لَا

के हाजिर करने के जारिए और मेरे वसिले को अपनी तरफ के वसाएल मे करीब कर ऐ वो खुदा

يَشْغَلُهُ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّيْنَ.

जिस को लजाजत करने वालो की येजाजत मशगूल नही करती है

उन्तीसवें दिन की दुआ:

اَللّٰهُمَّ غَشِّيْنِيْ فِيْهِ بِالرَّحْمَةِ وَارْزُقْنِيْ فِيْهِ التَّوْفِيْقَ وَ الْعِصْمَةَ وَ

खुदाया उस मे मूझको रहमत से छूपा दे और मूझको तौफीक और हेफाजत अता कर और मेरे

طَهِّرْ قَلْبِيْ مِنْ غَيَاهِبِ التُّهْمَةِ يَا رَحِيْمًا بِعِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ.

दिल को पाक कर दे शेश्क की तारिकियों से, ऐ मोमीन बन्दो पर रहम करने वाले

तीसवें दिन की दुआ:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صِيَامِيْ فِيْهِ بِالشُّكْرِ وَالْقُبُوْلِ عَلٰى مَا تَرْضَاهُ وَ

खुदाया उस दिन मे मेरे रोजा को जजाए खैर के साथ मूसतहकम कर ब हके सैय्यद व सरकार

يَرْضَاهُ الرَّسُوْلُ مُحْكَمَةً فُرُوْعُهٗ بِالْاُصُوْلِ بِحَقِّ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهِ

मोहम्मद व आलेहीत ताहेरीन और हमद खेदा के लिए हे जो आलमीन का रब है

الطَّاهِرِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

दुआओं की और इबादतों की तकदीम और ताखीर में अलग अलग तरीके पाए जाते हैं। और चूंके इसकी रिवायत मेरे खयाल से मोअतबर नहीं थी लेहाज़ा मैंने उन इख्तेलाफात का ज़िक्र नहीं किया।

सत्ताइसवीं तारीख की दुआ को कफअमी ने उन्तीसवीं तारीख में लिखा है और मज़हबे शिआ के अनुसार तेईसवीं तारीख को ज़्यादा मुनासिब है के वहि शब शबे कद्र है।